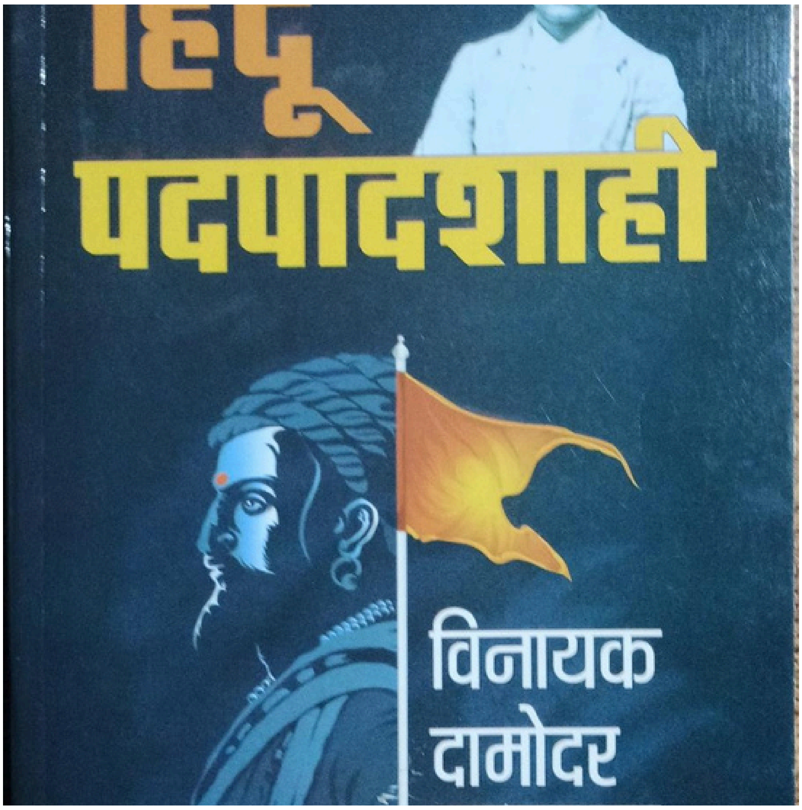



पदपादशाही
विनायक
दामोदर

ह दिं–ूपदपादशा◌ी

विनायक दामोदर सिारकर

प्रभात

पेपरबैक्स

www.prabhatbooks.com

प्रकाशक

प्रभात पेपरबैक्स

प्रभात प्रकाशन प्रा. लि. का उपक्रम

4/19 आसफ अिी रोड, नई हदल्िी-110002

फोन : 23289777 ेल्पिाइन निं.:7827007777

इ-मेि : prabhatbooks@gmail.com वेब हिकाना :www.prabhatbooks.com

सस्किरण 2023

मूल्य
तीन सौ रुपए

मुद्रक
नरिा वप्रटिंस,स हदल्िी

HINDU-PADPADSHAHI
by Swatantrayaveer Vinayak Damodar Savarkar

Published by PRABHAT PAPERBACKS
An imprint of PrabhatPrakashan Pvt. Ltd.
4/19 Asaf Ali Road,New Delhi-110002

ISBN 978-93-89982-12-1

रू. 300.00

अनुक्रम

नियुग का आगमन

लशाजी शिाजी म ाराज द्िारा लिखे। गए श ाजी म ाराज के नाम पत्र में य िाक्य लमिता ै-

'स्धिम सराज्यि्दृ्धधकारणे तुम् ी सुपुत्र यनमाणस आ ाि'
(- स्धिम सऔर राज्यि्दृ्धध के काय स ेतु तुम जैसे ेसुपुत्र का जन्म ुआ ै।)

शाालििा न िसिंत् ्१५५२ (ई.स. १६३०) में लशिाजी म ाराज का जन्म ुआ। उनके जन्म के कारण इस हदन को नियुग का प्रारिंभ-हदन बनने का भाग्य प्राप्त ुआ। लशिाजी म ाराज के जन्म से प ि ेभी सैकैडों ह दिं्ू ीरों ने ह दिंूायत के सम्मान की रक्षा के लिए मुसिमान आक्रमणकाररयों के अविरत आक्रमणों का डटकर सामना करते े ुए रणि्दी पर अपनी आ ूयत चढाई थी। उनसे ेप ि ेविजयश्री से िधिंचत र े इन शूरीरों और ुतात्माओ िंजैसी ी शूरता से िडते े ुए लशिाजी म ाराज ने यश और कीयत सप्राप्त की। उन् ोंनेविजय की एक ि र का यनमाणस ककया जो आगे चिकर अधधकाधधक प्रचडिं ोती गई। एक शताब्दी या उससे भी अधधक िा तक ह दिंधूम सकी विजय पताका को अपनेमाथेपर धारण ककए य ि र िैभि से परम िैभि की ओर तथा उपिक्ब्ध से और बडी उपिक्ब्ध की ओर बढती गई। गजनी के मो म्मद के आक्रमण के साथ प्रारिंभ ुए मुसिमानों के भारत-विजय के ज्िार में पूरा भारतिष सजैसे ेडूब गया था। उस ज्िार में से क्जन् ोंनेअपना लसर उिाया और गिोन्नत स्िर में उसे ेआज्ञा दी कक 'खबरदार! इसके आगे ेएक कदम भी बढाया तो याद रखना', ऐसेप ि ेराष्ट्रपुरुष थे े लशिाजी म ाराज।

सामान्यतः य क ा जा सकता ै कक शाालििा न िसिंत् ्१५५१ के पिू सजब भी ह दिं ूऔर मुसिमान सेनाओंका आमना-सामना ुआ, कभी ह दिंओु िंका नेता मृत या गुमशुदा ोनेके कारण, तो कभी ककसी कमचसारी या सेनापयत की दगाबाजी के कारण ह दिंओु िंको पराजय का ी मु ँ देखना पडा।

लशिाजी म ाराज के उदय ोनेके पिू सउत्तर में ह मािय से िेकर दक्षक्षण में समुद्र तक प्रत्येक युद्ध का पररणाम ककसी-न-ककसी कारणिश ह दिं्ूध्िज के विरुद्ध ोने का एक क्रम ी बन गया था। म ाराज दाह र का दुभााग्सय, जयपाि का सधिंष,स पृथ्िीराज का पतन तथा कालििंजर-सीकरी-देिधगरी-तालिकोट के दुहदसन उपयुक्सत कथन की पुक्ष्ट के लिए काफी ैं। िेककन लशिाजी म ाराज के समथ स ाथों ने अपनेिोगों के इस दुभााग्सय की रास खीचिंकर उसका मु ँ एकदम उिटी हदशा में घुमा हदया और उसे ेउतनी ी तीव्रता से आक्रमणकाररयों के पीछे िगा हदया। बाद में कभी भी ह दिं्ूध्िज को मुसिमान आक्राितंाओ िंके ध्िज के सामनेझुकने की नौबत न िंआई।

शाालििा न िसिंत् ्१५५१ के बाद क्स्थयत में बदिाि आया। ह मािय से िेकर समुद्र तक इसके बाद ज ा ँ भी ह दिं ूऔर मुस्मिान सेनाओं का सामना ुआ, ह दिंओु िंकी विजय और मुसलिमों की पराजय यनक्श्चत र ी। मुसिमान चा े ब ुसख्ंयि र ें, चा े उन् ोंनेउच्च स्िर में 'अल्िा ो अकबर' का नारा िगाया, ईश्िर ह दिंओंका ी

विजयी ुआ ! शाििा न ससिंत् ्१५५१ के बाद परमेश्रि ह दिंओु िंके पक्ष में था ! ि मूयतपूसजकों का साथ देता र ा और मूयतभसजिंकों को खदेडता र ा। लस िंगढ की विजय, पािन खडिं की रक्षा तथा गुरु गोविदिंलस िं, बदिंा ब ादुर, छत्रसाि, बाजीराि, नाना, भाऊ, मल् ाररि, परशराम पतिं, रणजीतलस िं आहद शूरिीरों के पराक्रम पर दृक्ष्टपात करते े ी इस बात की सत्यता का प्रमाण लमि जाता ै। गुरु गोविदिंलस िं तथा अन्य राजपूत, मराि, लसख सेनानायकों ने ज ा–ँज ा ाँऔर क्जतनी बार मुसिमानों से सामना ुआ, ि ााँ– ााँऔर उतनी बार मुसिमानों के छक्के छुडाए। ह दिंओु िंके राजनीयतक सौभाग्य में जो एक म त्त्पूण सऔर विजय प्रितकस मोड आया, उसका श्रेय लशिाजी म ाराज और उनके पूज्य गुरुदेि श्री रामदास स्िामी द्िारा ह दिंदूायत के सम्मुख रखे म ान् ् आध्याक्त्मक और राष्ट्रीय उद्देश्य को तो ै ी, उनके द्िारा रणक्षेत्र् में प्रियततस दािँ-पेचों िािी नई युद्ध- शैिी और आजमाए गए साधनों एिंिंअस्त्र-शस्त्रों को भी ै। क्जतना सच य ै कक म ाराष्ट्र-धम सह दिंदूायत के राष्ट्रीय जीिन की मृतप्राय आत्मा की ज्योयत प्रज्ज्िलित करनेिािी एक नई शक्क्त थी, उतना ी सच य भी ै कक य नई युद्ध-शैिी उस समय ह दिंओुंमें प्रचलित युद्धशास्त्र में क्रायिंत िानेिािी अनोखी युद्ध-शैिी थी।

क्जस ध्येय ने इस स्ितित्रिं ह दिंू ूसाम्राज्य के सग्रिंाम में शालमि सेनानायकों में इतनी दृढ यनष्ट्िा पैदा की और उनमें इतनी उत्तेजना जगाई, ि ध्येय था ह दिंू–पदपादशा ी अथात्स ्स्ितित्रिं ह दिंू–साम्राज्य की स्थापना। क्जस युद्ध-शैिी ने मुसलिम सत्ता के लिए मरािों के सामनेहटकना असभ्भिं बना हदया और अतिं में क्जसनेह दिंदूायत के माथेपर विजय का से रा बाधााँ, ि शत्रु को चकमा देनेिािी छापामार युद्ध-पद्धयत थी।

इसी उदात्त ध्येय की अनुभूयत सेमरािों के पीढी-दर-पीढी ककए गए प्रयत्नों को नई ऊजा सलमिी। विलभन्न काििखडिं और दूरू-दूरू तक फै ेप्रातिं में उन् ोंने जो काय सककए, उनमें से समान ह त सबिंधिं और समरूपता यनलमतस ुई। इसी िक्ष्य की अनुभूयत ने उनमें य दृढ यनष्ट्िा उत्पन्न की कक अपनेधम सऔर देश का काय स ी ि काय स ै क्जसमें िीर पुरुषों तथा म ापुरुषों को योगदान करना चाह ए। आगे ेचिकर देखेंगेकक य ी अनुभूयत मरािों को सीढी-दर-सीढी िेकर विजयपूिकस हदल्िी के म ाद्िार तक, उत्तर में लसधिंुतट तक और दक्षक्षण में समुद्र के ककनारे तक कैसे िे गई और उसके कारण उनके कृत्यों की इस कथा को उदात्त राष्ट्रीय म ाकाव्य का स्िरूप कैसे ेप्राप्त ुआ। इससे प ि े ेप्रत्येक ह दिंू ूमाता ह दिंओु िंकी पराजय की प्रचलित क ायनया,ाँ पराजय के कारणों पर प्रकाश डािते ुए अपने बच्चों को सुनाती थी। ककिंतु बाद में मरािों की विजय-मालिका ने इन् ीिं क ायनयों को विजय-गि स के साथ तथा उदात्त सुरों में गाकर सुनाने योग्य म ाकाव्य का दजा सकैसे ेहदिाया, इस पर भी म क्रमशः विस्तार से चचा सकरेंगे।

लशिाजी म ाराज का चररत्र लिखनेिािे ेउनके समकािीन इयत ासकार उल्िेख करते े ैं कक जैसे-ेजैसे िे बडेेते ेगए, िैसे-ेसेह दिंदूायत की राजनीयतक परतत्रिंता की क्स्थया से उनकी खखन्नता बढती गई। महिंदरों को आक्रमणकारी अपनेपैरों तिे रौंद र े ैं और अपनेपुरानेभि के अिशेषों को किकिंकत तथा अपमायनत कर र े य देखकर उनका हृदय विदीण स ो गया। उनकी शूरमाता जीजाबाई ने ह दिंदूायत के गत िैभि का िणनस कर तथा श्रीराम और श्रीकृष्ट्ण, अजुनस और भीम, अलभमन्यु और ररश्चद्रिं इत्याहद की शौयगसाथाएाँसुनाकर उनकी िीरिृत्त

का पोषण ककया। पररणामतः क्जस पररिेश में ि सासँ िेर े थे, ि पररिेश ी नई आकाक्षिा और उम्मीदों से भर गया था। क्जनके पूिजसों ने देिताओंऔर देिदूतों के साथ, आमने-सामने सभिंाषण ककया था तथा भगिान् ् श्रीकृष्ट्ण ने क्जन् ें मेशा साथ देनेका िचन हदया था, ऐसेह दंिुओं के राष्ट्र को पराधीनता से मुक्त करनेिाला अितार प्रकट ोनेिाला ै-ऐसी चचासिोगों में ोनेलगी। पररिार में पररंपरागत रूप से प्रचलित जनश्रुयतयों से

लशिाजी म ाराज को य अटूट विश्िास था कक ि राष्ट्रीय अितार उनके अपने ी घर में प्रकट ोनेिाला ै। इसी विश्िास के कारण उनके मन में ऐसेभाि उिने िगेकक इन जनश्रुयतयों का केंद्र क ीं म ैंस्ियं ि ी तो न ीं ूँ? य

म त्त्िपूण सकाय सपूण सकरने के लिए ईश्िर का तय ककया औजार- अपनेधम सका ईश्िर-यनयुक्त मुक्क्तदाता क्या म ैं

ी ूँ? इन कल्पनाओंमें तथ्य ो या न ो, उस मा ौ में उनका जो कतव्सय बनता था, ि सुयनक्श्चत था। उन् ोंने

यनश्चय कर लिया कक जैसी क्स्थयत ै, उसी में सतंुष्ट्ट र ने िािी दास के समान सुख भरे जीिन की मामिूी आशाओ ंके भिँर में कदावप न ीं फँसना ै और क्जसने अपनेराष्ट्र का लस ंासन ध्िस्त ककया तथा अपने देिस्थान भ्रष्ट्ट ककए, ऐसे विदेशी शासक से अपनी पीि थपथपानेिाला, उनकी जी- ुजूरी करनेिाला दास कदावप न ीं बनना ै। उन् ोंनेयनश्चय ककया कक ककसी की मदद लमिे या न लमिे, े स्ियं ी अपना सिस्ि त्यागकर पुरखों की अक्स्थयों और देिस्थानों की रक्षा का प्रयत्न करना ी ै, ि डाइया ँि डनी ैं और मौका आनेपर स्ियं ी से भी ताकतिर शत्रु से िडते–िडतेअपनेप्राणों की आ ुयत दे दनी ै। उनका विचार था कक उन पर विजयिक्ष्मी की कृपादृक्ष्ट्ट ुई तो कभी-न-कभी विक्रमाहदत्य अथिा शालििा न के समान ह दंिुओं के एक श्रेष्ट्ि और िैभिशािी साम्राज्य की नींि रखने का श्रेय उन् ें प्राप्त ोगा, क्जसके सपने कई पीहढयों ने देखे थेतथा क्जसकी प्राक्प्त के लिए ह दंिूधम सके साधु-सतंों ने आशा भरे अतंःकरण से भगिान् ्से प्राथनसा की थी।

ह दंिी स्िराज्य

लशिाजी िाजी म ाराज ने एक पत्र में लिखा था- "स्यि िंभगिान् ्के ी मन में ै कक ह दिंी स्रिाज्य

यनलमतस ो।"

उस युिा िीर पुरुष ने क्रायिंतयुद्ध की प ि की। लशिाजी म ाराज ने शालििा न सिंत् ्१५६७ (ई.स. १६४५) में अपनेएक साथी के पास भेजे े ुए पत्र में-स्यिंपर िगेइस आरोप का यनषेध ककया कक बीजापुर के शा का प्रयतरोध कर उन् ोंने राजद्रो का पाप ककया ै। उन् ोंने इस बात का स्मरण कराते ुए उच्च आदशों की भािना भी जाग्रत् ्की कक अपना एकयनष्ट् बिधिंन यहद ककसी से ै तो ि भगिान् ्से ै, न कक ककसी शा -बादशा से। उन् ोंनेउस पत्र में लिखा ै-" आचाय सदादाजी कोंडदिे और अपनेसाधथयों के साथ सह्याहद्र पितस के श्रृगिं पर ईश्रि को साक्षी मानकर िक्ष्य प्राक्प्त तक िडाई जारी रखने ेऔर ह दिंस्ुथान में 'ह दिंी स्रिाज्य'- ह दिंू–ूपदपादशा ी - स्थावपत करने की क्या आपने शपथ न िीिी थी? स्यि िंईश्रि ने में य यश प्रदान ककया ै और ह दिंी स्रिाज्य

के यनमाणस के रूप में ि मारी मनीषा पूरी करिीेिा ै। स्यि िंभगिान् ्के ी मन में ै कक य राज्य प्रस्थावपत ो।" लशिाजी म ाराज की किम से उतरे 'ह दिंी स्रिाज' - इस शब्द मात्र से एक शताब्दी से भी अधधक समय तक क्जस बेचैनी सेम ाराष्ट्र का जीिन तथा कतव्सय यनदेलशत ुआ और उसका आत्मस्रूप क्जस तर से प्रकट ुआ, िैसा ककसी अन्य से सभिं नि िींथा। मरािों की िडाई आरिंभ से ी िैयक्क्तक या विलशष्ट् िग सकी सीलमत डिाई न ी िंथी। ह दिंधूम सकी रक्षा ेतु, विदेशी मुसलिम सत्ता का नामोयनशान लमटानेके लिए तथा स्तित्रिं और समथ सह दिंी स्रिाज्य स्थावपत करने के लिए िडी गई ि सपंूण सिडाई ह दिंू िूडाई थी।

इस देशभक्क्त के उत्सा से न िकेि मरािा नेतृत्ि प्रेररत ुआ था, बक्ल्क न्यूनाधधक रूप में उनके राज्य और सेना में शालमि सभी िोग उसी उत्सा से भर उिे थे। क्जस देशभक्क्त की भािना से लशिाजी म ाराज के सभी प्रयत्न सचंालित ुए थे, उसकी अनुभूयत उन् िींके समान सारी जनता को भी ुई थी। 'अखखि ह दिंजूायत के सरिंक्षक' के रूप में उन् ें र जग ाथो ाथ लिया जा र ा था।

इसके बािजूद जो िोग मुसिमानों के पक्षधर बने ुए थे, ि दो तर के थे। सहदयों की दासता के कारण कुछ दुबिुस-हृदय िोग कल्पना ी न िींकर पाते थेकक मुसिमानों के विरुद्ध युद्ध छेडकर ह दिंू ूयशस्िी भी ो सकते ैं। दूसूरी तर के िोग ि थेजो बेशरमी की द पार कर या िाभ- ायन का नाप-तौि करके ी कुछ करते ेथे े अथिा जो मुसलिम साम्राज्य में ी अपना ह त देखते ेथे। इन िोगों को लशिाजी एक नौलसखुआ और असबिंद्ध विचारोंिािा युिक िगता था और इसी कारण उन् ें अपना नेता मानने के लिए ि मानलसक रूप से तैयार न िीं ो पा र े थे।

िेककन समस्त ह दिंओुं-न िकेि म ाराष्ट्र, बक्ल्क समूचे दक्षक्षण के और सभिंतः उत्तर भारतीय ह दिंओु िं को भी लशिाजी म ाराज अपने सिश्रेेसष्ट् पिक्षपोषक िगते थे। ि उन् ें अपनेदेश और जायत को राजनीयतक स्तित्रिंता हदिानेिािी ईश्रि यनयुक्त िीर पुरुष मानते ेथे। लशिाजी म ाराज, श्रीरामदास और उस समय की मरािा पीढी ने जो काय सककया, सदिंश हदया और उसके प्रयत सभी प्रातिों के ह दिंओुंने जैसा आदरभाि व्यक्त ककया,

उसके उदात्त िणनस से उस जमाने का इयत ास, आख्याययका और िाङ्मय भरा पडा ै। अनेक नगर और प्राति अपनी मुक्क्त के लिए लशिाजी म ाराज के मरिों को जरूरी ििुा भेजकर आशा से प्रतीक्षा करते ेथेऔर मरिों द्िारा मुसिमानों का रा झडिं फाडकर अपना केसररया ध्िज ि रातेदेखकर खुशी से नाचने िगतेथे। इस बात की पुक्ष्ट के लिए ििके एक पत्र उद्धृत करना काफी ै, जो सिानूर प्राति के ह दिंओु िने लशिाजी म ाराज के पास लिखा था- "य यूसुफ ब ुत अत्याचारी ै। क्स्त्रयों पर और बा-बच्चों पर अत्याचार करता ै। गोिधाहद यनद्यि काय सकरता ै। उसके अधीन म परेशान ो गए ैं। आप ह दिंूधम सके सस्थािपक और म्िेच्छों का स ि ार करनििा े ैं। इसलिए म आपके पास आए। आपसेगु ार िगाने के कारण म बधिंक बना लिये गए। मारे द्िार पर प रे गिाए गए ैं! अन्न-जि रोककर मारे प्राण िनेके लिए य यूसुफ उतििा ै। इसलिए आप अविििंब आइए।"

क नेकी जरूरत न ी िकक म ाराष्ट्र के बा री प्राति के ह दिंओु िके इस अनुनय की उपेक्षा लशिाजी म ाराज ने न िकी। प्रलसद्ध मरिा सेनापयत िबीररिा तुरंत ि ााँ प ुाँचे। उन् ोंनेबीजापुर के सैयनकों को कई स्थानों पर बुरी तर पराक्जत करके मुसिमानों के पाश से ह दिंओु को मुक्त कराया और उस प्राति से उनकी सत्ता उखाड फेंकी।

पुणेऔर सूपा की छोटे जागीरों की सुचारु ढंग से व्यिस्था करने के पश्चात् ्बार क्जिों को सुसगंहित करके लशिाजी म ाराज ने सोि ि सा की अल्पायु में अपनेचुयनदंा साधथयों की स ायता से शत्रु को अचभिं ेमें डािते ुए जोरदार मिे कर तोरणा तथा अन्य म त्िपूण सककिेकाबबज कर लिये। अफजि खान के अधीनस्थ बीजापुर के सैयनकों को पूरी तर सेपराक्जत करके उन् ोंने सीधेमुगिों से युद्ध शुरू ककया। कभी शरणागयत का हदखािा करके, तो कभी अचानक मिा बोिकर और प्राय: झासाँ देकर जब लशिाजी म ाराज ने अनेक मुसलिम सरदारों तथा सेनानायकों की धक्ज्जया ाँउडाईं, तो उनके दुश्मनों के हदिों में ऐसी द शत बैि गई कक खुद औरंगजेब ने भी कुछ समय तक बैर भुिाकर उन (लशिाजी म ाराज) को अपनेजाि में फाँसाने की कोलशश करने में ज्यादा समझदारी देखी। औरंगजेब की इस कपट रणनीयत में भी लशिाजी म ाराज उसके गुरु साबबत ुए। औरंगजेब ने आगरा के ककिे में जो जाि बबछाया था, उसमें से भी ि स ी-सिामत यनकिने में कामयाब र े और अपनेरायगढ दुगु सपर सुरक्षक्षत जा प ुाँचे। उन् ोंनेतुरंत मुगि सेना से युद्ध शुरू ककया और सिप्रसथम लस िगढ नामक दुगु सिापस छीन लिया। ज ा ाँभी मुसिमान सैयैनकों से आमना-सामना ुआ, उनके सेनानायकों ने उन् ें पराक्जत कर यश अक्जतस ककया। इस प्रकार अपनी सामथ्य समें िृद्धध करते े ुए अंित में लशिाजी म ाराज ने यनणयस लिया कक अब ह दिंू ूछत्रपयत - ह दिंूधम सऔर ह दिंू ूसस्कृयत के पक्षपोषक- के रूप में स्ियिं का विधधपूिकस अलभषेके करने का काय सन ििके सुरक्षक्षत, अवपतु समझदारी भरा भी ै। विजयनगर के पतन के बाद स्ितिंत्र राजा-छत्रपयत - के रूप में स्यि िका अलभषेके कराने की ह म्मत ककसी भी ह दिंू ूराजा की न ि ुई थी। इस राज्यालभषेक से मुसलिम सेना की अजेयता का भ्रम दूरू ुआ। इसके पश्चात् ्मुसिमान रणक्षेत्र में कभी भी ह दिंओु िकी बराबरी न िकर सके।

क्जन् ोंनेय पररितनस करिया, उन् ें भी य ककसी चमत्कार जैसा प्रतीत ुआ। ह दिं ूमुक्त युद्ध के साक्षी एि िंइस युद्धयज्ञ के िनकता सश्री रामदास स्िामीजी ने स्यि िंके देखे सपनेके बारे में गूढाथ सभरा ऐसा काव्य रचा ै, क्जसमें सपने में देखी गई बातें सत्य प्रतीत ोनेपर उन् ें ुई ैरानी का िणनस ै। उसमें उन् ोंनेक ा ै-" रात में सपने में जो-जो देखा, िे सब सच ो र े ैं। इस आनदिं भिुन में, ह दिंसुथान की इस पवित्र भूलम पर विचरण करते े ुए (मनैं) देखा कक समस्त पापीजनों का नाश ुआ ै, अभक्तों का क्षय ुआ ै, म्लेच्छि रूपी दानि का स ंिार करने ेतु भगिान् ्इस पवित्र भूलम पर अितररत ुए ैं, राजधम सके साथ-साथ धम सकी िृद्धिध ोनेसे य ााँ तरफ सतिोष ै, दुष्ुट औरिंगजेब का स ंिार ुआ, म्लेच्छों के लस ंिासन नष्ट ुए और ह दिं ूराज्य की स्थापना ुई ै। बिोने सेज्यादा म त्त्िकृयत का ोता ै। जप-तप, पूजा-अचनसा आहद के लिए अब विपिु मात्रा में पवित्र जि प्राप्त ोगा। र कक्रया करते े ुए रर का स्मरण ककया ै, क्योंकक राम ी कता सऔर भोक्ता ैं।"

स्यि िंका छेडा ुआ य धमयुसद्ध ईश्िर-प्रेररत ै-इसी दृढ भिाना से लशिाजी म ाराज ने स्तित्रिं ह दिं ू राज्य की स्थापना में सफि ोते े ी अपनेआध्यात्मक तथा राजनीयतक गुरु समथ सस्िामी रामदासजी के चरणकमिों में इस राज्य को अवपतस ककया। ककिंतु श्रीरामदास स्िामी ने इस भिाना से कक य ईश्िरी काय स ै, प्रजा के कल्याण और ईश्िर की कीयत सके लिए सृकूजत ुई धरो र के रूप में ि राज्य य क ते े ुए अपनेप्रख्यात लशष्ट्य के ी ििोकर हदया कक "य लशिाजी का न ीं, अवपतु धम सका राज्य ै।" राजा छत्रसिा के पराक्रम की गाथा का बखान ऐयत ालसक 'छत्रप्रकाश' नामक काव्य में करिनिो कवि ने स्यि िंबुदेंिा हि दिं ू ोते े ुए भी मरािों के इस यश की सरा ना उन्मुक्त किंसे की ै। राजकवि भूषण ने भी मरािा िीरों का यशोगान गाया ै। उन दोनों ने स्यि िंमरािा न ोते े ुए भी श्री लशिाजी म ाराज से िेकर बाजीरि तक सभी मरािा िीरों के विजय अलभयानों पर बडा गि सअनुभि ककया ै। भूषण कवि ने तो उत्तर से िेकर दक्षक्षण तक पूरा ह दिंसुथान घूमकर लशिाजी म ाराज और उनके िीर साधथयों के पराक्रम की गाथाएँगाईं तथा समस्त ह दिंओु िंको ह दिं–स्िातित्र्यि के इस युद्ध में सक्म्मलित ोकर पराक्रम करने के लिए प्रेररत ककया। स्थानाभिा के कारण उनके ओजस्िी काव्य की कुछ ी पक्क्तियााँय ााँउद्धृत करना सभिं ै -

काशीजी की कला जाती, मथुरा मशीद होती
शशवाजी न होतेसुनुत होती सबकी
राखी हहदिंबुानी हहदिंबुान के ततलक राख्यो
स्मृतृत और पुराण राख्यो वेदे ववधि सुतन मै
राखी रजपुती, राजिानी राखी राजन की
रि में िम मराख्यो राख्यो गुणु गुणण मै
भूषण सुकवव जीती हय मरहट्टन की

देस देस ककरत बखानीतव सुतन म ें

साहह के सुपूत शसवराज समशेर तेरी

हदल्ली दल दाबी के हदवाल (देवालय) राखी दुतुन मे।

इस प्रकार ह दिंूधूम सऔर ह दिंू–पदपादशा ी के नाम सह्याहद्र के लशखर से गूँजी मरिी तुतारी (एक रणिाद्य) के प्रबोधक आह्िानि ने और रणगीतों ने म ाराष्ट्र की सीमाओंके पार दूरू-दूरू तक सभी ह दिंओु िको आह्िाहदत और जाग्रत् कर हदया तथा उन् ें विश्िासि हदिाया कक विदेशी दासता से मुक्त हदिाना ी इस युद्ध का प्रमुख उद्देश्य ै।

समग्र राष्ट्र ने लशिाजी म ाराज का उत्तरदाययत्ि यिनभाया

शालिला न लिसिंत् ् १६०२ (ई.स. १६८०) में लशिाजी म ाराज का स्िगिसास ो गया। उसके कुछ ी म ीने पश्चात् ् श्रीरामदास स्िामीजी ने भी म ाप्रयाण ककया। उनके द्िारा ककया गया काय सतो म ान् ् था ी, िेककन उससेभी अधधक काय सकरना अभी शेष था। िे दोनों राष्ट्रपुरुष न िीर े, िेककन उनकी मृतृयु भी उनके छेडेम ान् ् आदिंिनि को खत्म न िींकर सकी। उस आदिंिनि की सरिंचना िैयक्तक जिीन की सकुिंधचत और अक्स्थर िीनिं पर न िीं ुई थी। उसकी जड ेंराष्ट्र-जिीन में ग रे तक चिी गई थी।िं मरािों के इयत ास का य म त्त्िपूण सतथ्य म मरािेतर पािकों के मनःपटि पर अकिंकत करना चा ते।ैं मरािेतर पािकों को िकेि लशिाजी म ाराज और समथ सरामदास स्िामी के जिीनचररत्र की थोडी-ब ुत जानकारी ै, बाकी मरािों का इयत ास उन् ें िगभग अज्ञात

ी ै अथिा ह दिंू–इयत ास का सामान्य पािक िग सय ी मानता ै कक ह दिंूायत के काय सका श्रीगणेश और ह दिंू–पदपादशा ी की स्थापना का उद्यम करनिािे प्रथम और अयिंतम देशभक्त श्री रामदास स्िामी और लशिाजी म ाराज ी थे। इतना ी न ी,िं म ाराष्ट्र के जनसामान्य की भी य ी समझ ै कक लशिाजी म ाराज के साथ ी मरािी इयत ास का आहद और अित ो गया। उन् ें य भी िगता ै कक इन दोनों म ापुरुषों के पश्चात् ्म ाराष्ट्र में पूणतसः अव्यिस्था फैिी ुई थी और िुटेरों या अन्य प्रकार के िडाकों की टोलियों के स्िाथी िे अधोगामी सघिंषों के कारण िातािरण और भी विकृत ो गया था। ये दोनों धारणाएँगित ैं।

िास्ति में इन दोनों म ापुरुषों द्िारा प्रारिंभ ककया गया आदिंिनि उनकी मृतृयु के उपरातिं भी दीघकसािा तक चिता र ा। इसी से उनकी म ानता का पता चिता ै। िकेि इतना ी न िीं, उनके समान देशभक्त म ानुभािों की, सैकडों कुशि सघिंटकों की, पराक्रमी िीरों की तथा श ीदों की अखडिं परिंपरा यनलमतस ुई और उसने उसी पवित्र काय सके लिए घमासान िडाइया ाँिडी।िं छत्रपयत के उत्तराधधकारी इन् िीिंिीरों ने पूरे राष्ट्र को ह दिंू–पदपादशा ी के अभीष्ट तक प ुँचाया।

लशिाजी म ाराज ने जब स्िय िंका राज्यालभषेक करिाया, तब एक पूरा प्रातिं भी उनके कब्जेमें न िींथा; ककिंतु उनका काय सतत्कािीन क्स्थयत में म ान् ्समझा गया। कफर जब उनके उत्तराधधकाररयों ने राघोबा दादा के नेतृत्ि में सीधिा ोर में प्रिेश ककया और जब मरािी अश्ि लसधिुंनदी के तट पर विजयोन्माद में मस्त ोकर सैर करने िगा, और जब एक सपिूंण सभूखडिं उनके अधधकार में आ गया, तब क्या य उपिक्ब्ध अधधक पूण सऔर अधधक म ती न िींथी ?

लशिाजी म ाराज के दे िासान के समय औरिंगजेबे जीवित ी था। औरिंगजेब और उसकी अह दिंू ू म त्त्िाकाक्षिंाओिंको अ मदनगर की एक सामान्य कब्र में दफनानेका काम लशिाजी म ाराज ने न िीं, अवपतु उनके द्िारा यनलमतस म ाराष्ट्र ने ककया। मरािी साम्राज्य रूपी विशाि िृक्ष के फूिने-फिने से ी रायगढ की भूलम में बोए गए बीज को प्रलसद्धध लमिी, िरना तब तक ककसी भी बीज से जैसे ेफिदायी िृक्ष न िींबन पाए, िैसेय बीज भी यनष्ट्फि र कर विस्मृयत की धिू में नष्ट ो जाता। लशिाजी म ाराज ने रायगढ पर शासन ककया; िेककन प्रत्यक्ष हदल्िी पर उनके उत्तराधधकाररयों का शासन करनेका समय आना अभी बाकी था! इतना ी न िीं, अगर धनाजी और सतिंाजी, बािाजी और बाजी, नाना और बापूआहद िीर राजनीयत में प िे न िींकरते ेतथा अपना

ह दिंू ूपदपादशा ी 13 पराक्रम न िींहदखाते और लशिाजी म ाराज द्वारा आरिंभ ककए गए काय सको पूरा न ीं करते ेतो उनकी सफिताए ाँ

साधारण ी मानी जाती िं और ह दिंूूायत के इयत ास में उसे े अतुिनीय एिं सिजसातीय म त्त्ि न ीं लमि पाता।

लशिाजी म ाराज म ान थे, े क्योंकक उनके द्वारा खडा ककया गया राष्ट्र उनकी म ानता पर गौरिाक्न्ित ोता था और इस राष्ट्र के लिए उनके उत्तराधिकारी काय सका आकिन और उसका यनि सन करना सभिं ुआ था। उनकी कल्पनाओंको साकार करने का काम उनके उत्तराधधकाररयों ने ककया; जो ोना चाह ए था और जैसा लशिाजी म ाराज सोचते ेथे, िैसा ी उसे ेउन् ोंनेमूत सरूप हदया।

लशिाजी म ाराज का दे ाितं मरिी इयत ास का आरिंभ ै। उन् ोंनेह दिंू–प्रयतष्ट्ठाि की नीिं डािी। उसका ह दिंू ूसाम्राज्य में पररितनस ोना अभी शेष था। ि पररितनस उनके दे ाितं के उपरातिं ुआ। क्जस प्रकार नाटक का सूत्रधारसभी किाकारों तथा उनके काय सके बारे में सूचना देकर खुदु परदे के पीछे चिा जाता ै और उसके बाद नाटकयाम ाकाव्य शुरू ोता ै, उसी प्रकार क्जन व्यक्क्तयों के माध्यम से य म ान् ्काय ससपिंन्न ोना था, उनकामागदसशनस कर लशिाजी म ाराज स्िय िंयतरोधान ो गए।

श ीद छत्रपयत

'िम मके शलए प्राण त्यागना चाहहए।'

-रामदास स्िामी

म ाराष्ट्र के धम सरूपी िृक्ष की जडेंककतनी ग री ैंऔर ह दिंू–पुनरुज्जीिन के आदिंोिन में उसनेककतना चैतन्य यनमाणस ककया ै, उसकी िेशमात्र भी कल्पना औरिंगजेब ने न ीं की थी। लशिाजी म ाराज के यनधन और उनकी जग राजगद्दी पर सभिंाजी जैसै ेपराक्रमी, िेककन कतव्सयविमुख पुत्र के आने से औरिंगजेब ने सोचा कक समाज के दूसूरे व्यक्क्त-केंहद्रत या विलशष्ट्ट समुदायों के चिाए सकिंीण सआदिंोिनों की तर मरिों के स्िातिंत्र्ता

आदिंनि का भी अंत ो गया। उसनेइसे ेअच्छा मौका समझा। काबिु से िेकेर बगिंाि तक फै े ुए विशाि साम्राज्य की सारी सुविधाएँ, असख्यि मनुष्य-बि और धन-दौित उसके पास थी। कि ु लमिाकर तीन िाख सेना िेकर ि दक्षक्षण में प ुँचा। एक साथ इतनी विशाि सेना का सामना करने की क्स्थयत लशिाजी म ाराज के समक्ष भी कभी न िंीआई थी। औरिंगजेब का अनुमान गित न िंी था। इस प्रकार इकट्ठा की गई मुगि सेना के सामने नए और बबखरे ुए मरािा साम्राज्य से दस गुनी ताकतिािा साम्राज्य भी धराशायी ो जाता। ऐसी क्स्थयत में श्रेष्ट् साम्राज्य की अगुिाई अयोग्य व्यक्क्त के ाथों में जाने से मुसिमानों का विरोध असभिं िकरना था। नेतृति क्षमता के अभाि के अयतररक्त क्रोधी स्िभाि और जाम एिं िासकी के लिए आसक्क्त आहद दुगुणस भी सभिंाजी म ाराज में थे।

िेककन इन सभी दोषों के र ते ेऔर चुनौतीपूण सक्स्थयत का सामना करने में नाकामयाब ोनेके बािजूद लशिाजी म ाराज का य पुत्र अतिंतः उक्त क्रायिंत के राष्ट्रीय आदिंनि का अगुआ बनने की क्जम्मेदारी यनभाने और अपने वपता की सम्मान-रक्षा के लिए भूषणीय बन गया तथा जीिन की अयिंतम घडी में उसनेमृतूयु पर विजय पा िी। राजकैदी बनाकर अपने जगिंिी शत्रुओ िंके सम्मुख िाए जाने के बाद भी ि गरदन तानकर ी खडा र ा। उसनेअपने प्राणों की कीमत पर भी अपना धम सत्यागने से इनकार कर हदया। मृतूयु टािनेके लिए धमातांरण करने का प्रस्ताि उसनिेुकरा हदया और मुसलिम अत्याचाररयों को, उनके धमशसास्त्र को और उनकी विचार-प्रणािी को यनदिंनीय तथा तुच्छ बताया। मरािा लस ि ं को अपना पाितू कुत्ता बनाना असभिं िदेखकर औरिंगजेब ने इस 'काकफर' की त्या करने का ुक्म हदया। िेकेकन लशिाजी म ाराज के इस शूर पुत्र पर भिा इस गीदडभभकी का क्या असर ोता! िो े की तप्त सिाखों और धचमटों से उनकी आखेँ यनकािी गईं तथा जीभ के टुकडे-टुकडे कर हदए गए।

इनअमानिीय अत्याचारों के बािजूद इस राज ुतात्मा का धैय सभगिं न िंी ुआ। अतिंतः उनका लसर काट हदयागया।मुसलिम धमाधांता के लशकार ि अिश्य ुए थे, िेकेकन ह दिंूत्ियत को उज्ज्िि ता के लशखर पर प ुँचाने काकामउन् ोंनेककया। अपनी इस आत्मा ुयत से उन् ोंने (सभिंाजी म ाराज ने) म ाराष्ट्र धम सका, ह दिं ूपुनरुत्थान केपवित्रआदिंनि का स्िरूप क्जस प्रकार सुस्पष्ट ककया, ि और ककसी काय ससे सभिंि न िंीथा। ऐसी पररक्स्थयत मेंटुिंरोंकेककसी सरदार का बरताि एकदम लभन्न प्रकार का ोता। लशिाजी म ाराज द्िारा अक्जतस सारी सपिंवत्त पूरीतर नष्ट ो चुकी थी। उनका खजाना एकदम खािी ो गया था। उनके जीते े ुए गढ नेस्तनाबूद ो चुके थे। उनकीराजधानी भी शत्रुओं के कब्जे में चिी गई थी। इस तर लशिाजी म ाराज द्िारा अक्जतस भौयतक सपिंवत्त की रक्षाकरनेमेंसभिंाजी अक्षम र े; िेककन अपनेबेजोड बलिदान से उन् ोंनेउनकी नैयतक और आध्याक्त्मक सपिंवत्त कीनलसफसरक्षा की, बक्ल्क उसे ेऔर उज्ज्िि तथा सपिंन्न बनाया। ह दिंूधम सके लिए अपनेप्राणों की आ ुयत देनिेीबलिदानी के रक्त से लसधिंचत ह दिं ूस्िातित्र्ं यि का समर और भी अधधक हदव्य ो उिा तथा नैयतक सामथ्य स की उसकीआधार-भूलम और भी मजबूत ो गई।

बलिदानी के बलिदान का प्रयतशोध

'िम मके शलए प्राण देनेचाहहए। शत्रुओ िंका सहिंार कर प्राण तजने चाहहए। सहिंार करते ेहुए अपना राज्य हाशसल करना चाहहए।'

- रामदास स्ािमी

अपने राजा के िध का प्रयतशोध िेनेके लिए पूरा म ाराष्ट्र शस्त्रों से सुसज्ज ोकर अपने खडा ो गया। सभिंाजी म ाराज के बलिदान के इस म त्त्पूिण सकृत्य से िोगों ने उनकी सारी गियतयों, दुषुट्कृत्यों को भूिकर उन् ें क्षमा कर हदया। राजकोष पूरी तर से खािी और साधनों का अभाि ोते े ुए भी उन् ोंने स्ातित्र्यि की पुनः प्राक्प्त का यनश्चय ककया। लशािजी म ाराज के द्वितीय पुत्र राजाराम म ाराज के नेतृतिृ में एकजुट ोकर ह दिंू ूराज्य और ह दिंूधम सकी रक्षा के लिए िडकर प्राण देनेकी शपथ िी।

"धम सके लिए प्राण देनेचाह ए। शत्रुओ िंका स िंार कर प्राण तजने चाह ए। स िंार करते े ुए अपना राज्य ालसि करना चाह ए। सभी मरिाों को सगिंहित करना चाह ए। म ाराष्ट्र धम सकी श्रीिृद्धध करनी चाह ए। अगर तुम अपने कतव्सय से विमुख ुए तो पूिजसों के उप ास के पात्र बनोगे।" श्री रामदास स्ािमी की ये सीखें उनके यनधनोपरातिं भी विस्मृत न िीं की गईं। इतना ी न िींअवपतुि िोगों का धम सबन गईं। राजाराम, यनिो मोरेश्िर, प्रह्िाद यनराजी, रामचद्रिं पतिं, सक्रिंाजी मल् ार, परशुराम त्र्यबिंक, सतिंाजी घोरपडे, धनाजी जाधि, खडेंिरा दाभाडे, यनबिंािकर, नेमाजी-परसोजी एि िंब्राह्मण, मरिो तथा सामतिं और ककसान-पूरा राष्ट्र ी मुसलिम सत्ता से युद्ध

छेडनेके लिए खडा ो गया। उस समय तक दक्कन कफर से औरिंगजेब के कब्जे ेमें चिा गया था। समस्त दुगु सऔर प्रत्यक्ष राजधानी समेत पूरा म ाराष्ट्र मुसलिम सेनापयत के यनयत्रिंण में करा र ा था। ऐसा प्रतीत ोनेिगा कक लशिाजी म ाराज और उनकी पीढी इतने सघिंष सके बिाजूद मृतूयुशय्या पर चिी गई ै; िेककन राजधायनयों और ककिों की आखखर औकात ी ककतनी ोती ै ! अपनी स्ितिंत्रता िापस िेने के लिए जो िोग दृढप्रयतज्ञ ुए, उन् ोंने अपनी दृढ इच्छाशक्क्त से अपने हृदय को ी अभेद्य दुगु सबना लिया। उनका ध्येय और आदश स ी उस दुगु सका राष्ट्रीय ध्िज बन गया। य ध्िज ज ा ाँभी ि राता, ि ााँ उनकी राजधानी बन जाती । "पूरा म ाराष्ट्र यहद खो गया तो म मद्रास में य जिंग छेडगें। यहद शत्रुओ िंने मसेरायगढ छीन लिया ै तो क्जिंजी पर ह दिं–ूपदपादशा ी की पिान पताका फ रा देंगे,े िेककन य जिंग जारी रखेंगे।े" ऐसा दृढ सकिंल्प करके मरािों ने औरिंगजेब की बिशािी सेना का सामना बीस िषों तक ककया और अिंत में खुद औरिंगजेब को यनराश तथा तोत्साह त करके यातनाओ िंसे तडपकर मरने के लिए शा.स.िं १६२८ (ई.स. १७०७) में अ मदनगर भेजे हदया! इस प्रदीघ सयुद्ध में मरािों को उनकी इयत ासप्रलसद्ध 'कूटयुद्ध नीयत' (छापामार िडाई) का ब ुत िाभ लमिा। मरािा सेना ऐसी कल्पनातीत तेजी से इकट्िा ोती, अतुिनीय युद्ध-कौशि और ऐसेदुदुसम्य शौय ससे शत्रु पर धािा बोिती और गायब ो जाती, मोचास बाधााँती, झासााँ देती, आमना-सामना करती और भाग जाती कक मुगि र जग मरािों के ाथों वपटने ेऔर जजरस ोने िगे। िेककन उन् ें मरािी सेना का पता- हिकाना मिूम ी न िींपडता था। प्रत्येक ार माननी पडी। ककसी की पराजय ुई तो ककसी की फजी त ुई, अनुभिी मुगि सेनापयत को उनके सामने ककसी का कािी सामना पडा तो ककसी को जान से ाथ धोना पडा। जुक्ल्फकार खान, अिीमदानस खान, ह म्मत खान, कासम प्रत्येक को धनाजी, सतिंाजी और अन्य मरािा िीरों ने पराक्जत ककया। उन् ोंनेक्जिंजी, किोरी पाक, दुधुारी आहद स्थानों पर आमने-सामनेकी बडी- बडी िडाइया ााँिडकर मुसलिम सेना का दमन करते े ुए दोबारा म ाराष्ट्र पर विजय प्राप्त करने की औरिंगजेब की म त्त्िाकािंक्षा को नेस्तनाबूद कर हदया। मरािों ने सीधेउसकी छािनी पर धािा बोिकर, मानो लस िं की गुफा में घुसकर उसकी अयाि नोंचने ेकी ी ह म्मत

हदया। खुद बादशा मि जाता, िेककन उसके भाग्य से ि उस समय अपने सुिण सकिशो े स्त्रागार में न िींथा। मरािा लसपा ी उसकी छािनी का सुिण सकिश काटकर िे गए। उस काि के प्रमुख कायकसताओसिंके मन देशभक्क्त की उत्कट भािनाओ िंसे ककस तर पररपूण सथे- इसे ेसमझने के लिए खिडी बल्िाि का उदा रण ी काफी ै।

अब भी जो मरािे मुसिमानों के पक्ष में थेऔर क्जिंजी का घेरा दृढ करनेमें शत्रु ुकी स ायता कर र े थे, उन् ें अपने पक्ष में िाने के र सभिं प्रयत्न उसनेककए। नागोजी राजा को मरािों के पक्ष में िानेके लिए गुप्त मत्रिंणाए ाँशुरू ो गईं। िे राजाराम म ाराज के पक्ष में आ गए। क्जिंजी की मुसलिम सेना को धिू चटाना ककस तर सभिं ै और अपनेइस देश और धम सकी रक्षा ेतु चि र े प्रयत्नों में मरािों की स ायता करना उनका कतव्सय बनता ै, नागोजी को य समझानेका प्रयास ककया गया। इन प्रयासों से उनका मन बदि गया और मौका लमिते े ी िे मुसिमानों का पक्ष छोडकर अपनेपााँच जार साधथयों की पिटन के साथ मरािों से आ लमिे।

इसके बाद खडिी बल्ाािा नै सरदार लशके को अपने पक्ष में ानेका सकिंल्प ककया। िे अभी भी मुगिों की सिा में मगन थे। राजाराम म ाराज की पररक्स्थयत का उल्ेखि करते े ी लशके ने आगबबूिा ोकर क ा, "राजाराम ी क्या, पूरे भोंसिे ेखानदान का नामोयनशान भी इस पृथिीू से लमट गया तो भी मुझे परिा न ीं! ज ा ाँ क ी िंकोई लशके हदखा, सभिंाजी ने उसकी गरदन न ी िंकटिाई क्या? क्या उस समय लशको का लशरच्छेद मनुष्य शि का पयायस न ीं ो गया था?" इसपर खडिी बल्ाािा नैबडे मालमकस शब्दों में उनसे ेक ा, "आप जो भी क र े ैं, िसिच ै, िेकेकन सभिंाजी ने मेरे पररिार के भी तीन सदस्यों को ाथी के पैरों तिे न ींरादाँाया था क्या? य समय व्यक्क्तगत झगडों को उछािनेका न ीं ै। अभी जो युद्ध चि र ा ै, ि भोंसिे ेया ककसी और के खानदान को पदासीन करने ेतु न ींबक्ल्क ह दिंू–साम्राज्य की रक्षा के लिए िडा जा र ा ै! म ह दिंू–साम्राज्य की खायतर िड र े ैं।" इस प्रकार सरदार लशके की राष्ट्रीय भािना को जाग्रत् ्करने में खडिी बल्ाािा सफि र े। लशके ने अपने व्यक्क्तगत आक्रोश तथा पाररिाररक िि को भिुाकर राजाराम म ाराज को क्जजिंी के घेरे से स ी-सिामत यनकिाने में स ायता करने का िचन हदया। सरदार लशके के अमूल्य स योग के कारण ी राजाराम म ाराज मुसलिमों को झासाँा देकर उनकी घेराबदिंी से यनकि सके और पुनः म ाराष्ट्र में प्रिेश कर सके।

इस प्रकार न िकेि लशिाजी म ाराज की पीढी में, बक्ल्क उनकी आगामी पीहढयों में भी देशभक्क्त की िी प्रखर ज्ाािा धधक र ी थी और उनका भी विश्िास था कक म ह दिंजूायत की राजनीयतक स्ितिंत्रता पुनस्थावसपत करने तथा विदेशी शत्रु से ह दिंधूम सकी सुरक्षा करने का ईश्िरीय काय स ी आगे ेबढा र े ैं। ऐसे बिशाि शत्रु के विरुद्ध युद्ध कर यशस्िी ोना ककन् ीं िुटेरों और डकैतों के लिए सभिंि न ींथा। क्जसका सामना करना ह दिंस्ुथान की अन्य ककसी भी जायत के लिए सभिंि न ीं ुआ, ऐसेम ासकिंट से अपनी मातृभूलम को मुक्त करने के काय समें उस पीढी के देशभक्तों के मन में धैयै सऔर सामथ्य सपैदा करनिेािा जबरदस्त कारण था उनकी प्रचडिं नैयतक और राष्ट्रीय शक्क्त ।

म ाराष्ट्र-मडिं

'जजतना अजजतम ककया है, उसे सँभालकररखना चाहहए। आगेऔर प्राप्त करना चाहहए। इिर-उिर सब तरफ। महाराष्ट्रराज्यका ववस्तार करनाचाहहए। '

- रामदास स्िामी

ह दिं ूविरोधी अपनी म त्त्िाकाक्षिंा और आशा को फलित न ोते देख यनराश और उदास मन से औरिंगजेब ने इधर कब्र का आश्रय लिया तो उधर मरािों ने अपना स्िततिंत्रता युद्ध खानदेश, बरार, गोंडिाना और गुजरात के मुगि सत्ताधीन प्रदेशों तक फैिा हदया। औरिंगजेब के यनधन के तुरिंत बाद ुई शा ू की मुक्क्त और म ाराष्ट्र में स्िराज्य को तथा दक्षक्षण में मुगिों के छ प्रातिंों समेत मैसूर और त्रािणकोर राज्यों में चौथ िसूिने और सरदेशमुखी के अधधकार को मुगि बादशा द्िारा दी गई मान्यता आहद बातों के फिस्िरूप मरािों की इतनी शक्क्त बढी कक क्जतनी प िेकभी न ीिंबढी थी। पररणामतः उन् ें अपनेराज्य की व्यिस्था सुचारु ढिंग से करने, ऐसा करते समय उत्पन्न ोनेिािी दिबिंदी तथा गुटबाजी की प्रिृवत्त का यनदान करने और मरािों का सिंगहित राष्ट्र-यनमाणस करने का सुअिसर प्राप्त ुआ। इस सिंगहित म ाराष्ट्र-मडिंि नेउसमें स्िाभाविक और शायद अपरर ाय सदोष ोने के बािजूद अपना काय सइतनेअच्छे तरीके से सपिंन्न ककया कक य म ाराष्ट्र-मडिंि ी ह दिं ू-पदपादशा ी बन गया। उसने नाममात्र को न ीिं, अवपतु िास्तविक अथ समें समूचे भारतिष सपर शासन चिाया। उपयुक्सत दोष तथा कलमयााँअन्य जायतयों की तर ी मरािों की समाज-रचना और स्िभाि में भी थी। इसीलिए म ाराष्ट्र-मडिंि में भी दीख पडती थी। इन दोषों की चचा स म आगे करेंगे, े िेककन ककसी को गितफ मी न ो, इसलिए म अभी ी य बता देते े ैं कक मारे क्जतना इन दोषों का ए सास शायद ी ककसी और को ोगा। क्जन राष्ट्रीय और नैयतक श्रेष्ट्ि तत्त्िों नेमरािों को आगे बढनेकी प्रेरणा दी और ह दिं ू-स्िातिंत्र्य की िडाई को विजय तक प ुाँचाने के उनके म ती प्रयत्नों में उनकी ह म्मत बधााँई, उन तत्त्िों को िोगों के सामने प्रस्तुत करते े ुए कभी-कभी व्यक्क्तगत उदा रणों में मरािों में भी स्िाथिपसरायणता, सकिंीणतसा, ईष्ट्या सऔर िोभ की चरम सीमा आहद दुगुणस राष्ट्रीय उद्देश्य और कतव्सय-बुद्धध पर विजय प्राप्त करते हदखाई देते े ैं - य बात म न तो भूिते ैं, न ी उसका म त्त्ि कम करते े ैं। ऐसा न ोता तो मरािों की धगनती मनुष्ट्यों में न ीिं, देिताओिं में ोती। कफर भी व्यक्क्तगत उदा रणों का विचार करने की बजाय उस प्रचडिं ह दिं ूआदंोिन की व्यापक सचाई को जानना मारा कतव्सय ै। उनके म ान् काय सकी श्रेष्ट्िता, उन् ें प्राप्त ुए अतुि यश का प्रमाण में देना ै। उनके कुछ व्यक्क्तगत दुष्ट्कृत्यों को ध्यान में रखने के बािजूद प्रत्येक देशभक्त ह दिं ूउन मरािों के म ान् उद्देश्यों के लिए न ीिं

उनकी प्रशसिंा करेगा, अवपतु कृतज्ञतापूिकस उनका गौरिगान भी करेगा। इस सक्षिंक्षप्त वििरण में क्जतना सभिं ◌ो सका, उतने प्रमाण देकर और कभी तत्कािीन उद् गारों के उद्धरण देकर तथा कभी इस राष्ट्रीय आदिंोिन को चिाननेिािे प्रमुख नेताओ िंऔर कायककसताओस िंके कृत्यों का उल्िेख करके इस उद्देश्य को प्रस्तुत करने का प्रयास ककया गया ◌ै।

इस प्रकार अपनी राज्य-व्यिस्था मजबूत करनेके बाद बािाजी विश्िनाथ हदल्िी की शा ◌ी राजनीयत में सकक्रय ◌ुए। उन् ◌ें ए सास ◌ुआ कक उनमें इतनी सामथ्य सआ गई ◌ै कक िे हदल्िी के भी तख्त को ह िा सकते ◌ैं।

अब मरािों पर मुसिमानों द्िारा कोई बडा ह मिा कर सकने का अदिंेशा खत्म ◌ो गया था। इतना ◌ी न ीिं, अपने बागी सरदारों और ि जीरों से सुरक्षा ◌ेतु खुद मुगि बादशा उन मरािों से स ◌ायता की याचना करने िगा। मरािों के स्िातिंत्र्य-समर ने मुसलिम सत्ता को ह िाकर रख हदया था। सभी दक्षक्षण प्राितों से चौथ और सरदेशमुखी िसूिने का मरािों का अधधकार सैयद बधिंुओ िंद्िारा मान्य करते ◌े ◌ी उनके प्रयतद्िंद्वियों को भगाकर उनका आसन क्स्थर करने के लिए शा.सिं. १६४० (ई.स.िं १७१८) में बािाजी विश्िनाथ और दाभाडे ने पचास जार की सेना के साथ हदल्िी पर आक्रमण ककया। अब तक क्जन् ◌ें तुच्छ समझा, िे मरािे पचास जार की सेना के साथ राजधानी पर चढाई कर र ◌े ◌ैं- य देखकर मुसिमान जि-भुन गए। उन् ◌ोंनेमरािों के स्िराज्य और चौथ के अधधकार पत्र पतिं प्रधान (पेशिा को) को प्राप्त ◌ोते ◌े ◌ी उन् ◌ें रास्ते ◌ेमें ◌ी खत्म करने का षड्यत्रिं रचा, क्जसकी खबर मरािों को िग गई। अपने स्िामी की प्राण-रक्षा ◌ेतु भानूजी तुरिंत तैयार ◌ो गए। तय ककया गया कक अधधकार- पत्र

प्राप्त ◌ोते ◌े ◌ी बािाजी विश्िनाथजी राजसभा से यनकिकर अिग रास्ते ◌ेसे मरािों की छािनी में प ◌ुँचेंगे और इधर [illegible] ◌ो◌ँ; ि उसपर टूट पडेऔर भानूजी को बािाजी समझकर उन् ◌ें तथा उनके साथ चि र ◌े चदिं मरािों को काट डािा। उधर बािाजी अधधकार-पत्र ◌ालसि करके मरािी छािनी में प ◌ुँच गए।

अपनेराष्ट्र की खायतर ककए गए आत्म-बलिदान से ◌ी उस राष्ट्र के इयत ◌ास को म ◌ाकाव्य का दजास लमि जाता ◌ै। इस सक्षिंक्षप्त पुस्तक में एक से अधधक उदा रण देना सभिंि न ीिं ◌ै; िेककन में विश्िासि ◌ै कक नीरस और विस्तृत आिोचनापूण सग्रथिों की अपेक्षा ऐसे एकाध उदा रण से ◌ी ककसी भी आदिंोिन का राष्ट्रीय और नैयतक स्िरूप अधधक प्रभािी ढिंग स िंस्पष्ट ◌ोगा।

कमभूसलम पर बडे ेबाजीरा का पदापणस

'महाराष्ट्र की स्वतत्रिंता की पररणतत हहदिंसुथान की स्वतत्रिंता में होनी ही चाहहए।'

हदल्ीि सिेापस िौटने ेके पश्चात् ्शा.स.िं १६४२ में बिााजी विश्िनाथ का दे िासान ो गया। उनके बडे

सुपुत्र श्रीमतिं बाजीराि, शा ू म ाराज की अधीनता मेंिसमूचे ेम ाराष्ट्र-मडिंि के कताधसतास बन गए। लशिाजी म ाराज के यनधनोपरातिं राजनीयतक रिंगभूलम पर बाजीराि का पदापणस म ाराष्ट्र के इयत ास का अगिा पडाि गिााँनेिािी व्यक्क्तगत घटना थी। भािी काय-सयोजनाओिं के बारे में जो प्रमुख समस्याए ाँथी,िं उनका समाधान न ीिं

ो र ा था। सिंघषस के बाद म ाराष्ट्र में राजनीयतक स्ितिंत्रता की पुनप्राक्सप्त ुई थी। मराठों ने अपनी सत्ता मजबूत और सिंगहठत की थी। उसी िज से िे अपनेपैरों पर खडेोकर धम सऔर देश की सुरक्षा ेतु ककसी का भी सामना करने में समथ सबन गए थे। ऐसी क्स्थयत में अगर अपनी म त्िाकािंक्षाए ाँम ाराष्ट्र की सीमा तक ी सीलमत रखेंगे े और हदल्ीि की सािभसौम राजनीयत में शालमि ुए बबना यहद म िाग र ेंगे,े तभी म िीक्सजतस सत्ता का उपभोग यनक्श्चिंतता से कर सकेंगे-ऐसे विचार स्िाभाविक रूप से कुछ मराठी नेताओ िंके मन में आए। उन् ोंनेशा ू म ाराज को अपने इन विचारों सेप्रभावित करना चा ा। अपनेविचारों के अनुसार यहद िे सपिंूण सराष्ट्र को अपनेविचारों से स मत भी कर िेतेऔर ह दिं-ूस्ितिंत्र्य की िडाई म ाराष्ट्र तक ी सीलमत रखने ेपर िोगों को राजी भी कर िेते, तब भी ालसि की ुई सत्ता का क्स्थरधचत्त ोकर उपभोग िे कर पाते या न ीिं, इसमें सदिं े ी ै।

इसके अिािा य भी सिंभि िा सकता था कक यद्यवप बा र से आनेिािी दुश्मनों को िे परास्त कर सकते थे ेऔर अपनी स्ितिंत्रता का उपभोग स्िय िंतक ी सीलमत रख सकते थे,े कफर भी उनके लिए ऐसा करना क्या उधचत था ? अपने पूिजसों से िेकर ितमसान पीढी तक उन् ोंनेजो कहिन सिंघषस सककया और इतना खून ब ाया, ि किसलिए ? लसफस सत्ता का उपभोग करने के लिए न ी।िं और म ाराष्ट्र के बा र गूाँजनेिािा अन्य ह दिं ूबाधिंिों का आतनसाद सुनते ुए भी स्िाथ-सिोिुपता से सत्ता का उपभोग करने से क्या उनकी प्रयतष्ठा को आचाँ न ीिंआती? लशिाजी म ाराज और उनके साधथयों का उद्देश्य मराठी राज्य की स्थापना करना न ीिं, अवपतु ह दिंी स्िराज्य की स्थापना करना था।

िािाकाँक म ाराष्ट्र के ह दिंओु िंकी गरदनों पर से विदेशी जुआ उतारकर फेंक हदया गया था, िेककन ह दिंसुथान के अन्य प्रदेशों में िाखों ह दिं ूबधिंु ुअब भी उस भारी जुए तिेकरा र े थे। ह दिंओुिंके तीथस्सथान भ्रष्ट ोनेसे रामदास स्िामी खखन्न ुए थेऔर उन् ोंनेधम सके रक्षाथ सप्राण त्यागनेका आह्िान ककया था; िेककन जब तक काशी विश्िेश्िर के मिंहदर पर मुसलिम चादाँ मौजूद था, तब तक मराठों के लिए य मान िेना कैसे ेसभिं था कक धम सकी रक्षा ेतु युद्ध करनेऔर प्राण त्यागनेका उनका स्िय िंअगीिंकृत ककया ुआ काय सपूरा ो गया ? और िे य कैसे ेक सकते थे ेकक इद्रिंप्रस्थ में धमरसाज के लस िंासन पर विदेशी के विराजमान ोते े ुए लशिाजी म ाराज की 'ह दिं-ूपदपादशा ी' की प्रयतज्ञा पूरी ो गई ?

मरिों ने पढिंरपुर की पिान भूलम पर से मुसलिम चादाँ का नामोयनशान लमटा हदया था और नालसक क्षेत्र भी धमाधां मुसिमानों के आतकिं सेमुक्त कराया था, िेकिन काशी की क्स्थयत क्या थी ? कुरुक्षेत्र और ररद्िि पर ककसकी सत्ता थी ? रामेश्िरम् ्पर ककसकी ुकूमत थी ? प्रत्येक मरिे के लिए ये तीथस्सथान भी नालसक और पढिंरपुर क्जतने ी पिान न ी िथेक्या ? उनके पूिजसों की अक्स्थया ाँन लसफस गोदािरी में बक्ल्क भागीरथी में भी प्रिाह त ुई थी।िं उनके देिताओंि के मदिंर ह मिगरर सेरामेश्िरम् ्तक, द्िारिका से जगन्नाथ तक फै े ुए थे;े

िेककन जैसाकक श्रीरामदास स्िामीजी क ते ेथे, मुसलिम जेताओिंके विजयी अधचसद्रिं की परछाईं पडनेके कारण गगिंा-यमुना का पानी धमयसनष्ट् िोगों की स्नान-सध्ंया आहद के योग्य न ी िं र गया था। इस क्स्थयत को देखते ुए श्रीरामदास स्िामी ने उद्गार प्रकट ककए थे कक- "म्िेंचे बडिं। ह दिंू ूउरिा ना ी चडिं।" यानी इन मुसिमानों के राज्य में ह दिंू ूदुबि ो गया ै। य क ते े ुए उन् ोंनेमरिों को ििकारा कक 'धम सकी खायतर मरना चाह ए, मरते-मरते शत्रु ुको मारना चाह ए और शत्रु ुको मारते–मारते ेअपना राज्य ालसि करना चाह ए।' ककिंतु क्या अभी तक ह दिंओुु िं पर अत्याचार करनेिािा मुसलिम शासन पूरे ह दिंसुथान से नष्ट ुआ था ? और क्या समूचा ह दिंसुतान राजनीयतक तथा धालमकस दासता के चगिुंि से मुक्त ो गया था? जब तक लसफस म ाराष्ट्र से ी न िीं, बक्ल्क अखखि भारतिष ससे मुसलिम सत्ता उखाडकर फेंकी न िींजाती और उनका सामथ्य सनष्ट न िींकर हदया जाता, तब तक ह दिंिी राज्य की ििृद्धध, उसका चरमोत्कष सतथा ह दिंधूम सका गौरिमडिंडत ोना असभिं था। ह दिंसुथान की अगुंि भर भूलम पर भी मुसिमानों का कब्जा शेष ोनेसे लशिाजी म ाराज और श्रीरामदासजी का स्िप्न साकार ोना सभिं नि िींथा। वपछिे ेपचास सािों तक युद्ध िडते े ुए श ीद ोनेिािी सभी पीहढयों का स्िाथ-स त्याग यनष्फि ो जाता। मरिों के सतिं और पथप्रदशकस उन् ें य ी सदिंश दे र े थे ेकक ह दिंसुथान की भूलम और ह दिंजूायत को दासता की क्जन बेडडयों ने जकड रखा ै, उन् ें जब तक तोडा न िींजाता; जब तक र ह दिंू ूको अपने-अपने पथिं का धमकृसत्य बगैर ककसी व्यिधान के करना सभिं नि िींोता और सभी ह दिंओिुंका एक म ान् ् तथा समथ सह दिंू ूराष्ट्र के न िीं बना लिया जाता, तब तक म अपनी तनी ुई तििारें म्यान में न िींरखेंगे े- य गजनसा करते ेक्जन् ोंने युद्ध-यननाद ककया, ऐसेयोद्धाओ िंके लिए जब तक काशी विश्िेश्िर के खडिंडत मदिंर की जग मसक्जद बनाई जा र ी ो; लसधिुंनदी का पवित्र जि विदेलशयों द्िारा अपवित्र बनाया जा र ा ो; और ह दिं म ासागर की ि रों पर विदेशी नौकाए ाँगि सेविचर र ी ों- तब तक अपने शस्त्रों को विश्राम देना और िाछिंनीय शायिंत का सुखोपभोग करना कैसे ेसभिं ै ? य ी तो परीक्षा की घडी ै। आपके क नेके अनुसार यहद य म ान् ् आदिंोिन, व्यक्क्तगत स्िाथ सकी तो बात ी छोडडए, ककसी सकिुंधचत या प्रातीय स्िाथ सके लिए भी न िींयछडा ै, अवपतु ह दिंधूम सके लिए, ह दिंिी स्िराज और ह दिंू–ू पदपादशा ी की खायतर इसका सूत्रपात ुआ ै, तो कफर मरिो ! सैकडों- जारों की सख्ंया में तुम सब बा र यनकिो और नमदसा, चबिंि, यमुना, गगिंा, ब्रह्मपुत्र-सबको पार करके समुद्र और पितसों की सीमाओिं तक य पवित्र भगिा ध्िज फ राओ। और श्रीरामदासजी ने तुम् ें जो य आज्ञा दी ै, उसका पिान करो। उनका सदिंश ै-

'धमस्सथापना के लिए भगिान् ्को लशरोधाय सकर सब तरफ छा जाओ। पूरे देश में धम सका पिान जयघोष गुजिं ा दो।' म ाराष्ट्र के साधु-सतिों, योद्धाओ िंऔर राजनीयतज्ञों की कल्पना तथा कृयत को प्रेरणा देनेिािेनेताओ िं

की विचारधारा थी य । बडे बाजीरि, धचमाजी अप्पा, ब्रम् ेंद्र स्िामी, दीक्षक्षत, मथुराबाई आग्रिं ेतथा अन्य नेतागण इस भिाना से ओत-प्रोत थे ेऔर उनकी आकाक्षिं थी कक मरिी इस आदिंिनि को बा र भी फैिाए।ाँ सिा लसफस य न िींथा कक क्या करना मरिों के लिए उधचत ै, बक्ल्क य भी था कक उनका कतव्सय क्या ै? िैसे भी अन्य प्राितों के साथ राजनीयतक सबिंधिं बढाए बगैर र ना उनके लिए सभिंि नी था, क्योंकक उत्तर में लसधिुंतट और दक्षक्षण में समुद्र ककनारे के ह दिं ूबधिुंओिं से उनके भाग्य की गिााँ पक्की बधी थी। म ाराष्ट्र के चतुर राजनेताओिंकी पैनी दृक्ष्ट्ट से य तथ्य ओझि न िीं ुआ था कक अतीत में अपनेसकिंीण सदृक्ष्ट्टकोण के कारण ी ह दिंजूायत का राजनीयतक, जातीय और धालमकस विनाश ुआ था। अब यथासभिंि अखखि भारतीय स्तर पर प्रयतरोध करने का विचार उन् ोंने ककया। नाहदरशा ने जब ह दिंसु्थान पर आक्रमण ककया, तब बाजीरि ने सभी ह दिं ूराजाओिंके पास य ी सदिंश भेजा। उस पररक्स्थयत में उन सभी के लिए अपनेराष्ट्रीय जिीन की आध्याक्त्मक और मानलसक प्रगयत के लिए ी न ी,िं अवपतु व्यक्क्तगत और ऐह क ह त की खायतर भी राजनीयतक स्ितित्रं य की अपनी म त्त्िाकाक्षिंाओिंको साकार करना और अखखि ह दिंजूायत को सगिंहित करना और एक सूत्र में बाधाँने िािे म ान् ्साम्राज्य की स्थापना करने तक विश्राम न िेना तथा रणभूलम सेविमुख न ोना आिश्यक था। समग्र ह दिंजूायत के परिशता के पाश में बद्ध ोते ए ुए ककसी भी ह दिंजूायत के लिए िबिंसमय तक शायिंत से सुख का उपभोग करना और अपना उद्देश्य प्राप्त करना असभिंि ी था। इन् ींकारणों सेन िेकेे नेताओिंको, अवपतु मरिी सेना के लसपाह यों को भी य बात अच्छी तर समझ में आ गई थी कक हदल्िी कै तख्त पर कब्जा ककए बगैर िे सातारा का राज शायिंतपूिकस न िीं रसकते। इसलिए जब शा ू म ाराज के नेतृत्ि में पूरे मरािा-मडिं केि नेतागण इस म त्त्पूिण सिाि पर यनणयस िेनेके लिए एकत्र ुए, तब बाजीरि ने अपनिेोगों में ग रे पैिी य आकाक्षिं ी अलभव्यक्त की। स्िय िं स्िीकृत इस काय सकी म ानता के जोश और स्िय िंके उत्सा में उन् ोंनेक ा, " म सीधे हदल्िी पिर आक्रमण करेंगे ेऔर मुसलिम सत्ता की जड पर ी सीधेप्र ार करेंगे। आगा-पीछा करते ेय िींक्यों बैि े ो ? ह दिं िीरपुरुषो ! ह दिं-ू पदपादशा ी की स्थापना का समय आ गया ै, आक्रमण के लिए यनकि पडो! 'असभिं' शब्द का प्रयोग मत करो। मनैंअपनी तििार सेउनका सामना ककया ै और उनके बि का अदिंाजा मुझे ै। छत्रपयत म ाराज! मुझे आपसे धन या जन की स ायता न िींचाह ए। लसफस आज्ञा और आशिीादस दीक्जए। म ाराज, म ैंअभी यनकिता ूाँ और मुसलिम सत्ता रूपी इस ज रीिेऔर जजरस िृक्ष को समिू नेस्तनाबूद कर देता ूाँ।"

इस दयुनया में िीर पुरुष के िक्तव्य के समान और ककसी का िक्तव्य न िीं ो सकता। बाजीरि के उत्सा िधकस िक्तव्य से शा ू म ाराज उत्सा से भर उिे उनकी नशों में लशिाजी म ाराज का खून सरसराने िगा। उन् ोंने क ा, "जाइए! मेरे िोगों के असिी नेता आप ी ैं। चा े क्जस हदशा में जाइए, मेरे सैयैनकों की मदद से जीत का लसिलसिा शुरू कीक्जए। हदल्िी ककस खेत की मिूी ै? य अपना पवित्र भगिा ध्िज प्रत्यक्ष ह माियकी शिै मािाओिं पर, और यहद ो सके तो उससे परे ककन्नर खडिं तक फ राइए।"

शा ू म ाराज ने क्जसका उल्िेख ककया, ि भगिा ध्िज क्या ै? ि सोने या चादँी से सजा ुआ झडिंा न िींथा, अवपतु आत्मत्याग, ईश्िरभक्क्त, मानिसेिा का मूत सधचह्न; सन्यािसी के भगिेरिंग में रिंगा ुआ ध्िज था। विदेशी अत्याचार से त्रस्त ुई ह दिंजूायत का उद्धार और ह दिंधूम सकी सुरक्षा के उद्देश्य से स्िीकृत काय सका

ह दिंू ूपदपादशा ी 23 यनरिंतर स्मरण करानिेिाी जो दो चीजेंमरािों के पास थीिं, िे थीिं उनकी भिानी तििार और य

भगिा ध्िज ।

श्रीरामदास स्िामीजी ने य ध्िज उन् ें हदया था। इसी ध्िज के सम्मान के लिए लशिाजी म ाराज ने युद्ध ककया और सह्याहद्र के लशखर पर इसे े फ राया। शा ू म ाराज तथा अन्य मरािों ने इसे े ककन्नर खडिं की सीमा तक फ राने का सकिंल्प ककया।

म ाराष्ट्र-मडिंिकी ि बैिक इसी दृढ सकिंल्प के साथ सपिंन्न ुई और तब से म ाराष्ट्र-मडिंिका इयत ास समूचे भारतिष सका इयत ास बन गया।

हदल्िी पर आक्रमण

'अरे, देख क्या रहे हो,हहदिंू–ूपदपादशाहीकासपना साकारहोनेमेंअबदेर नही िहै। हम अब जोरदार आक्रमण करें।'

-बाजीरि

क्जस स समय बाजीरि की पीढी के बाकी िोग सीधे उत्तर ह दिंुस्ुथान को रणक्षेत्र बनाने के सा सी प्रयत्नों में ाथ न बटाँाकर उस पर लसफस सोच-विचार कर र े थेऔर शकिंा-कुशकिंाएँ जता र े थे,े उस समय बाजीरि ने शा ू म ाराज के सम्मुख राज्यसभा में सबको य विश्िासि हदिाते े ुए कक लशिाजी म ाराज ने प्रयत्नों की पराकाष्ठा करि क्जस प्रयतकू्ि पररक्स्थयत में दक्षक्षण में ह दिंू-स्िातिंत्र्य का युद्ध चिाया था, उसकी तुिना में आज सभी दृक्ष्टयों से ाितािरण ककतना अनुकूि ै, मरािी नेताओिंको इस म ती काय समें जुटने का ओजस्िी आह्िानि ककया। और कफर उस ओर चिकर यनजाम, बगिंष अन्य दूसूरे मुगि सेनोपयतयों को पराक्जत ककया। बाजीरि और उनके साथीगण लशिाजी म ाराज प्रणीत पररिंपराओिं में ककस प्रकार पिे-बढे थे ेऔर उन ोंकिनायकों की राष्ट्रीय नीयतयों तथा विलशष्ट युद्ध-प्रणािी का ककतना ग न अध्ययन उन् ोंनेककया था, इसका पररचय उनके कायों सेलमिता ै। उस समय के सभी मुसिमान सेनापयतयों में और राजनीयतक धुरिंधरों में यनजाम सबसे अधधक कतृत्ििसािान था। इसलिए उसे ेझुकाकर प्रयतरोध नष्ट करना बाजीरि के सामनेप िा काय स था।

मबिंत्रमडिंि में अपने प्रभािी िक्ृतृत्ि और क्षमता से बाजीरि ने स्ियिं को क्जस तर लशिाजी म ाराज का सच्चा लशष्य साबबत ककया, उसी प्रकार रणभूलम में भी लसद्ध कर हदया कक लशिाजी म ाराज का लशष्यत्ि उन् ें ी शोभा देता ै।

शाालििा न िसिंत् ् १६६४ को बाजीरि ने मूसिाधार बाररश में अपनी सेना को युद्ध के लिए सकक्रय ककया। उन् ोंने सीधे ेऔरिंगाबाद परगना में प्रिेश करके यनजाम के कब्जेिाे जििा और आस-पास के सभािंगों से युद्ध-कर िसिू ककया। इिाज खान के नेतृत्ि में िडने आई यनजाम की सेना को बाजीरि ने उिझाए रखा। कफर एकाएक शत्रु को चकमा देकर मा ूर माग ससे िे औरिंगाबाद प ुँचे और ि ाँाय खबर फैिा दी कक उनकी सेना जबरदस्ती कर िसूिने िगी ै।

इस सपिंन्न नगरी की सुरक्षा के लिए यनजाम खुद इिाज खान की स ायता के लिए यनकि पडा। अपनी चाि सफि ुई और यनजाम लशकिंजे में फाँस गया। य देखकर बाजीरि ने खान को छोडा और िे सीधे ेगुजरात जा प ुँचे तथा ि ाँाके मुगि सूबेदार को सदिंेश भेजा कक यनजाम के क ने पर उन् ोंनेइस प्रािंत पर चढाई की ै। इधर यनजाम को औरिंगाबाद प ुँचते ी पता चिा कक क्जस शत्रु ुसे इस नगरी की सुरक्षा करनी थी, ि तो प िे े ी गुजरात प ुँच गया ै। इस घटना से क्षुब्ध ोकर यनजाम ने बाजीरि का ी दिााँ चिने का यनश्चय ककया। शत्रु के बेखबर र ते ेअचानक आक्रमण कर उसे े ैरान कर देने की मरािी युद्ध-शैिी अपनाते े ुए बाजीरि की अनुपक्स्थयत में उनका ी प्रािंत िूट िेनेकी योजना उसनेबनाई; िेककन मरािों की य छापामार पद्धयत

आत्मसात् ्करने में उसे ेथोडी देर ो गई। भिी घटनाअिों का अनुमान प िे े ी िगाकर बाजीरि ने गुजरात से यनकिकर बबजिी की-सी तेजी सेयनजाम के राज्य में पुनर्प्रिेश ककया।

इस प्रकार इधर यनजाम पुणे ेपर आक्रमण करनेचि पडा था और शत्रु को अपनेजिा में फाँसाने का खयिाी तिपुा पका र ा था। तभी उसे ेसमाचार लमिा कक बाजीरि ने उसका प्राति कब का िूट लिया। तब पुणे पर चढाई करने का विचार छोडकर ि जल्दी-जल्दी िापस िौट गया। िौटतेिक्त यनजाम की थकी ुई सेना का सामना। ऐसी दिस्थयत में यनजाम युद्ध टाने के पक्ष में था; िेकेकन बाजीरि तो ऐसेी अिसर की तिाश में थे। इसलिए प िेकी तर शत्रु का सामना न करते ुए खखसक िेनेकी बजाय उन् ोंनेबडी चतुराई से मुगिों को मिाखेड के पास डेरा डािनेके लिए वििश कर हदया। और क्जतनी कुशिता से ि (बाजीरि) अब तक युद्ध टािते ेआ र े थे, उतनी ी कुशिता से उन् ोंने आक्रामक युद्ध आरिंभ कर हदया। िबिंपल्िििी बिदूंकें और भारी तोपों के ोते े ुए भी उस समय यनजाम की सेना पूरी तर से यघर गई। क्स्थयत य थी कक यनजाम या तो अपनी सेना को ध्िस्त ोते े ुए देखे या बाजीरि की र शत सको माने। यनजाम के पास इसके अिािा कोई और रास्ता न िींबचा। उसने दूसूरा विकल्प ी चुना: शा ू म ाराज को म ाराष्ट्र के स्िति्रिं राजा के रूप में मान्यता प्रदान की तथा चौथ-सरदेशमुखी का बकाया भुगतान कर देनेका करार ककया और अपनेप्राति में कर िसूलििेिी मरिी अधधकाररयों को पुनः यनयुक्त करने का िचन हदया।

यनजाम पर ुए इस आक्रमण का सविस्तार िणनस य ाँककया गया ै; क्योंकक य आक्रमण मरिों की युद्ध-र्शिी का एक आदश सनमूना ै। उससेय स्पष्ट ोता ै कक लशिाजी म ाराज द्िारा लसखाई गई रणनीयत उनके पश्चात् ्मरिी लसप सिाार भिून िीं, बक्ल्क उन् ोंने उसमें और सुधार करके रणभूलम पर उसका विस्तृत एि िउत्सा िधकस इस्तेमिा ककया तथा यश-प्राक्प्त की। मिािा का मुगि सूबेदार भी दक्षक्षण के मुगि सूबेदार से अधधक सम्मानजनक तरीके से न िींछूट सका। शालििा न िसिंत् ्१६२० (ई.स.ि १६९८) में उदाजी पिार ने मिािा पर आक्रमण ककया और माडिंि (माडूिं) को घेर लिया। तब से ि ाँकी मुगि सेना पर मरिों ने सभी हदशाअिोंसे प्र ार करना शुरू ककया था। मुसिमानों के जुलुमी शासन से और धालमकस अत्याचारों से मिािा प्राति के ह दिंू ूत्रस्त और असतिुंष्ट थे। इसलिए ह दिंू ूस्िति्र्यि-युद्ध के पिू सह दिंू ूराष्ट्रीय पुनरुत्थान की और ह दिंू–ूपदपादशा ी की जो र िफैी थी, उसके समथकसों का अभिा ि ाँन िींथा। विदेशी दासता से अपनेदेश को मुक्त करनेकी सामथ्य स उत्तरोत्तर बढती ुई मरिी सत्ता में और ह दिंू ूसाम्राज्य की भव्य कल्पना में अतिंयनहस त ै - इस िस्तुक्स्थयत का ए सास िमििाासी आम ह दिंओु िंतथा भूलमपयत, िाकुर और पुरोह ताहद नेताअिोंको ुआ था।

सौभाग्यिश उस समय मिािा के सबसे बडेसस्िथान जयपुर के नरेश सिाई जयलस िं म ाराज ह दिंू–ू स्िति्रिंता के अत्यतिं उत्सा ी समथकस थे। राजा छत्रसिा भी विदेशी शत्रु से अपनेछोटे से राज्य की सुरक्षा करने में असमथ स ुए। उनके सामने य समस्या उत्पन्न ुई कक या तो ककसी ह दिंू ूसम्राट् के आश्रय में र ें या मुसिमान अथिा दूसूरे ककसी गैर-ह दिंू ूशासक की पना िेकर समृदूधध बढाए।ाँ तब उन् ोंनेविचारपूिकस य यनणयस लिया कक हदल्िी के तख्त की गुिामी करते ुए क्जदिंगी बबताने से अच्छा ै कक अपनेप्रातीय स्िाि सको यतिाजिंलि देकर ह दिंू ू

समाज के आदिंनि के प्रयत समवपतस ो जाए, ाँ चा े कफर उस आदिंनि का नेतृति मरिो कर र े ों, लसख या राजपूत कर र े ों या कफर ह दिंओु िंकी कोई उपजायत ी क्यों न कर र ी ो। राजा जयलस िं भी राजा छत्रसिा की तर ी ब ुत दूरूदशी और वििेकी थे।

अत्यधधक कर-भार सेपीडडत ककसान और भूलमपयत, मुसलिम राजसत्ता का अक्स्तत्ि ते ेअपनेधम स और जायत का तेजोभगिं, मानभगिं और शक्क्तभगिं क्जन् ें बरदाश्त से बा र ो गया था- ऐसे िाकुर, पुरोह त तथा मिािा की राजसत्ता के अत्याचारों से पीडडत सभी ह दिंओु िंके राजा जयलस िं ह तधचतिंक थे। उन् ोंनेउनको अपनी मुक्क्त के लिए मरािों की स ायता िेनेका उपदेश ककया। उस समय मुसलिमों का सामना कर उन् ें नेस्तनाबूद करने और सभी ह दिंओु िंको सगिंहित करने की सामथ्य सिाके मरािा-मडिंि के पास ै- य इस समझदार राजपूत राजा ने जान लिया था। खुद अगुआई करके मुगि राजसत्ता की दासता से ह दिंओुंकी मुक्क्त का म ान् ्काय सन ी िं कर सकते तो कम-से-कम अपनी व्यक्क्तगत आकाक्षिंाओं का त्याग करके और देशह त में बाधक बननेिािी प्रादेलशक द्िेष- भािना तथा सकिं धचत मानलसकता को दूरू भगाकर य म ान् ्काय सकरनेिािों का साथ देना ि अपना कतव्सय समझते े थे।

उनके इन विचारों का समथनस मिािा के प्रयतक्ष्ति िाकुर नदिंिाि मडिंिोईजी ने बडेउत्सा से ककया। मिािा के ह दिंओु िंकी ओर से उन दोनों ने मरािों से बातचीत शुरू की। ह दिंधूम सके सम्मानाथ सऔर म्िेच्छों को भगाने के लिए उन् ोंनेमरािों को मिािा आनेका यनमत्रिंण हदया। मिािा क्स्थत अपने स धलमयसों के इस आह्िान को मरािों ने तुरिंत स्िीकार ककया और थोडे ेसमय में ी बाजीराि के अनुज धचमाजी अप्पा के नेतृति में मरािी लसप सािारों ने सब तरफ से उस प्रातिं पर धािा बोि हदया। ि ाँके मुगि सूबेदार ने यथासभिं सेना एकत्र की; िेककन िापस िौटने का मरािों का इरादा बबिकुि न ी िं था। उधचत मौका लमिते ी उन सबनेमुसिमानों पर धािा बोि हदया और दिास के सग्रिंाम में मुगि सूबेदार को ी मार डािा।

अपनेसमृद्ध प्रातिं को इतनी स जता से यतिािंजलि देना बादशा को गिारा न ीं था। मरािों से िो ा िेनेके लिए उसनेदूसरा सूबेदार यनयुक्त ककया और दूसरी तरफ ह दिंओु िंके प्रयत स ानुभूयत रखनेिािे मिािा के ह दिं ूमरािों के पक्ष में जा लमिे।े मुगि सूबेदार ने एक खतरनाक योजना बनाकर अपनी विशाि सेना की स ायता से माडिंिगढ और दूसरी घाटी में मरािों का सिनसाश करनेकी भरपूर कोलशश की; िेककन मिािा क्स्थत ह दिंओु िंकी मदद से मरािों ने उसके मसूिंबों पर पानी फेर हदया। मल् ारराि, वपािजी और धचमाजी अप्पा ने उसकी नाक में दम कर हदया। अतिंतः मरािों ने िोम षकस युद्ध करके मुसिमानों का सिनसाश ककया और सूबेदार को मार डािा।

य दूसरी विजय–िाता ससुनते ी मिािा के ह दिंओुं के षोल्िास की सीमा न र ी। मरािे ज ा ाँभी गए, उनका जोरदार स्िागत ुआ और सहदयों तक पराजय तथा मानभगिं की पीडा स न करनेके बाद हदखे विजयी ह दिं ूध्िज के दशनसमात्र से ह दिं ूमन गद्गद ो उिा चारों ओर उत्कट देशभक्क्त तथा जातीय विजय की भािना हदखनेिगी।

जयपुर नरेश जयलस िं अपने एक पत्र में सबसे प िइस पवित्र काय सकी सफिता के लिए िडीिनिीरों के प्रयत आभार प्रकट करते े ुए और मरािों का अलभनदिंन करते े ुए लिखतैं-" आपने बडा उपकार ककया। सचमुच, आपकी विजय अद्वितीय ै। आपनेविदेशी शत्रु को भगा हदया, मिाा क्स्थत ह दिंओुंको मुक्त कराकर और ह दिंधूम सतथा ह दिंूायत के सम्मान को पुनः प्रयतक्ष्ट्ति ककया।"

इस जीत के बाद मरािों ने ि ााँतुरिंत सुव्यिस्था स्थावपत की। सभी मुगि अधधकाररयों को टाकर तथा मरािी साम्राज्य का एक भाग ोनेके नाते ेउस प्रातिं पर मरािी शासन करने िगे।

िेककन इतनी यनराशाजनक पररक्स्थयतयों में भी हदल्िी के मुगि बादशा ने आशा न िीछोडी थी। उसने मो म्मद खान बगिंश नामक नए सूबेदार की यनयुक्क्त मिाा में की। बगिंश रोह िा पिान था और युद्धनीयत में कुशिता के कारण ि मुसिमानों के बीच 'रणशादूिि' नाम से प्रख्यात था। मुगि बादशा की राजसभा से उसे े आदेश लमिा था कक प िे ेबुदिंेिखडिं में 'गडबड मचाने िािे' े तेजस्िी छित्रसाि म ाराज की कमर तोड दे और उस विजय का िाभ िेते ुए मरािों को मिाा छोडकर भागने के लिए मजबूर कर दे।

मो म्मद खान बगिंश ने बुदिंेिखडिं पर मिा ककया। ि ााँके यनिालसयों ने राजा छत्रसाि के नेतृत्ि में सगिंहित ोकर मुसलिम सत्ता का िचस्ि अनदेखा कर हदया था और िे अपनेप्रातिं में स्ितत्रिंता का सुखोपभोग करते ेर े थे। छत्रसाि को लशिाजी म ाराज पर बडा गि सथा। िे ी उसके प्रेरणास्रोत थे और उसनेउनको गुरु एििं मागप्रदशकस मान लिया था। ह दिंू–स्ितत्रिंता के काय सको ईश्िरी काय समझकर उसका प्रचार बुदिंेिखडिं में करने का अपनेगुरु के उपदेश का पिान उसनेबडी यनष्ट्िा सेककया। विदेशी दासता से अपने प्रातिं को मुक्त करने के लिए एििंह दिंधूम सतथा देश की रक्षा के लिए उसनेऐसेप्रचडिं और यशस्िी प्रयत्न ककए कक उसके देश बाधिंिों ने उसे े 'ह दिंधूम सकी ढाि' नामक उपाधध से सम्मायनत ककया।

िेककन अब ि िृद्ध ो चुका था। ऐसी क्स्थयत में इस छोटे से ह दिंू ूराज्य का नामोयनशान लमटाने ेके इरादे से उससेशतगुना सामथ्यिसान रोह िे ेपिानों के दि का मिा उसपर ुआ था। लशिाजी म ाराज, श्री समथ स रामदास स्िामीजी और प्राणनाथ प्रभुजी के ह दिंू ूसगिंनिों की सीख में पिृद्ध िीर छत्रसाि की दृक्ष्ट्ट इस सकिंट काि में बाजीराि की ओर जाना स्िाभाविक ी था, क्योंकक तब मरािा-मडिंि के सेिापि स ोनेके नाते ेलशिाजी म ाराज की न िक सामथ्य सकी, बक्ल्क उनके अितारी काय सकी भी क्जम्मेदारी उन् िीपर थी। छत्रसाि ने बाजीराि को एक मालमकस पत्र भेजा, क्जसमें अपनेह दिंओुं की कोमि भािनाओंको उत्तेक्जत करनेिािी पौराखणक कथा का उल्िेख ककया। सभी ह दिंू ूएक-दूसरे के बधिंु ु ैं और पूरी ह दिंूायत एक राष्ट्र ै-ऐसी उत्कट भािना ह दिंओु िं के अतिं:करण में जाग्रत् ्करने की क्षमता इस दिंतकथा क्जतनी ककसी और कथा में न िीं थी। छत्रसाि बाजीराि को लिखते े ैं-

'जो गतत ग्राह गजेंद्र की सो गतत भतय है आज।

बाजी जात बुदिंलन की राखों बाजी लाज ॥'

(-बाजीरि सा ब, आइए और पुराण कि में क्जस प्रकार भगिान् ्विष्ट्णु ुने गजेंद्र को मगरमच्छ के पाश से मुक्त ककया था, उसी प्रकार दुष्ुट्ट शत्रुओ ुिंके पाश से मुझे ेछुडाइए।)

लशिाजी म ाराज के पुराने लमत्र और अनुयायी ोनेके नाते ेछत्रसाि मुसलिम जुल्म से त्रस्त ोकर 'म ैं आपका स धमी ह दिंू ू ूँ इसलिए मेरी स ायता कीक्जए' - ऐसी याचना करते े ी इस देशभक्त के काय सकी खायतर दुसु्सा स करने के लिए मरिो तत्पर ो गए। तुरिंत मल् ाररि और वपिाजी जाधि को साथ िेकर बाजीरि सत्तर जार सैन्य के साथ विद्युत् ्िेगे से यनकि पडे। ृिद्ध ह दिंू िीर छत्रसाि और उनकी भेंट धामोरा में ुई। अब तक के सिंग्राम से बची ुई बुिंदेिा सेना को उसने साथ लिया और बाररश के मौसम में भी अपना आक्रमण जारी रखा।

मो म्मद खान बिंगश इस उपिक्ब्ध पर फ़ूिा न ी िंसमा र ा था कक छत्रसाि को अपनी राजधानी को छोडकर भागना पडा और उसनेउसके छोटे से ह दिंू ूराज्य पर बडी आसानी से विजय प्राप्त कर िी। विजयोन्माद में चूर बिंगश बाररश रुकने तक आराम करना चा ता था और उस सत्ता का उपभोग करने के खयिाि पुिा पका र ा था; िेककन इधर ह दिंू ूसेना घनघोर िषा,स घने जिंगि, दुिघ्ांय प ाड आहद की परि ककए बगैर अचानक मो म्मद खान बिंगश पर टूट पडी और जैतपुर नामक जग पर उसे ेघेर लिया। मरिों ने घेरा डािकर, मिा बोिकर और अतिंतः परास्त कर इस मुसलिम रण शादूसि की ऐसी गत बना डािी कक अपने प्राण बचाने ेके लिए उसे ेविजयी ह दिंू िीरों के ाथों पूरा मािा और बुिंदेिखिंड सौंपकर रणभूलम से मु ँ चुराकर भागना पडा। विजयी मरिों की तोपों की गगनभेदी गडगडा ट तथा स्िागत गजनसािौंके साथ ृिद्ध बुिंदेिा नरेश ने बडे िाट-बाट से राजधानी में प्रिेश ककया।

य ृिद्ध िीर मरिों की इस स ायता के लिए ऐसी कृतज्ञता से भर उिा कक उसनेबाजीरि को अपना मानस-पुत्र मान लिया। अतिंकाि में भी इस ररश्ते ेको याद रखकर उसनेराज्य का तीसरा ह स्सा बाजीरि के नाम कर हदया। बाजीरि की पीढी के ह दिंुओ िंने जो काय सककए, उनकी लसद्धध के पीछे ककतने उदात्त उद्देश्य तथा प्रेरक भािनाए ाँथी िंऔर पररणामतः व्यक्क्तगत एिं िंसकुिंधचत दृक्ष्ट से िे ककतने ऊपर थे, जायत-धम-सरक्त के बिंधनों से म अखखि ह दिंूजायत सेबिंधे गए ैं- य भािना उनमें ककतनी प्रबि थी और ककसी भी िात में स्ितिंत्रता प्राप्त करके एक सामथ्यशसािी ह दिंू–साम्राज्य का यनमाणस करने की प्रेरणा उनमें ककस तर जगी थी- य प्रमाखणत करने के लिए य एक मालमकस उदा रण ी पयाप्सत ै।

मािा प्रािंत से मुसिमानों के इस तीसरे सूबेदार के पिायन करते े ी मरिो उस प्रािंत के सत्ताधीश बन गए और ह दिंू ूस्ितिंत्रता सिंग्राम को मुगि साम्राज्य के हृदय-स्थि तक प ुँचाने के लिए उन् ें सामररक दृक्ष्ट से सिथसा योग्य जग भी लमि गई।

इस तर के सिंग्राम जब मािा और बुिंदेिखिंड में चि र े थे, तब गुजरात में भी मरिा िीरों के शस्त्रों को तथा कूटनीयतज्ञों के दािँ-पेचों को म त्त्पूण सऔर धचरस्थायी उपिक्ब्ध प्राप्त ो र ी थी। वपिाजी गायकिाड,

किंिजी बाडिेंऔर अिंत में स्ििंयिं धचमाजी अप्पा ने गुजरात में मुगि सेना को इतना परेशान ककया कक ि ाँके मुगि सूबेदार को उनका सामना करना पडा और मरािों को चौथ एिं िंसरदेशमुखी देनेका िादा करना पडा। इस अपमानजनक क्स्थयत के कारण मुगि बादशा कुरुद्ध ो उिा। उसनेगुजरात से मरािों को यनष्ट्कालसत करने की क्जम्मेदारी अभयलस िं को सौंपी। इस अभयलस िं की िृवृत्त धमालसभमानी जयलस िं के एकदम विपरीत थी। अपना उल्ॢू साधना और मान बढाना ी उसका मुख्य िक्ष्य था। इस तर की कूपमडिूंक िृवृत्त का ी य पररणाम था कक राजनीयतक स्तितिंत्रता ेतु चिाए जा र े आिदोंिनि में ह दिंुओ ुिंका नेतृतिू करने की अपनी अक्षमता प चाननेकी दृक्ष्ट्ट उसके पास न िींथी। ह दिंू–साम्राज्य की स्थापना करने के उदात्त काय सके लिए अगर ककसी ह दिंू ूराजसत्ता ने अपनी क्षमता प्रकट की तो लसफस मरािा-मडिंिि। िेककन आत्म-प्रयतष्ट्िा केिि ाच में अधिें बने अभयलस िं को य सीधी सी बात भी समझ में न िींआई। इसलिए गुजरात में मरािों का विरोध करने की सनक में बातचीत के ब ाने उसनेवपिाजी गायकिाड को ह दिंुओ ुिंके पूज्य तीथस्सथान डाकोरजी, ज ा ाँदगा ोनेकी ह दिंुओ ुिंको यक्त्किंधचत् ्भी आशिंका न िींर ी ोगी, में बिुिाया और धोखे से उनकी त्या करिा दी। इस तर राजपूतों का िचनभिंग और उस स्थि की पवित्रता किकिंकत करने का यनदिंनीय काम उसने ककया; िेककन जल्दी ी उसे ए सास ो गया कक मात्र एक घृखृणत काय स ी उसके ाथों न िीं ुआ ै, अवपतु एक आत्मघाती गिती भी ो गई ै। कारण य कक ककसी स्थान पर धोखे से अपनेनेता की त्या कर हदए जाने से मरािा डरनेिािेिा तप्रभ ोनेिािेन िींथे। युद्ध, मारपीट और मृतूयु- ये सब उनके बचपन सेी साथी थे और पीढी-दर-पीढी उनका पािन-पोषण सब तर की सुरक्षा िािो ेघरों में न िीं, बक्ल्क खुिे रणमैदान में ुआ था। बुदिेंखिडिं और मािा की तर गुजरात की ह दिंू ूजनता ने भी मरािों को बार-बार बिुिा भेजा। य बात ध्यान में रखने िायक ै कक उन् ें मरािों के प्रयत मेशा

सियुद्धनुभीएक्चरयी थीग्राससत्तमिकामिकी तो उन् ोंने प्रत्यक्ष में मरािों के झडिें मछुआरे, भीि, िाघरे आहद पराक्रमी ह दिंूजूायतया ाँअपने आदरणीय वपिाजी की त्या से अत्यिंत क्षुब्ध ो उिेऔर उनके खून का प्रयतशोध िेने के लिए मुगि सेना पर आक्रमण की तैयारी करने िगे। सभी हदशाओंसे मरािी सेना आनेिगी। उन् ोंनेमिा करके ई.स. १७३४ में िडोदरा पर जीत ालसि की और अभयलस िं के लिए ि ाँि रना असभिंबिना हदया। तब से िडोदरा ी मरािों की राजधानी बन गई। इसी बीच दमाजी गायकिाड ने सीधे जोधपुर पर मिा बोि हदया और अभयलस िं को अपना पुश्तैनी राज्य बचाने ेके लिए गुजरात से तुरिंत यनकि जाने पर मजबूर कर हदया। उधर अभयलस िं के जाते े ी दमाजी ने अचानक अपना रुख बदिकर कणािासती (अ मदाबाद) को जीत लिया। इस तर शा.स.िं १६५७ (ई.सिं. १७३५) में मरािों ने ककसी भी मुगि सूबेदार का गुजरात- आगमन असभिंिी न िीं, अवपतु अियिंछत भी बना हदया; क्योंकक उस प्रातिं का कोई भी ह स्सा मुगि साम्राज्य का ह स्सा न िींर गया था।

ह दिं म ासागर की मुक्क्त के लिए

अमात्य रामचद्रिं पतिं लिखते े ैं- "नौ-दि स्तितिंत्रिं राज्य का ी ह स्सा ै। क्जसके अमात्य पास नौसेना ै, उसका ी अधधकार उस समुद्र पर ै। जि-दुगों पर क्जनका स्ालिमत् था, उनको नए जि-दुगों का यनमाणस करके राया गया।"

ह दिंुओिं की भूलम की स्तितिंत्रिंता के लिए मरी क्जस प्रकार इस सग्रिंाम की पररधध मुगि साम्राज्य के क्षिस्थि तक बढा र े थे, उसी प्रकार पक्श्चम हदशा सेआक्रमण करर्नेिी दुश्मनों के आधधपत्य से ह दिंुओिं के समुद्र को मुक्त करने के लिए भी एडी- चोटी एक कर र े थे। अपनेराष्ट्रीय उत्पात के बाद थोडे े ी समय में मरािों को पता िग गया था कक मारी भूलम जीतकर उस पर स्ालिमत् जिताने ििो मुसिमानों की ी भायाँत मारे समुद्रों को अयतधथ भेंट देने ििो ेयूरोप के व्यापारी राष्ट्र भी उतने ी घातक ैं। 'आज्ञापत्र' में दज सयनयम और

लसद्धातिं पढने सेपता िगता ै कक लशिाजी म ाराज और उनके अनुयायी (मरिों) पक्श्चमी समुद्रतट क्स्थत प्रातिं के विषय में यूरोपीय िोगों की िािच और म त्त्िाकाक्षिंाओिं को यनष्ट्फि करने के लिए ककतनी दृढता से प्रयत्न कर र े थे। य आज्ञापत्र एक तर सेराजनीयत पर लिखखत यनबधिं ी ै। इसे ेप्रलसद्ध मरािा नेता और राजनीयतज्ञ रामचद्रिं पतिं ने रचा ै और मरािी प्रधान मडिंि के प्रस्ताि के अनुसार राजाज्ञा-पत्र के नाते ेसबकी जानकारी के लिए इसे ेप्रचाररत ककया गया था। लशिाजी म ाराज ने समुद्रतटों पर क्स्थत र तर की विदेशी सत्ता उखाड फेंकने का यथासभिं प्रियत्न उस पररक्स्थयत में ककया। उन् ोंने समृद्ध नौसेना की ििींि रखी और उसकी स ायता के लिए

सब तर की युद्ध-सामग्री सेपररपूण सजि-दुगों का यनमाणस ककया। इन् िींजि-दुगों ने ह दिं ूम ासागर की स्तितिंत्रता पूरे सौ िषों तक सुरक्षक्षत रखने ेका अमूल्य काय सककया।

राजाराम म ाराज के कायकसा में औरिंगजेब नेअपने आक्रमणों से पूरा दक्षक्षण ह दिंसु्थान कुचि डािा था। ऐसी पररक्स्थयत में सगिंहित और केंद्रीभूत राजसत्ता चिाना नामुमककन था। अतः प्रत्येक मरािी सेनानायक ज ा ाँऔर क्जस तरीके सेसभिं था, स्तितिंत्र रूप से शत्रु का मुकाबिा करनिेगा। उस समय समुद्रतट से मुगिों को भगाने की क्जम्मेदारी कान् ोजी आग्रिं,े गुजर और अन्य प्रमुख मरािी समुद्र सेनानायकों पर आ पडी। य क्जम्मेदारी उन् ोंनेइतनी दक्षता सेयनभाई कक अग्रिंजों, पुतगसालियों, डच, लसद्हदयों या मुगिों को पृथक्-प्रथक् या कभी-कभार एकजुट ोकर भी मरािी नौसेना को यनयबिंत्रत करना एि िंउसका नाश करना सभिं नि ीं ुआ। अग्रेंजों के कब्जे िाि ेबबिंई बदिंरगा सेमात्र सिो मीि दूरू खादिंरी द्िीप मरािी नौसेना के सेनापयत कान् ोजी आग्रिं ेके कब्जे में था। इसलिए अग्रेंज डरे र ते ेथे। मरािी सत्ता के उदय के प ि ेकाफी िषों से पक्श्चम ककनारे पर पुतगसालियों ने अपना राज्य कायम कर रखा था। जजीिरा के लसद्हदयों का मुसलिम राज्य भी ब ुत सामथ्यशसािी था। अग्रेंज जानते ेथेकक मरािा नौ- सेनानायक इन दो बाधाओ िंसे जैसे े ी पार पा िेगा, उनका यतया-पाचाँ करने में जरा भी देरी न िींकरेगा।

इन सभी शत्रुओिं से अपनेप्रातिं की रक्षा करने के लिए विपुि सेना रखना कान् ोजी आग्रिं ेके लिए आिश्यक ो गया था। इन सैयैनकों का िेतन देने के लिए उसे ेपक्श्चमी समुद्रतट पर व्यापार करनिेािी सभी नौकाओ िंसे चौथ िसिू करनी पडती थी । इन समुद्रों का स्िामी खुद को मानने का मरािों का तकस युक्क्तसगिंत था। इसलिए उनकी स मयत सेया स मयत के बगैर समुद्रतटों पर भ्रमण करनिेािे ेविदेलशयों से अपनी सीमा में चौथ िसिू करना बबिकुि उधचत था। िेककन दूसूरे यूरोपीय देश और अग्रेंज उनका य अधधकार मानने के लिए कदावप तैयार न िींथे। ऐसे में उन् ें सबक लसखाने ेके लिए कान् ोजी आग्रिं ेने मािि और व्यक्क्तयों सह त उनके ज ाज जब्त कर लिये और चौथ िसिू ककए बगैर उन् ें मुक्त करने से इनकार कर हदया।

शाालिाि न िसिंत् ्१६३० में बबिंई के गिनसर पद पर चाल्स सबून की यनयुक्क्त ोने के बाद उसनेकान् ोजी आग्रिं ेके समुद्री दुगु सनष्ट करने का यनश्चय ककया। इसके लिए उसनेमे नत तो ब ुत की, िेककन उससेकई गुना ज्यादा शेखी भी बघारी। उसने एक सशक्त नौसेना का गिन ककया और तुरिंत मरािों के विजय दुगु सपर िमिा ककया। अग्रेंज गुस्सेसे उबि र े थे। मरािों के लिए कुक्त्सत भािना प्रदलशतस करनिेािी नाम उनकी रणनौकाओ िं को हदए गए थे। एक का नाम िंटर (लशकारी), दूसूरी का ाकाँ (बाज), तीसरी का ररिंज (प्रयतशोध) और चौथी का

विक्टरी (विजय) था। इस सशक्त नौसेना के सरिंक्षणाथ सअग्रिंजी सैयनकों से बनी एक पिटन तैयार थी और उसके जररए दुगुों पर भूलम-माग ससे आक्रमण करने की योजना थी। शा.स.िं १६३९ में इन रणनौकाओं ने विजय दुगु सके

परकोटे पर तोप के गोिों की बौछार शुरू की; िेकेकन मरािी परकोटे कोई मोम से बने ुए न िीं ोते-य अदिंाजा उन् ें ो गया। उन बौछारों का थोडा भी असर उन परकोटों पर या उनके रक्षकों पर न ीं ुआ। परकोटे की दीिारें प िे ेजैसी ी पायेदार (बनी) र ी।िं अग्रिंजों की कोलशश बेकार ोती देखकर परकोटे के स ारे सुरक्षक्षत र े मरािों के

चे रे पर उनके लिए परर ास की भिाना झिकनेिगी। झल्िए ुए अग्रिंजों ने सीहढयााँगािाकर परकोटे पर चढना शुरू ककया; िेककन उनकी य कोलशश भी काम न ीं आई। य ााँभी अपनी दाि न ी ि िगते देखकर अग्रिंज तोत्साह त ोते े ुए िापस िौटनेिगे। य देखते े ी मरािों ने अपनी तोपों से ऐसी मार शुरू की कक क्जस तत्परता से अग्रिंज ि ा ााँप ुाँचे थे, उससे ज्यादा तत्परता सेपिायन करने िगे।

अगिे ेसाि चार्ल्स सबून ने खािदेंरी पर मिा ककया, िेककन उसका श्र प िेजैसा ी ुआ। समुद्र पर मरािों की सत्ता से ह दिुस्थान क्स्थत अग्रिंजों को धीरे-धीरे द शत ोनेिगी कक उसके यनिारणाथ सइिंग्िडैं के राजा को चार विशाि िडाकू नौकाओं के स्ितिंत्र दि का यनमाणस करना पडा। रॉयि नेिी में ख्यातनाम िररष्ठ अधधकारी कमाडिंर मैथ्यू को इस दि की कमान सौंपी गई। विफिता की आशिंका न र े- इसलिए उसनेमरािों पर आक्रमण करने में मदद के लिए पुतगसालियों को आमिंत्रत ककया। उन् ोंनेइस न्योते ेको स ष सस्िीकार कर लिया। शा.सिं. १६४३ (ई.स.िं १७२१) में इन समथ सयूरोपीय राज्यों ने मरािों पर सामूह क रूप से मिा ककया, िेककन इन मिों में मरािे भूलम और समुद्र - दोनों ी मोचों पर इतनी कुशितापूिकस और शूरता से िडे कक उनके परकोटे िााँघना यूरोपीय सेना के लिए नामुमककन ो गया।

ऐसी विषम क्स्थयत से खीझकर कमाडिंर मैथ्यू खुद आगे ेबढा, िेककन ककसी मरािा बरछैत के बरछे का लशकार बनते-बनते ेबच गया। उसकी जााँघ में बरछे से घाि ो गया। उसनेउस बरछैत को अपनेघोडेतिेरौंदा और कफर दोनों वपस्तौिें उस पर तान दीं; िेककन उसके दुभाुग्सय से उनसे ेगोिी यनकिी ी न ी।िं इस सामूह क दि के लसपा ी भी अभागे ेयनकिे। मारेंगेया मरेंगे- य िानकर उन् ोंनेमरािों पर आखखरी मिा ककया और सीहढया ााँ गािाकर परकोटे िााँघने की कोलशश करने िगे। मरािों नेइस मिे का मुकाबिा इतनी कुशिता और मजबूती से ककया कक यूरोपीय सैयनकों को अपनेप्राण थेिी पर िेकर भागना पडा।

उसी समय मरािों के दूसूरे दि ने जमीन पर से पुतगसालियों पर मिा ककया। पुतगसािी सेना ह म्मत ारकर अपनी जान बचाने के लिए इधर-उधर भागनेिगी। इसके तुरिंत बाद अग्रिंजों ने भी पुतगसालियों का अनुकरण ककया और अपनी युद्ध-सामग्री विजयी मरािों को सुपुदस करके चिते ेबने। अग्रिंजे और पुतगसािी अपनी सेना के रणविमुख ोनेके बाद पराजय की क्जम्मेदारी एक-दूसूरे पर डािनेमें िगे। इससे ेइस सयिंुक्त सेना की बची-खुचुी ह म्मत भी खत्म ो गई और अग्रिंजे मुबिंई में तथा पुतगसािी चौि में यनकि गए। इसके बाद ब ुत हदनों तक अग्रिंज इस आशिंका में कक चौथ िसूिने के ब ाने आग्रिंउनके व्यापारी जिपोतों का रण कर िे जाएगा- उन् ें नौसेना की यनगरानी में िे जाने िगे। कुछ हदनों बाद अग्रिंजी जिपोत (विक्टरी) भी उसी प्रकार नाकाम ुआ क्जस

प्रकार अग्रेंज सेनापयत अपनी वपस्तौ में गोलिया ाँभरना भूिने के कारण नाकाम ुआ था। अग्रेंजों का दूसूरा जिपोत 'प्रयतशोध' शत्रु ुका नाश करने के बदिे ेस्यि िं ी चौथ िसूिी के लिए मरिों द्िरा पकडा गया। मौकापरस्त डचों ने विजय दुगु सपर सात बडे युद्धपोत, विस्फोटक पदार्थों से भरे ुए दो जिपोत और सेना का एक दि िकर मिा ककया; िककन मरिों के धैय सरूपी प ाड से लसर टकराने के शिाा उनके ाथ कुछ न िींिगा। मरिों के िृद्ध नौसेनानी ह दिं ूसमुद्र पर अपना स्िालिमत् कायम कर बेरोकटोक सचिंार करने िगे। उन् ोंने और उनके राष्ट्र ने समुद्र में य पराक्रम तब हदखाया जब जमीन पर कोंकण में लसद्दहदयों के साथ, दक्षक्षण में यनजाम के साथ तथा गुजरात, मिाा और बुदेंिखडिं में मुगिों के साथ िगातार िडाइया ाँचि र ी थी।िं

शाििा न सिंत् ्१६५१ के आस-पास कान् ोजी आग्रें ेका यनधन ो गया। उसी समय पूरे मरिा-मडिं को प्रभावित करिेनी क्जस ऐयत ालसक प्रभािशािी व्यक्क्तत् का उदय कोंकण के राजकीय क्षेत्र में ुआ, ि थे े बाजीरिा, धचमाजी अप्पा और शा ू म ाराज समेत जारों छोटे-बडेव्यक्क्तयों के गुरु ब्रम् ेंद्र स्िामी धिाडशीकरजी । मरिा नेताओं के क्षुद्र मनोविकारों के उफान से बचाकर म ाराष्ट्र की जनता के मन में जि र ी ईश्िरीय काय सकी ज्योयत सदैि प्रज्िलित रखने ेमें यनस्सदेंि उनका म ती योगदान था। उस समय समाज में मत-मतातिंरों की प्रबिता थी, ककिंतु स्िधम सऔर स्िराज्य के ध्येय का नैयतक और आध्याक्त्मक म त्त् सिसामान्य जनता के मन पर अकिंकत करने में ब्रम् ेंद्र स्िामी धिाडशीकरजी का इस्तेमिा ो सका। ि यनस्सदेंि देशभक्क्त की उदात्त भािना से भरे ुए थे। अल्पायु में ी उन् ोंनेजप-तप आहद से अिौककक योगशक्क्त अक्जतस की थी। र सिा ि एक म ीना जमीन में समाधधस्थ र ते ेथे। श्री रामदास स्िामी की तर अखखि ह दिंसुथान में उन् ोंनेभ्रमण ककया था और सब तरफ हदखाई देनेिीह दिंओु िके पररिािंर और गिुामी के नजारे ने उन् ें अदिंर तक झकझोर हदया था। उनके अतिं:करण में धधकनेिी देशभक्क्त की ज्िािा का पररितनस दािानि में करने के लिए िा के मात्र एक झोंके की जरूरत थी। य काम जजंीरे की मुसलिम राजसत्ता ने ककया। मरिों के कट्टर शत्रु ु लसद्दी जान चुके थे ेकक मरिों की सत्ता अगर ऐसे ी हदन-ब-हदन मजबूत ोती गई तो अिैध तरीके से कब्जाया गया कोंकण का राज्य उन् ें जल्दी ी छोडना पडेगा। इसलिए कोंकण के ककनारे ोनेिी िडाइयों में ि मेशा अग्रेंज, डच या पुतगसालियों के पक्ष में शालमि ो जाते ेथे ेऔर मरिी प्रातिों पर धािा बोिते ेथे।

िकि ेइवूल सरकेसिउस्कोंष्पिसुिंष्ट न िीं ोती थी। धमपसरायण मुसलिमों की तर प ुँचकर सैकडों ह दिं ूिडकेंि–डककयों को भगाते ेऔर उन् ें बिपूकस धमातांररत करते ेथे। ह दिंओंुपर अत्याचार करना और उनके महिंदर त स-न स करना ी उनका काम था। ब्रम् ेंद्र स्िामीजी ने क्जस परशुराम महिंदर में तपस्या और ध्यान- साधना की थी, ि महिंदर भी उनके विध्िसिं-काय से ेअछूता न िींर ा। लसद्दहदयों ने उस महिंदर का एक-एक पत्थर यनकािकर उसे ेनष्ट ककया। उस महिंदर के खजाने की सारी सपिंवत्त उन् ोंनिूट िी और ि ा ाँके ब्राह्मणों पर जुल्म ककया। इस जुल्म से ब्रम् ेंद्र स्िामीजी के मन में साक्त्िक क्रोध की ज्िािा भडक उिी। ह दिं ू साधु-सतिंों की तो अच्छा, बुरा या कफर दोनों के प्रयत समभिा रखने ेकी मानो आदत ी बन गई थी; िककन इस अत्याचार के कारण य खोखिी भािना उनके मन से पूरी तर यतरोह त ो गई। उन् ोंने अपना पूरा जीिन ह दिं–ू स्िातिंत्र्य समर की स ायता करने और ह दिं ूसस्िंकृयत की प्रस्थापना के काय समें खपा देने का यनश्चय कर लिया।

उस प्रातिं में उनकी इतनी प्रयतष्ठा थी कक खुद लसद्दी को भी उन् ें मेशा के लिए दुश्मन बनाए रखने ेकी ह म्मत न िीं ुई। उसनेस्िामीजी से परशुराम क्षेत्र में ी यनिास करने की विनती की तथा य आश्िासन हदया कक भविष्य में उन् ें कोई भी तकिीफ न िींोगी। 'तुमने भगिान् ्और ब्राह्मणों पर जुल्म ककया ै' क कर स्िामीजी ने उसकी बात न िींमानी। खुदु आग्रिें ेभी उनका हृदय-परिितनस करके कोंकण में र ने के लिए उन् ें मना न िींसके।

"य ााँयनिास करना तो दूरू, क्जस भूलम पर पाखडिी परदेलसयों का राज ै, उस भूलम के पानी की एक बूदूाँ भी न ी िंपीऊाँगा। म ैंकोंकण में जाऊाँगा जरूर, िेककन इस अत्याचार का प्रयतशोध िेने के लिए। सन्नद्ध ुई ह दिंू ू सेना का अगुआ बनकर ी जाऊाँगा"- य क कर स्िामीजी सातारा यनकि गए। ि ा ाँउन् ोंनेह दिंओु िंके अन्य धमीय दुश्मनों, विशेषकर जजिंीरा के लसद्दी और गोिा के पुतगसीजों के खखिाफ धमयुसद्ध का उपदेश देना प्रारिंभ ककया। उनका पत्र-व्यि ार अब सामान्य पािकों को भी उपिब्ध ै। उससेजाह र ोता ै कक मराठों का राज्य स्ितिंत्र करने तथा ह दिंधूम सकी रक्षा के लिए रणदिेी की आराधना करने की यनश्चय रूपी जो अक्ग्न कश्मीर से िेकर कन्याकुमारी तक मराठों के मन में प्रदीप्त ुई थी, उसे ेधैयपूसिकस प्रज्िलित रखनेका म ान् ्काय सस्िामीजी करते ेर े।

छत्रपयत शा ू म ाराज और श्रीमतिं बाजीराि पतिंप्रधान-दोनों ी स्िामीजी के लशष्य थे। उन् ोंनेकोंकण के ककनारे लसद्दहदयों के अत्याचार का प्रयतशोध िेनेका यनश्चय ककया और मराठों के दूतू कोंकण में लसद्दी तथा पुतगसालियों के खखिाफ जिंग छेडनेकी कूटनीयत रचने में व्यस्त ो गए। कफि ाि उन् ें हदल्िीं से िेकर अकाटस तक फैिी सभी विरोधी सत्ताओं का मुकाबिा करना पड र ा था। अतः िे कोंकण में िडाई छेडनेके मौके की ताक में र े। सयोंग से उसी िक्त लसद्दी के बेटों में राज्याधधकार को िेकर झगडेोंनेिगे और उनमें से एक तो मदद माागँने के लिए मराठों की शरण में आया।ि ााँके मराठों के सेनापयत ने इसे ेअच्छा मौका समझकर स ायता करने का िचन हदया। और मराठों की कूटनीयत की सफिता की सूचना शा ू म ाराज को दी।

य धचरप्रतीक्षक्षत समाचार लमिते ी शा ू म ाराज फूिे न िींसमाए। उन् ोंने उल्लिसत ोकर बाजीराि को पत्र लिखकर आज्ञा दी -"पत्र बाद में पहढए, प िे ेघोडे पर सिार ोइए, कफर पत्र पहढए।"

मराठों के इस आक्रमण का प्रारिंभ शा.स.िं १६५५ (ई.स.िं १७३३) में ुआ। मराठी सेना ने सह्याहद्र से नीचे े उतरकर तिा घोसािा के दुगु सपर कब्जा ककया और मुसलिम सेना को एक के बाद एक रणक्षेत्र में पराक्जत करके लसद्दी के समूचे ेराज्य पर कब्जा कर लिया। जूि ी बाजीराि ने जबरदस्त मिा कर रायगढ भी िापस िे लिया। इस प्रलसद्ध दुगु सपर लशिाजी म ाराज की राजधानी थी। उनका राज्यालभषेक य िीं ुआ था। मराठी स्ितिंत्रता-सग्रिंाम इतनेहदनों तक चिने के बािजूद अभी तक ि यिनों के कब्जे में ी था। लशिाजी म ाराज की राजधानी का य पािन स्थान पुनः अपने अधधकार में आनेकी खबर सुनकर पूरा म ाराष्ट्र षोल्िासि से भर गिा।

उधर मराठों का सागर-विजय अलभयान भी कोई कम न िींथा। जि युद्ध में मानाजी आग्रिें ेने लसद्दहदयों के जिपोत नष्ट कर डािे। मराठों की इस बढत से अग्रिेंजों के भी मन में द शत बैि गई। उन् ोंनेलसद्दी शासक

को प िे ेपरोक्ष और बाद में प्रत्यक्ष रूप सेशस्त्र तथा बारूद देकर उसकी स ायता की। इतना ी न िीं, अित में कप्तान िाडेन के नेतृत्िू में ब ुत सारी सेना मरािों के खखिाफ िडने के लिए भी भेजे दी; िेककन खडिंजी नर र खडे, े मोडे, मोह ते ेआहद मथुराबाई आग्रिें, े औरतों ने भी िगातार यनष्ठापिूकस िडाई जारी रखी। मथुराबाई आग्रिें ेका

ब्रम् ेंद्र स्िामी के साथ ुआ पत्र- व्यि ार पढने से पता िगता ै कक विदेशी लशकिंजेसे अपने देश को छुडाने के लिए

इस देशालभमानी औरत का हदि कैसा छटपटा र ा था और शत्रु ुके कब्जे ेसे छुडाए गए दुगु सपर तथा नगर पर

फ रमने हिंदंदुध्वज को देखकर उसका हृदय देशालभमान से ककतना उल्लसित ो र ा था।
इस तर िपोर्तुगिज सथ युद्ध चिला र ा। आखखर चैत्र शु. ५/१६५९ (ई.स. ि १७३७) में धचमाजी अप्पा स्िि ि कोंकण पधारे और उन् ोंने रिास में समस्त अबीसीयनयाई सेना पर विजय प्राप्त की। क्जसने परशुराम महिंदर ध्स्ति करके उसकी पवित्रता नष्ट की, उस अरबी शत्रु ुका, जर्जीरा के लसद्दी का लसर किम कर हदया गया। उस क्ति उसके साथ ी चदिंरी के मुसिमानों का सरदार और मुसिमानों के पक्ष में िडािनेी ग्यार जार सैयनक मृत्यु का लशकार बन गए।

समूचे कोंकण प्रातिं ने, पूरे म ाराष्ट्र ने, अपने धमशसत्रु पर इस तर विजय पाकर ह दिंजूायत का गौरि बढािनेी सेनापयत पर धन्यिादों की बौछार की। शा ू म ाराज को बडी खुशी ुई। उन् ोंनेलिखा- "जर्जीरा का लसद्दी एक दैत्य था। ि रिाण का ी प्रयतरूप था। उसे ेमारकर मने सभी लसद्हदयों को पराक्जत ककया ै। तुम् ारी कीयत सकी सुगधिं सभी हदशाओंिमें फैिी।" छत्रपयत ने युिा धचमाजी अप्पा को राजसभा में आमबिंत्रत करके उन् ें ब ुमूल्य िस्त्र, उप ार आहद देकर सम्मायनत ककया। इस युद्ध के अगुआ ब्रम् ेंद्र स्िामीजी की मनःक्स्थयत शब्दातीत ै। झगडों के दौर में जब-जब आपसी प्रयतस्पधा सअथिा यनरथकस कि के कारण मरािों के प्रयत्नों में लशधथिता आती, तब-तब अपने देश और धम सके प्रयत कतव्सययनष्ठा उनके हदि में जाग्रत् ्कर और इस म ान् ् काय सका नैयतक तथा आध्याक्त्मक स्िरूप मेशा उनके मन में प्रयतबोधधत कर उन् ें अपने यनश्चय पर अडडग रखने ेका काम स्िामीजी ने ककया। िे इस दुविुधा में फाँस गए कक इस अतुिनीय विजय के लिए परमेश्िर को धन्यिाद दें अथिा अपने प्रख्यात लशष्ट्य को। परशुराम की पवित्र भूलम को विदेलशयों के पापी स्पश से ेमुक्त कराने में, ह दिंधूम सका काय सअबाधधत रखने ेमें आखखरकार उन् ें यश प्राप्त ुआ।

'शामलाचिी क्षितत केली। कोंकणात िम मराफ़्खला

इस प्रकार लसद्दी को परास्त कर कोंकण के ककनारे की मुसलिम सत्ता मरािी साम्राज्य के अधीन कर दी गई। पररणामस्िरूप इसके बाद पुतगसालियों को मरािों से अकेि े ी टक्कर िेनी पडी। ह दिंसुथान का प्रातिं तो उन् ें अनायास प्राप्त ुआ था और खबिंात से िेकर लस ििि द्िीप तक का सपिूंण सपक्श्चमी ककनारा उनके यनयत्रिंण में आ गया था; िेककन मरािों की सत्ता का उत्कष स ोनेके बाद पुतगसालियों का िचस्सि घटने िगा। उन् ोंनेह दिंसुथान में जो धालमकस जुल्म ककए, अपराध के दिंड के नाम पर जो अत्याचार ककए, िे मुसिमानों के अत्याचारों से कम यघनौने न िींथे। पूरी एक शताब्दी तक राजनीयतक दासता और धालमकस जुल्मों से त्रस्त ुई ह दिंजूायत ने जब देखा कक लसद्दी शासकों के राज्य के अपने देश-बाधिं दासता की बेडडयों से मुक्त ोकर स्ितित्रिं नागररकों की ैलसयत

से सचिंार कर र े ैं, तब स्ाभिाविक रूप से गोिा के ह दिंू ूभी अपनी मुक्क्त के लिए मरािी सेना के आगमन की प्रतीक्षा करने िगे। उत्सा , देशभक्क्त और मरािों के आगमन की उम्मीद की ि र से ि ा ाँके सभी ह दिंू ूगद्गद ो उिे पुतगसािी धम सलशक्षिाय के कोंकण प्रातिं यनिासी सभी ह दिंओु िंको रौंद डािनेके जो लसरकफरे प्रयत्न चि र े थे, उनका जोरदार प्रयतकार गोमातिंक यनिासी ह दिंू ू ी करनिेगे।

अपनेराज्य की सीमा के नजदीक ोनििेािी शस्त्रास्त्रों की आिाज सुनकर और बाजीराि की िगातार विजय-प्राक्प्त देखकर पुतगसालियों के पिाँ तिेसे जमीन खखसकने िगी। यनराशा से ुए मयतभ्रशिं के कारण पुतगसालियों ने ह दिंू ूसगिंनि के आदिंोिनि को कुचिना और उनके मन में उहदत आशा तथा प्रयतकार की भािनाए ाँ नष्ट करना प्रारिंभ ककया। पुराने िेखों में इसका िणनस इस प्रकार ै-" उन् ोंनेह दिंू ूभूलमपयतयों के विस्तीण सक्षेत्र उनसे ेबिपिूकस छीन लिये, उन् ोंनेगािाँ के गािाँ धमभ्रसष्ट कर डाि;े ह दिंू ूबािकों का अप रण ककया और उनका धमातांरण ककया, क्जन् ोंने धमातांरण करने से इनकार ककया, उन् ें कारािास की या मौत की सजा दी। स्ाभाितः ब्राह्मण उनके गुस्सेका प्रमुख लशकार बने। उन् ोंनेब्राह्मणों को उनके ी घरों में बदिंी बना हदया। ह दिंओु िंद्िारा कोई भी धालमकस विधध सािजसयनक रूप सेकरना गुना समझा जानिेगा। अगर कोई ह दिंू ूऐसी धालमकस विधध करने का दुस्सा स करता तो तुरिंत उसका घर घेर लिया जाता, उसके पररजनों को पकडा जाता और उनको ईसाई बनाने के लिए अथिा उनकी त्या करने के लिए या कफर उन् ें गुिाम बनाकर बेचने ेके लिए धम सके न्यायािय में भेज हदया जाता था।"

इस तर जुल्म-पर-जुल्म बरदाश्त करते े ुए भी ह दिंओु िंने पुतगसािी शासकों के अमानिीय कृत्यों का प्रयतकार जुझारू िृवृत्त से करना जारी रखा। पुतगसालियों की क्रोधाक्ग्न में जारों ह दिंू ूजिकर खाक ो गए। आखखरकर ह दिंू ूसमाज के नेताओिंने, िसई और दूसरे गािाँों के देशमुख िोगों ने बाजीराि तथा शा ू म ाराज के साथ गुप्त मत्रिंणाएाँकरना प्रारिंभ कर हदया और साथ ी य अनुरोध भी ककया कक उन् ें मुक्त कराने के लिए िे युद्ध करें तथा ह दिंू ूस्ाततिंत्र्य की, धम सकी और देश की प्रयतष्िा अबाधधत रखें।

मिााड के सरदेसाई अतिंाजी रघुनाथ िािकोब ुत शूर और िोकवप्रय ह दिंू ूयोद्धा थे। ह दिंओु िंके सािजसयनक रूप सेधालमकस विधध-विधान करने पर पुतगसालियों की पाबदिंी का खुिेआम विरोध ककया। साथ ी अपनेआधश्रतों को इस विरोध के लिए उकसाया था। स्ाभाविक ी था कक िे पुतगसालियों के अत्याचारों का लशकार बन गए। उन् ें धगरफ्तार कर लिया गया। उनकी सारी जागीरें छीन िी गईं और उन् ें गोिा की धालमकस अदाित में मातााँक यातनाए ाँभुगतनेके लिए भेज हदया गया; िेककन सौभाग्य से िे ज्िे से फरार ोने में कामयाब र े और सुरक्षक्षत रूप से पुणे ेप ुाँच गए। ि ााँउन् ोंनेएक गुप्त योजना तैयार की। उन् ोंने बाजीराि को िचन हदया कक पुतगसालियों के प्रदेश में मरािे जैसे े ी प ुाँचेंगे, िैसे िािे ााँके िोगों को िेकर उनसे आ लमिेंगे,े मरािी सेना के लिए मागप्रसदशकस का काम करेंगे ेऔर र प्रकार से उसकी मदद करेंगे। उन् ोंनेबाजीराि से क ा कक पुतगसालियों की अधीनस्थ समस्त ह दिंू ूजनता मानती ै कक परधमी शत्रु ुका स िंार करने के लिए आपने (बाजीराि ने) अितार

लिया ै और अधम सके प्रकोप सेत्रस्त भूलम क्जस प्रकार अपनी मुक्क्त के लिए ईश्रि से दया की भीख मागाँती ै, उसी प्रकार ह दिंू ूप्रजा बडी आशा से आपके आगमन की प्रतीक्षा कर र ी ै।

इसी समय उत्तर हदशा में बडी-बडी समस्याए ाँ ि करने के लिए िडाइया ाँचि र ी थी।ि दीघकसिा तक चििनेिाी हदक्ग्जियों की आपाधापी के कारण बाजीरिा थक गए थे। कफर भी विदेलशयों के जुल्मों से परेशान अपनेधमबसधिुंओ िके अतिं:करण को द ािनेिाी विनती सुनकर चुपचाप बैना उनके लिए सभिं नि ीथा। उन् ोंने घोषणा की कक इस सिा पुणे में पितसी दिंी का उत्सि र सिा की अपेक्षा ज्यादा बडे पैमैानेपर मनाया जाएगा। उसके ब ाने उन् ोंनेबडी तेजी और उत्सा से, िककन गुप्त तरीके से अनेक मरिी सैयनकों को पुणे में बुिा लिया। सेनानायकों के जमा ोते े ी प्रत्येक को उसकी क्जम्मेदारी सौंप दी गई तथा कोंकण में पुतगसालियों पर आक्रमण करने की योजना को अयिंतम रूप दे हदया गया। प्रमुख सेनापयत के स्थान पर धचमाजी अप्पा की यनयुक्क्त ुई। अतिंजी रामचद्रिं, रघुनाथ, रामचद्रिं जोशी आहद लसप सिाार और योद्धाओंको अिग-अिग मोरचा सभाँानेे का क्जम्मा दे हदया गया।

शािलिा न सिंत् ्१६५९ में मरिी सेना ने िाणे के ककिेपर आक्रमण ककया। पुतगसालियों ने यथासभिं प्रयतकार ककया, िककन अतिंत: उन् ें धथयार डािनेके लिए वििश ोना पडा। जोशीजी ने धारवि तथा पारलसक पर और शकिंराजी केशि ने अनािसा के दुगु सपर फत पाई।

मरिों को िगातार लमिनेिाी इन सफिताओं को देखने ेके बाद गोिा के प्रमुख शासक की नीदिं राम ो गई। उसनेइन िडाइयों को चिाए रखने ेके लिए अतीयनओ नामक पराक्रमी सेनापयत को यनयुक्त ककया। इतना ी न ीिं, जोश-खरोश से भरी सेना का एक दि भी यूरोप से बुिाया गया। इसके दि आते े ी अतीयनओ ने िाणे ेके ककिेपर पुन: अधधकार करने की योजना बनाई। इसके लिए चार जार पुतगसािी सैयनकों का जत्था शूर मेड्रोमिो के नेतृत्ि में यनकि पडा। इधर िाणे की रक्षा का क्जम्मा भी ककसी कमजोर सेनोपयत के ाथों में न ी िं था। अनुभिी और पराक्रमी मल् ाररिा िोकर ि ााँमौजूद थे। ऐसी क्स्थयत में पुतगसालियों का मिा और मरिों का प्रयतकार- इन दोनों में से ककसी भी एक को कम करके न ीिंआकाँा जा सकता था। आखखर मरिों ने अपनी तोपों की मदद से पुतगसािी सेना को इतना बद िा कर हदया कक उनकी शक्क्त धीरे-धीरे क्षीण ोनेिगी। य देखकर उनका िीर नेता उनमें कफर शौय सजगानेका प्रयत्न करनेिगा। तभी मरिों द्िारा ककिे पर से अचूक यनशाना िगाकर छोडा गया तोप का गोिा ि ााँआ धगरा और इसमें मेड्रोमिो मारा गया। अपने सेनापयत की मृत्यु का समाचार सुनते ी पुतगसािी सैयनकों में खिबिी मच गई; भागकर ि े अपनी नौकाओ िंपर जा चढे। आर-पार की एक और िडाई िडकर मरिों ने मा ीम भी उनसे ेछीन लिया। व्यकिंटरिा घोरपडेतो गोिा के राखोड तक पीछा करते ेजा धमके। पुतगसािी सत्ता का अिंत अब स्पष्ट हदखनेिगा।

उसी समय नाहदरशा के आक्रमण की खबर आ प ुाँची। भारतिष सको, स ी मायने में विदेशी आक्रमणों का प्रयतकार करने में सक्षम एकमात्र ह दिंू ूसत्ता अथात् स ्मरिों को क्जन भयानक सकिंटों का सामना करना पडा, उनमें य सकिंट सबसे बडा था। नाहदरशा के आक्रमण के कारण पुतगसािी सेना को नया जीिन प्राप्त ो गया।

बाजीरि ने अपनी सिव्सयापी दृक्ष्ट सेपररक्स्थयत का आकिन ककया और लिखा- "इस समय पुतगसालियों का सामना करना ज्यादा म त्त्पूिण सन िीं ै। अब समूचे ेभारत का एक ी शत्रु ै और उसके विरुद्ध ह दिंसुथान की सारी ताकत इकट्ठा किरनी चाह ए। म ैंअपनेमरािा िीरों को नमदसा से िेकर चबिंि तिक फिैिा दूाँगा। कफर देखगूाँ कक नाहदरशा दक्षक्षण में कैसे प्रिेश करता ै।"

उन् ोंनेन िकेि मरािा-मडंि किा बक्ल्क राजपूत, बुदिेि आहद अखखि ह दिंू ूसमाज का सयिुंक्त सगिंनि बनाने ेतु हदल्िी, जयपुर और उत्तर ह दिंसुथान के राजदरबारों में क्स्थत अपनेप्रयतयनधधयों के पास सदिेंश भेजे हदए। उस समय के इस मरािी राजनीयतज्ञ का पत्र अब प्रकालशत ुआ ै। हदल्िी की मुसलिम सत्ता सदा के लिए नष्ट कर सपिूंण सभारत के लस िं ासन पर उदयपुर के म ाराणा को अधधक्ष्ठत करने की ह दिंतुि से पररपूण सयोजना का स्पष्ट उल्िेख उस पत्र में ै।

मरािों के प्रमुख के म त्िाकांक्षी मन में अन्यत्र ह दिंओुंकी विजय की बडी- बडी योजनाए ाँबन र ी थीं, इसके बािजूद बाजीरि की साधनानुकूिता यनमाणस करनेकी शक्क्त इतनी प्रबि थी कक इधर दक्षक्षण में िसई को घेरकर पुतगसालियों सेिडने के लिए सेना का बदिोबस्त तथा उत्तर में नाहदरशा को हदल्िी से भगाने के लिए सेना की रिानगी- ये दोनों काम उन् ोंनेएक साथ कर हदखाए। पुतगसािी सेना को य समझने में देर न िगी िगी कक नाहदरशा के आक्रमण के बािजूद उनके गिे पर कसता मरािी ाथों का लशकंिजा जरा भी ढीिा न िीं पडा ै। गोिा के राजप्रयतयनधधयों को िगातार खबरें लमिने िगी िंकक उनके प्रािंत के मजबूत ककिेएक के बाद एक शत्रु के ाथों में चिे ेजा र े ैं। मरािों ने अपनी तोपों का कमाि हदखाकर श्रीगािाँ, तारापुर और ड ाणू ूअपनेकब्जे ेमें िे लिये तथा ि ा ाँकी रक्षक सेना को अपने शस्त्रों की धार हदखाई। आखखर मरािों ने िसई को घेर लिया। इस अभेद्य ककिे े पर आक्रमण करनेिािों तथा उसकी रक्षा करनेिािों के अदम्य पराक्रम की िीर रसोत्पादक गाथा इतनी सिश्रुसत ै कक इस सक्षक्षंप्त ब्योरे में उसके िणनस की कोई आिश्यकता न िीं ै।

इस समूचे प्रािंत की विजय के लिए मरािे बडी भयकंिरता से िडे। िसई के युद्ध का आखोंाँ देखा िा लिखनेिािों के अनुसार बडे-बडेयोद्धाओंने भी अपने-अपने मोरचे पर अडडग र कर मृत्यूको स्िीकार ककया। मरािा योद्धाओ िंके मन में बाजीरि के प्रयत अपनेप्राणों से भी ज्यादा यनष्िा थी। इसलिए उनकी नजर में धगरना कोई भी न िींचा ता था। उन् ोंनेअपनेप्राण न्योछािर कर हदए और िडतेि-िडते ेसमरभूलम पर शयन ककया। सेनापयतयों ने भी यथासमय दे त्याग ककया, पर धथयार न िींडो। मरािों ने मिा ककया, िेककन जबरदस्त ार के बाद उन् ें पीछे टना पडा। उन् ोंनेबार-बार मिेककए और दोनों पक्षों के भारी नुकसान के बाद उन् ें कई बार पीछे टना पडा। उनके द्िारा बबछाई गई बारूदी सुरंगों से कई बार उनके ी सैयनक क्षत-विक्षत ो गए। कफर भी राष्ट्रीय अपमान का प्रयतशोध िेनेके लिए कहटबद्ध और दृढप्रयतज्ञ मरािों ने कोलशश ेंबदिं न िींकीं। ििे

मिमिा ककया, पुतगसालियों ने भी उन् ें उतनी बार परास्त ककया; िेककन र मिे के उपरािंत िे कमजोर ोते ेगए। नाहदरशा आकर िौट भी गया, िेककन घेराबदिंी जारी ी र ी। कफर भी अभी तक िसई पर शत्रु का ी कब्जा था।

आखखर में यनराशा से गुस्से में धचमाजी अप्पा ने गजनसा की - "देखो, अगर िसई में मेरा प्रिेश न ो सका तो कि मेरा लसर तोप के मु ाँ में बाधाँ देना, ताकक कम-से-कम मरने के बाद िसई दुगु समें मेरा प्रिेश ो सके।" उनके इस जोशिी ेआह्िान से मरिी सेना का उत्सा सौ गुना बढ गया। उन् ोंनेप्रयत्नों की पराकाष्ठा कर हदखाई। सिई की ककस्मत तय ो गई। परकोटे की दिीार िाघाँनेके लिए मानाजी आग्रें, े राणोजी, लशदिें तथा मल् ाररा ििकर के बीच प्रयतस्पधा स ोनेगी। उसी समय दिीार में मरिों की िागाई एक सुरिंग फटी और पुतगसालियों के परकोटे का एक अ म ह स्सा ध्िस्त ो गया। मरिी अतुिनीय धैय सके साथ उस ध्िस्त जग पर कूद पडे और उसमें मजबूती सेमोरचा जमा लिया। पुतगसालियों के पराक्रम की ख्यायत पूरी दुयुनया में थी, िेककन उस पराक्रम की सीमा िाघाँने के बािजूद िे मरिों को उस जग से ह िा न िींसके। इसके पश्चात् ्मरिों का प्रयतरोध करना पुतगसालियों के िश का न िीं र ा। दुश्मनों के दुगुरसक्षकों पर मरिों ने तोपगिोिों की बौछार इतनेदृढ यनश्चय से और इतनी अचूकता से जारी रखी कक दीघकसिा से क्जस पररणयत की प्रतीक्षा थी, उसकी घडी आखखर आ ी गई। पुतगसािी सेना शरणागत ुई और कफर िसई के दुगु सपर ह दिंधूम सतथा जायत का मरिी विजयध्िज बडेरुतबे ेसे ि राने िगा। तब पूरा विश्ि मरिों की विजय-गजनसा सेगूजिं उिा।

अब कोंकण का ज्यादातर ह स्सा स्ितिंत्र था। इस आघात के बाद पुतगसािी सत्ता कफर कभी उि न सकी। इसके बाद अन्यत्र म त्िपूण सकायों में मरिों के व्यस्त ो जानेके कारण लसफस गोिा में पुतगसािी सत्ता जैसे–तैसे सुरक्षक्षत र ी। ककसी समय गुड ोप से िेकर पूिी सहदशा में पीत समुद्र तक अपना स्िालमत्ि रखनेिािी पुतगसािी सत्ता को भूलम तथा समुद्र-दोनों पर मरिों ने ऐसा सबक लसखाया कक ह दिंजूायत के विरुद्ध लसर उिाना उसके लिए सिथसा असभिं ो गया।

सहदयों से क्जनके बारे में य धारणा बनी ुई थी कक इनका जन्म मानो शासन करने के लिए ी ुआ ै और उनका गुिाम बनकर र ना ी अपने भाग्य में लिखा ै, िे सब ह दिंओु िंके देश और धम सके दुश्मन मरिों के आगे े तबि ो गए। अपने पराक्रमी िीरों के म ान् ्काय सदेखकर सभी ह दिंू ककतने उल्लिसत ुए ोंगे ेऔर राष्ट्रीय गि सकी भािना, बि तथा अलभमान से िे ककतने गद्गद ुए ोंगे,े इसका अनुमान स ज ी िगाया जा सकता ै। कई शताक्ब्दयों तक पुतगसािी सत्ता के अधीन र े कोंकणिासी ह दिंओुंने गि से िे राने िािी ह दिंधूिजा न िींदेखी थी। इसके साथ ी उन् ोंनेस्ियिं िंखडिंडत न ोते े ुए विदेशी जुल्म का लसर काटकर ह दिंधूम सऔर राष्ट्र पर ककए गए अन्याय का प्रयतशोध िेनेिािी तिािार भी न ी िंदेखी थी। ब्रम् ेंद्र स्िामीजी को इस अभूतपूि सविजय का समाचार देनेिािेिेखक ने जो लिखा, िे उधचत ी ै-"इस तर का पराक्रम, ऐसी क्जद और य विजय उस कािा के कृत्य ैं, जब अपनी धरती पर प्रत्यक्ष देितागण यनिास करते ेथे। य सुहदन देखने ेके लिए जो क्जदिंा र े, िे बडे भाग्यशािी ैं तथा इस विजय प्राक्प्त के लिए क्जन् ोंनेअपना बलिदान ककया, िे उनसे भी अधधक भाग्यशािी ैं।"

नाहदरशा एिंबाजीराि

'देखते हैं कक नाहदरशाह कैसे ेआगे ेबढ़ता है।'

- बाजीराि

कोंकण प्रातिं की य विजय तो देदीप्यमान थी ी, िेककन मराठी खड्ग दूसूरी जग ों पर भी सफि ो र ा था। गुजरात, मािा, बुदिंेिखडिं आहद प्रातिों में विजय प्राप्त करके और ि ााँका शासन सुव्यिक्स्थत करके ह दिंू ूसाम्राज्य का आधधपत्य चबिंतिक फै ानेके बाद ि ी िंअपनेकतृत्िि की इयतश्री मान िेना बाजीराि के लिए सभिंि ी ि ंथा। सुसगंिहित ह दिं–ूसाम्राज्य का विस्तार समूचे ेभारतिष समें करने का िक्ष्य बाजीराि के सामनेथा। ह दिंओु िंके धमक्षेसते्र विदेशी दुश्ुमनों के धमबसाह्य आचरण से किकिंकत कर हदए गए थे। उन् ें यनष्ट्किकं करके स्ितत्रिं करने के लिए उनका मन छटपटा र ा था।

ऐसी क्स्थयत में लसफस कोंकण प्रातिं के परशुराम क्षेत्र को स्िततं्रि करने से उनका काय ससमाप्त ोना सभिंि न िीथा। उस समय काशी, गया, मथुरा आहद तीथस्सथान मुसलिम धमाधांता और प्रभुत्ि से पीडडत थे। इसलिए स्ियं िबाजीराि और उनके मराठा सेनानायकों ने नालसक और पढिंरपुर क्षेत्रों को मुक्त करने के लिए क्जतनी अविराम धचतिंा और आस्था से प्रयत्न ककए, उसी आस्था और धचतिंा के साथ ि इन धमक्षेसत्रों की मुक्क्त के लिए भी सतत युद्ध करते ेर े। कोंकण प्रातिं में मराठों को समुद्र तथा भूलम-दोनों पर अनधगनत विशाि शत्रुओं का सामना करना पड र ा था, कफर भी बाजीराि ने यनडरता से हदल्िी के बादशा को धमकाया कक काशी, मथुरा, गया और इतर धमस्सथानों को मुक्त करने के सबिंधं में अगर मारी मागेंं न िींमानी गईं तो म सीधेहदल्िी पर आक्रमण कर देंगे।

इससेहदल्ली के सभी नेताओ िंकी यघग्घी बधँा गई और उन् ोंनेअपनी सारी ताकत इकट्ठा करने में पूरी जान िगा दी। इस अके ेविद्रो ी पर मुसिमानों के बाईस लसप सिाार टूट पडे। इसके बिाजूद ि जब मरािों के खखिाफ जीतनेमें नाकाम र े, तब उन् ोंने खुद के समाधान के लिए काल्पयनक विजय-गाथाए ँगढ िी िंऔर उनके बारे में बादशा को य अयतरिंक्जत िणनस लिख भेजो कक एक बडी िडाई (जो कभी ुई ी न िीं) में बाजीरा का समिू नाश कर हदया गया और मरािों की िात इतनी दयनीय कर दी गई कक उत्तर भारत से मराा सेना का नामोयनशान ी लमट गया ै।

य पत्र पढकर बादशा खुशी से पागि ो गया। उसनेबडी उदिंडता से अपनेदरबार के मरािी प्रयतयनधध को भगाकर इस अद्वितीय विजय के लिए उत्सि मनानेकी आज्ञा दी।

हदल्ली में घहटत ोनििेकायकसिापों का ितृ्तातिं सुनकर बाजीरा ने िान लिया कक "म ैंअपनेमराा िीरों को हदल्ली की सीमा में िे जाऊँगा और मुसिमान बादशा को उसकी राजधानी में उिती अक्ग्नलशखाओंं की रोशनी में अपना उत्तर हदशा का अक्स्तत् हदखा दूँगा।" और उन् ोंने अपना िचन यनभाया। सतिंाजी जाधि, तुकोजी िोकर, लशिाजी और यशितिंरा पिार की स ायता से िे हदल्ली पर दस्तक देनेिगे। अब बादशा का भ्रम टूट गया। उसनेबाजीरा पर आक्रमण करने के लिए बादशा ी सेना की टुकडडयों को भेजना शुरू ककया; िेककन िे सारी टुकडडया ँमरािों की मार खाकर िौट आईं। आखखर में अपनी जान खतरे में देखकर उस मूख सको- मरािे उत्तर में पूरी तर से परास्त ुए-इस बात पर विश्िास करने की कीमत चुकानी पडी। ऐसा प िी बार ुआ कक मरािा सेना के पराक्रम का ज्िार सीधेहदल्ली के द्िार से जा टकराया और खुिे मुकाबिे में मरािों ने हदल्ली को ह िाकर रख हदया।

मरािा सेना को उत्तर हदशा में लमिा य यश यनजाम को बरदाश्त न िीं ुआ। ि अपनेसाथ चौंतीस जार सेना और ह दिंसु्थान का उस समय का सिोत्कृष्ट तोपखाना साथ िेकर लसरोंज तक आ धमका। ि ााँके राजपूतों ने भी मरािों के खखिाफ उससे ाथ लमिाना उधचत समझा; िेककन यनजाम का पीछा करते े ुए बाजीरा तुरिंत ी ि ााँआ प ुँचे ेऔर अपनेयुद्ध-कौशि तथा शौय ससे उन् ोंनेयनजाम को एक बार कफर इस बात का ए सास करा हदया कक ि 'दुष्ट्ट मरािों' के चगुिं में फँस गया ै। मरािों की यनरिंतर आगे ेबढती सेना से अपनी जान बचाने के लिए उसे ेभोपाि में यछप जाना पडा। उसने अपनी िस्त-पस्त ुई सेना में जान फूिंकने, ककिे ेसे बा र यनकिने और घेरा तोडकर चिे ेजानेकी बार-बार कोलशश की, िेककन उसकी र कोलशश को बाजीरा ने अपनेयुद्ध-कौशि तथा चतुराई से नाकाम कर हदया और उसकी राजपूत तथा मुसलिम - दोनों सेनाओंको मजबूत घेराबिंदी में भूखे ेमरने के लिए वििश कर इस तर उनकी अक्ि हिकाने िाई कक मराा सेनापयत की इच्छानुसार सिंधध कर िेने के अिािा दूसरा कोई विकल्प इस मुसिमानी सेनानायक के सामनेबच्चा ी न ी।ि

इसी िक्त मुसिमानों का एक बडा षड्यत्रिं सफि ुआ और नाहदरशा लसिंधु ुनदी िाधँकर ह दिंसु्थान आ प ुँचा। समाप्तप्राय अपनी सत्ता में कफर सेजान फूिंकने की उम्मीदें मुसिमानों में पनपने िगी।ि यनजाम और औरिंगजेब की परिंपरा में पिे-बढे मुसिमान सरदारों ने विदेशी दुश्मन नाहदरशा का स्िागत बधिंुभाि से ककया।

उन् ें िगा कक दुबिुस ो चुके मुगिों को जो साध्य न िीं ुआ, उसे ेकम-से-कम नाहदरशा तो साध्य कर ी िगा। उन् ें य भी िग र ा था कक नाहदरशा अपनोथों में शक्क्तशािी राजदिंड धारण कर मरािा-मडिंकी बढती ह दिंू सत्ता पर नकेि डािेगा और मुसिमानी साम्राज्य को कफर एक बार शक्क्त तथा िैभि के लशखर पर िे जाएगा। य सब ऐसा ी घहटत्त भी ो सकता था, िेककन बाजीराि के नेतृत्ि में सगिंहित ुए ह दिंुओं ने इस अमानुष विदेशी शत्रु के नेतृत्ि में एकत्र ुई मुसलिम ताकत का मुकाबिा इतने जबदसस्त ढिंग से ककया कक य सब कल्पना ी र गया।

राष्ट्र पर आ पडेइस सिंकट से भयभीत ुए बबना बाजीराि का म त्िाकािंक्षी मन और भी ऊँची उडानें भरने िगा। उन् ें िगा कक नाहदरशा का य आक्रमण एक अथ समें ह दिंुओ िंका सहदयों का इयत ास इसी एक िष समें रचने का एक अनमोि अिसर ै। उत्तर ह दिंुस्थान की अिग-अिग राजसभाओ िंमें उनके जो राजदूत थे, िे सुयोग्य तथा सक्षम थे। मरािों के प्रलसद्ध सेनानायकों ने क्जस कौशि, साम्राज्य-भािना और असरदार तरीके से रणभूलम पर मरािी सेना की काररिाइयाँ चिाईं, उसी तत्परता से मरािों के राजदूतों ने सभी गयतविधधयों पर नजर रखी और िैसी ी कुशिता तथा कतव्सय - भािना से राजनीयतज्ञों के मडिंबनाए। पिार, लशिंदे, गूजर, आिंग्रे ेआहद मरािा सेनानायकों ने युद्धभूलम में क्जतनी म त्ि की विजय प्राप्त की, उतनी ी म त्िपूण ससफिताए ँव्यिंकोजीराि, विश्िासराि, दादाजी, गोविंद नारायण, सदालशि बाािजी, बाबूराि मल् ार, म ादेि भट, ह िंगणे आहद राजनययकों ने राजसभाओंमें अक्जतस की।

ह दिंू–स्िातिंत्र्य की खायतर म ान् प्रयत्नों की, ध्येयों और लसद्धािंतों की परिंपरा िास्तविक दृक्ष्ट से इन् ी िं मरािी राजनययकों ने अक्षुण्ण रखी और प्रशसिंनीय कुशिता से मरािी सेनापयतयों के लिए यशस्िी आक्रमण की भूलमका बना दी। इन म ान् राजनीयतज्ञों और राजदूतों का पत्र-व्यि ार तथा राजकीय दस्तािेज आज मुहद्रत रूप में भी उपिब्ध ै, क्जन् ें पढकर कोई भी व्यक्क्त इन मरािा राजनीयतज्ञों, राजदूतों, सैयनकों और नाविक- िीरों की उन म ान् योजनाओं, आशाओं, आकािंक्षाओ िंऔर म ान् प्रयासों से प्रभावित ुए बबना न ीं र सकता। जो उन् ोंने समस्त ह दिंूजायत की राजनीयतक स्िातिंत्र्य की स्थायी रक्षा के लिए विशािकाय किेि की तर उपयोग में आ सकने िािे सगिंहित ह दिंू साम्राज्य की स्थापना के एकमात्र ध्येय से प्रेररत ोकर रची और मूत सकर हदखाई। औरिंगजेब से सीख िेने िािे मुसिमानी नेताओं, क्जन् ें ह दिंुओंकी उत्तरोत्तर बढती ुई सत्ता खटक र ी थी, ने ह दिंुओ िंके इरादों पर पानी फेरनेके लिए नाहदरशा को न्योता हदया था। उन् ोंनेइस विदेशी आक्रमण की प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप सेस ायता भी की।

िेककन जल्दी ी नाहदरशा को य समझ में आ गया कक शा.स.िं १६६० माघ और शा.स.िं १६६१ चैत्र में क्जस ह दिंू सत्ता सेउसका सामना ोनेिािा ै, उसका स्िरूप पाचाँ सौ साि प िे ेगजनी के म मूद और ह दिंू राजाओ िंका जो सामना ुआ था, उससेएकदम लभन्न ै। जब से मरािे अपनी धम सरक्षा और राष्ट्र-रक्षा ेतु खडे ुए और म अपनेभगिान् श्रीराम तथा श्रीकृष्ट्ण की इच्छाएँपूरी करने के लिए कृतसिंकल्प ैं- ऐसा िानकर युद्ध करने िगे,े तब से ी िे मुसिमानों से सिाई ैं- य लसद्ध ो गया।

"नाहदरशा कोई भगिान् ्न ी िंजो पृथ्िी को नष्ट कर देगा। अपनेसे ज्यादा ताकतिर के साथ ि सधिंध करेगा। इसलिए बिशिी सेना के साथ आइए। प ि ेशक्क्त-परीक्षण, कफर समझौता। अब सारे राजपूत और स्िामी (बाजीरि) एक ो जाए, ाँ तभी पररणाम यनकिेगा। बुदेिा आहद को एकजुट कर अपनी ताकत हदखानी चाह ए। नाहदरशा िापस िौटनेिािा न ी िं ै। ि ह दिंू ूराज्य पर आक्रमण करेगा। सिाई जयलस िं का इरादा उदयपुर के म ाराणा को लस िंासन पर बिाने का ै। अत: सब ह दिंू ूराजे−म ाराजेतथा सिाई जयलस िं उत्किंिा से आपके आगमन की प्रतीक्षा में पिकें बबछाए बि ै। आपका बि लमिते ी जाट फौज हदल्िी पर भेजकर सिाईजी स्यि िंहदल्िी रिाना ोंगे।"

भिनाओंसेभरे ुए उपयुक्सत पत्र मरािी कूटनीयतज्ञों तथा राजदूतों ने बाजीरि के पास लिखे। कनाटसक से िेकर कटक और प्रयाग तक मरािी सेना के बडे-बडे युद्ध- चि र े थे। मरािी राजदूतों ने उत्तर ह दिंसु्तान के ह दिंओु िंके मन में जो प्रबि आशाएाँजगाई थीं, क्जस म ान् ्काय सकी क्जम्मेदारी उन् ोंने िी थी, उसमें उन् ें बाजीरि ने बबल्कुि तोत्साह त न िींककया। अपनेमबिंत्रमडिं के स योगी िोगों के धचतिंातुर िचन सुनकर ि

बिो उिे-"िीर पुरुषो, मन में शकिं ाए ाँक्यों िा र े ो ! सगिंहित ोकर चढाई करो, ह दिं−ूपदपादशा ी का सपना पूरा ुआ ी समझो। म ैंनमदसा से उतरकर चबिंि तिक पूरी मरािी सेना फैिा दूाँगा। कफर देखता ूाँ कक नाहदरशा (आक्रमण के लिए) कैसे ेनीचे उतरता ै।" के कारण ईरान के शा की ह दिंदू्िेषी

प्रयतशोध िेनेके मरािों के इस दृढ यनश्चय म त्त्िाकाक्षिं मुरझा गई। नाहदरशा ने बाजीरि को 'मो म्मदी धम सके अलभमानी' सबिंोधधत करके उन् ें हदल्िी के मुगि बादशा की आज्ञा का पािन करने के विषय में िबिंा-चौडा और मूखतसापूण सपत्र भेजा तथा स्यि िं ोलशयारी से पीछे ट गया। अिबत्ता इस पत्र को मरािों ने रद्दी की टोकरी में फेंका और शा ू छत्रपयत द्िारा शा.स.िं १६६१ में बिुाई गई राजसभा में ऐिान ककया गया कक 'मरािों से डरकर नाहदरशा ह दिंसु्थान से भाग गया।

नाहदरशा के इस तर अचानक रुख बदि िेनेसे यनजाम की क्स्थयत सापाँ छछूदंूर िैसी ो गई। नाहदरशा की ह दिंसु्थान-विरोधी योजना में ि शरीक ुआ और भोपाि में स्ताक्षररत सधिंधपत्र की शतों का पािन उसनेिीक ढिंग से न िीं ककया। इस कारण उसे ेसबक लसखानेके लिए मरािों ने हदल्िी पर आक्रमण ककया; िेककन उसी समय दुभाग्सय सेशा.सिं. १६६२ में मरािों के म ान् ्सेनानायक बाजीरि का दे ािसान ो गया।

ह दिं−ूस्ितिंत्रता के म ान् ्काय सके लिए बाजीरि ने क्जतने मनोयोग और यनष्िा से सफि प्रयत्न ककए, उतनेऔर ककसी ने न िींककए। बचपन में ी उन् ोंनेअपनी जायत तथा धम सके दुश्मनों के खखिाफ अपनी म्यान से जो तििार बा र खीची थी, ि मरते दम तक म्यान से बा र ी रखी। उन् ोंनेअपने प्राण त्यागे, े ि भी ह दिंओु िं के शत्रु ुपर आक्रमण करते ेसमय ी। लसद्दी, रोह िे, मुगि तथा पुतगसालियों पर क्जतने भी कहिन और दीघकसािीन आक्रमण उन् ोंने ककए, उनमें ि कभी विफि न िीं ुए। ह दिं−ूपदपादशा ी का मरािों का सपना यथासभिं जल्दी साकार करने की कोलशश में अपनी जान िडाकर जो अयतमानिी प्रयत्न overline 3 - 6 करने

पडे, उसके कारण ी उनकी अकिा मृतूयु ुई। इससे मरिों के काय सको क्जतना ग रा धक्का प ुाँचा, उतना नाहदरशा के दस आक्रमणों सेभी न िींप ुाँचता ।

नाना और भाऊ

'दशरथ देउतन राज्यश्रीसी रामलक्षमणाधिंचया करी,
प्रभात तारा देउतन जाई कातिंत आपुली सूयकमरी ।
तशीच बाजीराये हहदिंू–स्वातत्र्यिची ध्वजा हदली,
या नरवीरा नानाच्यिा या भाऊिच्या दुदुातम करर ॥'

- म ाराष्ट्र भाट *

(-क्जस तर राजा दशरथ ने राम और िक्षमण को अपनी राज्यिक्ष्मी सौंप दी थी, क्जस प्रकार भोर का तारा अपनी रोशनी सूरज को सौंप जाता ै, उसी तर बाजीरि ने भी ह दिंू–स्ितित्र्यि की पताका नरिीर नाना सा ब तथा भाऊ के बलिष्ट् ाथों में थमा दी थी।)

बाजीरि की मृतूयु ुई, िेककन उन् ोंने मरिों के मन में जो स्फूयत सउत्पन्न की थी, उसका अिंत सभिंि नि था। इसी जोश की धचनगारी ने मरिों को बाजीरि के सुपुत्र बािाजी उपाख्य नाना सा ब और धचमाजी अप्पा के सुपुत्र भाऊ सा ब के नेतृतिू में अधधक कहिन प्रयत्न करने तथा अधधक म ान् ्काय सके लिए प्रेररत ककया। इस समय बािाजी पतिं की उम्र िकेि उन्नीस िष सथी िेककन उस आयुमें भी उन् ोंनेवपता के साथ काम ककया था और पराक्रमी मरिों का नेतृतिू करने की अपनी योग्यता साबबत कर हदखाई थी। उनकी क्षमता से प्रभावित ोकर गुण-ग्रा ी शा ू म ाराज ने इस तेजस्िी युिक की यनयुक्क्त तुरत मरिा साम्राज्य के प्रधानमत्रिी मुख्य पेशिा के पद पर कर दी। यनयुक्क्त का य समारो धूमधाम से सपिंन्न ुआ। इस समारो के उपरातिं शा ू म ाराज ने अपने इस युिा प्रधानमत्रिी को एक आज्ञापत्र थमाया। उस समय क्जस म ान् ्ध्येय को साकार करनेके लिए प्रयि ो र े थे, उनका यनष्ट्कष सकुछ स्फूयतदसायक िाक्यों में इस आज्ञापत्र में इस प्रकार दज सथा-" आपके वपता पूज्य, तीथरूसप बाजीरि स्िामी ने बडी यनष्ट्िापिूकस इस राजगद्दी की सेिा की ै और अन ोनी को ोनी कर हदखाया ै। उनका उद्देश्य ह दिंू ूराज्य की सीमा ह दिंुस्थान के अयिंतम सीमा प्रातिं तक बढाने का था। आप उनके सुपुत्र ैं। उनकी इच्छा आप पूरी करें, उनका िक्ष्य प्राप्त करें और मरिों के अश्िों को अटक के उस पार का पानी वपिाए।ाँ"

---

* म ाराष्ट्र भाट - स्तित्रर्यिीर सिारकर का छद्म नाम। अदिंमान में लिखा उनके ४८१७ पक्क्तियोंीिम ाकाव्य के सग स'गोमातिंक' को 'म ाराष्ट्र भाट' के छद्म नाम से ी प्रकालशत ककया गया था। उसके विजय गीतातोरण नाम के दो पद क्रमाकिं ९४-९५ (गोमातिंक, पृषूट्िं १५७) ।

य राजाज्ञा लशरोधाय सकर भाऊ और नाना नेमरते दम तक और मृतूयु को गिे िगाकर भी लशिाजी म ाराज द्िारा आरिंभ ककए गए इस म ान् ्काय सपर यश का किश चढाने का प्रयत्न ककया। ह दिंू–ूपदपादशा ी ी मानो उनका बचपन का सपना और जिानी की म त्त्िाकाक्षिं थी। उसकी खायतर प्रयत्न करना, युद्ध छेडना और िरिगयत को प्राप्त करना मानो उनके अरमान थे। शा ू म ाराज ने अपनेबचपन में कारािास का िा बादशा के कृपा-कटाक्ष स ते े ुए बबताया था। इसलिए कभी-कभी उनके मन में बादशा के प्रयत यनष्ट्िा और आदर का जो उबाि उिता था, ि भी नाना और भाऊ को स न न िीोता था।

स्त्रिदान (यनयुक्त) समारो सपिंन्न ोते े ी शा ू म ाराज ने बािाजी को पुणे जाने की आज्ञा दी और रघूजी भोंसिे ेको कनाटसक पर आक्रमण करने ेतु भेजनेका यनश्चय ककया।

मुगिों के कारािास से शा ू म ाराज की मुक्क्त के बाद मरािों में जो आपसी युद्ध ुआ, उसका फायदा उिाकर मुसिमानों ने सादत अिी नामक कतृत्ि्िान सेनापयत के नेतृत्ि में दक्षक्षण के सभी प्रातिं कफर से धथया लिये और तजिंाूिर की मरािा बस्ती को पूरी तर से घेर लिया। ऐसी क्स्थयत में तजिंाूिर के राजा प्रताप लस िं ने स्िाभाविक रूप सेशा ू म ाराज सेस ायता मागाँी। सादत अिी शा.स.िं १६५४ में चि बसा और उसका भतीजा दोस्त अिी 'अकाटस का निाब' खखताब धारण कर गद्दी पर बिैा। उसकी सामथ्य सजबरदस्त थी। उसनेमरािों से दुश्ुमनी यनभानेकी कसम खाई थी। सन् ्१७४० के बैसाख मास में मरािों ने दोस्त अिी की सेना को दक्षक्षण में दबोच लिया और चारों ओर से उसपर मिा बोि हदया। कुछ ी समय में मुसिमान सेना नेस्तनाबूद ो गई और

दोस्त अिी रणभूमि में मारा गया। सि ओर मुसलिम अत्याचारों से पीड़ित ि ााँकी ह दिंू ूजनता अपने स धलमयसों की इस विजय सेब ुत खुश ु ुई और ि उनके साथ ो िी। रघूजी ने माग समें पडिनेिी सभी गािाँ तथा श रों से चौथ िसूिते ुए अकासट पर मिा ककया। दोस्त अिी का पुत्र सफदर अिी और दामाद चदिंा सा ब ने िेिौर और बत्रचनापल्िी में बडी सेना के साथ युद्ध की तैयैारी की थी। तभी रघूजी ने य अफिा फैिा दी कक मरािों की आधथकस ायन ज्यादा ोनेके कारण उन् ोंनेमिेका इरादा छोड हदया ै। ि सचमुच ी बत्रचनापल्िी से अस्सी मीि पीछे ट गए। चािाक और सचेत व्यक्क्त चदिंा सा ब भी इस िभ्िुी में फाँस गया। उसनेअपनी सेना से दस जार िोग अिग करके उन् ें ह दिंओुं िके सबसेसपिंन्न मदुरुई क्षेत्रे पर मिा करनेके लिए भेजे हदया।

अपनेबबछाए ुए जाि में मुसिमानों को आसानी से फाँसते देखकर मरािी सेनानायक ने अचानक अपनी हदशा बदि िी और सीधेबत्रचनापल्िी तक प ुाँच गया। पवित्र श र मदुरुई िूटने के लिए बदिंा सा ब को भेजा गया था। उसे ेखबर लमिते ी उसनेअपनेभाइयों की स ायता के लिए आनेकी कोलशश की, िेककन रास्तेमें

ी उसे ेरोकने के लिए रघूजी ने अपनी सेना का एक ह स्सा भेजा। उस सेना ने बदिंा सा ब को घमासान युद्ध में व्यस्त रखा और उसके ाथी से धगराकर बदिंा को मार डाि।

इस तर मुसिमानों का सिनसाश ो गया। उनके सेनानायक की िाश रघूजी की छािनी में िाई गई। मरिी सेनापयत ने उस िाश को अच्छे िस्त्र प नाकर बडेसम्मानपूिकस उसके भाई चदिंा सा ब के पास लभजिा हदया। ब ुत हदनों तक बत्रचनापल्ल्ीि का घेरा पडा र ा। पराक्रमपूिकस नगर की रक्षा करने के बािजूद ि ााँके मुसिमान सेनानायक को ि नगर मरिों को सुपुदस करना पडा। रघूजी ने चदिंा सा ब को युद्धबदिंी बनाकर सातारा भेज हदया और चौद जार सेना को मुराररि घोरपडे के नेतृत्ि में सौंपकर उन् ें बत्रचनापल्ल्ीि की सुरक्षा की क्जम्मेदारी सौंपी। इससे प ि े ी सफदर अिी मरिों की शरण में आ गया था। ि दस िाख की चौथ जमा करे और विशेषकर शा.स.ि १६५८ से िेकर अब तक क्जन-क्जन ह दिंू ूराजाओ ितथा सस्थ्ायिनकों के राज्य उसके वपता ने धथयाए थे, ि सब उन् ें िापस करे, तभी मरिे उसे ेअकाटस का निाब मानेंगे– य करार मरिों ने उसके साथ ककया था।

िेकिन जब दक्षक्षण में रघूजी ऐसी म त्िपूणस विजय ालसि कर र ा था, तभी बगिंाि, बब ार और उडीसा के मुसलिम निाब अिीिदी खान के विरुद्ध बगाित ो गई।

अिीिदी खान के प्रयतदद्िंिी पक्ष के नेता मीर सा ब ने बगिंाि में अपनी स ायता के लिए मरिों को आमबंित्रत ककया। रघूजी के प्रधान भास्कर पतिं कोल् टकर बगिंाि की मुसलिम सत्ता कमजोर करने और ह दिंू ू साम्राज्य ह दिंुस्थ्ान की पूिी सीमा तक विस्ताररत करनेका अिसर तिाश ी र े थे। इसलिए उन् ोंने आमतं्रण स्िीकार कर लिया। ि दस जार घुडसिारों के साथ बरार प्रातिं से चिकर मानो मुसलिम सत्ता को पैरों तिे रौंदते े ुए आगे ेबढे। अिीिदी खान भी कमजोर सेनानायक न िीं था। उसके मिा करते मरिों ने उसकी युद्ध सामग्री नष्ट करके उसके लिए बडी परेशानी खडी कर दी। कटक की ओर प्रयाण करनेके अिािा उसके पास कोई रास्ता न िीं बचा। पीर बीब ने भास्कर पतिं से बडी धचरौरी की कक बरसात का मौसम खत्म ोनेतक ि बगिंाि में ी यनिास करें तथा शत्रु के प्रातिं सेकर िसूिी करके अपनी काररिाइयााँ चिाए।ाँ

उसके बाद मरिों ने मुलशदसाबाद पर मिा ककया और ुगिी, लमदनापुर, राजम ि और गगिंा के पक्श्चम में बगिंाि का सारा भाग जीत लिया। कािी माता ने ह दिंुओं पर कृपादृक्ष्ट की और बगिंाि के धमाधं मुसिमानों का धालमकस मद नष्ट ककया। इसलिए मरिों ने कािी माता का धालमकस उत्सि बडी धूमधाम से मनाने का यनश्चय ककया। अचानक अिीिदी खान ुगिी पार करके आ प ुाँचा। उसनेमरिों पर मिा करके बगिंाि की सीमा तक उन् ें पीछे खदेड हदया, िेककन उसकी य विजय अल्पकािीन ी साबबत ुई, क्योंकक रघूजी जल्द ी िापस िौट आए और अन्य मराििाह नी के साथ बािाजी पतिं भी बब ार में आ धमके।

बािाजी पतिं ऊपर से तो मुगि बादशा की मदद के लिए आए थे, िेककन उनके ि ााँआने का िास्तविक उद्देश्य मरािा-मडिं की स ायताथ सबब ार पर चौथ िगाना और रघूजी भोंसिे ेसे अरसे ेसे ककया अपना िादा पूरा

करना था। आपसी सामजिंस्य के मामिे ेमें मरिी एकमत थे।े बिााजी पतिं चिेगए और भास्कर पतिं ने र्िाौदी खान से भारी धनरालश तथा चौथ की मागाँ की। युद्ध में भास्कर पतिं का सामना करने में खुद को अक्षम पाकर र्िाौदी खान ने अपने स्िभािा के अनुसार कुहटि नीयत का र्िबिंन ककया। कफरौती की रकम के बारे में चचा स करने के ब ानेउसनेभास्कर पतिं को मरिाा-मर्डिके प्रयतयनधध तथा अपनेमे मान के रूप में अपनी छािनी में आमबिंत्रत ककया और योजनापूिकस 'काकफरों की त्या करो' का शोर ोते े ी उन पर मिा करिाकर उनका िध कर हदया। उस अभागे ेहदन बीस मरिाा अधधकाररयों को अपने प्राण गाँिाने पडे। उनमें से अकेि ेरघूजी गायकिाड ी बच पाए। अचानक आई इस विपदा से डबडाई मरिी सेना को विदेलशयों के प्रातिं से और अपना दिाँ सफि ोने के कारण जोश में आए शत्रु की मरिों को घेरकर उनके टुकडे-टुकडे कर देनेकी भरपूर कोलशशों का सामना करते े ुए िी उन् ें बचाकर यनकिा िे गए।

क्जस आधाँी को औरिंगजेब अपने साम्राज्य के सभी साधनों का प्रयोग करने के बािजूद रोक न िींसका, िइस तर की इक्की-दुकुकी त्याओंसेअथिा अचानक मिे से रुकनेिािी न िीं थी; िेककन मूख सर्िाौदी खान इस बात को समझ न िींसका। उसनेरघूजी को उद्दिंडतापूिकस इस आशय का ास्यास्पद पत्र लिखा- " अल्िा ो अकबर, उसकी कृपा से धमयसनष्ट् िोगों के घोडों को अधलमयसों के शस्त्रों का अब कोई डर न ी।िं जब इसिाम के लस िं मूयतपूसजक राक्षसों की कमर तोडगें ेऔर उन् ें अपनेदाताँों में तृणृ दबिा र शरण में आनेके लिए मजबूर करेंगे,े तभी सधिंध ोना सभिं िोगा।" उद्दिंडता से भरे इस पत्र का जिाब रघूजी ने हदया कक "र्िाौदी खान से दो- दो ाथ करने के लिए मरिी एक जार मीि की यात्रा करके चिेआए, िेककन मरिों का मुकाबिा करने के लिए इसिाम के इस लस िं की ह म्मत सौ गज भी आगेबढने की न िीं ुई।" ऐसा जिाब देकर रघूजी ने इस मूखतसापूण सिाग्युद्ध पर विराम िगाया और मरिी सैयनकों को िधमसान (बदसिान) तथा उडीसा पर चढाई करने िए िेकर िसूिने का आदेश हदया। इस तर मरिों ने र्िाौदी खान को र िष सपरेशान करना जारी रखा। ज ा ाँसे भी सभिं ुआ, उन् ोंने कर िसूि ककया और अन्य स्थानों से अपनी िडाइयों के खच सके लिए भारी मात्रा में धनरालश िसूि की। अपनी सुविधा के अनुसार िे युद्ध करते ेथे। इस तर मरिों ने मुसिमान सूबेदार के लिए बगिंाि, बब ार और उडीसा - तीनों प्रातिं का राजकाज चिाना मुक्श्कि कर हदया। पराजय तथा आपवत्तयों से िे ह म्मत ाररनेिािे न िींथे। उन् ें उनकी चौथ र िात में लमिनी चाह ए थी।

अतिं में शा.सिं. १६७२ में इसिाम का य शेर र्िाौदी खान इन 'काकफरों' से एकदम आक्जज आ गया। इनसे ेकभी भी सामना ो सकता ै-इस डर से और अब िािे भगिान् ् ी इनसे ेबचाएाँ - ऐसा सोचकर िे भोंसिों की शरण में आ गया। उसने भास्कर पतिं की त्या के कायरतापूण सकृत्य के दिंड के रूप में उडीसा प्रातिं मरिों के र्िािेकर हदया। बगिंाि और बब ार पर चौथ के रूप में उसेदस िाख रुपए सािाना भुगतान करने की सधिंध करनी पडी। इस तर इन 'धमयसनष्ट्' िोगों को आखखरकार मूयतपूसजक शैतानों के सामनेदया की भीख मागाँनी पडी।

इधर बगिंाि में मुसलिम सत्ता का नामोयनशान लमटाने ेके रघूजी भोंसिे ेके प्रयत्न सफि ो र े थे, उसी समय दूसरे मरिाा सेनानायक भी उत्तर हदशा के मुसलिम सत्ताधीन दूसरे कक्िेऔर राज्य ढ ानेका तेजस्िी

पराक्रम कर र े थे। यमुना सेिकर नेपाि की सीमा तक का सारा इिाका धमाधां रु िों और पिानों के कब्जेमें था। उनकी एकजुटुता देखकर हदल्िी के मुगि बादशा का िजीर घबरा गया। उसने पिानों के मुगि साम्राज्य का नाश करके उसके स्थान पर अफगानी साम्राज्य कफर कायम करने की म त्िाकांक्षी योजना विफि बनाने की कोलशश में मरािों से स ायता की याचना की। मरािों की सारी कोलशशेंभी तो मुसलिम सत्ता को उखाड फेंकनेके लिए ी चि र ी थी िंऔर उन् ी िंके अथक प्रयत्नों के कारण मुगि साम्राज्य की िात इतनी खराब ो गई थी। ऐसे
में उस सत्ता का नाश करने का श्रेय कोई अह दिंू ूअथिा दूसूरे मुसिमान प्राप्त करें - य भिा मरािे कैसे ेबरदाश्त कर सकते थे। इसलिए उन् ोंने िजीर की य याचना स ष सस्िीकार कर िी। यमुना नदी के ककनारे कादरगजिं के पास पिान मोरचा बाधेँ ेबिै थे।े मरािा िीर मल् ारराि िोकर और जयाजीराि लशदिें ने यमुना नदी पार कर उन पिानों पर िमिा बोि हदया। पिान बडी िीरता से िडे, िेककन उन् ें ार माननी पडी। मरािों ने उनकी सेना को नाकों चने ेचबिा हदए। इतना ी न िीं, पिानों का सबसेबडा सेनानायक अपनेसाधथयों की स ायता के लिए आ र ा था, तो मरािों ने उसकी विशाि सेना पर भी िमिा कर उसे ेघेर लिया।

अ मद खान ने फरुसखाबाद में आश्रय लिया, िेककन मरािों ने ि ाँजाकर उस नगर को भी घेर लिया। य यनणायसक युद्ध कई सप्ता जारी र ा; िेकेकन पिान काबू में न िींआ र े थे। गगिंा के दूसूरे ककनारे रु िों की एक बडी फौज जमा थी। उससे पिानों को र तर की मदद लमि र ी थी। य ध्यान में आते े ी मरािों ने बडी कुशिता से गगिंा नदी पर ककक्श्तयों का सेतु बना लिया और मौका देखकर गगिंा पार कर गए। मरािी सेना का कुछ ह स्सा फरुसखाबाद की घेराबदिी को अनिरत जारी रखे ुए था। उधर गगिंा पार गई उनकी मुख्य सेना रु िों एिं पिानों की एकत्र ुई तीस जार सेना पर टूट पडी और घमासान युद्ध में उसे ेपराक्जत कर हदया। अ मद खान ने फरुसखाबाद से पिायन करने की योजना बनाकर मरािों की बची ुई सेना को उिझाए रखने ेकी कोलशश की। िेककन उसकी य योजना विफि र ी। मरािों ने ी उसका िगातार पीछा ककया। आखखरकार, मरािों ने मुसिमानों का पूरी तर खात्मा कर हदया; उनकी छािनयाँ िूट िी िंऔर अनधगनत ाथी, घोडे, ऊाँट, ध्िजाहद अपनेकब्जे ेमें िे लिये।

इस युद्ध में प्रदलशतस रणकौशि क्जतना ऊाँचे ेदरजे का था, उतना ी म त्िपूण सउसका नैयतक प्रभाि भी पडा। इसकी िज य थी कक पिानों ने अपनेआक्रमण को धालमकस मुिम्मा देनेके लिए और मरािों को धचढाने के लिए बबना मतिब काशी तीथक्षेसत्र पर आक्रमण ककया और काकफर िोग पिानों से िो ा िेनेकी ह म्मत कर ी न िींसकते - ऐसी शेखी बघारते ुए उन् ोंनेह दिंओु िंके मह्िंदरों तथा पुजाररयों पर अनधगनत अत्याचार ककए। उनकी य शेखी एक तर से सच्ची साबबत ुई। मरािों के लिए उनका मुकाबिा करना सचमुच ब ुत मुक्श्कि र ा। इसका कारण य था कक मरािों से मुकाबिा ोते े ी िे मु ाँ फेर िेते थे। जग -जग मुसिमानों को पराक्जत कर और उन् ें पिटकर िार करनेका बबिकुि ी मौका न देकर ह दिंओुंको इस बात का सतिोष ुआ कक उन् ोंने अपनेदेिस्थानों के बिज अपमान का प्रयतशोध िे लिया। इस कािखडिं में लिखे ेगए सभी पत्रों में इस आत्मगौरि की झिक लमिती ै-"पिानों ने श्रीकाशीजी तथा प्रयाग को भ्रष्ट ककया, ककिंतु अित में ररभक्तों की ी जीत ुई। दुश्मनों ने काशी में जैसा बोया, फरुसखाबाद में िैसा ी उन् ें काटना भी पडा।"

इस विजय के राजनीयतक पररणाम भी नैयतक पररणामों क्जतने ी म त्त्पूिण ससाबबत ुए। मुगि बादशा की सारी अकड ढ़ीिी पड जानेके कारण उसनेमरािों को साम्राज्य के सभी बचे ुए प्राितों से चौथ िसूिने का अधधकार दे हदया। मरािों के लिए य अगुँिी पकडकर प ुँचा पकडने जैसी ी बात थी! इस मुल्तान (लसधिं), पजिंाब, राजपूताना, रो ह िखडिं आहद प्राितं मरािों के अधधकार क्षेत्र में आ गए और रभक्त मरािी भािा सीधे हदल्िी के बादशा के हृदय में उतरनेके यश का गुणगान गि से कर सके। इस म त्त्पूिण सउपिक्ब्ध की खबर पाते ी मरािा-मडिं िके प्रमुख, पतंप्रधान (प्रधानमत्री) बािाजी पतिं ने अपनी सेना को य स्फूयतदसायक पत्र लिखा - "आपका धैय सअतुिनीय ै, आपकी िीरता अनुपम ै। दक्षक्षण की मरािी सेना ने नमदसा, यमुना तथा गगिं ा पार करके रु ि े तथा पठानों जैसेशक्क्तशािी और मदमस्त शत्रु को चुनौती दी, उनके साथ युद्ध ककया तथा उन् ें परास्त ककया। सैयनको िीर अधधकाररयो ! आपकी विजय सचमुच अिौककक ै। आप ह दिं ू-साम्राज्य की िीि ैं, स्रिाज्य के स्थापनकता सके रूप में आपकी कीयत सईरान और तूरान तक प ुँच गई ै।" (शा.स.ि १६७३)

इतना यश अक्जतस करने के बाद मरािा-मडिं िके सेनानायकों ने अयोध्या के निाब और हदल्िी के िजीर से काशी तथा प्रयाग तीथस्सथान एक बार कफर िापस िेने का प्रयत्न ककया। ह दिं ू-स्िातत्र्य के म ान् प्रयत्नों का प्रयतयनधधत् उनके क्जम्मे आया था। ऐसेमें ह दिंओुं के ये सबसे पवित्र धमक्षेसत्र अब भी मुसिमानों के कब्जे में बने र ने का काटाँ स्िाभाविक रूप सेउन् ें चुभता था। तत्कािीन पत्र पढने के बाद इस विषय में मरािों की बेचैनी स्पष्ट रूप से समझ में आती ै। इस मागँ के सबिंधं में चि र ी बातचीत के कारण ो र े वििाद से झल्िाकर मल् ाररा िोकर ने तो एक बार काशी पर आक्रमण कर ज्ञानिापी की पवित्र भूलम पर क्स्थत मसक्जद को लमट्टी में लमिाकर ह दिं ू जनता तथा ह दिंधूम सपर िगा ुआ य किकं लमटा हदया। कारण य कक ि ाँखडी ि मसक्जद यनराशा के क्जस किखडिं में बनाई गई और उस पर मुसिमानों का अद्धसचद्रिं ह दिंओुंको धचढाता ुआ िराने िगा, उस किखडिं की याद ह दिंओु िंके मन में र -र कर जगाती थी, िेककन काशी के इदसधगदस के प्राितं में मुसिमानों का जबरदस्त िचस्सि था। इसलिए मरािों के िौटने के बाद धचढे ुए मुसिमान कफर से ह दिंओुंतथा काशी क्षेत्र पर जुल्म ढ ाए बगैर न ीं र ेंगे- इस आशकंा से काशी के पडिंडतों ने मल् ाररा िोकर से विनती की कक ि इससे भी अधधक अनुकूि अिसर लमिने तक काशी पर मि की अपनी योजना त्याग दें; िेककन काशी के पडिंडतों के धमभसीरु मन को य प्रतीयत ुए बबना न ीं र ी कक म िके अपनेप्राणों और अपनेनगर की रक्षा की खायतर मल् ाररा को राष्ट्रीय अपमान का बदिा िेनेके म ान् काय से मु ँ मोड िेने का उपदेश देनेका पापकम स कर र े ैं। १८ जून, १७५१ के एक पत्र में उन् ोंनेइस आशय का अपना खेदे प्रकट ककया ै।

शाह िा न िसिंत् १६७१ में शा ू म ाराज का दे िसान ुआ। उन् ोंनेप ि े ी बािाजी पतिं को आज्ञापत्र देकर सिाधधकार प्रदान कर हदए थे। इस कारण शा ू म ाराज के यनधन के बाद से ी उनके प्रधानमत्री मरािा-मडिं िके अध्यक्ष और मरािों की राष्ट्रीय आकाक्षिंा तथा ध्येय के प्रतीक बन गए। उनके राज्यकाि में यदाकदा घरेिू झगडों और राजम ि के यछटपुट कारनामों को धचतिंाजनक स्िरूप प्राप्त ुआ। ऐसी पररक्स्थयत में भी इस कतृत्ि्िान पुरुष ने उनसे प ि े ककसी ने भी न ककया ोगा - इस दृढ यनश्चय से मरािों के नेतृति् में मुगि

साम्राज्य की नाशभूलम पर विशिा तथा स्तितिं ह दिंं ूसाम्राज्य के सिंिंह्सन के प्रयास ककए और मुसिमान या ईसाई, एलशया के या यूरोप के जो भी शत्रु रण में उतरे, उन सबसेराष्ट्रव्यापी सघिंष सचिाए रखा।

इन विदेशी शत्रुओिं में से फ्ािंसीलसयों ने दक्षक्षण ह दिंुस्ुथान के यनचिेप्रातिं में प िसे ी अपनी सत्ता कायम कर रखी थी। बािाजी की नजर उन पर बराबर िगी ुई थी, िेककन शुरू में उन् ें ह दिंुस्ुथान के दूरू-दूरू के इिाकों में एक साथ बडी-बडी िडाइयााँ िडनी पडीिंऔर म ाराष्ट्र की इस एकमात्र बिशिी ह दिंूसूत्ता को मसि डािनेके लिए सब हदशाओिंसेकमर कसकर खडे े ुए कई शत्रुओिंसे मुकाबिा भी करना पडा। इस कारण बािाजी को िबिंसमय तक फ्ािंसीलसयों को अिके ी गिााँकर उन् ें उनके कृत्यों का दिंड देनेका अिसर न िीिंलमि पाया; िेककन उधर से थोडी सी मुक्क्त लमिते ी बािाजी ने रणभूलम में फ्ािंसीलसयों की नाक में दम कर हदया। अपनेराजनीयतक चातुय स से उन् ोंनेउन् ें इतना परेशान ककया कक उनके लिए और उनके आधश्रत यनजाम के लिए भािकी में मरािों से सिु करने के अिािा कोई चारा न ीिंर ा। इस सिु के फिस्िरूप मरािों को गोदािरी और तापी नहदयों के बीच के सभी प्रातिं लमि गए तथा दक्षक्षण भारत के विलभन्न राज्यों की राजसभाओिंमें कायम िचस्िि काफी कम ो गया।

बािाजी ने कनाटसक तथा उसके भी यनचिे ेप्रातिंों के सभी बागी निाबों को सबक लसखाने ेकी तैयारी ब ुत प िे े ी शुरू कर दी थी। मरािी सेना ने युद्ध में सािनूर के निाब को पराक्जत ककया और अपने राज्य का विशिा ह स्सा तथा बचे े ुए प्रातिं के बदिे ेमें एक िाख रुपए देने के लिए उसे ेमजबूर ककया। इसके पश्चात् ्सिा जार मरािों की सेना बािाजी और भाऊसा ि के नेतृत्ि में श्रीरिंगपट्टण की सीमा पर उत्तरी। उन् ोंने ािंसे पतीस िाख रुपयों की चौथ िसूि की, लशिरी को कफर से ालसि ककया तथा छोटे-मोटे मुसिमानी दुष्ट्टों को भी दिंड हदया। कडुप्पा के मुसिमान निाब पर अिबिततं रा मे ेंदिे ने मिा ककया। मरािों के नाम सुनते ी इस डर से कक अपनेराज्य का क्या ोगा, दक्षक्षण ह दिंुस्ुथान के यनचिेभाग के सारे मुसिमान निाब कापाँनेिगतेथे। िे सभी कडुप्पा के निाब की स ायता के लिए आ प ुाँचे ेथे। अग्रेंज भी उनमें आ लमिे। यतस पर बाररश ने भी जोर पकडा। इसके बािजूद अिबिततं रा मे ेंदिे ने मुसलिम सेना पर मिा ककया और आमने-सामने की िडाई में जारों पिानों को अपनी तििार का मजा चखाने के बाद खुद निाब को ी स्िगि सप ुाँचा हदया। उसके राज्य के आधे ह स्से े को अपने राज्य में जोडकर मरािों ने अब अकासट के निाब को अपना यनशाना बनाया। अग्रेंजों ने प िे ेसे ी उसकी पीि पर ाथ रखा ुआ था; कककिंतु निाब और उसके सरिंक्षक दोनों ी मरािों की मागाँ को टाि न ीिंसके। मरािों को शातिं करने के लिए उन् ें चार िाख रुपए देने ी पडे। शा.स.िं १६७१ (ई. सन् ्१७४९) में मरािों ने बगिंिीर को घेरा, चीनापट्टण पर भी अपना झडिंा गाड हदया। उसी समय मैसूर राज्य पर अपना अधधकार जमाने की कोलशश कर र े ैदर को भी प िे े ुए कराररनामे ेके फिस्िरूप चौंतीस िाख रुपए मरािों को देनेके लिए वििश ोना पडा। इस मौके का फायदा उिाकर बािाजी पतिं का इरादा ैदर का नामोयनशान लमटाने ेका था, िेककन ह दिंुस्ुथान के दूसूरे प्रातिंों में मरािों को जो बडे-बडे मिेकरनेपडे, उसके लिए उन् ें दक्षक्षण के यनचिेह स्से ेमें अपनेपराक्रम का डकंि ा बजातिनेिाी इस सेना को िे ााँका काय सअधूरा छोडकर िापस बिु ाना पडा।

इसी दौरान शा.सिं. १६७५ (ई.स. १७५३) में राघोबा दादा ने अ मदाबाद पर जीत ◌ालसि की और हदल्ली पर मरािों के आधधपत्य का विरोध करनेिाले जाटों को तीस ◌िाख रुपए देनेके लिए वििश ककया। इसी ◌िक्त जोधपुर की सत्ता के लिए राजपूतों के बीच आपसी कि शुरू ◌ुई। अपनेप्रयतस्पधी विजय लस ◌ि को रानेके लिए रामलस ◌ि ने मरािों सेस ◌ायता मागीं। मरािे स ◌ायता देने के लिए मान गए और दत्ताजी तथा जयाजी लशदिें जैसे ◌े सरदारों ने इस आक्रमण की बागडोर थाम ◌िी। राजपूतों की सेना पचास जार थी। मरािों ने विजय लस ◌ि के साथ घमासान युद्ध करके उसे नागौर तक खदेड हदया। जयाजी ने नागौर को भी घेर तो लिया, ◌िेककन उन् ◌े य जाँच न ◌िीर ◌ा था। राजपूतों का मरािों सेयुद्ध, ह दिं ◌ूकी ह दिं ◌ूसे ◌िडाई - य ◌िीक न ◌िींथा। उन् ◌े बाािाजी लशदिें के अनुरोध भरे पत्र आनेिगे कक जैसे–तैसेराजपूतों के साथ सिु करके ह दिं ◌ूजनता के प्राणवप्रय तीथस्सथि काशी, प्रयाग आहद कफर सेिापस ◌ेनेका काम ◌ाथ में लिया जाए।

तभी विजय लस ◌ि ने एक ऐसा नीच कृत्य ककया, क्जसकी भयिा ता से समूचे म ◌ाराष्ट्र के रोंगटे खडे ◌े ◌ो गए और सिु -सफाई की बातचीत भी असभिं ◌ो गई। इससे ◌ेप ◌ि ◌ेवपिाजी गायकिाड इसी विजय लस ◌ि के चाचा के यनिास पर अयतधथ बनकर गए थे। तब उसके चाचा ने त्यारों को भेजकर वपिाजी को मरिा डिाा था। वपिाजी की त्या सेमरािों के प्रयतशोध की आग भडक उिी थी और राजपूतों को उसकी भारी कीमत चुकानी पडी थी। इसकी स्मृयत ◌ोते ◌े ◌ुए भी विजय लस ◌ि ने अपनेचाचा की ◌ी रा पर चिने का यनश्चय ककया। लभखारी के ◌िेश में तीन राजपूत सैयैनक मरािों की छािनी में आए और मरािा सेनापयत जयाप्पा की छािनी के सामनेक्स्थत घुडसािा की जमीन पर पडे चने चुनने ◌िगे। जयाप्पा खतरे से बेखबर थे। ◌ि स्नान करके बदन पोंछ र ◌े थे, तभी इन तीन राजपूत सैयनकों ने उनकी बगि में अपनेछुरे घोंप हदए। जयाजी मरणासन्न ◌ोकर ◌ि ◌िींधगर पडे। दो मािार तो पकडे गए, ◌िेककन तीसरा भाग गया। उतने में ◌ी बाकी राजपूत सेना बा र यनकि आई और य सोचकर कक सेनानायकवि ◌ीन तथा उिझन में फाँसे ◌ुए मरािों को रौंद डािना अब आसान ◌ोगा- उन् ◌ोंनेमरािों पर मिा बोि हदया। ◌ि सफि भी ◌ो जाते,◌े ◌िेककन जानिेिा जख्मों से मृत्युशय्या पर पडेउस म ◌िीर ने जो अदम्य तेज हदखाया, उसने राजपूतों के मसूिंबों पर पानी फेर हदया। जयाजी ने अपने शोकग्रस्त सैयनकों को अयिंतम आज्ञा दी कक 'लसर पर चढ आए शत्रु पर प ◌ि ◌ेटूट पडो, कफर मेरे जख्मों के लिए क्स्त्रयों जैसा वििाप करो!' इतना क कर उन् ◌ोंनेप्राण त्याग हदए।

मृत्युशय्या पर पडे अपनेनेता की इस आज्ञा से मरािे धधक उिे और उन् ◌ोंनेअपनेपराक्रम की पराकाष्ठा कर विजय लस ◌ि को परास्त ककया। मरािों के दूसरे सेनानायक भी लशदिें की स ◌ायता के लिए आ प ◌ुँचे। अतिंाजी माणकेश्िर ने दस जार सेना के साथ राजपूताना में प्रिेश ककया और त्यारे विजय लस ◌ि की स ◌ायता क्जन् ◌ोंनेभी की, उन सभी राजपूत राजाओं को दिंडडत ककया। आखखरकार, पूरी तर से तबि ◌ोनेके बाद विजय लस ◌ि ने सिु के लिए याचना की। उसने उसी रामलस ◌ि का अधधकार स्िीकार ककया, क्जसे ◌ेउसने सत्ता च्युत कर हदया था। नागौर, मेडता और अन्य क्िे ◌ेतथा अजमेर का क्षेत्र उसे ◌ेदे हदया। इसके साथ ◌ी मरािों को युद्ध का सपिूंण सखच सभी उसे ◌ेदेना पडा।

य सघिंष सखत्म ोती बूदंूीं के बिा राजा की विधिा माता ने गद्दी की खायतर साक्जश रचर्निेी िोगों के खखिाफ स ायता के लिए लशर्दिं को ग्रिबुा भेजो। दत्ताजी लशर्दिं ने इस ग्रिबुो का सम्मान कर रानी मा ाँका काय स सपिंन्न ककया और उसके बदिे ेमें रानी ने उन् ें पच त्तर िाख रुपए भेंट ककए।

लसधिंु नदी का ककनारा गिााँ!

'फेड्रून नवस माहोरास गेलेलाहोरास जजकिंकत शडें

अरे त्यार्निी अटकेत पाव घटकेत रोववले झेंडे

सरदार पदरचे कसे, े कुणण शसहिं जसे ेकुणण शादुमल गेंडे।'

- प्रभाकर

(-मरािों ने मा ार पर कब्जा करने के बाद िा ार पर भी विजय-ध्जि फ रा हदया। उसके बाद अल्पकाि में ी उन् ोंनेअटक के उस पार विजय पताकाए ाँफ रा दी।िं उनके जो सरदार थे, िे िस्तुतः लस िंों, व्याघ्रों तथा गडौं के समान सा सी और शूरिीर थे।)

इस प्रकार की घटनाएँ जब घट र ी थीं, तभी राघोबा दादा हदल्िी में बडे-बडेदिाँ इस रचकर उन् ें सफि कर र े थे।

हदल्िी की िजारत धथयानेमें उन् ोंने गाजीउद्दीन की स ायता की और मुगि बादशा को गया

तथा कुरुक्षेत्र मरािों के अधीन करने के लिए प्रिेश ककया। खुद ु प ि करके उन् ोंने मथुरा, िृदंिान, गढमुक्तेश्िर, पुष्पिटी, पुष्कर आहद अनेक तीथस्सथान िापस अपने कब्जेमें लिये। आखखरकार, पिान नगरी काशी में भी मरािों की एक टुकडी ने प्रिेश ककया और उसे ेजीतकर ि ाँमरािों की सत्ता स्थावपत की। इस तर ह दंिओुंकी अनेक िषों से साधी गई इच्छा आखखर पूरी ुई और राघोबा दादा ने गि से ेपेशिा के पास समाचार भेजा कक ' मने यिनों के कब्जेसे ह दिंओु िंके सभी म त्िपूण सनगर तथा तीथस्सथान मुक्त करा लिये।' जारों पिान स्मृयृतयों के स ारे प्रत्येक ह दिंू ूहृदय में सम्माननीय स्थान प्राप्त करनिेािे आयिसत सके इन क्षेत्रों और पुररयों पर बडेगि ससे फ रानेिािा ह दिंूध्िज, ह दिं–ूपदपादशा ी और ह दिंू ूगौरि की पुनस्थापसना का म ान् ्काय सकरनेिािे, समूची ह दिंूजायत के प्रयतयनधध मरािों की र तरफ अपना अधधकार जमाने की िृवृत्त को एक नैयतक समथनस देता था। मरािों की इस जय-जयकार सेबादशा के मन में कफर से उनका डर समा गया और ि विरोध करने िगा। शा ी िजीर गाजीउद्दीन तथा उसे िजारत हदिानेिािेमरािों के खखिाफ जो साक्जशें चि र ी थीं, उनका पता िगते ी गाजीउद्दीन ने िोकर को पचास जार सेना िेकर आने के लिए क ा। िोकर के नेतृत्ि में मरािों ने बादशा ी सेना का इतना बुरा िा कर हदया कक बादशा के जनानखानेकी रक्षा करनेिािा भी कोई न िंबचा। बादशा की रायनया ाँमरािों के ाथ िग गईं। गाजीउद्दीन के साथ मरािों ने हदल्िी में प्रिेश ककया। अपनेशस्त्रों से सभी अिरोधों को ककनारे करते े ुए िे राजदरबार में प ुाँचे। उन् ोंने िृद्ध सम्राट् को लस िंासन च्युत करके

भविष्य के

प्रयतशोध का चक्र मानी पूरा करने के लिए ी दूसूरे नए बादशा को सत्तारूढ करके उसे ेदूसूरा आिमगीर का परनाम हदया।

आिमगीर अथात्स ्समूची पृथ्िी का विजेता। प िा आिमगीर और अब य दूसूरा आिमगीर। प्रथम आिमगीर औरंगजेब ने सोचा था कक उसके बादशा ी क्रोध की एक फूाँक मात्र से उस समय दिेधर में हटमहटमाता ह दिंू ूजीिन का दीया बुझ जाएगा। उसनेअल्िा का नाम लिया और फूंिंक मारी, िेककन उस हटमहटमाते ेदीये की ज्योयत उसकी दाढी को झुिसाकर अचानक ी प्रचडंि दािानि में बदि गई। य देखकर ि चकरा गया। य दािानि सह्याहद्र के र पितस पर फैि गई और भूलम पर तथा समुद्र में िाखों हृदयों को सुिगाती, पितस-लशखरों, ककिों-परकोटों, नहदयों-खाइयों को धधकाती एक म ान् ्यज्ञ की अक्ग्न में पररियततस ो गई। औरंगजेब मरािों को 'प ाडी चू े' क ता था। तब से इन मरािी चू ों ने अपनेनाखून इतनेभयकंिर, मजबूत और नुकीिे बना लिये थेकक उससेइसिाम के कई लस िं घायि, खून से िथपथ और अस ाय ोकर इस दूसूरे आिमगीर की राजधानी में

ह दिंू ूपदपादशा ी 54 उनके पैरों पर िोटते ेपडेर े। प्रथम आिमगीर तो लशिाजी को एक सामान्य राजा के रूप में भी मान्यता न िींदेता
था: ककिंतु उसके उत्तराधधकारी द्वितीय आिमगीर को अपने आपको सम्राट् क िानेका सौभाग्य भी लशिाजी के
शिष्यों की ी कृपादृक्ष्ट के कारण प्राप्त ो सका।

ह दिंू ूसत्ता तथा आधधपत्य की िृद्धध ोते ेदेखकर ह दिंुस्ुथानिासी सभी मुसिमानों के मन में द शत बैि गई। बेबस ोकर िे मन ी मन दाताँ ोंिे पीसने िगे। यनराश तथा क्का-बक्का ुए मुसिमान, फरुसखाबाद और दूसूरी जग ों पर वपटे पिान िे रु िे,े पदच्युत ुए िजीर और निाब, 'काकफरों' की जीत पर जीत और िगातार तेज ीन ोतिीनीअधचसदिं को देखकर बौखिाए ििीिी तथा मिौाना, मरािा भािेकी नोक पर प्रयतक्ष्ित ककए अपनेआसन का सतिुंनि साधने से त्रस्त ुआ बादशा - सक्षेिंप में पदच्युत और यनराश तथा म त्तिाकािंक्षी - सारे मुसिमानों ने मरािों से बदिा देने की मानो कसम ी खा िी और मरािों का नामोयनशान लमटाने ेका न िीं, तो कम-से-कम उन् ें भगाने के षड्यत्रिं रचेजानेिगे। ककिंतु इससे ेभी ज्यादा ैरतअगिेंज - िैसे इसमें ैरतअगिेंज जैसा कुछ न ी िंथा- बात य ै कक उत्तर ह दिंुस्थान में मरािों की सत्ता का य उदय देखकर कुछ ह दिंू ूराजपुत्रों के भी मन में उनके प्रयत िैर-भािना उत्पन्न ो गई थी। जयपुर के माधि लस िं, जोधपुर के विजय लस िं, भरतपुर के जाट और राजपूताना के कुछ छोटे-छोटे राजाओिंने भी बेह चक मरािों के विरुद्ध स्िय िके और अपने राष्ट्र के दुश्ुमनों से ाथ लमिा लिये। ह दिंू-ूस्ितित्र्यि तथा ह दिंूधम सके नाश के लिए तैयार सभी दुश्ुमनों का मुकाबिा करने में समथ स एकमात्र ह दिंू ूसत्ता के विध्िसिं की खायतर सभी असतिुंष्ट मुसिमानों को एक बडा षड्यत्रिं रचने ेके लिए प्रोत्साह त ककया। औरिंगजेबी कूटनीयत से मरािों को अपनेलशकिंजे में फाँसाना अथिा खिुेआम उनसे टकराना ह दिंुस्थान के ककसी भी मुसिमान सेनानायक के लिए सभिंि न िीं ुआ। अतः स्िाभाविक रूप से मुसिमान नेताओिंकी नजर इन मूयतपूसजक काकफरों के नष्ट राष्ट्र की खबर िेने के लिए मेशा की तर ह दिंुस्थान के सीमा पार के अपने विदेशी धमभसाइयों की ओर ी गई।

इस षड्यत्रिं को साकार करने ेतु नजीब खान और मिका जमानी की जोडी अच्छी बन गई। रोह िा सरदार नजीब खान मरािों की पराजय में अपना िाभ ढूाँढ र ा था और मिका जमानी बादशा ी अतिं:पुर की एक उथि-पुथिपसदिं स्त्री थी। अपनी रोज की रोटी के लिए 'काकफर' ह दिंुओ ुिंकी दया पर यनभरस र ना उसे ेब ुत चुभता था। इससे प िे ेऐसी ी पररक्स्थयत में मुसिमान नेताओिं ने नाहदरशा को न्योता हदया था। इन दोनों ने उसी माग सका अिििंबन करने का यनश्चय ककया। उन् ोंने अ मदशा अब्दिी को ह दिंुस्थान पर आक्रमण कर विधलमयसों से मुसलिम सत्ता की रक्षा करने का आग्र करनेिािे पत्र गुप्त रूप से भेजेने शुरू ककए। अ मदशा के भी अपने कारण थे। शुरू से ी उसनेविश्ि-विजय की म त्तिाकािंक्षा पाि रखी थी। उसके राज्य की सीमा मुितान तक मरािों की सत्ता का विस्तार ो गया था तथा य और बढने की आशकिंा उसे ेथी। ऐसी पररक्स्थयत में मरािों से िडना उसके लिए भी जरूरी ो गया था।

इसके प िे े ी अ मद शा ने मुितान और पिंजाब प्रातिों को अपनेराज्य में लमिा लिया था; िेककन शा.स.िं १६७२ (सन् ्१७५०) में बा री तथा भीतरी दुश्ुमनों से िड्िा, मुितान और पिंजाब प्राितं की रक्षा करके ि ा ाँ

सुव्यिस्था कायम रखने ेका क्जम्मा मरािों ने उिाया था तथा ि ाँकी चौथ िसूिने का अधधकार प्राप्त ककया था। इसलिए शा.स.ि १६७६ (सन् ्१७५४) में उन् ोंनेअपनी कृपादृक्ष्ट से िजीर बनाए गए गाजीउद्दीन को अब्दािी से पजािंब और मुितान छीन िेने में स ायता भी प्रदान की थी। िस्तुतः अब्दािी के लिए य खुिी चुनौती ी थी। उसी समय नजीब खान द्िारा रची साक्जश के कारण ह दिंुस्थान में फै े ुए सामथ्यशसािी मुसिमानों के सगिंनि

से उसे े र तर की मदद हदए जानेका िचन भी लमि गया। इस समथनस की बदौित इस पिान की म त्िाकािंक्षा इतनी बढी कक नाहदरशा के लिए जो असभिं था, ि सभिं करने तथा ह दिंुस्थान के सािभौमत् का मुकुट धारण करने के ख्िाब देखने िगा। शा.स.ि १६७८ (सन् ्१७५६) में मरािों के सभी लसपसािार दक्षक्षण की उथि-पुथि में व्यस्त ैं य देखकर अस्सी जार सेना के साथ लसधिंुनदी पार करके उसनेपजािंब पर आक्रमण ककया और गिभग बबना ककसी विरोध के हदल्िी पर कब्जा करके सिसा सबन गया इतना ी न ी,ि पिानी विजेताओंकी परिंपरा के अनुसार ि कुरुद्ध भी ुआ और अपनेसेना को हदल्िीिासी नागररकों का स िंार करने की आज्ञा देकर उसनेअपनी प्रभुसत का समारो सपिंन्न ककया। कुछ घटिंों के इस त्याकाडिं में आिर जार यनरपराध िोग मारे गए।

उसके पश्चात् ्उसने अपनी मुसलिम धमसरिंक्षक की उपाधध चररताथ सकरने के लिए मरािों द्िारा िा ी में मुसिमानों के पाश से मुक्त ककए गए ह दिंओु िंके तीथस्सथिों को त स-न स करना शुरू ककया। प िा बलिदान मथुरा नगरी का ुआ। पाचाँ जार जाटों ने प्राण तजने तक दुश्मन की अनधगनत सेना के साथ िीरता से युद्ध ककया। मराठो के प्रयत्न िंकेि अपना तुच्छ भाि दरशानेके लिए मथुरा के बाद इस मुसिमान विजेता ने गोकुि और िृदिंािन को अपना यनशाना बनाया; िेककन ि ाँगोकुिनाथ की रक्षा के लिए अपने प्राण न्योछािर करने के यनश्चय से चार जार शस्त्रधारी नगा साधुओ िंने डटकर उसका मुकाबिा ककया। दो जार बैरागी रणभूलम में श ीद ुए, पर शत्रु ुको भगाकर अपनेधम सऔर मिंहदर की रक्षा करने में ि सफि ो गए। इसके बाद जल्दी ी अब्दािी आगरा की ओर यनकि गया और उस नगर पर कब्जा करके ि ाँके ककिे ेपर ध्िाा बिो हदया। उत्तर ह दिंुस्थान के कुछ मुसिमान िोग पिानों से घृणा करते ेथे ेतथा पिानी या ईरानी सत्ता हदल्िी के लस िंासन पर

स्थावपत न ि ोनी चाह ए- इस बारे में मरािों से स मत थे। उनके नेता िजीर गाजीउद्दीन ने इस ककिेका आश्रय लिया था। मरािा अपनी मुक्क्त के लिए आ र े ैं- इस समाचार का ि बेसब्री से इिंतजार कर र ा था।

उस समय जयपुर, जोधपुर और उदयपुर के राजपूत तथा बाकी ह दिंू ूराजा और राजपुत्र क्या कर र े थे? े ि मरािों से ब ुत नफरत करते ेथेऔर ह दिंू-ूपदपादशा ी के म ान् ्काय सके अगुआ मरािा बनें- य उन् ें पसदिं न ि था। तब य ी अिसर था कक ि ह दिंओु िंके ह तों की रक्षा यनश्चयपूिकस कर सकते थे ेऔर ह दिंूधम सतथा ह दिंू-ू पदपादशा ी की रक्षा के लिए अकेिे ेया एकजुट ो युद्ध करके साबबत कर सकते ेथेकक ह दिंओुंका नेतृत्ि करने में मरािों की बयनस्बत ि अधधक समथ स ैं। िेककन इनमें से कोई भी अपनी जग से न ि ि ा। अ मदशा अब्दािी िाखों ह दिंओु िंसे भरे उन प्रातिंों से चिते-ृ कफरते े ी हदल्िी प ुाँच गया। ि आगरा भी प ुाँच गया और ऊाँचे े स्िरों में ककए अपनेएिान के मुताबबक ि सीधे ेदक्षक्षण तक भी चिा जाता। बगैर ककसी व्यिधान के मुसिमानों का बडा समू बढता चिा आया और राजपूत, जाट तथा इतर अनेक ह दिंू ूराजपुत्रों और सरदारों की आखाँों के

सामनेकाकफरों से बदिा िेने के नारे िगाता ुआ तथा ह दिंओुंके चूल् े, घर, महिंदर, तीथस्सथि आहद रौंदता ुआ यनकि गया; िेककन मरिों के आनेतक उसका यनषेध करनेकी ह म्मत ककसी की न िीं ुई।

प ि े नाहदरशा के आक्रमण कस यमसख्सा लमनस, उसी तर अब भी अब्दिाी के मिे ेकी इस खबर से पुणे क्स्थत मराि-मडिंकि नेतृत्िू यनराश या यनरुत्साह त न िीं ुआ। तुरिंत रघुनाथ रि के नेतृत्िू में मरिों की एक बिशािी सेना उत्तर ह दिंसुथान में रिाना कर दी गई। आगरा के पास अब्दिाी को इसकी खबर लमि गई। िकुशि और अनुभिी सेनानायक था और अपनी क्जदिंगी में उसनेपराजयों का भी सामना ककया था। य उसने जान लिया कक मरिों की बिशािी सेना से िो ा िेना 'आ बिै मुझे मार' जैसी क्स्थयत का यनमाणस करना ै।

अपनीपूणसनहदरशाकीसफिता पराजय को टािा देनेकी बजाय क्जतनी सफिता लमिी, उससी सतिोष कर िेना उधचत समझा और इसीलिए ि तुरिंत उिटे पािँ िौट गया। हदल्िी प ुँचा और मुगि लस िं ासन पर अपना दािा मजबूत करने के लिए उसनेमिका जमानी की बेटी से शादी कर िी। सरह दिं की रक्षा की खायतर उसनेदस जार की सेना रख दी एििं अपनेपुत्र तैमूर शा को िा ौर का शासक बनाकर, क्जस द्रतुगयत से ि ह दिंसुथान में उत्तर आया था, उसी गयत से अपने देश िापस िौट गया।

दक्षक्षण के राजनीयतक घटनाक्रम में व्यस्त र नेके बािजूद अब्दिाी को जो थोडी-ब ुत कामयाबी लमिी थी, उसपर पानी फेरकर मरिे द्रतुगयत से आक्रमण करनेिगे। सखाराम भगिति, गगिंाधर यशिति तथा अन्य मराि सेनानायकों ने दोआबा क्षेत्रे में प्रिेश ककया। इस बीच के कािखडिं में मरिों के खखिाफ विद्रो करनेिािे पिान तथा रु िों का दमन उन् ोंनेककया। िजीर गाजीउद्दीन की मुक्क्त की गई। विठ्ठि लशिदिे ने हदल्िी पर ि मिा ककया और पद्रिं हदनों तक घमासान युद्ध करके राजधानी जीत िी; पिानों के षड्यत्रिं के सूत्रधार और मरिों के सबसे बडेदुश्मन नजीब खान को जीवित पकड लिया। इसके बाद सरह दिं के पास अब्दिु सैयद के नेतृत्िू में खडी दस जार सेना का सामना करने के लिए मरिे आगे ेबढे और उस सेना की धक्क्जया ॉउडाकर उसके नेता को कैद कर लिया। इस तर िगातार सफिताओ िंके बाद उन् ोंनेिा ौर पर धािा बोिनेका यनश्चय ककया। मरिों को विजयश्री िगातार िरमािा प ना र ी ै- य देखकर अब्दिाी की ओर से पजिंाब और मिुतान में राज चिानेिािा उसका पुत्र तैमूर शा इतना डर गया कक रणभूलम पर मरिों के सामने खडेर ने की भी उसकी ह म्मत न िीं ुई। ि ि ाँ से चिता बना। रघुनाथरि ने िा ौर में विजयी प्रिेश ककया। ज ान खान और तैमूर शा ने कुशितापिूकस तथा सुव्यिक्स्थत तरीके से पीछे टनेकी कोलशश की, िेककन मरिों ने इतनी द्रतुगयत से उनका पीछा ककया कक उनके पीछे टने ेको पिायन का ी स्िरूप लमि गया। मरिों का नामोयनशान लमटाने ेऔर ह दिंसुथान का साम्राज्य जीतने के उद्देश्य से जो विदेशी दुश्मन आया था, उसकी सेना तथा उसके को प्राणों से कम मूल्य का जो कुछ भी था, ि सारा छोडकर, मरिों के मुकाबिे अपमानजनक पिायन का स ारा िेते ुए अपनी जान बचाने ेके लिए वििश ोना पडा। उनकी छािनयााँिूटी गईं और उनकी असीम धन-सपिंदा तथा युद्ध-सामग्री मरिों के ाथ िग गई। आखखरकार, श्रीरामदास स्िामीजी द्िारा लशिाजी म ाराज को सुपुदस ककया गया भगिा ध्िज ह दिंसुथान के उत्तर सीमा प्रातिं पर ि रानेिगा।

ह दिं ूबबना ककसी व्यिधान के अटक तक प ुाँच गए। पृथ्वीराज की ार के उप दुर्दिी हदन के बाद प िी बार ह दिंओु िंका पवित्र ध्जि िदेकिा में िदमत्रिों से पुनीत ुई सररता पर बडेगि सके साथ ि राने िगा। अटक के उस पार गए ुए ह दिंओु िंके विजयशिाी अश्र्ि नै लसधिं ुनदी के स्फहटक समान यनमिस जि में अपनी परछाइयों का मानो बडी ग्रिए से यनरीक्षण करते े ुए ि जि वपया।

इस उज्ज्र्ि विजयश्री की खबर प ुाँचते ी पूरे म ाराष्ट्र में मानो बबजिी काधाँ गई। अतिंाजी माणकेश्रि ने राघोबा दादा को लिखा- "ि ौर ालसि ककया तथा दुश्मन का पीछा करके उसे ेसीमा पार भगा हदया। अपनी सेना लसधिं ुनदी के तट पर जा प ुाँची-य सबसे ज्यादा खुशी की बात ै। मारी इस सफिता से उत्तर के सभी असतिंुष्ट िोगों, राजाओिं, सूबेदारों और निाबों के मस्तक नीचे ो गए ैं। राष्ट्र के प्रयत जो भी जुल्म ककए गए, उनका प्रयतकार लसफस मरिो ी कर सके। अके ेउन् ोंने ो अब्दिी से सपिंूण सह दिंसुथान का प्रयतशोध लिया। अतिं:करण में उिर ी भिानाओिं को कृत्यों जैसे ेपराक्रमी कृत्य-इन मरिी ाथों से सपिंन्न ुए।

शब्दों में लिखना सभिंि नि िंो पा र ा ै। यनपट शौय सके कृत्य-ककसी अितार के अपनी म ान् ्उपिक्ब्ध से मरिो स्रिय िंभी चककत र गए। उनकी ितिार ने द्रिका से जगन्नाथपुरी तक तथा रामेश्रिम् ्से मुितान तक उन् ें विजयमिाा प नाई थी। उनकी िाणी को राजाज्ञा का दजा सलमि गया था। उन् ोंनेप्रकट रूप से अपने आपको ह दिंसुथानी सत्ता के सरिंक्षक और उत्तराधधकारी ोनेका ऐिान कर हदया। और ईरान, तूरान, अफगायनस्तान, इंग्िडैं, फ्ासिं अथिा पुतगसिा से जो भी िडने आया, उन सबके विरुद्ध उन् ोंनेअपने इसी अधधकार के अनुसार सघिंष सककया। लशिाजी म ाराज द्रिा आरिंभ ककया ुआ ह दिं–ूपदपादशा ी का म ान् ्काय स ि गभग पूणतसा की क्स्थयत में प ुाँच गया। श्री रामदास स्रिामी की लशक्षा अब प्रत्यक्ष काय सके रूप में साकार ुई। मरिों ने अपनेविजय-ज्रि में ह दिंधूिजा लसधिंतुट तक प ुाँचा दी और शा म ाराज ने बाजीरि को जैसी आज्ञा

दी थी, उससेभी परे य ध्जिा ि जाए जाने की सभिंािना हदखने िगी।

अटक पर अपना ध्जि फ रानेके बाद मरिों की प्रभुसत्ता का क्षेत्र विस्तृत ो गया। उनकी राजनीयतक गयतविधधयों का भी क्षक्षयतज और अधधक विस्ताररत ो गया। अब हदल्िी की चारदीिारी के भीतर स्रिय िंको बदिं कर िेना सभिंि ी िर गया। मरिों की छािनी में कश्मीर, किंधार और काबिु से आए राजदूतों तथा प्रयतयनधधयों का आिागमन बढ गया। एक जमाना ऐसा था कक सत्ताच्युत ोनेके बाद ह दिं ूराजा काबिु और ईरान से मुसिमानों की स ायता िेते थे, िेककन अब पररक्स्थयत एकदम विपरीत ो गई। काबिु और किंधार के असतिंुष्टों तथा अन्याय-पीडडतों की ओर से राघोबा दादा की राजसभा में प्रयतहदन आिेदन-पत्र आने िगे। नाना सा ब के सेनापयत ने शा.सिं. १६८० चैत्र बदी १२ (४ मई, १७५८) को उन् ें लिखा-'सुितान, तैमूर और ज ान खान की सेना का नामोयनशान लमट गया ै और उनकी युद्ध-सामग्री तथा छािनी पर अपना कब्जा ो गया ै। कुछ ी िोग अटक पार करके अपनी जान बचा पाए । अब्दिी ईरान के शा के ाथों पराक्जत ुआ और ईरान के शा ने मुझे ेकिंधार पर मिा करने का न्योता हदया ै। एक तरफ से ईरान के शा की सेना और दूसरी तरफ से मारी सेना - ऐसेदो

पाटों के बीच फाँसने के बाद अटक को मरिरी राज्य की सीमा मानने के लिए अब्दिाी तैयार ै। ऐसा उसनेसूधचत ककया ै; िेकेकन म अटक को अपनी सीमा क्यों मानें- य मुझे समझ न िींआता।

"काबिु और किंधार - दोनों प्रातिं अकबर और औररंगजेब के जमाने से ी ह दिंसुथान के साम्राज्य में समाविष्ट थे। तो कफर अब उनको विदेलशयों के कब्जेमें क्यों जानेहदया जाए? मेरे खयिा से ईरान का शा अपना अधधकार ईरान तक ी सीलमत रखेगा और काबिु तथा किंधार के मारे अधधकार को मान्यता देगा। खैर, उसकी सम्मयत

अमीर े अपना लधधकार े दोनों प्रातिं अपनेसाम्राज्य का अलभन्न अिंग मानकर मनैं करने का यनश्चय ककया ै। अब्दिाी का भतीजा अब्दिाी के खखिाफ बगाित कर उिा ै और अपनेचाचा के राज्य पर अधधकार जता र ा ै। ि आपके पास स ायता के लिए आया ै। मेरे विचार से लसधिंनदी के आगे ेअपने जो प्रातिं ैं, ि ाँउसे ेशासक के रूप में यनयुक्त ककया जाए तथा उसकी स ायता ेतु कुछ सेना भेजी जाए। कफि िा मुझे ेतुरिंत दक्षक्षण िापस िौटना पड र ा ै। इसलिए मेरे स्थान पर आनिंीसेनापयत को ये बडी योजनाए ाँमूत सरूप सेतथा काबिु और किंधार पर अपना िास्तविक अधधकार कायम ो, इसकी धचतिंा अिश्य करनी चाह ए।"

ह दिंू–पदपादशा ी

'औराणपासूतनकफरिंगाणपयंतंशत्रुची उठे फली

शसिंिुपासूनी सेतुबिंिपयंतं रणागिंण भू झाली।

तीन खडिंडच्या पुन्डाची ती परतु ुसेना बुडववली

शसिंिुपासुतन सेतुबिंिपयंतं समरभू ूलढववली!'

- म ाराष्ट्र भाट

(-शत्रु ुकी सेना ईरान से िेकर गिो तक फैिी ुई थी। लसधिं सररता से िेकर रामेश्रिम् ्तक सारी भूलम रणभूलम बन गई थी। तीनों खंडों के उपद्रवियों की सेना को पराजय के गर्त समें डुबो हदया गया। लसधिं ुसे िेकर रामेश्रिम् ्तक युद्ध िडा गया ।)

नाना सा ब के पास उपयुक्सत पत्र भेजने के बाद िषाकसिा समीप आता देखकर राघोबा दादा तेजी से दक्षक्षण की ओर चिे ेगए; िेककन ि ा ाँ ि ा ी में जीते े ुए प्रातिं की सुरक्षा ेतु थोडी सी सेना छोडकर उन् ें िापस िौटिना पडा और ह दिंू–पूदपादशा ी के लिए इससे भी अधधक नुकसानदे एक प्रकरण को उधचत ढिंग से न ी िं सिुझाया गया। सभी मरिाा सरदारों की इच्छा थी कक पिानी षड्यत्रिं के रचययता नजीब खान रु ि ा ने मरिाी सत्ता के खखिाफ अब्दिाी को भडकाकर मरिाों के साथ जो विश्िासघात ककया, उसके लिए उसे ेमृतूयुदिंड हदया जाए, िेककन नजीब खान कैदी के रूप में मरिाों के कब्जे में ोनेके बािजूद उसे ेछोड हदया गया। य एक गुत्थी ी थी। य मक्कार पिान मजाँ ुआ कुहटि अलभनेता था। उसने जारों बार माफी मागँी, मल् ाररिा को अपना बाप क कर पुकारने िगा; और उसने क ा कक अपने ककए पर उसे ेब ुत पछतिाा ो र ा ै, इसलिए बेटा समझकर िे उसे ेप्राणदान दे दें। मल् ाररिा भी वपघि गए। मरिाों के म ान् ्काय सके साथ गद्दारी करने के कारण जो व्यक्क्त दिंड के भागी ोतैं, उन् ें अपना पुत्र मानने के लिए मल् ाररिा मेशा उत्सुक र ते ेथे। नजीब खान की रर ाई के लिए उन् ोंनेराघोबा दादा से इतना अनुरोध ककया कक राघोबा अपनी मरजी के खखिाफ उसकी मुक्क्त को मिंजूरी देनेके लिए वििश ो गए। आगे ेजल्दी ी म देखेंगे ेकक क्जन् ोंनेउसे ेप्राणदान देनेकी गिती की, उनके ी खखिाफ नजीब खान ने ककस तर भयानक षड्यत्रिं रचा।

मरिो इस समय तक अपनी सभी राजनीयतक गयतविधधया ाँन्यूनाधधक मात्रा में हदल्िी केसम्राट् के नाम पर ी करते ेआ र े थे। इस माग सके अििंबिन में न्यूनतम विरोध झिेना पडता था और ऐसा करना उनके लिए पयाप्सत उपयोगी भी साबबत ुआ। शा.सिं. १७३९ (ई.स.िं १८१७) में मरिाों की पराजय के पिू सह दिंसुथान में अग्रिंेजों का जो दजा सथा, ि ी दजास इस समय मरिाों का था। अग्रिंेजों ने क्जस कूटनीयतक और राजनीयतक कारणों से शा.सिं. १७७९ (सन् ्१८५७) तक अथिा्स्यि िके ह दिंसुथान का िास्तविक सम्राट् बनने तक, हदल्िी केबादशा के एजेंट ोनेका स्िागँ भरकर अपनी काररिाइयाँकी, उन् ीिंकारणों से मरिाों ने भी राजनीयतक आक्रमण की रा में अपनी गयत धीमी ी रखी। मरिाों ने अपने आपको प्रभुसत्ता-सपिंन्न सम्राट् घोवषत करने की उतिािी की ोती तो उन् ें न लसफस ह दिंसुथान के मुसिमान, बक्ल्क अग्रिंेज, पुतगसािी, पिान और कुछ ह दिंू ूराजाओिं का भी विरोध स न करना पडता। मृतूयुशय्या पर पडे ुए बादशा के मुकुट पर इन सबकी नजरें गडी ुई थी िंऔर उसका उत्तराधधकारी बनने के लिए र कोई िािाययत था। र कोई चा ता था कक इस स्पधा समें शालमि सभी िोग अपने आप पीछे ट जाए ाँऔर बबना ककसी प्रयास के य सुन रा मौका उसेलमि जाए। इसलिए सभी सिंभावित दािेदार अपनी योजनाओिंऔर इच्छाओिंको कफि ा िििंडेबस्तेमें ी रखना चा ते थे।

िेककन उत्तर में बडी-बडी विजय और स्यि िपेशिा को दक्षक्षण में लमिा यश, इनके योग से मरिाी सत्ता की प्रयतष्िाा काफी बढ गई। न लसफस बिााजी पतिं और सदालशिराि भाऊ, बक्ल्क म ाराष्ट्र के सामान्य व्यक्क्त में भी य आत्मविश्िास जाग गया कक म अपनेइस म ान् ्काय सको अिंयतम पररणयत तक प ुाँचाने में समथ स ैं। मरिाा मिंत्रिपररषद् में बडी-बडी योजनाओिं पर विचार-विमश स ोने िगा। मरिो अपनी शक्क्त की आचँ ाँ म सूस कर र े थे। मुसलिम साम्राज्य पर मने ममभेसदी प्र ार ककया ै-इस बात का ए सास उन् ें था। उन् ें हदख गया था कक न लसफस

ह दिंसुथान में, बक्ल्क पूरे एलशया खडिं में मरािी राज्य का दबदबा कायम ो चुका ै और पुणे समूचे एलशया खडिं की राजनीयतक सत्ता का केंद्र बनने िगा ै। मुगि बादशा ी यछन्न-विक्च्छन्न ोकर उनके पैरों पर पडी थी। अब उन् ोंनेयनश्चय ककया कक सिाभसौमत्ा का मुकुट प्रत्यक्ष रूप से अपनेलसर पर धारण करने के इस अयिंतम काय सके

ैंमउनसबको पूराकर ियिया जाए। सदालशिरा भाऊ को िगता था कक ईश्िर ने य म ान् ्
काय ससपिंन्न करने के लिए मरािा-मडिंि के ककसी दूसूरे नेता की बजाय उनका चयन ककया ै। इसलिए उनका यनश्चय था कक य काय सपूरा करेंगे ेया कफर उसके लिए सघिंष सकरते े ुए अपनेप्राण न्योछािर कर देंगे।

मरािों ने मुगि साम्राज्य नष्ट कर हदया था। ह दिंओुं ने उन पर विजय प्राप्त करने िािो विजेता पर जीत ालसि की थी और सदालशि भाऊ के प्रभािी उद्बोधन से प्रेररत ोकर उन् ोंनेइस तरीके से प्रयास करने का यनश्चय ककया कक अगिे ेकुछ िषों में समग्र ह दिंसुथान स्ितिंत्र ोकर िास्तविक रूप से ह दिंू–सत्ता प्रस्थावपत ो जाए।

अपनेउद्देश्य की पूयत सके लिए मरािों ने तीन अलभयानों की योजनाए ाँबनाई। प े ेअलभयान में दत्ता लशदिं को आज्ञा ुई कक िे पजिंाब और मुितान प्रातिं में जाकर ि ााँसुव्यिस्था स्थावपत कर सुचारु ढिंग से शासन शुरू करें। इसके बाद उन् ें नीचे काशी-प्रयाग तक आनेका आदेश हदया गया, ज ा ाँपर राघोबा एक बडी सेना के साथ उनकी सेना से लमिेगा। मरािों के इस सयुिंक्त दि को बगिंाि पर धािा बोिना था और िा ी में (सन् ्१७५७ में), प्िासी की िडाई जीतने िािो अग्रिंजेों, क्जनके मन में इस विजय के कारण य प्रातिं अपनेआधधपत्य में आ जानेके िड्डू फूट र े थे, को तथा मुसिमानों को ि ा ाँसेभगाकर समुद्र तक का समूचा प्रातिं स्ितिंत्र कराना था। इस तर लसधिं और मुितान सेिेकर बगिंाि के समुद्र तक पूरा ह दिंसुथान शत्रु रह त करने की क्जम्मेदारी दत्ताजी, जनकोजी और राघोबाजी को सौंपी गई थी। उसी तर समूचा दक्षक्षण ह दिंसुथान स्ितिंत्र कराने का क्जम्मा खुद बािाजी पतिं ने उिाया था।

दत्ताजी लशदिं अपनी सेना िेकेर इस अलभयान पर उत्तर हदशा की तरफ चि पडे। बािाजी और भाऊ ने सिप्रसथम दक्षक्षण में यनजाम की नीदिं राम करके उसे ेसत्ताच्युत करने की हदशा में कदम बढाए। शा.स.ि १६८२ (सन् ् १७६०) में उदगीर में उन् ोंने यनजाम पर आधुयनकतम सुविधाओ िंसे िैस तोपखाने और बिशािी सेना के साथ मिा कर विजय प्राप्त की। मुसिमान सेना पूरी तर से नष्ट ो गई। मरािों की इस विजय से यनजाम इतना विनम्र ो गया कक उसने अपनी शा ी मु र भाऊ के पास भेजकर मरािों द्िारा प्रस्तुत ककसी भी सधिंध पर स्ताक्षर करने की अपनी स मयत जता दी। मरािों ने उसके साथ सधिंध करके नगर, बुर ानपुर, सिा ेर, मुि ेर, असीरगढ, दौिताबाद आहद प्रलसद्ध दुगु सऔर नादिंेड, फुिंब्री, आबिंड तथा िीजापुर के चार प्रातिं अपनेअधीन कर लिये। भाऊरिा भी इस सधिंध सेखुश ो गए। यनजाम अब सत्ताच्युत ो गया था। लसफस उत्तर ह दिंसुथान की ी समस्या थी। सिा खत्म ोने सेप ि े ी दक्षक्षण ह दिंसुथान के स्ितिंत्र ोनेकी आशा बधाँ गई थी। जब लशिाजी म ाराज ने तोरणा दुगु सजीता और ह दिंू–साम्राज्य का यनमाणस करने के पथ पर प िी सफिता प्राप्त की थी, तो उस

समय क्जन स्थानों के सुितानों ने लशािजी को अदना सा विद्रो ी समझकर उनका घृणाापूिकस उप ास ककया था, उस नगर और िीजापुर-दोनों मुसलिम राजधायनयों पर मरािों की ध्ज्जिएाँफ रानेंगी।िं

उधर दक्षक्षण में मैसूर में स्थावपत ह दिंसूत्ता नष्ट करके अपने आपको ि ााँका सम्राट् घोवषत करने के उद्देश्य से ैदर अिी मैसूर का घेरा डिाकर बैिा था। ऐसी क्स्थयत में ि ााँके ह दिं ूराजा और उसके मत्रिी ने इस मुफ्तखोर मुसिमान से अपनी रक्षा की खायतर मरािों सेसविनय अनुरोध ककया। भाऊ सा ब तो प ि ेसे ी ऐसे मौके की तिाश में थे। दक्षक्षण ह दिंसुथान मुसिमानों के कब्जेसे छुडाने का य सुन रा अिसर ि गिंिाना न ीं चा ते थे। उन् ोंने ैदर पर आक्रमण करने की योजना बनाई, िेककन उत्तर से, पेशिा की तरफ से उन् ें धचतिंाजनक समाचार प्राप्त ुआ। इस समाचार से ब ुत यनराश ोकर ि े अपनी व्यथा इस तर प्रकट करते े ैं कक "सफिता का प्यािा म ैंअपने ोंिों से िगाने ी िािा था कक ि मेरे ाथ से िे लिया गया।"

उधर दत्ताजी के नेतृत्ि में उत्तर में मरािों की सेना शा.स.िं १६८० (ई.स.िं १७५८) में हदल्िी में दाखखि ुई। तय कायक्रसम के अनुसार दत्ताजी ने ि ााँसे िा ौर और मुितान प्राततिं की सुव्यिस्था ेतु प्रस्थान ककया। अटक तक के प्रातिं का प्रबधिं उन् ोंने साबजी लशदिंे और त्र्यबिंक बापूजी को सौंपा और सरह दिं, िा ौर तथा बाकी म त्त्िपूण स स्थानों पर सेना भेजेकर सुदृढ ककया। इसके बाद गगिंा नदी पार करके पटना पर धािा बोिने और ि ााँअग्रेंजों को सबक लसखाकर ह दिं ूसाम्राज्य का समुद्र तक विस्तार करने के लिए ि पजिंाब से यनकिकर नीचे उतर आए।

िेककन नजीब खान के बारे में पेशिा के स्पष्ट यनदेश का पािन न करके उन् ोंने ब ुत बडी गिती की। लशदिंे ने उसे ेकिोर दिंड देने की बजाय बगिंाि के बारे में मरािों की योजनाओ िंमें मदद देने और यनष्ठाापूिकस सेिा करने के उसके खोखिे ेऔर झूिे िादों पर विश्िास कर उसे ेअपनी सत्ता तथा प्रभुता बढाने ेकी खुिी छूट दे दी। इसपर पेशिा ने िगभग गुस्से में ी उन् ें लिखा, "आपने लिखा ै कक अगर मनेनजीब को बख्शी का पद हदिा हदया तो ि में तीस िाख रुपए देनेका िादा कर र ा ै, िेककन उसके एक पैसेका भी स्पश समत कररए। नजीब आधा अब्दािी ै। उसपर विश्िास न िींकरना चाह ए, सापाँ को दूध वपिाना उधचत न ी।िं" िेककन उस फरेबी ने दत्ताजी पर डोरे डािकर उन् ें मत्रिंमुग्ध कर हदया था। इसलिए गगिंा पार करने के लिए कककक्श्तयों का पुि बनाने के उसके आश्िासन पर विश्िास कर दत्ताजी ाथ-पर- ाथ धरे बैिे र े। इस तरीके से नजीब ने अपने दो मतिब साधे। एक तो बगिंाि पर मरािों के मिे करने की योजना में उसनेरोडा अटकाया, दूसरे मरािों के खखिाफ गोपनीय तरीके से प ि ेसेज्यादा बडा और मारक षड्यत्रिं रचने के लिए उसे ेपयाप्सत समय लमि गया और ह दिंसुतान पर मिा करने की दोबारा कोलशश करने के लिए खुद मुगि बादशा से अब्दािी को खत लिखिाने में सफि र ा। पिानों की धमाधांता जगानेके लिए धम,स अल्िा तथा मुसिमानों की दृक्ष्ट से पवित्र अथिा श्रद्धेय जो कुछ था, उस सबका िास्ता देकर उत्तेजक यनिेदन-पत्र जाने िगे।

धमसरिंक्षक का खखताब प्राप्त करने, गाजी बनने और मूयतपूसजक काकफरों के लशकिंजे से मुसलिम बादशा को मुक्त करने अब्दािी आखखर क्यों न आएगा ? अपनेपुत्र की पराजय की टीस अब्दािी को अब भी सिा र ी थी। ह दिंसुथान के सम्राट् का मुकुट मरािों ने उससे छीन लिया था। इतना ी न ीं, उसे ेपजिंाब और

मुितान से भगाकर ि ह दिंू–साम्राज्य के प्रातिों के रूप में काबिु और किंधार पर भी अपना दिा ोकने िगे थे। मरािों की इन गयतविधधयों के खखिाफ ि कुछ भी न िीं कर पाया था, िेककन अब उसने जान लिया कक कफर ि ी, और प ि ेसे क ी िंअधधक आशा भरा अिसर ाथ आ र ा ै। ह दिंुसुथान का सिाभसौमत् पाने की िािसा से और गिभग पूणिासस्था को प्राप्त ोनेिािी ह दिंू–पदपादशा ी की स्थापना की मरािों की योजना त स-न स करने ेतु एक बार कफर उसनेकमर कस िी। अब्दािी ने बडी खुशी से मुसिमानों के इस षड्यन्त्रि का सूत्रधार बनना स्िीकार ककया और विशाि सेना साथ िेकर ि लसधिुनदी पार करके तेजी से िा ौर प ुाँचा और उसपर कब्जा कर लिया।

इधर अब्दािी के धािा बोिने की खबर हदल्िी प ुाँचते ी नजीब खान ने लशदि से ककया लमत्रता का स्िााँग तुरिंत खत्म कर हदया और ि खुिेआम अपनेआपको अब्दािी का िफादार घोवषत करनेिगा। अब जाकर दत्ताजी को ए सास ुआ कक नजीब खान के बारे में पेशिा का क ा न मानकर उसनेकैसी भयिंकर गिती कर दी। उसनेय भी जान लिया कक नजीब खान और सुजाउद्दौिा ने उसे ेककस तर भ्रम में रखा और अब ि शत्रु की दो ताकतिर सेनाओिंके बीच ककस तर फाँस गया ै। एक तरफ से सुजा दूसूरी तरफ से नजीब खान, रु ि,े पिान और पीछे से विशाि सेना के साथ अब्दािी ऐसेचक्रव्यू में ि चारों ओर से यघर गया। स्िाभाविक ी था कक अटक और िा ौर में तैनात मरािों की अल्पसख्यि सेना को अब्दािी की विशाि सेना के मद्देनजर पीछे टना पडा। उत्तर ह दिंुसुथान में मुसिमानों की अधधसत्ता का िगातार विरोध करने का सा स मरािों के अिािा और ककसी ने ककया तो ि लसखों की नई शक्क्त ने ककया। देश पर आक्रमण करनेिािे विदेशी दुश्मन से िो ा िेकर उसे ेनाकों चने ेचबिाने का रसिभिंप्रयास ककया। िािाँकक ि अपनी एक सुसगिंहित सत्ता भी तब तक कायम न ी िं कर सके थेऔर अपना समूचा प्रदेश विदेलशयों के कब्जे से छुडा भी न िींपाए थे,े अभी ि हदन आया न िींथा। इसलिए माग समें बबना ककसी व्यिधान के अब्दािी अपनी सेना के साथ द्रुतुगयत से सरह दिं प ुाँच गया।

उत्तर के राजपूताना और अन्य प्रातिों के ह दिंू ूराजाओिं के मन में तो मथुरा का विध्िसिं करनेिािे और ह दिंुओ िंसे नफरत करनेिािे अब्दािी के प्रयत प्रत्यक्ष स ानुभूयत ी थी। अब्दािी हदल्िी के सम्राट् के लस िं ासन के बीच अगर कोई बाधा थी तो ि दत्ताजी के अधीनस्थ मरािों की एक टुकडी ी थी। दत्ताजी ने िोकर के पास पत्र लिखकर अपनी स ायता के लिए आनेका यनिेदन ककया; िेककन नजीब के उस मु ाँबोिे वपता को, उस िीर को, मदद के लिए जानेकी बजाय इधर-उधर के छोटे-छोटे राजाओिं–जागीरदारों से िडने में समय गाँिाना ज्यादा अच्छा िगा। इस तर से स ायता न लमिने पर और चारों ओर से शत्रुओिंके चक्रव्यू में फाँसने के बाद मरािों के पास हदल्िी छोडने और पीछे टने ेके अिािा और कोई रास्ता न िींथा। दत्ताजी के साथ के र अनुभिी और पराक्रमी व्यक्क्त ने पीछे टकर िोकर का इिंतजार करनेकी सिा उन् ें दी। उनके जिान भतीजेजनकोजी ने भी ऐसा ी अनुनय ककया, िेकेकन दत्ताजी ककसी की भी सुननेको तैयार न िींथे। अपनी मूखतसा की िज से अपनी सेना को इस भयानक विपदा में धकेिनेके लिए स्िय िंकारणीभूत ोनेकी ग्िायन उनके मन को खाए जा र ी थी। मरािों के प्रमुख शत्रु नजीब पर भरोसा करके उसे े ाथ सेगिााँने की गिती करने के बाद अब उन् ोंनेकायरता न हदखाने ेका यनश्चय ककया। पीछे टने ेकी सिा देनेिािों को उन् ोंनेएक ी जिाब हदया, "क्जसको पीछे टना ै, टे। म ैंककसी को भी रुकनेके लिए मजबूर न िींकरूाँगा। िेककन अब म ैंपीछे न िीं टूिंगा। इस जन्म में नाना और

ह दिं ूपदपादशा ी 63 भाऊ को म ैंमु ाँ हदखाने ियक न िींर ा। म ैंअब्दिाी का सामना करूाँगा और परमेश्िर की कृपा से रणभूलम में या
तो उसे ेपराक्जत करूाँगा या खुदु िीरगयत को प्राप्त करूाँगा।"

उसी समय गाजीउद्दीन को पता िगा कक उसको िजीर के पद से टाने ेऔर ो सके तो उसकी त्या करने के षड्यत्रिं में पिानों के साथ बादशा भी शालमि था। तुरिंत उसनेबादशा की त्या की और उसके स्थान पर एक और किपुतिी व्यक्क्त को लस िंासनारूढ करके ि मरिाों में शालमि ो गया।

कुरुक्षेत्र की रणभूलम पर अब्दिाी का सामना करते े ुए दत्ताजी ने अपनी प्रयतज्ञा पूरी कर हदखाई। दत्ताजी का अिौककक पराक्रम देखकर मरिाी सेना में ऐसा उत्सा फै गया कक उसने अब्दिाी को पीछे टने ेके लिए मजबूर कर हदया। लशदिें के खखिाफ युद्धभूलम में डटे र ना उसके अिके ेके बस की बात न िीं ै- इसका ए सास मरिाी सेना ने उसे ेकरा हदया। अतः उसनेयमुना पार करनेका प्रयास ककया। उसमें सफि ोकर ि शुक्रतिा के पास नजीब खान की सेना सेजा लमिा। सुजाउद्दौिा भी ि िींउसे ेलमिा, तभी अ मद खान बगिंश और कुतुब शा भी ि ा ाँप ुाँच गए और इस तर ि ाँमुसिमानों का जमघट ो गया। अब य स्पष्ट ो गया कक दत्ताजी के नेतृत्िृ ििमें मरिाों की छोटी सी टुकडी इस विशाि सेना का सामना न िींकर सकती। अतः कफर से दत्ताजी के ह तधचतिंकों ने उन् ें पीछे टने ेका अनुरोध ककया। प िी बात कफर से दो राई गई -"क्जसे छोडकर जाना ो, चिा जाए। दत्ताजी को योद्धा का कतव्सय यनभाना ी चाह ए।"

उनका य दृढयनश्चयी िचन सुनकर उसका प्रभाि तो सेना पर ोना ी था। कोई भी उन् ें छोडकर न िीं गया। शा.स.िं १६८२ (माच स१७६०) यमुना नदी पार करनेकी कोलशश कर र ी अब्दिाी की सेना को रोकने के लिए मरिाों ने यमुनातट की ओर प्रस्थान ककया। कृत्सकिंल्प मरिाों ने सघिंष सशुरू ककया। मिाोजी की विशाि सेना का सामना प्रत्येक मरािा अपनी जान थिी पर रखकर करता र ा और िीरगयत को प्राप्त ोता र ा। दोनों सेनाए ाँ आमने-सामनेकी िडाई में एक-दूसूरे पर िार करने िगी।िं तभी मरिाों का केसररया ध्िज रु ि ेऔर पिानों की एकत्र सेना के बीच फाँस गया। अपनेध्िज की रक्षा करनेके लिए मरिा टूट पडे। अपने ह दिं ूराष्ट्र का ध्िज इस तर सकिंट में पड जाने का दृश्य दत्ताजी और जनकोजी से देखा न िींगया। दोनों ने छिागिं िगाई और भारतीय युद्ध शुरू कर हदया। उसी समय शत्रुपक्ष की ओर से सनसनाती ुई एक गोिी जनकोजी को आ िगी और ि घोडे से नीचे ेधगर गए। य देखकर आपा खो बैि दत्ताजी युद्ध करते ुए कोई सुरक्षक्षत स्थान ढूाँढनेकी बजाय शत्रु ुको काटते ुए िगातार आगे ेबढते ेगए और थोडी ी देर में शत्रु की सेना से पूरी तर यघर गए। उनका एक यनष्िािान सैक उनके पीछे था, िेककन आखखर ोनी टि न ी िंसकी। उन् ें शत्रु की एक गोिी िगी और घायि ोकर ि भूलम पर धगर पडे।

नजीब खान के धमगुसरु और पिानी षड्यत्रिं की दीिानगी से भरे ुए कुतुब शा ने य नजारा देखा। ि उस मरिाी सरदार के पास गया और व्यग्यिपूिकस पूछा कक 'क्या पटेि, मुसिमानों के साथ और िडोगे े?' मृतूयु की दे री पर खडे ेइस िीर पुरुष ने जिाब हदया, " ााँ! बचेंगे ेतो और भी िडगें।" इस जिाब से ि पाखडिंी आगबबूिा ो

ह दिंू ूपदपादशा ी 64 उिा। उसनेरण में घायि पडेउस िीर पुरुष को िात मारी और 'काकफर' क ते ुए उनका लसर काटकर
विजयोन्माद में अपनेसाथ िे गया।

इस तर दत्ताजी का अित ुआ। अपनेराष्ट्र की ध्िजा सुरक्षक्षत रखने ेके लिए आखखरी सासाँ तक युद्ध करिेंर्नाा और अतिंतः श ीद ो जािेंर्नाा ि िीर सारी दुयनया में अद्वितीय था। उनके यनधन की और मरणोन्मुख अिस्था में नीचता और शमनसाक ढिंग से उस िीर का अपमान ककए जानेकी खबर म ाराष्ट्र में प ुाँचते ी मरिी कुरुद्ध ो उिे उन सभी के लसर पर प्रयतशोध की धुनु सिार ो गई।
उसी प्ते ेमें उन् ोंनेउद् गीर पर म ान् ्विजय प्राप्त की थी। उनकी योजना ैदर का नामोयनशान लमटाकर दक्षक्षण ह दिंुस्थान को कफर सेस्तिर्िंत्र कराने की थी। उसी समय दत्ताजी की पराजय और यनधन का समाचार उन् ें लमिा। बािाजी और भाऊ ने सकिंट की इस घडी का मुकाबिा करनेकी तैयारी में बािाजी और भाऊ ने जरा भी वििबिं न िीं ककया। िास्ति में िा ी में दक्षक्षण की ओर अथक पररश्रम तथा शौय ससे एक घमासान युद्ध उन् ोंनेयनपटाया था। कफर भी अपनी सेना को एक हदन का भी विश्राम हदए बगैर सभी सेनानायकों तथा मबिंत्रयों को उन् ोंनेतुरिंत पट्रूर में एकत्र ोनेका आदेश हदया। ि ााँसभी म त्त्पूिण सबातों पर विचार-विमश सके बाद िेमिाा में अब्दािी के प ुाँचने से प िे े ी उसे ेगिााँकर उसके साथ युद्ध के लिए एक बडी सेना भेजने का यनणयस लिया गया। शमशेर ब ादुरु, विठ्ठि लशिदिे, मानाजी धायगुडे, अतिंाजी माणकेश्िर, माने, यनबिंाकिर तथा और भी कई सेनानायकों ने अपने-अपनेदि की कमान थाम िी। सदालशिराि भाऊ प्रमुख सेनापयत यनयुक्त ककए गए और बािाजी पतिं के ज्येष्ट्ठ पुत्र विश्िासराि को उनके साथ िगाया गया। विश्िासराि ने िा ी में उद् गीर में अपनेपराक्रम से नाम कमाया था और पूरे म ाराष्ट्र की दृक्ष्ट्ट में ि उसकी भिी आशा था। उस जमाने का सबसेमजबूत तोपखाना इब्राह म खान को सुपुदस ककया गया।

सेना जैसे-जैसे ेआगे ेबढने िगी, िैसे-िैसे दमाजी गायकिाड, सतिंाजी िाघ और दूसूरे सेनोनायक एक-एक कर उसमें आकर लमिने िगे। उत्तर ह दिंुस्थान के अनेक राजपूत राजाओिंको ह दिंओु िंके साथ ि आनेके लिए उनके पास इस आशय के पत्र और सदिेंश भेजे ेजाने िगे कक मथुरा-गोकुि का विध्ििंस करने िािो अब्दािी, जो समूची ह दिंूजायत का शत्रु ु ै, के विरुद्ध सग्रिंाम करने के मराठों के इस प्रयत्न में तो कम- से-कम ि ाथ बटाए।ाँ नमदसा और विध्ंयिपार कर मराठों की सेना चबिंि तिक जा प ुाँची। इस सेना का िैभि और सामथ्य ससमूचे उत्तर ह दिंुस्थान ने आदर और आश्चय ससे देखा। तमाम असतिंुष्ट्ट राजा, निाब, राि इस सेना के दशनस मात्र से भयभीत ो उिे और उनकी इसके विरुद्ध अिगुिंिी उिानेकी भी ह म्मत न िीं ुई। युिा, सुदिंर और पराक्रमी जनकोजी लसधिंधया भी अपनी बची ुई सेना िेकर शीघ्र ी भाऊ से आ लमिे। मराठी सेना ने उत्सा पूिकस उनका स्िागत ककया और उनके जररए बदायूाँ के युद्ध में अपनेप्राणों की आ ूयत देनेिािेउनके चाचा दत्ताजी लशदिें को श्रद्धाजिंलि अवपतस की। बीस िष ससे भी कम आयु के क्जन जिानों नेअपने धम सतथा ह दिंओुिंकी रक्षा के लिए सग्रिंाम ककए थे, विजय प्राप्त की थी और अपने शरीरों पर भयकिंर घाि स े थे, उनके तथा िीर जनकोजी के सम्मान में भाऊ ने एक समारो आयोक्जत कर उनपर मूल्यिान उप ारों और िस्त्रों की बौछार कर दी। बािाजी की अनुपक्स्थयत में

उनकी जग सभाँीिीनी मरिों के िाडि ेनेता तथा शूर ए िंउदार राजपुत्र विश्ासिरि क्जस क्षण पराक्रमी जनकोजी से गि ेलमिने के लिए उि, उस क्षण ि ााँउपक्स्थत प्रत्येक व्यक्क्त के हृदय में भिनाओिंका ज्ार उमड पडा। ये दोनों तेजस्ी युिक क्जतने सुदिंर थे, उतने पराक्रमी भी थे। अपनी प्रजा के ध्येय और म त्त्ाकािंक्षाओिंसेएकयनष्ट् ये दोनों राजपुत्र ह दिंू ूराष्ट्र के

भविष्ष्य की उदयोन्मुख आशा थे। मल् ाररिा िोकर भी ि ााँआ प ुाँचे। नजीब खान को पुत्रित् ्माानना और यथासमय दत्ताजी की स ायता करने में सुस्ती हदखाना-ये दो बडी भिूें उनसे े ुई थी।िं अपनी इस िापरि ी का प्रायक्श्चत्त उन् ें प ि े ी लमि गया था। अब्दिी नेउन् ें अकेि ेघेरकर खासी चोट प ुाँचाई थी। सदालशिरि भाऊ ने अब्दिी को अपने से युद्ध करने के लिए यमुना नदी के इस पार आनेका मौका लमिने से प ि ेस्यि िं ी यमुना पारकर उसे ेसबक लसखानेकी योजना बनाई। जब भी मौका लमिे,े अब्दिी की सेना पर पीछे से मिा कर उसकी रसद बरबाद करने का क्जम्मा उन् ोंनेगोविदिं पतं बुिंदेिा को सौंपा, िेककन यमुना नदी में जबरदस्त बाढ आई ुई थी और दूसूरे ककनारे पर शत्रु की विशाि सेना मौजूदू थी। ऐसी क्स्थयत में नदी पार करना कहिन ो गया। इसलिए सदालशिरि भाऊ ने सीधेहदल्ी पर ी धािा बोिकर अब्दिी से ि राजधानी पूरी तर छीन िेने का यनश्चय ककया। उत्तर भारत के ह दिंू ूराजाओिंमें से लिकि जाट ी ह दिंुओिंकी स ायता के लिए आगे ेआए। भाऊ ने स्यि िंसूरजमि जाट का स्ागत ककया और दोनों ने यमुना का पवित्र जि ाथ में िेकर अब्दिी के साथ यनणाायसक युद्ध करने की शपथ िी।

देश की जनता का ध्यान हदल्ी पर केंहद्रत ो गया। ह दिंू ूऔर मुसिमान- दोनों ी जान र े थेकक भारत की ऐयत ालसक राजधानी पर विजय प्राप्त करने का पररणाम ककतना भयकिंर ोगा। हदल्ी पर धािा बोिने के लिए लशदिें, िोकर और लिबितिंरि मे ंदिे ेके नेतृत्ि में सेना की टुकडडया ाँरिाना कर दी गईं। हदल्ी को बचाने ेके लिए पिानों ने जान िडा दी। कफर भी मरिों के शक्क्तशािी तोपखिोंकी बौछार से उनका मोरचा ध्स्त ो गया और ि ा ाँकी मुसिमान सेना पीछे ट गई। भारत की राजधानी और ि ााँके कििेके पतन के समाचार से ह दिंूभूम स पर गि सकरिनेिाी प्रत्येक व्यक्क्त का हृदय आनदिं से भर उिा। मरिी सेना गि सके साथ हदल्ी नगर में प्रविष्ट ुई और पािंडिों की इस राजधानी इिंद्रप्रस्थ के कििे ेपर भाऊ ने भगिा ध्जि फ राया। पृथ्िीराज के युग के बाद ह दिंुओ िंकी- स्यि िंको रभक्तों की सेना क िािनेिाी - ककसी सेना ने स्तिित्रं ह दिंू ूध्जि िेकर प िी बार हदल्ी में प्रिेश ककया था। पिान, रु िे,े मुगि, तुकस, शेखे, सैयद-इन सबकी ह दिंू-ूविरोधी गयतविधधयों को धता बताकर और मुसलिम चादाँ को यनस्तेजे कर ह दिंू-ूपदपादशा ी का ध्जि ह दिंी साम्राज्य की राजधानी पर कफर से ि राने गिा। मुसिमानों की सारी सेना िेकर यमुना के उस पार अब्दिी खडा था, िेककन हदल्ी की रक्षा के लिए ि कुछ न ी िंकर सका।

एक ी हदन के लिए ी स ी, सदालशिरि भाऊ ने ह दिंू-ूपदपादशा ी का अपना सपना साकार ोते े ुए देख लिया। अपने प्रयत्नों सेऐसा एक हदन भी देखने ेको लमिे ेतो सपिूंण सराष्ट्र का जीिन साथकस ो जाता ै। ऐसा एक हदन भी देशभक्तों के अनेक शतकों के प्रयत्न और पराक्रम, सुख और कष्ट्, आशा और परीक्षा की यनष्ट्पवत्त

ोता ै। पूरी सात शताक्ब्दयों तक मुसलिम जुल्म और दासता भी ह दिंओु िके क्षात्रतेज और जीिनशक्क्त को ोशिमात्र भी क्षयत न िीिप ुँचा सकी- य इस उज्ज्िि हिदन ने साबबत कर हदखाया। ह दिंिओु ने य भिीभायाँत लसद्ध कर हदखाया कक ि अपनेशत्रु ुसेन िकेि बराबरी कर सकतैं, िरन् ुउनकी क्षमता उससे क ी िबढकर ै।

भाऊ अगर अपने मन से चिोते ेतो इस उपिक्ब्ध के तुरिंत बाद ी ि विश्िासिरा को अखखि ह दिंसुथान का सम्राट् घोवषत करके राजधानी में उनका राज्यालभषेके करिाते ेऔर इस तर ह दिंू–पदपादशा ी की विधधपिूकस स्थापना कर िेते। पर राजनीयतक पररक्स्थयत के मद्देनजर ऐसी जल्दबाजी करना उन् ें उधचत न ी िगिा। उन् ें अच्छी तर मिूम था कक विश्िासिरा को ह दिंसुथान का सम्राट् घोवषत करने से उत्पन्न ोनिेिीमराठों के भय से अभी ककसी भी पक्ष का साथ न देनिेिीमुसिमान ी न िीं, अवपतु उत्तर ह दिंसुथान के ह दिंू ूराजा भी मराठों के खखिाफ ो जाएगेँ। कफर भी जनता की मनःक्स्थयत का जायजा िेनेऔर इस म त्त्िपूण सघटना की छाप ह दिंसुथान की समूची जनता, लमत्रों एि िशत्रुओ िके हदि पर छोडनेकी उन् ोंनेसोची। इस उद्देश्य से उन् ोंनेसािभसौम राजसभा की बिैक समारो पिूकस बिुाने की आज्ञा दी। इस बिैक की अध्यक्षता के लिए शूरिीर विश्िासिरा को तैयार ककया गया। प्रयतयनधधयों के जररए समूचा म ाराष्ट्र ि ा ाँमौजूद था। िकेि म ाराष्ट्र ी न िीं, अवपतु समस्त ह दिंओु िके शौय,स िैभि, सद्बुद्धध और विद्त्ता का सुफि ि ाँतेज से चमक र ा था। य राष्ट्रीय म ोत्सि षोल्िासि सेशुरू ुआ। अश्िारो ी, पथक, स स्रों घोडेएि िं ाथी, िाखों सैयनक तथा योद्धा जो ह दिंतुि की पताका गोदािरी से िेकर उत्तर में लसधिं नदी तक और दक्षक्षण में ह दिं म ासागर तक शान से ि राते ुए घूमे थे, उन् ोंनेस स्रों किंिि रणलस िंों, तुरह यों, बिंदूकों, तोपों और प्रचडिं रण-दिंदुलुभयों से विजय-यननाद कर सैयैनक-अलभिादन ककया। उसके पश्चात् ्सेनानायक, राजनीयतज्ञ, सरदार, सूबेदार, प्रातिीय शासक - सभी नम्रतापिूकस आगे ेबढे और अपनिेािडेराजकुमार की मानि–दिंना उसी तर सम्मानपिूकस की, जैसेसिप्रिंभु राजा की की जाती ै। क्जसने भी य अद्भुत दृश्य देखा ि इसका गुह्याथ ससमझ गया। इस समारो में शालमि ोनिेिीप्रत्येक व्यक्क्त को िगा कक ईश्िर की कृपा से अखखि भरतखडिं के सिश्ेरेसष्ट् हि दिंू ूचक्रिती सम्राट् के नाते ेइस युिा राजकुमार का जो भव्य राज्यालभषेक ोगा, य समारो मानो उसकी पिूपसीहिका ै।

पानीपत

'From the field of his fame, fresh and gory.We carved not a line, we raised not a stone, But we left him alone with his glory.'

-C. Wolfe

(-उसकी नूतन और रक्तरिंक्जत ख्यायत के क्षेत्र् से मनेएक भी पत्थर न िींटाया, २ ी उस पर कोई िकीर खीचीं, ेकिकन मनेउसे ेउसकी ख्यायत के साथ अकेिा छोड हदया।)

हदल्िी में बाजे−गाजे ेके साथ सपिंन्न ुए इस समारो का अथ समुसिमानों को समझते ेदेर न िींिगी।

ह दिंुसुथान के सम्राट्। पद पर मरािों द्िारा अपनेयुिराज का अलभषेक करने की खबर दािानि की तर चारों ओर फै गई। नजीब खान और अन्य मुसिमान नेता इस प्रसगिं का िािा देकर अपनी धचतिां और पररक्स्थयत की

भयािता मुसिमानों के मन पर अकिंकत करने के लिए स्िय िंके लिए प्रयत्नों की दु ुाई देनिेगे। ि इस बात का हढढोरा जोर-जोर से पीटने ि गे े कक में क्जसकी आशकिंा थी, ि ह दिंू-ू पदपादशा ी -क्जसे नजीब और मुसिमानी

कफरकापरस्त 'ब्राह्मण-पदपादशा ी' क ते ेथे-स्थावपत ो चुकी ै। पैगबिंर के प्रयत यनष्ठािान प्रत्येक सच्चे े मुसिमान को अब काकफरों की सेना पर शस्त्र प्र ार करना चाह ए।

ेकिकन उन्मादी भािनाओंके इस सैिाब में की सुजाउद्दौिा और दूसूरे मुसिमान नेताओंपर नजीब खान तथा मौिवियों के मो म्मदी धम सके नाम पर ककए आह्िान की बजाय स्िाथि स ी भारी पडा। सुजाउद्दौिा और अन्य मुसिमानों को अब्दािी की मरािों से िो ा िेने की ताकत पर सदिें ोनिेगा, क्योंकक उसकी सेना की

ह दिं ूपदपादशा ी 68 मौजूदगी में मरािों ने विजय-दर-विजय प्राप्त की थिीं और ि बेबसी से ाथ मिने के लसिा

कुछ न िींकर सका

था। सुजा ने तो भाऊ के पास पत्र लिखकर अब्दािी का साथ देनेके लिए पछतािा तक प्रकट ककया। भाऊ ने भी

उससेबातचीत के सबिंधिं बनाए रखने ेमें दूरूदलशतसा मानकर अपनेदूतों के जररए उसे क ि भेजा कक मरािे तो

मुगि बादशा ी खत्म न िीं करना चा ते थे। सुजा अगर अब्दािी का साथ छोड दे तो शा आिम को हदल्िी का

सम्राट् मानने और उसके िजीर के पद पर सुजा को यनयुक्त करने में उन् ें कोई आपवत्त न िींोगी। इससे रु ि

ेभी

आगा-पीछा करने िगे और अब्दािी का साथ छोडकर जाने की भाषा बोिने िगे।

अपनेखखिाफ बनतेराजनीयतक मा ौि के मद्देनजर अब्दािी ने मरािों से सधिंध की बातचीत करने का

यनश्चय ककया और करार पर चचासके लिए अपनेदूत भेजे;े िेककन पजिंाब प्रातिं की िापसी की अब्दािी की मागँा पर

भाऊ सा ब का स मत ोना असभिंथा। इसी तर इस खोखिी बातचीत के भ्रिो में आकर, िो ा गरम र ते े ी

चोट करने का ाथ आया सुन रा अिसर गाँिाने की भूि भी उनसे ेन िींो सकती थी। इसलिए सधिंध के बारे में चि

र ी इस आधी-अधूरी बातचीत के बीच में ी उत्तर में धािा बोिकर उन् ोंनेअब्दािी के कब्जेसे कुिंजपुरा नामक

मजबूत स्थान छीन िेने का यनणयस लिया। अब्दािी ने समदिं खान को अच्छी-खासी सेना देकर कुिंजपुरा की रक्षा

का क्जम्मा सौंपा था। नजीब का धमगुसरु कुतुबशा भी ि िीं था। मरािों के मिे की खबर लमिते ी उन् ोंनेककसी

भी दुश्मन के मिे से उस स्थान की रक्षा करने की भरपूर व्यिस्था की। अब्दािी ने भी यमुना के दूसरे तट से

समदिं खान और कुतुबशा को र तर की ायन उिाकर भी किेकी रक्षा करने का आदेश तथा उनकी रक्षा के

लिए और अधधक सेना भेजने का आश्िासन हदया।

हदल्िी छोडते िक्त अपना कोषागार पररपूण सरखना भाऊ के लिए आिश्यक ो गया। उनका अनुमान था

कक गोविदिं पतिं बुदेंिा अब्दािी की रसद बदिं करने, पीछे से उसपर मिे कर उसे ेपरेशान करनेऔर सुजाउद्दौिा

तथा रु िों के प्रातिों में िगातार धािा बोिकर त िका मचा देनेकी अपनी क्जम्मेदारी सफिता से यनभा ि

जाएगेँ। िेककन गोविदिं पतिं बुदेंिा इसमें सेएक भी काम न िींकर सके। बुदेंिी की ओर से ककसी भी तरीके से धन-

सपिंदा की आपूयत सयनतातिं असभिंिो जानेपर भाऊ अपना खजाना भरने के लिए कोई अन्य उपाय सोचने िगे।

कारण य कक धन-सपिंदा अथात्स ्युद्ध की शक्क्त। बादशा ी लस िंासन की छत पर जडी िाखों रुपयों की कीमत

की िोस चादँी की छत उनकी नजर में िाई गई। भाऊ ने तुरिंत आदेश हदया कक ि छत भारी- भरकम थौडों से

तोडकर लसक्के ढािनेके लिए टकसाि में भेजे दी जाए; िेककन य आदेश अधिंविश्िासी तथा दास मनोिृवत्त

िोगों को पसदिं न िींआया और ि इसके विरोध में शोर मचानेिगे।

भाऊ के इस आदेश से जाट भी असतिंुष्ट ो गए। उनका मानना था कक क्जन शक्क्तशािी मुगिों को

ह दिंुस्थान का सम्राट् बनाने की इच्छा स्ियिं परमात्मा की थी, उन् िींके लस िंासन को इस तर त स-न स करके

मरािों ने धम सका उल्िघिंन ककया था। यहद य स ी था तो जाटों को य भी समझना चाह ए था कक दूसरों का

राज्य बबना कारण डप करने समेत सारी घटनाए ँयहद परमेश्िर की इच्छा से ी घटी थी िंतो लशिाजी ने रायगढ

पर क्जस लस िंासन की स्थापना की और क्जसके पाय ेंबित्कार, धालमकस अप्रचार पर न िीं, अवपतु आत्मरक्षण,

स्तितत्रिंता और अपना राज्य स्यि िंचिाने की राष्ट्र की इच्छा जैसे ेपवित्र आधारों पर हटके थेऔर अब य बात साबबत भी ो गई थी, तो य भी परमेश्िर की ी इच्छा थी। आग, ध्िंसि, धमाधांता और अत्याचारों की आधी ीं
ककिर औरिंगजेब जब दक्षक्षण में ह दिंओु िंका राष्ट्रीय जीिन नष्ट करने और निस्थावपत ह दिंू ूराज्य को त स-न स करने के लिए उतरा, तब उसने लशिाजी म ाराज के लस िं ासन को थौडों से खडिंडत करने में क्या कोई सकिंोच ककया था ? कफर मुगिों का शा ी लस िं ासन जो जाटों समेत सभी ह दिंओुंकी दृक्ष्ट से लसफस शैतानी सत्ता का प्रतीक था, जो जारों ह दिंू ू ुतात्माओ िंके रक्त से न ाया गया था, क्जसकी स्थापना ह दिंओुंके महिंदरों, घरों और गृ ृाक्ग्न के अिशेषों पर की गई थी और क्जसका लसफस अक्स्तत् ि मानो ह दिंओुंका राष्ट्रीय यनधन था, ऐसेलस िं ासन का आदर ह दिंओु िंको क्यों करना चाह ए? ह दिंू ूराज्य का लस िं ासन क्षत-विक्षत करने के लिए औरिंगजेब ने अपना
ीं दिंड उिाया था, िककन कि, भविष्य और ह दिंसुथान के रक्षक दिेताओ िंने उसके ाथ से ि ौ दिंड छीन लिया और आज औरिंगजेब के बादशा ी लस िं ासन की छत ी उस लस िं ासन के नीचे चूर-चूर ोकर धगर गई।

अपनेसैयनकों का बकाया ितन चुकाकर सदालशिरि ने किंजपुरा पर मिा ककया। इस मिे के अग्रणी थेलसधिंधया, ोकर और विट्ििलशिदिे। ि ाँके पिान सैयनकों ने ीरता से सघिंष सककया। गिाँ और दुगु-सदोनों प्राकृयतक दृक्ष्ट से मजबूती के लिए प्रलसद्ध थे;े ककिंतुजब अपनी बहढया तोपों के साथ मरािों ने उनपर यनशाना साधा और उनके पीछे लसधिंधया तथा इतर सेनानायकों की सेना खडी ो गई, तब दुगु सकी रक्षा करना मुसिमानों के लिए कहिन ो गया। मुसिमानों के दुगु सकी दीिारों में कुछ यछद्र पडते े ी दत्ताजी गायकिाड ने अपनी टुकडी को अदिंर घुसने का आदेश हदया और ' र- र म ादिे' का जयघोष करते े ुए उनके सैयनकों ने अपनेघोडों समेत उन यछद्रों से प्रिेश ककया। घनघोर युद्ध ुआ। मरािों की तििारें पिानों को खून से न ाने िगी।िं मरािों ने दुगु सपर कब्जा कर लिया। मुसिमानों के यनिास स्थान ूटे गए और उनके सैकडों सैयनक बदिंी बनाए गए। उनका सेनानायक भी मरािों द्िारि जिंजीरों में जकडा गया। प िे भी एक बार रघुनाथरि ने अपनेआखखरी मिे में उसे े बदिंी बना लिया था, िककन बाद में उससे धन िेकर उसे ेछोड हदया था। मरािों का विरोध करने की काररिाइया ाँ उसनिेगातार जारी रखीिं और अब ि कफर सेमरािों के कब्जेमें आ गया था। जब सग्रिंाम समाप्त ोनेके आसार हदख र े थे, उसी समय लशदिें तथा ोकर को सदालशिरि कुछ आदेश दे र े थे। शत्रु ुके अनुमान से जो काम करने के लिए मरािों को तीन म ीने न स ी, कम-से-कम तीन फ्ते िगने चाह ए थे, ि ी काम मरािों ने अल्पािधध में कर हदखाया था। ह दिंू ूसैयनकों के पराक्रम की प्रशसिंा कर र े थे,े उसी समय उनके सामनेदो म त्त्िपूण सयुद्धबदिंी ाथी पर बबिाकर िाए गए। कैहदयों में से एक किंजपुरा का पिान सेनानायक समदिं खान था और दूसरा अब्दिी को बुिाने के लिए रचे गए पिानी षड्यत्रिं का एक सूत्रधार और िीर दत्ताजी को मरणासन्न अिस्था में िात मारने िािा और उन् ें 'काकफर' क कर उनपर गालियों की बौछार करनिेािा कुतुबशा ।

कुतुबशा को देखते ी गुस्सेसे सदालशि भाऊ का खून उबिनिेगा। प्रयतशोध िेनेका आह्िान करने िािी दत्ताजी की त्या की स्मृयत उस जग पर मडँरानिेगी। " मारे मरणोन्मुख दत्ताजी को 'काकफर' क कर िात मारने िािा नीच क्या तू ी ै?" उनके द्िारि य पूछने पर कुतुबशा ने जिाब हदया, " ाँ, मारे धम सके

अनुसार मूयतपूसजक की त्या करना तथा घृणृा से उसे े'काकफर' क ना सत्कम समाना जाता ै।" इसपर भाऊ ने तुरिंत जिाब हदया, "तब तू भी कुते्ते की मौत मर।"

भाऊ के आदेश से उस अपराधी का लसर काट लिया गया। इस तर दत्ताजी के िध का बदिा लिया गया। समदिं खान को भी ि ी दिंड लमिा।

नजीब खान के दामाद समेत उसका पूरा पररिार मरिों के कब्जे ेमें आ गया; िेककन कुतुबशा क्जतना किोर दिंड उन् ें न ी िहदया जा सका। सभी युद्धबहिंदयों को कुतुबशा क्जतना किोर दिंड हदया जाता, तब भी अब्दािी को उस सजा पर मानिता का िाँसिा उिाने का अधधकार न ींथा, क्योंकक अब्दािी और उसकी मदद के लिए आए अन्य मुसिमान सरदारों ने बगिंाि, िदान तथा अन्य जग ुए सगिंग्रामों में पकडे गए मरािा सैयनकों की प ि ेउनकी नाक काटने,े कफर उनका लसर धड से अिग कर अपनी छािनी के सामनेजय-धचह्न के रूप में उनका ढेर रचाने आहद बबरसतापूण सकृत्य ककए थे। मरिे भी इस जगिंिी तरीके का अनुसरण कर सकते थे, िेककन उन् ोंनेकभी भी ऐसा नीच काम न ी िककया। अब्दािी, औरिंगजेब, नाहदरशा आहद 37' धम सकी आज्ञा' क कर जो कुछ ककया, उस तर मरिे कुरान की प्रयतयाँ जिाने, मसक्जदें धगरानेतथा पवित्र स्थानों को अपवित्र करनेके लिए कभी न ीं जानेगए।

कुिंजपुरा का पतन अब्दािी की प्रयतष्िा पर दूसूरा बडा आघात था। मरिों ने कुिंजपुरा में उसकी िगभग दस जार सेना को नेस्तनाबूद कर हदया और उसके सम्मुख विजयादशमी का म ोत्सि सैयनक आन-बान और शान के साथ उत्सा पूिकस मनाया। अब्दािी एक काबबि सेनापयत था। ि जानता था कक इस अपयश को धोने ेके लिए कोई नुकसान उिाकर भी उसनेजल्द ी कोई विििक्षण सा स का कृत्य न ींकर हदखाया तो उसके सारे ककए-धरे पर पानी कफर जाएगा। तुरिंत ी उसने यमुना पार करने का जोखखम र ात में उिानेऔर कुिंजपुरा क्स्थत मरिों का हदल्िी के उनके आधारस्थान से सबिंधिं तोड देनेकी योजना बनाई।

अपनी इस योजना में ि सफि भी ुआ और बागपत में यमुना पार कर उसने अपनी एक िाख की प्रचिडं सेना कुिंजपुरा की मरिी सेना और हदल्िी क्स्थत मरिों की सेना के बीच एक बाड के रूप में खडी कर दी। इससे उसका एक और दािँ भी अनायास ी लसद्ध ो गया। उसके यमुना पार करके आनेसे मरिों का दक्षक्षण से सपिंकस टूट गया, िेककन अब्दािी का रु ीं तथा सुजाउद्दौिा के प्रदेशों से सबिंधिं बना र ा। पर इसके लिए उसकी कोलशशों की बजाय मरिों की भूि अधधक कारणीभूत र ी- सदालशरािा भाऊ के यनदेशानुसार गोविदिं पतिं बुदेिंिा अब्दािी के रसद-पानी की आपूयत सभगिं न ींकर सके थे। अब्दािी जानता था कक मरिे उसका मुकाबिा करनेके लिए पूरी तर तैयार ैं। उसके बागपत में प्रिेश करनेमें सफि ोते े ी भाऊ सा ब ने कुरुक्षेत्र की प्रलसद्ध रणभूलम पर उससेदो-दो ाथ करने के उद्देश्य से आगेबढकर पानीपत में अपनेखेमेगाड हदए। मरिों को विश्िास था कक गोविदिं पतिं बुदेंिेऔर गोपािा गणे ेउन् ें सौंपी गई क्जम्मेदारी िीक से यनभा दें, अथात्स ्अब्दािी की रसद बदिं कर पीछे से उसे ेपरेशान करते ेर ें। बस, ि (मरिे) अब्दािी को उसकी पसदिंदा रणभूलम पर भी पूरी तर

कुचि डिोंगे। पर गोविदिंपतिं उन् ें सौंपा गया काम थोडा भी करके न िींहदखा सके। भाऊ ने कडक आज्ञाए,ाँ धमककयााँ- र उपाय आजमा डिो,े पर गोविदिं पतिं ने, क्जतने जो ि कर सकते थे, उतने प्रयत्न भी न िींककए।

जाटों ने इससे प ि े ी मरािों का साथ छोड हदया था और अब ि अपनी राजधानी भरतपुर में सुरक्षक्षत बिैकर ि ाँसे मरािों की दुदुसशा का तमाशा देख र े थे; िेककन उनके मामिे ेमें य ध्यान में रखा जाना चाह ए कक ि बीच-बीच में मरािों को सामग्री भेजते र े। राजपूत तो उतना भी करने के लिए तैयार न िींथे। मरािों का खुिेआम मुकाबिा करने का सा स उनमें से ककसी में भी न िींथा, िेककन उनमें से ब ुताशिं िोग चा ते थेकक मरािों का समिू नाश ो जाए।

आगे ेका इयत ास इस बात का साक्षी ै कक इन राजाओ िंकी य आत्मघाती इच्छा ककस द तक पूरी ुई। इस तर से दोनों प्रयतपक्षी एक-दूसूरे का आपूयत-समाग सखडिंडत करने और दुशुमन को प ि ेभुख से अधमरा करके और कफर उससिैडने को कोलशश ेंकर र े थे। कफर भी जैसे-जैसे ेसमय बीतता गया, िैसे-िैसेभुखमरी को आफत अब्दिी से ज्यादा मरािों पर आती गई। आखखरकार, शा.स.िं कायतकस शुक्ि १५ (हद. २२.११.१७६०) के हदन जनकोजी लशदिं बा र यनकिकर मुसलिम सेना पर टूट पडे। घमासान सग्रिंाम यछड गया। उस मराि जिान सेनानायक और उसकी पराक्रमी सेना के आगे ेहटक पाना मुसिमानों के लिए सभिंि न िीं ुआ। शाम तक ि पीछे ट गए। उनपर मार करते े ुए मरािों ने उनकी छािनी तक उनका पीछा ककया। उस हदन अधेंरे ने मुसिमानों का साथ हदया और ि पूरी तर पराक्जत ोनेसेबच गए।

मरािों ने अपने विजयी िीरों का स्िागत सैयैनक सम्मान के साथ ककया। इस पराजय से अपने सैयनकों तथा िोगों के मन में पैदा ुआ डर दूरू करने के लिए अब्दिी ने अपनी चुयनदिं टुकडडयों को यनदेश हदया कक ि एक पखिाडे के पश्चात् ्शाम को बा र यनकिें और रात के अधेंरे का फायदा उिाकर मरािी सेना के मध्य भाग पर मिा करें; िेककन अब्दिी की य रणनीयत धरी की धरी र गई, क्योंकक उसकी टुकडडयों के बा र यनकिते े ी उन् ोंनेदेखा कक बििंिंरा मे ेंदिे चुने ुए बीस जार सैयनक िेकर उनसे ेलभडने के लिए प ि े ी बा र आकर खडे े ैं।

पिानों ने तुरिंत मरािों पर तोपों की अक्ग्नषा सशुरू कर दी। दुदिैु से मरािी अपना तोपखाना साथ िेकर न िींआए थे। इसलिए उन् ें भयकिंर ायन उिानी पडी। मरािों की पराजय के आसार नजर आनिेगे। अचानक ी विद्युत् ्िेग से उनका सेनापयत अपना घोडा दौडाते ुए आया; उसनेअपनेसैयैनकों को भगिा ध्िज की कीयत सको किकिं न िगाने के लिए चेताया; उनमें उत्सा का सचिंार करते े ुए उन् ें पुनः सगिंहित ककया और अपनी नगिंी तििार उिाकर उन् ें मुसिमानों पर पूरे जोश से टूट पडने की आज्ञा दी। मरािी घुडसिार अपनेअश्िों को एड िगाते े ुए शत्रु पर विप पडे। उन् ोंनेपिानों की तोपें खामोश कर दिीं और ि शत्रुसे आमने-सामनेदो-दो ाथ करने िगे। उनका िीर सेनापयत बििंिंरा मे ेंदिे ेउनके अग्रभाग में था। एकाएक य सेनापयत एक गोिी का यनशाना बनकर िीरगयत को प्राप्त ो गया। य देखते ी उसका लसर काटकर विजय के प्रतीक के रूप में अपनी छािनी में िे जानेके लिए मुसिमान उसके शि पर झपट पडे; िेककन उनकी इस नृशृसिं कारसिाई को रोकने के लिए

यनबिंकिर दौडकर मुसिमानों की तितिरों और अपने वप्रय सेनापयत के शि के बीच आ गए और स्यि िंपर प्राणघातक िार पडनेके बाद भी सेनापयत के शि को तब तक अपनी दे के आिरण से ढके र े, जब तक मरिों ने िााँप ुाँचकर मे ेंदि ेके शि को न िींछुडा लिया।

इसी बीच मरिो जारों पिानों को मौत के घाट उतार चुकु थे।े मुसिमानों ने जान लिया कक अब मरिों के आगे ेहटकना कहिन ै। मरिों की भयकिंर मार से बे िा ोकर िे अपनी छािनी की ओर मुडने िगे। मरिों के मोरचे के मध्य भाग के सामने ी मुसिमानों के जारों शिों का ढेर पडा था। मरिों की य विजय बडी थी, पर उसे ेपाने के लिए हदया ुआ सेनापयत भी उतना ी बडा था। िे बडेसम्मान के साथ तिबितिंरि का शि अपनी छािनी में िे गए। िे ााँसैयैनक सम्मान के साथ उस शि की मानिदिंना की गई। सदालशिरि भाऊ को इस दु:खद घटना से सबसे ज्यादा आघात प ुाँचा। िे स्यि िंशियात्रा में उपक्स्थत र े। उस िीर पुरुष तिबितिंरि की पत्नी भी कम सा सी न िींथी। उस िीरागिंना ने पयत की धचता पर सती ोनेका यनश्चय ककया। सदालशिरि भाऊ के मनाने पर भी उसका यनश्चय न िीं टिा। अपनेश ीद ुए सेनापयत की अयिंतम िदिंना करनेके लिए सभी सैयनक बा र आए। सैकडों िोग उस म ान् ्िीर ुतात्मा को और अपनी गोद में मृतृ पयत का मस्तक लिये अक्ग्न-ज्िािाओंके बीच बिैी सा सी म ाराष्ट्र कन्या के सतीत्ि को आदरांजिलि अवपतस करते े ुए धचता के इदसधगदस खडे ेर े।

इस तर से अब्दिी ने जो दो मोरचे िडे, उन दोनों में उसे ेमार खानी पडी; िेककन इससे मरिों की भुखमरी की समस्या का ि न िीं ुआ। िााकााँक अब गोविदिं पतिं ने उसे ेकाफी प िे े ी हदए गए अब्दिी की रसद खडिंडत करने के यनदेशों पर अमि जरूर शुरू कर हदया था; पर बरात जाने के बाद इस घोडेका कोई खास मतिब न िींर गया था। य कारसिाई भी ज्यादा हदन न िींचिी, क्योंकक आततायी खान ने छि से मरिों की ी पताका िेकर दस जार पिानों की स ायता सेगोविदिं पतिं पर मिा ककया। िोकर की पताका देखकर मरिो शत्रु की तितिरें खीचिं िेनेतक उन् ें भी मरिा समझते ेर े। अिंत में गोविदिं पतिं भी मारे गए। चार म ीने से िगातार लमिती सदालशि भाऊ की आज्ञाओं का पािन अगर िे जान िथीं पर िेकेर करते ेतो अपनेसाथ-साथ अपने राष्ट्र को भी इस दुदुसशा से बचा सकते थे। अब खुदु ी जान से ाथ धो बिै। पिानों ने गोविदिं पतिं का लसर काट लिया। अब्दिी ने िे लसर और उसके साथ अपनेशौय सका बखान करिनेिाा पत्र सदालशिरि भाऊ के पास भेजकर अपनो इनसायनयत हदखा दी। सामररक दृक्ष्ट सेअब्दिी को पूरी तर पराक्जत करना अब भो सभिंि था। कारण य कक अब्दिी की इतनी सख्त व्यिस्था के बािजूद पानीपत में मरिों के कहिनाई में ोनेकी खबर दक्षक्षण में प ुाँच गई थी। उनकी स ायता करने के लिए िगभग पचास जार सैयनकोंिािी विशाि सेना के साथ बािाजी यनकि पडेथे। इस तर मरिो पानीपत में अगर एक म ीने तक डटे र ते ेतो इन दोनों सेनाओंके बीच अब्दिी वपसकर र जाता; पर भुखमरी का प्रश्न कैसे े ि ककया जाता ? सैकडों को सख्िंया में बोझ ढोनेिािे ेपशु और सिारी घोडेभी दाना-पानी के अभाि में र रोज दम तोडनेिगे। उनकी सडी ुई िाशों से उिनेिािी बदबू से भुखमरी के साथ-साथ सेग में जानिेिा बीमाररया ााँफैिने का डर पैदा ो गया। इसे ेटािने के लिए मौका न ोते े ुए भी िडाई के लिए एकदम यनकि पडनेका एकमात्र उपाय ी शेष र गया था। माने के िीर सैयनक प्रयतहदन भाऊ

के लशविर के सामनेएकत्र ोकर बडी व्याकुिताम अनुनय करने िगेकक य ाँइस तर मारी दुदुसशा और भुखमरी के बजाय में रण में िडकर मौत का सामना करनेका अिसर हदया जाए।

इस भुखमरी की समस्या से पीछा छुडाने का एक उपाय और था कक मारे पुरखों ने जो ह दिंू ूकाय सआरिंभ ककया था और पूिजसों की कई पीहढया ाँक्जसके लिए जीिन भर काम करती र ी िंतथा अपना बलिदान देती र ी,िं उस पर पूण सविराम िगा हदया जाए; पर क्या ऐसा करनेके लिए और अब्दिी को ह दिंुस्ुथान का सम्राट् मानकर अपने राष्ट्रीय स्ितित्र्यि का बलिदान देनेके लिए मरिी तैयार थे? न िीं, कदावप न ी।िं एक भी मरिाा ऐसा करने के लिए सम्मयत न िींदेगा, इसकी बलि स्ितः भुखमरी और विपवत्त से इतनेपीडडत ोते े ुए भी िे शत्रु की समुद्र तुल्य सेना को टक्कर देंगे ेऔर उसे ेआमने- सामनेकरके ऐसा युद्ध छेडगें ेकक उन् ें विजय प्राप्त करना सभिंनि िींो तो शत्रु ुअपनी जीत सेथोडा सा भी िाभ न िींउिा पाएगा। ऐसे ेदृढयनश्चयी मरिों का नेतृति्ृ करते े ुए, कुछ भी ो

ोजाएँ, शस्वामीजी मेंकी िंराष्ट्रीय प्रयतष्ट्िा थोडी भी कम ो-ऐसा कुछ भी न ी िंकरूाँगा, उिटे खराब से खराब पररक्स्थयत में भी जीत चा े न लमिे-ेपराजय भी ऐसी प्राप्त करूाँगा कक िे भिाी पीहढयों के लिए राष्ट्रीय गौरि, स्िलभमान और स्फूयत सके अक्षय स्रोत की तर अनेक विजयों से भी अधधक उपयोगी साबबत ो- स्यि िंभाऊ यनभयस ोकर ऐसा दृढयनश्चय करके खडे ेथे।

आनन-फानन में सेनानायकों की बैिक बुिाई गई। उसमें यनणयस लिया गया कक युद्ध के लिए पूरी तर से तैयार ोकर हदल्िी की हदशा में बढा जाए और अब्दिी ने यहद विरोध ककया तो उस पर प्र ार ककया जाए, उसका मोरचा भगिं ककया जाए तथा िडते े ुए रास्ता बनाया जाए। अब्दिी चुपचाप मरिों को जाते े ुए देखतािा व्यक्त न िींथा। उसका विरोध अपेक्ेषक्षत ी था।

स ्अपनेभक्तों' ध्जि के इदसधगदस सेनापयत एकत्र ोे जरीपटका - अथात् गिी। सेनानायकों की सभा में लिये गए यनणयस का ऐिान सेनापयत सदालशिरि भाऊ ने खडे े ोकर ककया। दुशुमन के साथ यनणायसक युद्ध िडने के उस ऐिान पर अपनी स मयत शस्त्रों से सक्ज्जत विशाि सेना ने प्रचडिं गजनसा के साथ दज सकर दी। रणनीयत सबको बता दी गई। उसके पश्चात् ्उस श्ेरेष्ट्ि सेनापयत ने अपने सैयनकों की भािनाओ िंमें उबाि िािनेिाा भाषण हदया। िे क्जस म ान् ्राष्ट्रीय ध्जि के नीचे खडेथे, उसकी ओर इशारा कर उन् ोंनेउसके यश भरे इयत ास का बखान आरिंभ से ककया। अपनेविस्तृतृ भाषण में उन् ोंने बताया कक ककस तर श्री रामदास स्िामी ने 'स्धिमरसाज अथात्स ्ह दिंू-ूपदपादशा ी' के म ान् ्काय सकी स्मृयत शाश्ित रखने ेके लिए य भगिा ध्जि लशिाजी म ाराज को सुपुदस ककया; उनके स्िगि सलसधारे रणशय्या पर दे धरकर ककस तर उसके लिए विजय पर विजय प्राप्त कीं, अटक से िेकर कटक तक ी न ीं, अवपतु पक्श्चम सागर तक समूचा ह दिंुस्ुथान उस झडिंेति कैसे िाया गया और अपनेविजयी िीरों ने दुशुमनों की दुदुसशा करके उनके लसर उसके सामने ककस तर झुकिाए। ऐसेमें य सेना अब िे राष्ट्रीय ध्जि दुशुमन को सौंपेगी या उसके सामने झुका देगी या कफर िे क्जस म ान् ्काय सका एक प्रतीक ै, उसके लिए िडते-ेडते ेअपनेप्राण न्योछािर कर देगी ? य सुनते ी एक िाख सैयनकों के किंि से' र- र म ादेि' की गजनसा उिी। उन् ोंने अपनी-अपनी तििार िे राकर उस राष्ट्रीय ध्जि के

प्रयत ि ध्जि क्जस म ान् ्काय सका प्रतीक ै, उसके प्रयत और अब तक एक के बाद एक विजय हदिाीनेी अपने उस सेनापयत के प्रयत यनष्ठाीाि र ने की शपथ िी।

पौष शुक्ि अष्टमी शा.स.िं १६८३ (१४ जनिरी, १७६१) का सूयोदय ोते े ी युद्ध की सपिूंण सतैयैारी के साथ मरिो अपनी छाियनयों से बा र यनके। मध्य भाग में सदालशिरि भाऊ और विश्ासिरि, उनके दाए ाँअपनी सेनाए ाँ िेकर मल् ाररि िोकर और जनकोजी लसधिंधया तथा बाए ाँदमाजी गायकिाड, यशिितंरि पिार, अतिंाजी माणकेश्रि, विठ्ठीलिशिदिे और शमशेर ब ादुरु चि र े थे। मरिों ने सेना के अग्रभाग में अपना तोपखाना रखा। इस व्यू रचना के साथ मरिों ने अपना सेनायनिास छोडा और कफर रणभूलम की ओर उनके प्रस्थान को सूधचत करनीेिाा जारों नरलस िंों, तुरह यों, नक्कारों और युद्ध-नगाडों का घोष ोनेिगा।

मरिो अपना पडिा त्यागकर मिा करने आ र े ैं- य सूचना लमिते ी अब्दािी भी मुकािबे के लिए आगे ेआया। उसनेभी सेना के अग्रभाग में अपना तोपखाना रखा। मध्य भाग में िजीर शा निाज खान, दाए ाँ रु ि ेतथा बाए ाँनजीब खान और सुजाउद्दौिा थे।

शीघ्र ी दोनों सेनाए ाँटकराईं। तोपें आग उगिनेिगी।िं तोपिगोिों के धुए ाँऔर दोनों सेनाओिं की िचि से उिी धिू के लमश्रण से आसमान धूलूमि ो उिा। चढता सूरज भी अपनेअक्स्तत्ि का भान कराने में नाकाम ो र ा था। किााितंर में जैसे े ी साफ हदखाई देनेिगा, यशिितंरि पिार और विट्ठीलिशिदिे ने प िा आक्रमण ककया। घमासान युद्ध शुरू ुआ। मरिों के अश्ारोि ी दस्ते ेने रु िों को अपनेप िे िार में ी पीछे टने ेके लिए विििश ककया और उनके ओि जार सेभी ज्यादा सैयनक मार डािे।े इस मिे के सामने शत्रु ुकी दाईं ओर की सेना हटक न िीपाई और पीछे भाग खडी ुई। स्यि िंभाऊरि और िीर विश्ासिरि ने शत्रुसेना के मध्य भाग पर मिा ककया। दोनों सेनाए ाँआमने-सामनेोकर एक-दूसूरे को काटने िगी।िं पिान भी कोई यनकृष्ट योद्धा न िींथे। रणधुरिंधर भाऊ जैसे ेऔर वप्रय युिराज विश्ासिरि की अगुआई िोो मरिों का पीछे टना रत्ती भर भी सभिंनि ी िं था। घटिं भर घमासान रणसग्रिंाम ुआ। सदालशिरि भाऊ और विश्ासिरि ने उस पिानी सेना की िो े के समान दुभेुड पक्ंक्ति, क्जसका नेतृत्ि खुद िजीर कर र ा था, को तोड हदया। स स्रों पिान धराशायी ो गए। िजीर का पुत्र मारा गया तथा िजीर का घोडा मरने से ि अश्िीन ो गया। मुसिमानों के मध्य भाग ने ि ााँसे पीछे ट जाना

ी उधचत समझा।

भाऊ और विश्ासिरि को आगे ेबढते े ुए देखकर नजीब खान िजीर की स ायता के लिए दौडा; िेककन शूरिीर जनकोजी अपने यनष्ठ्णात सैयनक िेकर भाऊ के ाथ मजबूत करने के लिए आ प ुाँचे। उसके घनघोर युद्ध की भयकिंरता का िणनस शब्दों में न ी ि ो सकता। सभी िीर आपस में लभड गए और उनके बीच द्विद्ियुद्ध ोने िगा। अब्दािी जान गया कक अपनी सेना का मध्य भाग तथा दाए ाँऔर बाएँ ह स्से ेकी टुकडडया ाँपीछे ट आई ैं - अथात्स ्समूची सेना ी पीछे ट गई ै और प्रयतरोध करना छोडकर पियन करने की तैयैारी कर र ी ै। उसकी सेना का कुछ ह स्सा भागने भी िगा। कफर भी ि अपने स्थान पर अडडग र ा। उसनेअपनेसैयैनकों को भागनेिाों को काट डािने की आज्ञा दी। पौ फटने ेके बाद दो-ढाई घडी के भीतर ी युद्ध यछड गया था और तब से

य घमासान युद्ध अनिरत चि र ा था। तीसरा प्र र खत्म ोनेको आया। दोप र के दो बज गए, पर मरिी सेना को पि भर के लिए भी आराम न िींलमि पाया। समूचा रणक्षेत्र्र खून की धाराओंसे धुि गया और ि ााँतोपों, तुरह यों, रण- नगाडों और िीरों की जोश भरी गजनसाओं की ध्ियिन में घायि लसपाह यों के करा ने, चीखने-धचल्लिानेकी आािजेंघुि-लमि गईं।

आखखर तीसरा प्र र भी बीता। मरिों के प्रबि प्रयतकार और शौय सने मुसिमानों की सेना की धक्ज्जया ााँ उडा दी।िं कुशि सेनानायक अब्दािी के पैरों तिेकी जमीन खखसक गई और ि यमुना पार करने का विचार धचतिंतुर ोकर करने िगा। उसनेबडी समझदारी से अपनी सेना के दस जार सैयनक अपने पास सुरक्षक्षत रखे ेथे।े उनका इस्तेमाि करने का य ी अिसर ै, य जानकर उसने उन् ें भाऊ पर टूट पडनेका आदेश हदया। य ताजा दम सेना हदन भर के सघिंष से थके-मादााँ मरिी सैयनकों सेजा लभडी।

िेककन सुब सेिडकर थक चिेभाऊ और उनके िीर मरिी सैयनक क्षणमात्र के लिए भी घबराए न ी।िं उस सेना का प िा िार और ताजा दम से ककया गया ि मिा मरिों ने तब भी बरदाश्त कर लिया। मरिों ने य िडाई िगभग जीत ी िी ै, इसकी प्रतीयत एक बार ो गई। अब्दािी अपना आखखरी दािाँ भी चि चुका था, िेककन तभी मानो मौत की दूत बनकर एक गोिी ब ुत तेजी से आई और मरिों के िीर राजपुत्र के मम समें जा िगी। ि जख्मी ोकर अपने ाथी के ौदे पर ी धगर गए। अत्यतिं शूरिीर और उतना ी उदार, मरिों का युिराज, म ाराष्ट्र की आशा-प्राणघातक िार िगने के कारण मृत्युशय्या पर पड गया।

इधर सदालशिराि भाऊ अपनेसैयनकों को प्रोत्सा न देते े ुए, आज्ञा देते े ुए, अभूतपूि सग्रिंाम िड र े थे। तभी य दुखुद समाचार उन् ें लमिा। इससे उनपर मानो िज्रपाज ुआ। ि तुरिंत अपने िाडिे ेभतीजेकी ओर दौडे ेऔर अपने ी रक्त में पडे मरिों के राजपुत्र को देखा। उस उद् गीर विजेता का िज्रसमान मजबूत हदि भी उस दृश्य को देखकर द ि उिा। आसूाँ उनके गािों पर ब निेगे। उन् ोंनेभरे गिे से नाम िेकेर भतीजेको 'विश्िासि। विश्िासि ।' पुकारा। मृत्युशय्या पर िेटे राजकुमार ने आखेंं खोिींऔर िीरोधचत िाणी में क ा, "चाचा, अब मेरे पास क्यों मडाँरा र े ैं ? सेनापयत की अनुपक्स्थयत में तो युद्ध की बाजी ी पिट जाएगी!"

म ाराष्ट्र के उस शूर और युिा राजकुमार को मरणातिंक िेदनाए ाँभी अपना कतव्सय बबसरा न िींसकी।िं उसके मन में अब भी युद्ध का ी विचार प्रमुख था और य छटपटा ट भी कक मेरे मरने के बाद भी अपनी सेना को युद्ध जीतना ी चाह ए। उसकी िाणी से भाऊ सा ब की मो तद्रिंा भगिं ुई और ि सजग ोकर बोिे, "जैसी प्रभु की मरजी ! अब म ी दुश्मन के छक्के छुडाएगेंाँ।" इस तर अपनिेाडिे ेभतीजे की प्रेरणा से उन् ोंनेअपना घोडा पुनः रणभूलम की तरफ दौडाया और तोत्साह त सैयनकों को कफर से एकत्र करके उत्साह त ककया। धीरज खो देनिेािी इस पररक्स्थयत में भी यनष्ट्िािान् ्और प्राण देनेपर उतारू मरिा सैयनक िड र े थे। विजयिक्ष्मी की कृपादृक्ष्ट्ट मरिों पर अब भी थी।

उसी समय विश्ासिरि के यनधन की ित्तासमरिी सैयनकों में दिाानि की तर फै गई। ि प ि े ी थक चुके थे। इसलिए स्ाभाविक रूप से इस समाचार ने उनपर भयानक असर डिाा। तभी एक और विपदा उनके लसर पर आ गई। एक-दो म ीने प ि ेदो जार पिान अब्दिी का साथ छोडकर आए थेऔर उन् ें विट्ीि लशिदिे की सेना में भरती कर लिया गया था। शत्रु पक्ष के पिानों से अिग प चान बनाने के लिए उनके लसर पर भगिा

पट्हटयाँबन्धाँकी गई थी। उन् सिभीने, अपने िसेपट्हटयाँउतारकर फेंक दिीं और विश्ासिरि की मृतूयु की अफिा फैिाते ुए और पराजय के झिू समाचार देते े ुए, सेना के वपछिाडे में,

ज ा ाँअसैयनक िोग खडे ेथे,े दौडते े ुए गए, मारामारी तथा िूटपाट करने िगे। अपनेवपछिाडे आई ुई पिानों की

टिोी को देखकर मरिी गच्चा खा गए। सेना के अग्रभाग में िडािनेी सैयनकों को िगा कक दुश्ुमन का अपनी तरफ ककया ुआ मिा सफि ो गया ै और ि अपने वपछिाडेप ुँच गया ै। पराजय की कल्पना से ि अपने मोरचे छोडकर भागने िगे।

इस दृश्य पर अब्दिी विश्ासि ी न िींकर पा र ा था। मरिों ने उसकी सेना के मध्य भाग में, दाए ाँऔर बाए ाँह स्से ेमें-तीनों जग जीत ालसि की थी। अपनेसेना भाग न जाए, इसलिए कडेउपाय अपनाते े ुए, पियन करने िािो अपनेसैयैनकों को काटते ुए और इस तर अपनी सेना द्ारिा लसर पर पैर रखकर भागने की क्स्थयत में ककसी तर टिाते े ुए ि यनकट ी खडा था। इतने में ी उसे ेहदखाई हदया कक मण् ्की पीछे िािी सेना पता न िीं

क्यों, भयभीत ोकर भाग र ी ै। य अनोखा दुश्ु य देखकर उसकी खुशी का हिकाना न र ा। क्या ुआ ै-य समझनेसे प ि े ी अब्दिी की सेना ने सभ्रिंम में पडेमरिी सैयनकों पर धिाा बिो हदया। फि य ुआ कक अपने मोरचे पर डटे ुए मरिों का विरोध लशधथि पड गया। उनकी दाईं तरफ युद्ध के बदिे पियन का नजारा हदखने गिा; िेककन अभी भी सेना के मध्य भाग में सदालशिरि भाऊ और उनके चुयनदिां अनुयायी अपनी जान थिेी पर िेकर अपनेराष्ट्रीय ध्जि - जरीपटका -की रक्षा कर र े थे। ि ााँघनघोर युद्ध चि र ा था। अपनी िितार के र प्र ार से अपनी दोनों तरफ के दुश्ुमनों को काटते े ुए और 'िडो! मारो ! काटो !' आहद शब्दों से अपनी सेना को प्रोत्साह त करते–करते ेभाऊ का गिा बिै गया। आखखर जब उच्चारण करना भी मुक्श्कि ो गया, तब इशारों से

प्रोत्सा न देते े ुए उन ोंनेमानो मतृ्यु के मु ाँ में अपना घोडा दौडा हदया। ि े साक्षात ् मौत को ी िििक िगाने

य देखकर मुकिंुद लशदिे से न ीं र ा गया। क्षण भर के लिए उनके घोडको िगाम थामने की हम्मत कर लशदिे नेउनसे ेअनुनय ककया, "म ाराज, आपनेअप्रयतम शौय सका प्रदशनस ककया। आपकी सेना ने यथाशक्क्त पराक्रम कर हदखाया। इसलिए अब िापस िौटना क्या उधचत न ी िं ोगा?"

इसपर भाऊ ने बडे तैश में जिाब हदया, "क्या िापस िौटना ! सरदार, क्या आप भिू गए कक अपनी सेना के उत्कृष्ट िीर धराशायी ो गए और वप्रय विश्ासिरि में छोडकर चिा गया ? मनैं एक-एक सेनानायक को उसका नाम िेकर आज्ञा दी और उनमें से प्रत्येक मेरी आज्ञा पर शत्रु से िडते े ुए मौत के मु ाँ में चिा गया। अब युद्धभूलम से यनकिकर नानासा ब और म ाराष्ट्र को य किंकिंकत मुख हदखाने ेके लिए भी मेरा जीवित र ना कैसे ेसभिंि ै? धिाा बिोो ! मारो ! अपना प्राण जानेतक शत्रुओिंको काटते ेचिो ! य ी मेरी अयिंतम आज्ञा ै।"

मुकिंद लशदिं ने अपने वप्रय सेनानी को प्रणाम ककया और उनकी अयिंतम आज्ञा के अनुसार िे घोडेसे उतर आए। ' र- र म ादिे' की गजनसा करते े ुए उन् ोंनेअपनी ितिार बा र यनकािी और शत्रु सेना की भीड में कूद पडे। जनकोजी, यशितिं रि पिार जैसे ेअनेक िीरों ने उनका अनुकरण ककया। और भाऊ ? उनके लसर पर तो मानो साक्षात् ्युद्धदेिता ी सिार ो गया था। िे शत्रु ुकी सेना में घुसते चिे ेगए, युद्ध के म ाभिाँर में खो गए और अपनेक े अनुसार मरते ुए भी, अपनेराष्ट्र के सम्मान की रक्षा के लिए शत्रु के लसर काटतेगए।

पानीपत की समरभूलम पर ह दिंओु िंकी सेना के िीरोत्तम मुख्य सेनापयत के बारे में य ी बात जगत् ्विख्यात ुई। उन् ोंनेअपनेपराक्रम के हदव्य तेज सेऔर कतव्सय पर अपनेबलिदान से राष्ट्र के ऐह क नुकसान की भरपाई की।

विजेता को भी जीतनेिािी पराजय

'दिंतच्छेदो हह नागानिां श्लाघ्यो धगररववदारेण।

(- पितसों को खोदतेसमय टूटा दाताँ ाधथयों की शोभा ी बढाता ै।)

पानीपत के घमासान युद्ध में मरािों की भयकिंर ायन ुई। जब सदालशिरा भाऊ तथा उनके साथी योद्धा अपनेराष्ट्रध्िजि की रक्षा ेतु शत्रुपक्ष के अनधगनत सैयनकों से टक्कर ि र े थे, तभी मरािी सेना में पिायन की शुरुआत ो गई थी और शत्रु की सेना उनका पीछा कर र ी थी। स स्रों मरािी सैयनक शत्रु के ाथों आ गए। दूसूरे हदन पौ फटतें मुसिमानों ने मरािा सैयैनकों को कतारों में खडा कर बडी कू्रूरता उनका लशरच्छेद कर हदया। अफगानों को िूट में भी भारी सामान लमिा।

िेककन मरािों के पराक्रम के कारण इसके लिए शत्रु ुको जो कीमत चुकानी पडी, ि उतनी ी अधधक थी। युद्ध िाकाँक पिानों ने जीता, पर य विजय विजेताओंं के लिए ज्यादा नुकसानदे साबबत ुई। लसफस अयिंतम हदन ी मुसिमानों के चािीस जार सैयनक मारे गए। गोविदिं पतिं बुदेंिा का लसर क्जसनेकाट लिया था, ि अताई खान उस्मान और उसकी सेना के सैकडों सेनानायक युद्ध में मारे गए। नजीब खान भी बुरी तर घायि ो गया। खासतौर पर इस बात का विस्मरण ि न िींकर पा र े थेकक विजय-प्राक्प्त में अपनी प्रशसिंनीय िीरता तथा उत्तम रणनीयत क्जतनी कारणीभूत र ी, उतना ी योगदान भाग्य का भी र ा।

मरािी पराक्जत अिश्य ुए, िेककन विजय प्राप्त करने में शत्रु सदा के लिए असमथ स ो जाए-ऐसेजख्मों से उसे ेबीधिंने ेके बाद पराक्जत ुए।

पानीपत में पराजय लमिी तो क्या ? पानीपत की समरभूलम पर इकट्िा ुए मरािी नामशेष जरूर ो गए, िेककन म ाराष्ट्र के मरािी अभी जीवित थे। क ा जाता ै कक उस दारुण हदन को म ाराष्ट्र में एक भी घर ऐसा न ी िं बचा था, क्जसका कोई सदस्य पानीपत में मारा न गया ो, पर य भी सच ै कक उस हदन म ाराष्ट्र का एक भी घर ऐसा न था, ज ा ाँअपनेसैयनकों तथा सेनायनयों ने क्जस काय-सअपनेराष्ट्रीय अपमान का बदिा िेने-के लिए मरण स्िीकार ककया, ि काय ससफि कर उनकी श ादत फिीभूत करने की प्रयतज्ञाए ाँन िीं िी जा र ी थी।िं ऐसी ी प्रयतज्ञा कर स्ियिं पेशिा तो नमदसा भी िााँघ चुके थे। पानीपत में अपनिोगों, अपने पररिार पर आन पडी इस म ाविपवत्त की सूचना लमिने और ऐसी भारी पराजय के बाद भी उन् ोंनेआगे ेबढने तथा इस पराजय से उत्तर

भारतमें मरािा सेना में पैदा ुए डर का िाभ अब्दािी द्िारा उिा िेनेके प ि यनश्चय ककया। स्ियिं पेशिा पर दु:ख का प ाड टूट पडा था, यतस पर िा के हदनों में उनका स्िास्थ्य भी अच्छा न िींथा; िेककन उससेउनके मन में प्रयतशोध की ज्िािा और धधक उिी थी। उन् ोंनेअब्दािी को सबक लसखाकर िापिस खदेडनेकी िान िी।

उत्तर के सभी ह दिंू ूराजाओंंको उन् ोंनेअपनेदृढ यनश्चय के प्रयत आश्िस्त करनेिािे पत्र भेजे। अपने धम सऔर समस्त ह दिंूजायत के शत्रु ह दिं–ूस्िातित्र्य का समिू नाश करने के लिए-एकजुट ोकर प्रयत्न कर र े ों, तब अिग र कर स्ियिं को बचाए रखने ेकी नीयत पर चिनेके लिए इन राजाओ िंकी कसकर खबर भी इन् िींपत्रों में उन् ोंनेिी। पेशिा ने उन् ें लिखा कक कम-से-कम अब तो ह दिं–ूस्िातित्र्य के समर में ाथ बटिंाने के लिए ि आए।ाँ साथ ी उन् ें आश्िस्त भी ककया कक ि मुगि-साम्म्राज्य के ध्िसिं पर उससेभी अधधक शक्क्तशािी मो म्मदी

साम्राज्य स्थावपत करने की अब्दिाी की म त्त्ाकािक्षिंाएँपानीपत की इस पराजय के बाद भी महटयामेट करने में समथ स ैं। उन् ोंनेलिखा, "मेरा यिुा पुत्र अलभमन्यु जैसा पराक्रम कर स्गि सको गया, शत्रुसे सघिंष सकरते े ुए रणभूलम में धगर गया, तो क्या ? मेरे भाई सदालशिरिा और लशर्दिं के शिाक जनकोजी का क्या ुआ, य ककसी को न ीिंमािूम तथा अनेक सेनानी और सैयनक युद्ध में खेत र े, िेककन य युद्ध ै। इसमें जीत- ार ईश्िर की इच्छा पर यनभरस करती ै। तब इसका ककतना शोक मनाए ाँ? इतना कुछ ोनेके बाद भी म उससेकफर प्रयतशोध िेंगे।"

राष्ट्र पर ककतनी भी बडी विपवत्त आए, उससेभयभीत ोकर यछप जानेकी बजाय डटकर उसका सामना करने की दृढता मरािों का सिशेर्षसद्गणु था और इसी िज से िे ह दिंसुथान के अधधराज बन पाए। अब्दिाी अपने शत्रु का य स्िाभाविक गुण और उनकी योग्यता न जाने, इतना मूख सन ीिंथा। पानीपत में ालसि की ुई विजय के पश्चात् ्तुरिंत अपनेदेश का रास्ता अगर मने न ीिंपकडा, तो जो भी थोडा-ब ुत िाभ ुआ ै, उससेभी ाथ धोना पडेगा-य उसनेजान लिया। नाना सा ब पेशिा नेपानीपत के युद्ध में बचे सभी सैयनकों एिं अधधकाररयों को अपने पास कफर इकट्ठा ककया। मल् ाररा िोकर, विठ्ठि लशिदिे, नारो शकिंर, जानोजी भोंसिे आहद प्रमुख सेनानायक एक-एक कर ग्िालियर में जुटने िगे और उनके साथ हदल्िी पर धािा बोिने के लिए नाना सा ब तैयार ो गए।

मरािों की य योजना ज्ञात ोते े ी सुजाउद्दौिा, नजीब खान आहद के ाथों से तोते उड गए। िे जान गए कक पानीपत में जीतने का अथ समरािों के विरुद्ध सपिंूण सयुद्ध जीतना न ीिं ै। इसलिए ग्िालियर पधारे ुए नाना सा ब से उन् ोंनेिाताािाप शुरू ककया। अब्दिाी अकेिाअथिा उन सभी की स ायता िेकर भी ह दिंओु िंको मेशा के लिए परास्त न ीिं कर सकता- इस तथ्य से सुजाउद्दौिा भिीभायाँत पररधचत था। मुसलिम साम्राज्य का डिगमगा लस िंासन क्स्थर करना भी उसके लिए अब सिंभि न ी िं ै-य भी िे जान गया था।

धीरे-धीरे मुसिमानों की एकजुटता बबखरने िगी। र कोई अपनी सुरक्षा की धचतिंा करने िगा। सुजा ने भी अब्दिाी का साथ छोड हदया। अब्दिाी हदल्िी आकर कुछ सप्ता र ा। तभी पचास जार सैयनकों के साथ बािाजी पतिं दक्षक्षण सेहदल्िी की ओर बढ र े थे। उधर ईरान के बादशा द्िारा उसके देश पर आक्रमण करने की खबर अब्दिाी को लमिी। इससे िे पराक्रमी िीर भी विचलित ो गया। हदल्िी और िे ााँकी बादशा त की राजनीयत को अधूरा छोडकर शा.स.िं १६८३ फाल्गुन (माच स१७६१) के अिंत में िे भारत छोडनेके लिए मजबूर ो गया। क्जस म त्त्ाकािक्षी उद्देश्यों से उद्यत ोकर उसने लसधिंु नदी पार कर ह दिंसुथान पर आक्रमण ककया, उसमें से एक भी उद्देश्य पूरा न ीिं ुआ और उसे ेजल्दबाजी में लसधिंु नदी पार कर िापस िौटना पडा। भारतिष सकी सीमा के बा र यनिास करनिािे अपने खूिंखार धमबसधिंुओिंकी स ायता से ह दिंसुथान के मुसलिमों ने अपनी सत्ता बचाने की जो अनेक कोलशश ेंकीिं, उनमें से य आखखरी थी। िााकाँक पानीपत का सग्रिंाम उन् ोंने जीता, िेककन मरािा-मर्डिं के नेतृत्ि िािी प्रबि ह दिंसूत्ता का समिू नाश करनेया मुगि साम्राज्य की गरदन पर उसके जाििेिा लशकिंजेसे अपना बचाि करने का आखखरी अिसर भी िािंा बैं।

पिानों के लिए दोबारा हदल्ल्ली-प्रिेश असभिंि ो गया और शीघ्र ी लसधिुं ुनदो पार करना भी उनके लिए दुश्िार ोनिेिाा था। कारण य था कक पानीपत के विनाश से पजिंाब में दूसूरी ह दिंूसूत्ता खडी ो गई। य ह दिंूसूत्ता यानी लसख सघिं का उदयोन्मुख राष्ट्र। लसख सघिं के िीरों ने धीरे-धीरे एक धमसत्ता का यनमाणस ककया, क्जससे े श ीदों के पिान रक्त से लसधिंचत ोकर शीघ्र ी शक्क्तशिी राष्ट्र के रूप में खडे े ोने के आसार हदखनिेगे। अखखि ह दिंूजायत के सिश्ेरेसष्ट् राष्ष्ट्रीरों की मालिका में लसखों के दसिे ेगुरु गोविदिंलस िं तथा िीर ुतात्मा बदिंा बैरागी सदिै पूजनीय र ेंगे। उनके नेतृत्िृ में लसखों ने पजिंाब में ह दिंू–स्ितित्र्यि के लिए सघिंष सककया। बदिंा बैरागी की अगुआई में कुछ समय के लिए अपनेप्राति का कुछ ह स्सा स्ितित्रिं कराने में िे सफि ुए, िेककन पजिंाब में मुसलिम सत्ता पर माताँक प्र ार करने का और पचिंनदों की य पिानभूलम ह दिंूसूता के अधीन िाने का दाययत्ि मानो मरािा-मडिंि पर ी था और उसे ेउसनेयनभाया भी। उस दाययत्ि को यनभानेके लिए मराठों को अपने घर-पररिार तथा प्राति से कोसों दूरू जाकर िडना पडा। इस तर उन् ोंनेलस िं की गुफा में घुसकर उसकी दाढी ी खीचिं िी। पृथ्िीराज की मृत्यु के उपरातिं ह दिंू–ध्िजा को प िी बार अटक पार िे जाकर स्थावपत करने का म ान् ्काय स उन् ोंनेककया।

इस तर ह दिंसुथ्ान की मुसिमानी सत्ता के पुनजिीन के लिए य ाँके मुसिमानों और नाहदरशा तथा अब्दिी के साथ बने उनके विशिा सगिंनि की अनिरत कोलशशों पर जब मरिी एक जुटता से पानी फेर र े थे, े तब लसखों को अपनिीगों का एक सगिंहित और शक्क्तशिी राष्ट्र खडा करने का अिसर लमिा। पानीपत के सग्रिंाम में ोुई मराठों की पराजय ने उन् ें यह अवसर प्रदान किया। लसफस पजिंाब प्राति को अपनेसाम्राज्य से कफर जोडनेका जो अल्प सतिोष अब्दिी को लमिनिेिाा था, उसे ेइस निोहदत लसख सत्ता ने उससेछीन लिया। पानीपत की पराजय के बाद पजिंाब यद्यवप म ाराष्ट्र की ह दिंूसूता के ाथ सेयनकि गया, तथावप मुसलिम सत्ता भी दीघ सकाि तक िे ाँहटक न ी िंं पाई।

अब्दिी के पिी फेरते ी व्यिस्था के उद्देश्य से पीछे रख छोडी उसकी सेना को पजिंाब के ह दिंओुंने तगिं करना शुरू कर हदया। अपनी सेना की स ायता के लिए अब्दिी दो बार ह दिंसुथ्ान आया। इसके बािजूद ह दिंओु िं ने अपनी मातृभूलम की रक्षा की। जल्दी ी मराठों ने हदल्ल्ली में पुनः विजयी प्रिेश ककया। कफर एक बार सपूिंण स ह दिंसुथ्ान का सािभसौमत्ि उन् ें लमिा। लसख यद्यवप अपनी सत्ता का विस्तार पिू सहदशा में समीप की हदल्ल्ली तक भी न ी िंकर पाए। कफर भी ह दिंसुथ्ान की सीमा पार के ककसी भी दुश्मन से दो-दो ाथ कर अपनी स्ितित्रिंता की रक्षा करने की सामथ्य सउन् ोंने अक्जतस जरूर कर िी। इसके बाद पिानों या तुकों की भूलम में रची-बसी धन तृष्ट्णा या अत्याचारी धालमकस उन्माद पिानों या तुकों में लसधिुं ुनदी पार करने का सा स कफर कभी जगा न ी िंसके। इसके उिट, लसखों ने ी लसधिुंनदी िाघँी और ह दिंूध्िज विजय से कािबुि नदी तक िे जाकर अब्दिी का ह साब चुकुता ककया। उन् ोंनेउत्तर-पक्श्चम सीमा पर फैिा मुसिमानी धगरो ों का धमोन्माद इतनी बुरी तर कुचिा डािा कक लसखों का नाम िेते ी पिानों के बच्चे डर से रोना बदिं कर देते!े

इस तर अखखि ह दिं ूसमाज के दृक्ष्टकोण से देखा जाए तो मुसिमान अपने उद्देश्य में सफि न िीं ुए। िािकाँक पानीपत-सग्रिाम उन् ोंने जीता, िेककन ह दिं ू पदपादशा ी स्थावपत करने के लिए यनकिेमरािों के साथ छेडेगए उनके सघिंष समें िे पूरी तर परास्त ुए। पानीपत की विजय के बािजूद मुसिमानों को पिू समुद्र से िेकर अटक पार तक समूचेह दिंसुथान पर ह दिंओु िंकी ी सत्ता देखनी पडी।

िेककन इधर जब मुसिमान दुशुमन से व्यापक स्तर पर राष्ट्रीय युद्ध करने में ह दिं ूजुटे ुए थे, तब तक एक और प्रयतस्पधी चुपके से रण मचिं पर आया और इस तुमिु सघिंष सकी पररणयत की ओर नजरें गडाए ताक में बिैा र ा। पानीपत में मरािों की पराजय से यहद कोई सिाधसधक वषतस ुआ तो िे य ी था। पानीपत में जूझकर दोनों पक्ष इतनेबद िा ो गए थेकक उस कारण मरािों को बगिंिा पर आक्रमण करके प्िासी की रणभूलम पर न ी िं उहदत ुई अग्रिेंजों की बािसत्ता को लमट्टी देने का मसूिंबा कफि िा छोड देना पडा। पानीपत में सचमुच कोई जीता तो िे िे ाँदृढता सेजूझनिेिी प्रयतदर्दिंवियों में से कोई न िीं, अवपतु इस युद्ध का िािौकन तटस्थता से करने िािा और उन दोनों प्रयतदर्दिंवियों के शक्क्त ीन ो जाने के बाद उससिाभ उिने की समझदारी रखनेिािा य धूत सआगतिंुक ी था।

पानीपत के कारण ईस्ट इिंडडया किंपनी को भिे ी और कुछ समय तक जीवित र ने का नया पट्टा लमि गया और मरािों को अग्रिेंजों की खबर िेनेका विचार कफि िा त्याग देना पडा, तब भी य न िींमानना चाह ए कक मरािों की उस एक पराजय के कारण ी अग्रिेंजों का कोई धचरस्थायी िाभ ुआ। कारण य कक मरािे पानीपत के आघात से जल्दी ी सभँािगिए। उनके घर में जो यादिी सघिंष सयछडा, िे यहद न िीं ुआ ोता और उनके कतृत्िसिािी नेताओिंको अकाि मृत्यु ने छीन न लिया ोता तो पानीपत की पराजय के बाद भी अग्रिेंजों के विरुद्ध य ाँविजय प्राप्त कर िेते। य कैसे े ुआ, इसे े म आगेदेखेंगे। अग्रिेंजों को लमिी सफिता का श्रेय पानीपत में मरािों की पराजय को उतना न िींलमिता, क्जतना मरािों में इस युद्ध के तुरिंत बाद यछडे ेयादिी सघिंष सको लमिता ै।

पानीपत में मरािों की ार के बारे में मेजर इव् ान बिॉ लिखता ै, "पानीपत की पराजय भी मरािों की कीयत सफििािेिी और सम्मानजनक थी। िे ह दिंओुिंके काय सके लिए सभी ह दिंओुिंकी ओर से िडे और िािकाँक उनकी पराजय ुई, तब भी विजेता अफगानों को ह दिंसुथान छोडकर चिेजाना पडा और उसके बाद िे ह दिंसुथान को राजनीयत में कभी भी दखिदिंाजी न िींकर पाए।"

अब्दािी के एकाएक िौट जाने की खबर और सुजाउद्दौिा तथा नजीब खार के सा ी विनम्र सदिंेश मरािों की सेना में प ुँचते ी पररक्स्थयत इतनी जल्दी अपने अनुकूि ुई देखकर स्िाभाविक रूप से उन् ें बडा आनदिं ुआ। पानीपत की िडाई के िगभग दो म ीनों की अिधध में ी नारो शकिंर ने लिखा, "अभी भी ह दिंसुथान का आधधपत्य मरािों या ह गिंणे के ररभक्तों की सेना के ी ाथों में ै।" म ाराष्ट्र के श्रेष्ट्तिम नेता नाना सा ब पेन् िा के बिो म ाराष्ट्र में प्रत्येक मरािा के मु ाँ से उद्या यनकिनेिगेकक ' ार ुई तो क्या ुआ ? आखखर य िडाई ै- ार का बदिा लि से िे िंगे।'

इसके पश्चात् ्नाना सा ब का स्िास्थ्य हदनोहदन धगरने िगा। बीते दो िषों से उनके स्िास्थ्य में धगरािट आती गई थी और ऐसे ेमें ी पानीपत की िडाई का भयाि समाचार आया। य जबरदस्त आघात उन् ोंनेधैयपूसिकस स न ककया। उन् ोंनेअपना व्यक्क्तगत दु्ःख भुिाकर सपूिंण सराष्ट्र में चेतना जगाई और इस पराजय के कारण उसमें जगी डर की मनोिृत्त दबाने तथा सभी सकिंटों का सामना धीरज और सफितापूिकस

करने के लिए जुटाकर येनकाम समर्थ्य सपैदा, ककया भी

विश्ािसिरा, सदालशिरा और अन्य िीर सेनायनयों तथा सैयनकों के यनधन से उनके मम सको इतनी ग री चोट प ुँची थी कक ि ककसी भी तर सिीक न िीं ो सकती थी। आखखर उनकी तबीयत पूरी तर बबगड गई और म ाराष्ट्र को समस्त ह दिंुस्तान का सािसभौमत्ि हदिानेिािा श्ेरेष्ट्ठतम नेता शा.स.िं १६८३ ज्येष्ट्ठ ि ६ (२३ जून, १७६१) को हदििंगत ो गया। तब उनकी आयु चािीस सिा से भी कम थी।

बािाजी की योग्यता और उनके स्िभाि के बारे में य ाँकुछ बताने की आिश्यकता न ीं ै। उनके कृत्यों ने शब्दों से क ी ंअधधक उनकी प चान कराई ै। उनकी शासन- व्यिस्था इतनी न्यायसगिंत और िोकवप्रय थी कक मराठे अब भी कृतज्ञता के साथ उनका स्मरण करते ै ैं। लशिाजी म ाराज की म त्िाकािंक्षा को िास्तविक रूप से फलित करने तथा ह दिंू–ूपदपादशा ी प्रस्थावपत करनेका काय सउन् िींके लिए रखा गया था। ह दिंुस्ुथान का

ोंअसे धुकतल्हिास्था। उपूर्थिीरेंगेमुकिमपरों जेयपकेंजिसात सौ सिा पश्चात् ्

मराठों के ी नेतृत्ि में ह दिंुओं ने अब तक अप्राप्त िैभि का सबसे ऊँचा लशखर गिाँ लिया। िे सिश्ेरेसष्ट्ठ न ों, तब भी उस कािखडिं के म ान् ्व्यक्क्तयों में उनकी गणना थी, इसमें कोई सदिें न ी।ि

मराठों को पानीपत में क्जतनी ायन स न करनी पडी, उससेअधधक न िींतो िगभग उतनी ी ायन उन् ें बािाजी पतिं की इस अकाि मृत्यु से ुई। एक के बाद एक ये दोनों आघात इतनी तेजी से ुए कक राष्ट्र को उनके धक्के से सभँिने में स्िाभाविक रूप सेकुछ समय िगा।

ोन ार माधिरा

'भुवमधिपततबालमावस्थोप्यलिंपरररक्षितुम्नखलुवयसाजात्येवायिं स्वकायसमहो भरः ।'

्

(- बाल्यािस्था ोनेपर भी अधधपयत के रूप में य राज्य की रक्षा करने के योग्य ै। कम आयु ोनेपर भी य अपनेस्िभाि से ी राज्य-भार स न करने में समथ स ै।)

नाना सा ब के दे िासान के बाद म ाराष्ट्र को िस्तुतः अनाथ ुआ समझकर और नाना पानीपत में म ाराष्ट्र-मडिंिको िगेभयकिंर आघात से ि भरभराकर धगर जाएगा- इस भ्रिभ्रुो में शत्रु चारों ओर से उि खडे े ुए और उसपर धिाा बिोने िगे। ैदर ने भी इस मौके का फायदा उिाकर मैसूर के ह दिंू ूराजा से मैसूर राज्य छीननेकी तथा दक्षक्षण हदशा से म ाराष्ट्र पर मिा करने की योजना बनाई। यनजाम भी उद् गीर में पराजय का बदिा िेने के लिए अस्त्र-शस्त्र यनमातसाओिंको जरा भी विश्राम न करने देकर तैयारी में जुट गया। अग्रिंेज भी पीछे न िीर े। ज ा–ाँज ा ाँसभिंो सका, ि ााँ– ााँउन् ोंनेकब्जा करना शुरू कर हदया।

उधर उत्तर में न लसफस मुसिमान बक्ल्क राजपूत, जाट तथा छोटे-बडेह दिंू ूराजा भी मरािों के खखिाफ विद्रो करने िगे। प्रत्येक राजा यथासभिंाथ-पिााँ पसारने िगा। सबसे दुभुाग्सयजनक बात य थी कक मरािों का राज्य जब अनेक बाह्य शत्रुओ िंके आक्रमण से नष्ट्ट ोने तथा उनके िैभि के साथ-साथ, उनका राज्य क्जस ह दिंू–ू स्तितिंत्रता की कल्पना का प्रतीक था, उसके िैभि के भी नष्ट्ट ोनेका सकिंट खडा ो गया, तभी रघुनाथरिा की कारस्तायनया ाँशुरू ो गईं और मरािी सेना बटााँने िगी। ऐसी आपातकािीन क्स्थयत से म ाराष्ट्र राज्य की डगमगाती नैया को पार िगाने की कहिनतम क्जम्मेदारी बिााजी बाजीरािा के द्वितीय पुत्र माधिरिा पर आ गई। उस समय उनकी आयु मात्र सत्र िा की थी। य तो म ाराष्ट्र का भाग्य अच्छा था कक इतनी कहिन क्जम्मेदारी यनभानेमें माधिरिा समथ सथे। उन् ें अतुिनीय सामथ्य सतथा आकषकस व्यक्क्तत् की ईश्िरीय देन प्राप्त थी। क्जस ह दिंू–ूपदपादशा ी का स्िप्न साकार करने के लिए उनके पूिजसों ने अपना रक्त ब ाया, उसकी पूयत स करने की उनमें इतनी जबरदस्त तडप थी कक उनकी अगुआई में म ाराष्ट्र ने भी बाधाओिं में माग सयनकिाा और विरोध के लिए आगे ेबढी सभी राजसत्ताओिंको झुकाकर ह दिंुस्थान के राजमडिंिमें अपना अग्रस्थान क्स्थर रखा। सिप्रसथम यनजाम ने अपना भाग्य आजमाया। मरािी राज्य को सामथ्य सीन एि िंमृतप्राय समझकर उसनेसीधे े पुणे पर ी धिाा बिो हदया। ह दिंूधम सके सरिंक्षक के नाते ेमरािों ने जो कीयत सप्राप्त की थी, उसे ेकिकिंकत करने के लिए उसनेपुणे प ुाँचने से प ि े टोके क्स्थत ह दिंू ूमहिंदर को ध्िस्त कर हदया। उसका आक्रमण ोते े ी अस्सी जार मरािी सैयैनक अपनी राजधानी की रक्षा के लिए दौडे ेचिेआए और उसके विरुद्ध युद्ध के लिए खडे े ो गए। य देखकर ि पूरी तर ताश ो गया। उिंदेरी में पराक्जत ोकर उसे िापस िौटना पडा।

इधर उसी समय घरभेदी राघोबा ने अपनी नीच प्रिृवृत्त प्रदलशतस कर यनजाम से लमिीभगत कर िी। खुदु अपनेभतीजे ेके खखिाफ मरािों में बगािात का बीज बो हदया। इस क्स्थयत का फायदा उिाकर यनजाम ने एक बार पुनः विशिा सेना, क्जसमें नागपुर का भोंसिे ेघराना तथा दूसूरे कुछ मरािा सरदार भी शालमि थे, के साथ मरािों पर धिाा बिो हदया। इस तर की घटनाए ाँकई बार घट चुकी थीं, िेककन इयत ास इसका भी गिा ै कक मरािों की राजनीयतक एकजुटता खडिंडत करने के लिए स्िाथी तथा अराष्ट्रीय शक्क्तयााँजब-जब लसर उिानेिगती थी,िं तब-तब मरािों की स्िाभाविक राष्ट्रभक्क्त परिान चढने िगती थी और शत्रु ुको नाकों चने ेचबिाती थी। कभी-कभार आत्मश्िाघा या स्िाथी प्रिृवृत्त के कारण उनमें से कुछ के ाथों राष्ट्र के लिए ायनकारक कम सभी ो जाते ेथे,े तब भी कुछ लमिकर सपिूंण सम ाराष्ट्र में रची-बसी राष्ट्रीय भािना की य विशेषता सतत बनी र ती थी। इस

समय भी ऐसा ी ुआ। गृ ृकि सेउपजे ेदर्षि के कारण पेशिा के विरुद्ध यनजाम से जा लमिे ेमरिाा सरदार अपनेअस्ााभाविक लमत्र का साथ छोडकर स ी मौके पर मरिी सेना के साथ आ गए। यनजाम की अच्छी-खासी फजी त ुई। शा.सिं. १६८५ (ई.स.िं १७६३) में दोनों में इस स्थान पर घमासान ुआ। मरिों की सयिुंक्त सेना ने यनजाम की कमर तोडकर रख दी। इस युद्ध में यनजाम की अपररलमत ायन ुई। उसका दिीान मारा गया तथा बाईस बडे सरदार पकडे गए। उसकी तोपें तथा सभी युद्ध-सामग्री पर मरिों ने कब्जा कर लिया।

उद्गीर की िडाई में यनजाम पिू समें ुई ायन की भरपाई के लिए आया था। उसनेमरिों को अपनी मान्यता के बगैर पुणे ेका सूबेदार यनयुक्त न करने का फरमान जारी करने का दुसुसा स ककया था। उद् गीर में तो उसकी ार ुई ी थी, इस बार उसे ेबयासी िाख रुपए की आय िािा प्रदेश भी मरिों को देना पडा। नए पेशिा माधिरि द्िारा ककशोरिास्था में ककया गया य प िा युद्ध था। कफर भी उसमें उन् ोंने अपना ऐसा कौशि और कतृत्सि हदखाया कक उन् ें अपने राष्ट्र का मागप्रसदशकस माना जानिेगा और समूचे ेम ाराष्ट्र को विश्ािसि ो गया कक ककसी भी पररक्स्थयत में सभी शत्रुओ िंके विरुद्ध यश अक्जतस करने में समथ सनेता य ी ै।

इस तर पानीपत में भारी क्षयत ोनेके बाद भी मरिि िैसे ी समथ स ैं- य प्रतीयत उन् ोंनेयनजाम को करा दी। इसके बाद माधिरि ने, मरिों की व्यस्तता का फायदा उिाकर मैसूर राज्य के खडिं रों पर नई मुसलिम सत्ता स्थावपत करने तथा कृष्णा नदी तक के क्षेत्र में अधधकार जमाने का सा स क्जस ैदर अिी ने ककया, उसे ेभी यनजाम की तर सबक लसखाने का यनश्चय ककया। उन् ोंने शा.स.िं १६८५ (ई.स. १७६३) में ैदर अिी पर आक्रमण ककया। घोरपडे, विचिंूरूकर, पटिधनस आहद कुशि सेनानायकों ने ैदर पर चौतरफा आक्रमण करके उसे ेघेर लिया। िााकिाँक ैदर भी कुशि सेनानायक तथा जुझारू योद्धा थािंककन मरिों के सामनेहटक पाना टेढी खीर ै इसका अनुभि उसे ेरट्टी लिाी कै युद्ध में ो गया। आखखरकार, उसनेबडी कुशिता से दिाँ चिकर खखसक जानेकी कोलशश की; िैककन माधिरि ने बेदनूर में रोडा अटकाकर उसका य प्रयास सफि न िीं मरिों के साथ युद्ध के लिए वििश ोना पडा और अपररलमत ायन झिेनी पडी। सेना का नेतृतिू स्यि िंमाधिरि ने ककया और ऐसा मिा बिाि कक ैदर की सेना पूरी तर त स-न स ो गई। ैदर के पास फ्रेंच प्रलशक्षक्षत पराक्रमी सेना थी, िंककन उसपर भी जबरदस्त मार पडी और िाखों अश्ि, ऊाँट, तोपें आहद को मरिों ने अपने अधीन कर लिया। इस तर पराक्जत ोने के बाद ैदर के पास सिु करनेके अिािा और कोई रास्ता न ी िंबचा। उसनेसधिंध की याचना की। सधिंध के अनुसार मरिों द्िारा जीते े ुए प्रातिों पर उनका आधधपत्य स्िीकार करने चौथ के बकाया के रूप में उसे ेमरिों को बाईस िाख रुपए भी देनेपडे।

अगर माधिरि अपनेमन की कर सकते तो इतनी शतों पर भी िे ैदर को न िींछोडते;े िंककन ककसी ैदर या नजीब खान की तिुना में राघोबा दादा की दुष्ुट्ट राजतुम मरिों के लिए ज्यादा बडी आपवत्त थी। कई बार इस यिुा पेशिा द्िारा ह दिंू ूराज्यों के दुशुमनों को जीतनेकी बारी आते े ी राघोबा दादा विद्रो कर उितेथे। उनकी सत्ता वपपासा ककसी भी तर बुझने के आसार नजर न ी िंआ र े थे। िे सत्ता तो चा ते िंककन सत्ता चिाने की योग्यता उनमें िेशमात्र भी न िींथी। मौका लमिते ी िे आ भतीजेके खखिाफ अह दिंू ूराजाओिंके साथ षड्यत्रिं

रचने में जुट जाता था। और अ कधी उसे ेपराक्जत कर उसपर अकिंुश िगाया जाता, पकडकर काबू में ककया जाता ै। भूख डतिा शुरू कर देता और अन्न त्यागकर प्राण देनेकी धमककया ाँदेनेिगता मुगिों के लस िंासन पर अपना अधधकार जतानेिगिा। यहद कोई ऐसा दिेदार ोता, तो विष की एक बूदाँ से अथिा लस िंासनारूढ पुरुष की एक मुस्कान या अफसोस की एक आ से या खजिंर से उसे ेकब का शातिं कर हदया जाता ! िेककन पुणे ेके लस िंासन पर आसीन युिा पेशिा उदारता तथा धालमकसता के प्रतीक थे। अपनेएक पत्र में माधिराि लिखते े ैं, "राज्य

ककसका ै ? उसका विभाजन करनेिािे म कौन ोते े ैं ? य राज्य ककसी की व्यक्क्तगत सपंिंदा न ी िं ै। य सब मराठों की सपंिंदा ै। उसकी िदृ्धध के लिए सभी छोटे-बडों को प्रयास करना चाह ए। इसके विपरीत, आप जैसे े बुजुग सउस सपंिंदा के ह स्सेकरनेकी कामना करते े ैं ? उसपर में कुछ न िंीक ना। राज्य का सचंािन-सूत्र ककसी एक व्यक्क्त के ी ाथों में रखना राज्य के ह त में ै। कफर भी आप जैसे ेबुजुग सइस राज्य-सपंिंदा को खडिंडत करना चा ते ैं, तो में कुछ न ी िंक ना। इस तर खडिंडत करके राज्य को शक्क्त ीन बनाने की बजाय म ैंखुद ी यनरपेक्ष भाि से इससे पृथक् ो जाऊाँ-य ी उधचत ै। गृ िृकि के कारण राज्य को नुकसान प ुाँचाने का दोष क्यों मेिे हदया जाए? सबकुछ आप ी करें, म तटस्थ र ेंगे। आप कुशितापिूकस राज्य चिाए।ाँ म तो साथ ैं ी। सबकुछ आपका ी ै। आपकी सेना का एक आगामी पीहढयों का य शाप िेने की बजाय कक 'इसनेस्िाथि सके मो में मराठा राज्य की बलि दे दी', आप जो टुकडे में देंगे, म उसी में सतंोष कर िेंगे।"

न्यायपरायण और ोन ार पेशिा के ोते े ुए यहद राघोबा ने म ाराष्ट्र के सिाधधकार का ि स्थान स्िीकार कर लिया ोता, तब भी मराठों के राष्ट्र ने उन जैसेसिथसा अयोग्य और चचंिमनोिृत्त िाि ो व्यक्क्त को उसपर कभी हटकने न िंीहदया ोता।

पानीपत का प्रयतशोध

'मराठे अपनेउपकारकता मके प्रतत कृतज्ञ, लेकेकन शत्रु के प्रतत उतनेही तनष्ट्ठुर हैं। ककसी ने उनका अपमान ककया, तो उसका प्रततशोध लेनेके शलए वे अपनेप्राण तक झोंकनेके शलए उतारू हो सकते ेहैं।'

- ह्नेंसािगं

मन व्याकुि करनेिािी गृ िृकि , देश के लिए घातक िडाइयााँ, ैदर और टीपू जैसे ेखतरनाक तथा नए शत्रुओं िंका उदय- ऐसी बाधाओं के बािजूद पानीपत की पराजय का बदिा िेना तथा उस समय क्जन् ोंने उनके विरुद्ध जाने का दुस्सा स ककया, उन् ें कठोर दिंड देनेका अपना कतव्सय मराठे भूि न ी िंसके थे। श्रीमतं नाना सा ब के यनधन के बाद दो प्रमुख मराठा सरदार - लशदिं और ोिकर-उत्तर भारत में मराठों के राष्ट्रीय ह तों की रक्षा यथाशक्क्त रक्षा करते ेर े। आपस की िडाइयों तथा राघोबा की कारस्तायनयों का सिसामान्य बदंोबस्त

ह दिंू ूपदपादशा ी 86 करने के बाद, पानीपत के युद्ध में विरोध करर्निेी का शमन करने के लिए शा.स.िं १६९१ (सन्

्१७६९) में विसाजी

कृष्ण बबर्निेी की अगुआई में सेना भेजने का यनश्चय ुआ। ह दिंू ूसाम्राज्य का प्रभुत्ि पुनस्थावसपत करने, उसका यनयत्रिंण पुनः अपने ाथों में िेनेतथा शा.स.िं १६८३ (सन् ्१७६१) में क्जन- क्जन ह दिंू ूराजाओिंने मरिी सत्ता के

विनाश की कामना की और उसके लिए प्रयत्न भी ककए, उन् ें सबक लसखाने ेके लिए मरिों की विशाि सेना नमदसा पार कर बुदेंिखिडं जा प ुाँची। ि ााँके छोटे-मोटे विरोध शातिं कर तथा माग समें पडने ििो ेसभी दोषी राजाओ िं

ि सिरदारों को दिंड देकर बबना ककसी खास प्रयतरोध के िेचबिंि तिक प ुाँच गए। उन् ें जाटों के सघिंष सका सामना करना पडा। पानीपत के सग्रिंाम के बाद आगरा समेत क्जन दुगों पर जाटों ने कब्जा कर लिया था, उन् ें िापस िौटाने से भरतपुर के जाट राजा ने इनकार कर दिया। दोनों पक्षों के बीच घमासान युद्ध ुआ। िााकाँक जाटों ने मरिों का दृढता से मुकाबिा ककया, िेककन आखखर तक िे हटक न ििपाए। िे अपना धीरज खो बिै और अपनेजारों योद्धाओिंकी मृत दे रणभूलम पर छोडकर िे भाग खडे े ुए। ाथी, घोडों समेत उनकी सारी युद्ध सामग्री और सेना यनिास मरिों के ाथ िगा। जाटों के सरदार ििनि लस िं ने सि की याचना की। उसने पानीपत में मरिों की ार के बाद स्िय िं द्िारा अधधकृत सारा प्रदेश तथा इतनेहदनों के बकाया के बतौर ९५ िाख रुपए मरिों को हदए। अब मरिों की विजयी सेना हदल्िी के म ाद्िार पर दस्तक देनेके लिए आगे ेबढी। उन् ें अदिंाजा था कक िे ा ााँउनका जानी दुश्मन नजीब खान कुछ अडगिंा जरूर डािेगा, िेककन िे िृद्ध कपटी पठान तो ेका नाटक करने िगा। िे जीिनदान की याचना करता ुआ यनतातिं दीनता के साथ मरिों की छािनी में ी उपक्स्थत ो गया! अपनी धूततसा का पररचय देते े ुए उसनेदोआब में ििूटी ुई सपिंवत्त तथा प्रदेश मरिों को सौंपकर उनके हदल्िी प्रिेश का माग ससुगम कर हदया। इस स ायता के पीछे उसका एक ी उद्देश्य था-अपने प्राणों की रक्षा और मौका लमिते ी मरिों के खखिाफ षड्यत्रिं करना। िााकाँक इस बार उसे ेमरिों की प्रयतह सिंा की आग से कोई न ििीं बचा सकता था, िेककन साक्षात् ्मौत ी उसके आडे आ गई और उसने पानीपत के इस प्रमुख षड्यत्रिंकारी को पानीपत में आत्मदान करर्निेों के जायतबधिुंओिं की क्रोधाक्ग्न से बचा लिया।

आखखर मरिों ने हदल्िी में प्रिेश कर ी लिया। अकबर तथा औरिंगजेब की इस राजधानी में उनका प्रयतरोध कर सके, ऐसा कोई न ििींबचा था। हदल्िी की खायतर अयंतिम युद्ध क्जस अ मद शा अब्दािी ने ककया, उसके भी ोश हिकाने आ गए और उसनेसि के लिए अपने दूत पुणे ेमें भेज हदए। बडी माथापच्ची के बाद दोनों पक्षों में समझौता ो गया और इस तर अ मद शा अब्दािी ने लसद्ध कर हदया कक ह दिंसु्थान की सािभसौम सत्ता ह दिंओु िंके ी ाथों में ै। उसनेह दिंसु्थान की सािभसौम राजनीयत में दखििदंाजी न करनेका करार ककया और ह दिंू ूसाम्राज्य के सरिंक्षक की मरिों की क्स्थयत को स्िीकार कर लिया। इस तर पानीपत के विजेता ने स्िय िं अपनी म त्त्िाकाक्षंा- क्जससेि युद्धप्रिृत्त ुआ, उसकी तथा उस म त्त्िाकाक्षंा से लमिी विजय की राजनैयतक दृक्ष्ट से यनस्सारता मान िी। मरिों ने ह दिंसु्थान की सािभसौम राजनीयत से अफगान पक्ष को पूरी तर से उखाड फेंका और हदल्िी पर अपना िचस्स्ि कायम करके रु िे ेतथा पिानों को एकदम अिग-थिग कर हदया।

उस समय ह दिंओु िंकी सिाभसौम सत्ता से दो-दो ाथ करनेका एक भी अिसर लमिने पर तैयैार बैि रु िे े और पिान-दो समथ समुसिमानी ताकतें थी।िं पर उनकी भी सजा का हदन आ गया था। पानीपत में रु िों और पिानों ने मरािों का जो मानभगिं ककया था, उसकी स्मृयृत से मरािों के प्रयतशोधी खड्ग की धार और भी तीक्ष्ण ो गई थी। इसलिए उन् ें ककसी भी तर ब िाना सभिंनि िीं ै - य रु िे ेतथा पिान भिीभाययाँत जान गए थे। अतः उन् ोंनेपानीपत की रणभूलम से पररधचत र मत खान, अ मद खान बगिंश आहद अनुभिी सेनानायकों के नेतृतिृ में इकट्ठा ोकर मरािों का धैयैपूसिकस सामना करने का यनश्चय ककया।

हदल्ली में कुछ हदन गुजारने के बाद मरािों ने कफर से दोआब में प्रिेश ककया। िे ााँउनके पुराने दुश्मनों की सख्ं्या बढ गई थी। युद्ध के लिए िगभग सत्तर जार मुसिमान शस्त्रों से िैसै खडे ेथे, िेककन उनके सख्ं्याबि पर ध्यान देनेकी भी फुरसत मरािों के पास न ी िंथी। एक के बाद एक घमासान सग्रिंाम ोनिेगेऔर र एक रणक्षेत्र में मरािों ने पिानों और रु िों की भरपूर खबर िी। उन् ोंनेनगर-दर-नगर और ककिे-दर-ककिे े अपनेअधधकार में लिये और सपिूंण सदोआब क्षेतेत्र में पिानों को चुन- चुनकर मारा। मरािों की विजयी सेना ने रोह िखडिं पर धािा बोिकर रु िों की भी पिानों जैसी दुदुसशा की। मरािों के प्रयतशोध की आग में जिने से नजीब खान को मृतयृु ने ी बचाया, िेककन अपनेवपता के पापों का फि भोगनेके लिए उसका बेटा जबेता खान अभी क्जदिंा था। उसनेशुक्रताि के दुगु सकी अभेद्येय दीिार का स ारा लिया। िे ााँभी मरािों ने धािा बोि हदया। उन् ोंने अदिंर यछपी शत्रु सेना का स िंार अपनेतोपखािोंों की बौछार से करके जबेता खान को मैदैान छोडने के लिए मजबूर कर हदया। रात में ी भागकर िे गगिंा नदी पारकर बबजनौर प ुाँच गया।

उससेबदिा िेने के लिए यनकिी मरािी सेना नेभी तुरिंत गगिंा पार की और नगर की रक्षा के लिए जबेता खान द्िारा िगाई मुसिमानी तोपों की भयकिंर गोिाबारी के बािजूद उसनेबबजनौर पर ि मिा बोि हदया। मरािों ने उसकी तोपें छीन िी,िं उन् ें रा में ी रोकने आई दो बडी सेनाओिंका खात्मा कर हदया, जारों रु िों को अपनी तििारों से पानी वपिाया कफर बबजनौर में प्रिेश ककया। पूरे बबजनौर क्जिेको मरािी सेना के अश्िदि ने रौंद डािा। िे ााँसे जबेता खान नजीबगढ भाग गया। मरािों ने उसका पीछा ककया और फते गढ ालसि कर लिया। पानीपत में मरािों की छािनी में िूटी ुई सारी दौित नजीब खान तथा रु िों ने फते गढ में ी रखी थी, उसे ेमरािों ने कफर से ालसि ककया। इससे मरािों की खुशी का हिकाना न ी िंर ा। उनकी विजय अब पूरी ो गई थी। जबेता खान की पत्नी और बच्चे भी मरािों के ाथ िगे। पानीपत की िडाई के बाद इन क्रूर रु िों ने िे ा ाँ मरािों की औरतों, बच्चों और सैकडों मरािा युिकों की जो दुगुयसत यनष्ठुरता से को थी, उसे ेदेखते ुए मरािों ने भी नजीब खान और जबेता खान के कुनबे पर िैसी ी क्रूरता से अत्याचार ककए ोते ेतो उसके लिए उन् ें दोषी न िीं िराया जा सकता था। िेककन ह दिंओु िंकी विजयोत्सि मनानेकी परिंपरा एकदम यनरािी ै। उस परिंपरा का पािन करते े ुए मरािों ने उन् ें बिपूिकस धमातांरण के लिए मजबूर करने या उन् ें अपने असैयनक कमचसाररयों के विकारों पर बलि चढा देने की कल्पना भी न िींकी। ऐसी पाशविक और जगिंिी कारराइयों का स ारा न िेते ुए मरािी अस्त्र-शस्त्र ने प्रातिं भर के रु िों और पिाकों के हदिों में ऐसी द शत पैदैा कर दी थी कक मरािों का शस्त्रों से िैस कोई लसपा ी देखते ी उनका पूरा-का-पूरा गािाँ खािी ो जाता था। मुसिमानों के जो नेता बच गए,

उन् ोंनेतराई के जगिंकिा आश्रय लिया। ि ााँभी ि े मरिों के प्रयतशोध के खड्ग से लसफस इसलिए बच पाए, क्योंकक िषा सत्रृतु आरिंभ ो चुकी थी। पानीपत में ककए गए स िंार का इतना बडा मूल्य उन् ें चुकाना पडा।*

इस प्रकार तराई के जगिंकी सीमारेखा तक अपनी ध्जिा फ रानेऔर सभी दुश्ुमनों की धक्ज्जया ााँउडाने के बाद मरिी सेना को िापसी का यनदेश हदया गया। मरिों की सेना शा.स.िं १६९३ (सन् ् १७७१) में हदल्ीकी ओर ीटि चिी। मरिों के राजनीयतक नेताओिंऔर उनके धुरिंधर सेनायनयों ने प्राप्त की ुई विजय का ि ााँउन् ें भरपूर िाभि लमिा। इस समय शा आिम मुगि साम्राज्य का नामधारी बादशा था। उसे ेकैद करके ह दिंसु्थान की सल्तनत पर अधधकार जमाने का षड्यत्रिं अग्रिंेज और सुजाउद्दौिा लमिकर रच र े थे, पर मरिों के कुशि मत्रिंत्रयों ने उनपर मिा की और उनका षड्यत्रिं विफि कर शा आिम को इस आशय का अधधकार-पत्र देनेके लिए वििश कर हदया कक मरिी उसे ेनाममात्र का बादशा स्िीकार करें और बदिे ेमें समूचे ेह दिंसु्तान का साम्राज्य चिाने तथा उसकी रक्षा करने का अधधकार और भार शा आिम मरिों को सौंप दे। बादशा ी का य नाममात्र का खखताब भी उसे ेतभी लमि पाया, जब उसनेपानीपत युद्ध के बाद के सभी िषों की बकाया चौथ मरिों को देने तथा भविष्य में कब्जेमें आनेिािी प्रातिं आधे-आधे बाटाँने ेका करार उनसे ेककया ! ई.सिं. १७६१ में जो घटना घटने े की कगार पर प ुाँच गई थी, ि ई.सिं. १७७१ में पूरी तर से साकार ुई। रु ि े ेऔर पिानों की सपिूंण सपराजय के बाद ह दिंसु्थान में ह दिंओु िंके साम्राज्य को िििकारनेिािा कोई भी मुसिमान न ींबचा था। इस तर उस िष स मुसलिम आकाक्षिंा, सत्ता एििं स्िातित्र्िंय सूय सका अस्त ो गया। उसे ेसमाप्त कर हदया मुगि, तुकस, अफगान, पिान, रु ि,े ईरानी और उत्तर ि दक्षक्षण के सभी पथिंों, सिंप्रदायों के मुसिमानों ने अपनी बादशा ी, ह दिंसु्थान की सािभसौम सत्ता के लिए सघिंष सकरने तथा प्रयतशोध िेनेके लिए यनकि पडेह दिंओु िंके ाथों में न पडने देकर उसे े बचानेका प्राणपण से प्रयत्न ककया; िेककन मरिों ने ि सब यनष्फि कर हदया और अगिे े५० िषों तक ह दिंू ू साम्राज्य के सरिंक्षक की उनकी पदिी अमान्य करनेिािों या छीनने की कोलशश करनेिािों से सघिंष सकर ह दिंसु्थान की सािभसौम सत्ता अपनोथों में रखी।

शालििा न शिंित् ् १६९३ (सन् ् १७७१) के पश्चात् ्ह दिंसु्थान के राजनीयतक क्षेत्र्े की एक सत्ता के नाते े मुसिमानों की गणना करने का कोई कारण न र ा। ह दिंओुिं ने और इस तर अटक से िेकर दक्षक्षण समुद्र तक ह दिंसु्थान और ह दिंूपायत का स्िातित्र्िंय कफर प्राप्त ककया। मुसिमानों के बाद ह दिंओुिंका पािा नए दुश्ुमन से पडा। और ि े थेअग्रिंेज । ि मुसिमानों सेबरतिा, योग्यता तथा स्िभाि की दृक्ष्ट से बबिकुि लभन्न थे। मरिों की दो बडी सेनाओिंके उत्तर हदशा में भेज हदए जानेका मौका देखकर

दक्षक्षण में म त्त्िाकािंक्षी ैदर ने अपना भाग्य कफर एक बार आजमानेका प्रयत्न न िींककया ोता और ि मरिों का अधधराज्य अमान्य कर खडा न िीं ुआ ोता तो आश्चय स ी ोता। उसे हिकाने िगाने के लिए माधिरा प्रबि सेना के साथ तुरिंत यनकि पडे। तुगिंभद्रा नदी पार करके शत्रुसेना के साथ एक के बाद एक युद्ध करते े ुए और उनके दुगु सपर कब्जा करते े ुए ि आगे ेबढते ेगए। अस ाय ोकर ैदर को अनिडी के जगिंकिा स ारा िेना पडा। मरिी सेना की एक टुकडी ि ााँभी प ुाँच गई और ि िींहटककर उसे ेजजरस करने िगी। एक हदन

रात में मतोड में डेरा डिाकर मरिाी सेना विश्राम कर र ी थी। तभी बीस जार सैयैनकों के साथ ैदर एकाएक टूट पडा, िेककन सौभाग्य से उसकी बदिंूकू की प ि ी ध्यिन से मरिाों के सेनापयत गोपाािरा पटिधनस की नीदिं टूट गई। अपनी सेना बडी कहिनाई में पड गई ै - य भाप ाँनेमें उन् ें देर न िीं िगी। इस समय थोडी सी भी सुस्ती या देरी मरिाों के सिनसाश का कारण बन सकती ै- य भी उन् ोंने जान लिया।

केसररया झडिं पकडकर िे घोडेपर सिार ो गए और उन् ोंनेिडाई की तैयारी की सूचना देने के लिए नगाडे बजाने की आज्ञा दे दी। नगाडों की ध्यिन सुनते ी सभी मरिाा सैयनक जाग गए और तुरिंत रणभूलम पर इकट्िा ो गए। शत्रु के तोपगोिों की बौछार बढ गई और एक के बाद एक मरिाी सैयैनक घायि ोनेिगे, िेककन मरिाों ने ह म्मत न िीं ारी। चारों ओर से मरिाों के यघर जानेका खतरा हदखने िगा, िेककन गोपाािरा सीना तानकर अपनी ध्िजा ि राते ुए खडे े र े और अपनी सेना को प्रोत्साह त करते े र े। मरिाों की राष्ट्रध्िजा सम्मान के साथ ि राते ुए मानो शत्रु की सेना को धचढा र ी थी। िडाई की सूचना देनेिािेनगाडे अभी भी बज र े थे। गोपाािरा का अगिंरक्षक पास ी खडा था। सनसनाता ुआ एक तोपगोिा उसके लसर पर धगरा और उसके मस्तक की धचधिंधया ाँउड गईं। उसके बदन से खून का फव्िारा ऐसेप्रबि िेग से यनकिा कक मरिाों का सेनापयत खून से िथपथ ो गया। िेककन पटिधनस अविचि खडे े र े। उनका घोडा जब दुश्मुन की गोिी से घायि ो गया, तब िेदूसूरे घोडेपर सिार ो गए।

----
* इस कथानक पर सिारकर ने 'उत्तर कक्रया' नामक नाटक लिखा ै।

दूसूरा घोडा भी शत्रु के तोपगोिेसे घायि ो गया। तब िे उतरकर तीसरे घोडेपर सिार ो गए। भय ने उन् ें िेशिमात्र भी स्पश सन िीं ककया। उनका यनश्चय थोडा भी न िीं डडगा । मरिाों के लिए पररक्स्थयत इतनी प्रयतकूि थी कक क्षणमात्र धीरज खो देने से, अपनेस्थान से जरा सा भी टने ेसे सेना का मनोबि टूट जाता और सारी सेना ैदर की विजयोन्मुख सेना के ाथों में चढ जाती; िेककन मरिाों के सब लसपा ी और लसप सािार अपनी छाती का परकोटा बनाकर शत्रु ुके तोपगोिों की बौछार झिेते र े। ैदर ने समीप आकर अदम्य धैय सका य दृश्य देखा, तो दिंग र गया तथा उसी फुरती से िौट गया।

युद्ध उसी तर चिता र ा। पिे, पटिधनस, पानशेआहद सेनोपयतयों ने ैदर का िगातार पीछा करके मोती तािाब के पास उसे ेघेरकर उसकी सेना का स ि ार कर हदया और सभी प्रकार की युद्ध-सामग्री पर कब्जा कर लिया। अब मरिाों ने ैदर को राजनीयतक क्षेत्र से मेशा के लिए नष्ट कर देनेका विचार ककया; िेककन उसी समय पुणे ेसे एक म त्िपूण सपत्र आ प ुाँचा। उसमें लिखा था कक पेशिा गभिीर रूप से अस्िस्थ ैं। इसलिए सभी तुरिंत पुणे िौट आए। ाँ मरिाी सेनानी सधिंध करने के लिए बडेकष्ट से राजी ुए और उसपर उन् ोंने ैदर के स्ताक्षर िे लिये। सधि के अनुसार ैदर को मरिाी स्िराज्य के कब्जा ककए सभी क्षेत्र िौटाने ेपडे और युद्ध के पूरे खचे ेसमेत पचास िाख रुपए पेशिा को देनेपडे।

मरिा सभी हदशाओ िंमें जब इस तर की शानदार विजय प्राप्त कर र े थे, तभी हदल्िी से िेकर मैसूर तक फैिी मरिाों की सेनाओिं और राजधायनयों में उस राष्ट्रपुरुष के रोगशय्या पर पड जाने का समाचार फैि गया,

क्जसके समथ सनेतृति् में उन् ोंने पानीपत में ुए अत्याचार और अपमान का प्रयतमिो लिया था और अपनेराष्ट्र को ैभि के लशखर पर पुनः आरूढ कर हदया था। इस विपवत्त से समूचा राष्ट्र धचतिंतुर ो उिा। माधिरिा पेशिा कुशि सेनानायक ोनेतथा युद्ध में विलक्षण विजय प्राप्त करने मात्र से ी िोकवप्रय न ी िथे। उनका शासन भी उतना ी न्यायपूण सऔर दयािान था; सूबेदारों से िेकर सामान्य प्रजाजन तक में उनकी आस्था उतनी ी ग री और भािुकता भरी थी; बडों से िेकर छोटों तक सभी को समान न्याय लमिे- इस ेतु ककए जानेिािेउनके प्रयत्न उतनेी जागरूकता भरे और सतिुंलित थेऔर इस कारण उनकी प्रजा का छोटा- से-छोटा व्यक्क्त भी उनके प्रयत भक्क्त और प्रेम रखता था। उनकी सत्ययनष्ट्िा और दृढता से ताकतिर डरतेथेतथा दुबिुस ककसान उन् ें अपना सरिंक्षक मानकर अपना दुखुडा उन् ें सुनाते थे। यद्यवप अपने मतिबी चाचा के कारण उन् ें गृ ृकि आहद सकिंटों से जूझूना पडा। कफर भी पानीपत के सग्रिंाम से अपने राष्ट्र पर िगी कालिख दस सिा के भीतर ी उन् ोंने धो डािी। स ी अथ समें पानीपत की पराजय को 'राष्ट्रगौरि बढानेिािी पराजय' में बदि डािनेका श्रेय उन् ें ी देना चाह ए। ह दिंू ूस्िातित्र्य तथा ह दिंू-ूपदपादशा ी के पवित्र काय सको चुनौती देनेिािों को अपनी सशक्त भुजाओ ि के बि से उन् ोंनेकुचि हदया। अपनी अल्प आयु में ी उन् ोंनेम ान् ्उपिक्ब्ध ालसि करके िोकवप्रयता का उच्च स्थान प्राप्त ककया था। अतः समूचा राष्ट्र उनसे ेउनके वपता से अधधक प्रखर पराक्रम की आशा करता था। सत्ताईस सिा की अल्प आयु में ी ि क्षय रोग से पीडडत ो गए। ऐसी नाजुक घडी में भी राघोबा दादा यनजाम के साथ लमिीभगत करने का प्रयत्न करने से बाज न िींआ र े थेऔर मृतृयुशय्या पर िेटे ुए माधिरिा अपनेचाचा का मत-पररितनस करने में जुटे ुए थे। माधिरिा ने राष्ट्र का सारा ऋण चुका हदया था, उन् ोंनेराजिैद्य को उन् ें ऐसी औषधध देनेका आदेश हदया क्जससे ेअयिंतम घडी तक उनकी िाणी बनी र े और ि ईश्िर का नाम स्मरण करते े ुए प्राण त्याग सकें। पूरे राज्य में उनकी बीमारी की खबर फैिते ी उनपर स्ने करनेिािी प्रजाजन अपने वपता-समान इस राष्ट्रिीर के अयिंतम दशनस के लिए चारों ओर से पुणे प ुँचने िगे। य पता िगते ी उन् ोंने राजम ि के सब दरिाजेर समय खिेु रखने ेऔर सामान्य से सामान्य व्यक्क्त को बबना ककसी रोक-टोक के उन तक प ुँचने देने का आदेश हदया।

शालििा न सिंित् ्१६९४ कायतकस कृष्ण ८ को (निबिंर १७७२ में) उन् ें मानो मृतृयु की आ ट िग गई थी। इस उदार राजपुत्र ने राज्य के विद्िान् ्और धालमकस िोगों को पास बिुाकर उनका आशीिादस लिया। और क्जस तर महिंदर में श्रद्धािुओं की भीड जमती ै, उसी तर राजम ि में एकत्र प्रजाजनों से विदा िी तथा ' म म ायात्रा पर प्रयाण कर र े ैं, मारे प्रस्थान की तैयारी करो' - ऐसा आदेश हदया। परमात्मा के पिान नाम 'गजानन गजानन' का उच्चारण करते े ुए सभी प्रजाजनों को वििाप करता ुआ छोडकर उन् ोंनेप्राणत्याग ककया। उनकी युिा, यनःसतिंान, म ासाध्िी पत्नी रमाबाई पयत के साथ स गमन की तैयारी करने िगी। उन् ोंने अपनेसभी िस्त्राभूषण गरीबों में बाटँ हदए और ब्राह्मणों को दान-दक्षक्षणा दी तथा पररिारजनों का अनुरोध िुकराकर पयत की धचता पर आरो ण ककया। धचता की द कती ज्िािा में अपनी आ ुयत देनेिािी उस सन्नारी ने मानो अपनी आत्मा की मशिा सुिगाकर अमर प्रेमे तथा स्िगीय सौंदय सके र स्य पर रोशनी डािी। अभी भी मरािी जनता अपनेिाडिे ेइस राजा-रानी की स्मृयत का लसचिंन पे्रेमाश्रुओ िंसे करती ै। म ाराष्ट्र के चारण-भाट आज की 'दक्षक्षण हदशा का हदया बुझ गया और एक ीरा खो गया'- ऐसा ददस भरा गीत गातें!

गृ ृकि तथा जनमत राय की राज्य क्रायिंत

'इिंग्रजानिंा खडेचारलेनाहहलागूहदलाथारा

भले बुद्धिचेसागर नाना, ऐसा नाही होणारा !'

(- अग्रिेंजों को क्जसनेनाकों चने चबिाए और अपनेअतिंरिंग की था न ििंिगने दी, ऐसे बुद्धध के सागर नाना फडनिीस जैसे ेव्यक्क्त कफर कभी न ििंोंगे।)

समूचे राष्ट्र का आशास्थान बने माधिरिा का दे ातिं अल्पायु में ोना और क्जसे सारे प्रजाजन कोस र े थे, उस राघोबा का अपनेभतीजे के पश्चात् ्एक पीढी तक जीवित र ना, ये दो प्रसगिं ऐसे ैं, क्जनके कारण मनुष्ट्य के मन में कभी-कभी परमात्मा के सिशसक्क्तमान ोनेके बारे में सदिं उत्पन्न ोता ै।

माधिरिा का असामययक यनधन राष्ट्रीय सकिंट तो था ी, ििेकन उनके बाद राघोबा का जीवित र ना उससेभी बडी आपवत्त थी। माधिरिा की अयिंतम इच्छा तथा समूचे राष्ट्र की आकाक्षिंा के अनुसार माधिरिा के अनुज नारायण रिा को पेशिा पद के ििस्त्र सौंपे जाते े ी इस अियस्क प्रधान तथा उसकी मदद करनिािों के विरुद्ध राघोबा के प्राणघाती षड्यत्रिंों की शुरुआत ो गई। नारायणरिा से उनका राज्याधधकार छीननेके लिए राजम ि के प्र ररयों को घूस देकर राघोबा ने अपने पक्ष में कर लिया। उनकी पत्नी आनदिंीबाई उनसे ेसिाई यनकिी। उसनेराघोबा द्िारा प्र ररयों को दी गई आज्ञा में फेरबदि करके नारायणरिा को बदिंी बनाने की बजाय मार डािनेका ुक्म हदया। राक्षसी मनोिृवत्त की उस स्त्री ने नारायणरिा को बदिंी बनाने के लिए प्र ररयों को दी गई राघोबा की आज्ञा 'धरिो' (पकडो) के 'ध' को काटकर 'मा' कर हदया- इस तर 'धरिो' े ििी आज्ञा 'मारिो' े

(मार डिो) में बदि गई। भाद्रपद शुक्ि१३ शिां. स.िं १६९५ (हद. ३०.८.१७७३) को प्र ररयों ने बकाया िेतन का भुगतान करने की मागाँ करते े ुए विद्रो ककया। नारायणरि को घेरकर िे उनसे ेबदतमीजी करने िगे।

पेशिा का एक विश्स्ति सैिक िे िींखडा था। उसने इस कृत्य के लिए प्र ररयों को चार बातें क्या सुनाई, उन् ोंनेतिेिारें यनकािकर उसे िे िींमार डािा। य देख नारायण रि भयभीत ोकर शयनिारबाडा के कमरों में दौडनिेगे। आखखर में नाटकशािा में बिे ुए अपनेचाचा की शरण में िे गए और अपनी जान की भीख मागाँने िगे। िे दयनीय स्रि में क ने िगे, "चाचाजी, म ैंआपका बेटा ूाँ, मुझेबचाइए। पूरा राज आप रख िीक्जए। आप अपनी मरजी से क्जतना भी देंगे,े उसी में म ैंअपना गुजारा कर िूाँगा।"

त्यारे उनके पीछे ी थे। बडी यनममसता से राघोबा ने नारायणरि को अपने से पृथक् कर हदया और प्र ररयों ने अपनी तििारें तान िीं।िं तभी स्िामीयनष्ि्चापाजी हटेकर त्यारों की तििारों की आड बन गया और पेशिा को अपनी दे से ढककर त्यारों से अपनेस्िामी को न मारने का अनुरोध करने िगा, पर उन िोगों पर त्या का उन्माद सिार था। उन् ोंनेअपनी रक्तरिंक्जत तििारों के खचाखच िारों से अियस्क पेशिा तथा प्राण छूटते तक उनपर अपने शरीर छत्र धरने ििो उनके स्िामीभक्त सैिक की त्या कर दी। इसके बाद इन विद्रोह यों ने शयनिारबाडा पर कब्जा करके राघोबा दादा के पेशिा ोनेका एिान ककया।

य भयानक समाचार नगर में फैिते ी िोग क्षुबुध ो उिे जग -जग जत्थे जमने िगे ेऔर त्यारे राघोबा को पेशिा के रूप में स्िीकार न करने की घोषणाए ाँ ोनेिगीं।िं अभी भी म ाराष्ट्र में राष्ट्रीयता की िािना और योग्य नेता का चयन करने की वििेक-बुद्धध जाग्रत् ्थी। ककसी नापसदिं व्यक्क्त को अपना नेता मान िेनेके लिए मराठों को जोर-जबरदस्ती से बाध्य करना सिथसा असभिंि था। इसलिए शासन के विलभन्न पदों पर आसीन स्तितिंचेता व्यक्क्तयों तथा िोकनायकों का एक गुप्त क्रायिंतमडिं जल्दी ी बन गया, जो 'बार भाई' नाम से जाना गया। म ाराष्ट्र के साथ ुई इस भयकिंर घटना की जाचाँ के लिए राज्य के प्रमुख न्यायाधीश, प्रलसद्ध रामशास्त्री प्रभुणे ेको यनयुक्त ककया गया। अल्पािधध में ी जााँच से य लसद्ध ो गया कक इस सकिंट का सूत्रधार राघोबा और उसकी दुष्ुट्ट पत्नी आनदिंीबाई ै। य यनक्श्चत ोते े ी िे यनभीक ब्राह्मण तत्काि राजिाडेमें चिा गया और भरी सभा में अपने िफादारों सेयघरे बिै राघोबा पर जनता के पेशिा तथा भतीजेकी त्या का आरोप िगाया। इस अपराध के प्रायक्श्चत्त का विचार ििए जाते े ी उन् ोंनेक ा, "इस जघन्य अपराध का प्रायक्श्चत्त क्या ोगा? शास्त्र के अनुसार दे ातिं प्रायक्श्चत्त ी एकमात्र सजा ै।"

स्पष्ट बात क ने का उनका य दुसुसा स देखकर ककसी ने उन् ें सािधान ो जानेका सकिंत हदया तो रामशास्त्री ने क ा, "म ैंराघोबा सेन िींडरता। राज्य के प्रमुख न्यायाधीश के नाते ेमनैं अपने कतव्सय का पािन ककया। यहद िे चा ते ैं तो बडी खुसी सेमेरी भी त्या करके अपनेअपराधों की सख्यिा बढाए।ाँ क्जस राज्य पर ऐसा त्यारा राज करता ै, उसमें अन्न ग्र ण करना तो दूरू, र ना भी म ैंपसदिं न िींकरूाँगा।"

राघोबा के स योगी अचलिंभत ोकर य देखते र गए। उनके य समझनेसे प िी कक क्या घट र ा ै, अक्ग्नलशखा समान प्रतीत ोनेिाा ि यनडर ब्राह्मण राजिाडेसे यनकि गया। उसने नगर का त्याग करके अपनी दृढ प्रयतज्ञा का पिान करते े ुए पवित्र कृष्णा नदी के तट पर प ुाँचने तक अन्न-जि ग्र ण न िींककया।

उसी समय पता िगा कक नारायणराि की पत्नी गगिंाबाई गभिसती ै। इससे पेशिा के सच्चे उत्तराधधकारी तथा गद्दी के योग्य स्िामी के जन्म िेनेकी आशाएाँबििती ो उठी।िं इस खबर के लमिते ी गुप्त क्रायिंतमडिं-बारभाई की गयतविधधया ाँएकाएक तेज ो गईं। इस मडिंके मोरोबा, कृष्णराि कािे, ररपतिं फडके, पटिधनस, तोपखाना प्रमुख रास्ते, त्र्यबिंकराि मामा, धायगुडे, नारो अप्पाजी आहद प्रमुख प्रजाजनों ने नाना फडणीस तथा सखाराम बापूकी अगुआई में योजना बनाई कक राघोबा को प िे ेककसी भी ब ानेसे पुणे ेसे दूरू ककया जाए और उसके बाद उनके विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी जाए। उन् ोंनेजल्दी ी राघोबा को दक्षक्षण की मुह म पर जाने के लिए मजबूर कर हदया। ि ााँउसके जाते े ी उन् ोंने पुणे में विद्रो करके नगर पर कब्जा कर लिया एिं राज्यमडिंकी अध्यक्षा और भािी पेशिा की माता के रूप में गगिंाबाई के नाम की घोषणा कर दी।

राजधानी में ुई इस क्रायिंत की खबर पूरे राज्य में फैिने में देर न िींिगी। एक के बाद एक नगर तथा दुगु स इस नई राज्यसत्ता को मजू री देनेिगे। िस्तुतः य िोकताबिंत्रक सत्ता ी थी। उसे े'बार भाई की व्यिस्था' अथात्स े िोगों का राज्य इसी नाम से जाना जाता ै।

पुणेमें ुई इस क्रायिंत की खबर लमिते ी राघोबा ने तुरिंत पुणे ेपर धािा बोिने की योजना बनाई, िेककन बार भाई राज्य की सेना को ी अपनी तरफ मिा करनेके लिए बढता ुआ देखकर जो भी अनुयायी बचेथे,े उन् ें और अपने भाडे के सैयैनकों को िेकर राघोबा उत्तर हदशा की तरफ पियन करने िगा। अपनेमाग समें आनेिािे नगरों और ि ााँकी प्रजा को अपना दुश्मन समझकर ि विदेशी िुटेरों के समान ी िूटता गया। अगर गगिंाबाई को पुत्र-प्राक्प्त न िीं ुई तो जनमत का रुझान अपनी तरफ ो जाएगा-ऐसी आशा अभी भी उसके मन में शेष थी। कोरेगािाँ के पास बार भाई की सेना से उसका सामना ुआ। दुदैिु से बार भाई की सेना की पराजय ुई और उनके नेता त्र्यबिंकराि मामा पिे मारे गए। क्रायिंतमडिंके प्रमुख नेताओंमें से एक ोने के कारण उनके यनधन से बडी क्षयत ुई। कफर भी नाना फडणीस और सखाराम बापू ने ह म्मत न िीं ारी और म ाराष्ट्र की जनता के समथनस के बि पर युद्ध जारी रखा।

नारायणराि की पत्नी गगिंाबाई को सुरक्षा की दृक्ष्ट से पुरिंदर के दुगु समें कडी सुरक्षा-व्यिस्था में रखा गया था। उस समय न िेिि म ाराष्ट्र की, अवपतु पूरे भारतिष सकी दृक्ष्ट पुरिंदर के दुगु सकी ओर जमी ुई थी। उनका प्रसिकाि समीप आ र ा था। हदन बीतते ेगए। कफर भी पुरिंदर से अभीष्ट समाचार प्राप्त न िीं ुआ, क्जससे िोगों की धचतिंा बढती गई। माताश्री गगिंाबाई के पुत्र िाभ ेतु महिंदरों तथा तीथक्षेसत्रों में िोग मन्नतें मागाँने िगे। पेशिा पद के लिए सुयोग्य उत्तराधधकारी पैदा ो और राघोबा दादा की राष्ट्रद्रो ी म त्त्िाकािंक्षा पूरी न ो-ऐसी कामना सभी कर र े थे। राजम ि से िेकर चौरा ों, गलियारों तक सबके कान पुरिंदर के दुगु ससे लमिनेिािे शुभ समाचार

की ओर िगे ुए थे। इतना ी न िींअवपतु हदल्ली, इिंदौर, बडौदा, ैदराबाद, मैसूर, कलकत्ता आहद ह दिंुस्थान की राजनीयत के प्रमुख केंद्रों में भी इस समाचार का इिंतजार उत्सुकता से ो र ा था।

आखखर शा.सिं. १६९६ िैशाख शुक्ल (७ अप्रैल, १७७४) को सबकी उत्सुकता शातिं करनिेािा ि समाचार आ प ुँचा। मरािों की स्ालिमनी माताश्री गगिंाबाई को पुत्ररत्न की प्राक्प्त ुई ! सपिूंण सम ाराष्ट्र जन्मोत्सि के आनदिं में डूब गया और जन्म सेी राज्य के पेशिा और राष्ट्र के सिाधसधकारी के रूप में उस निजात का स्ागित ुआ। बाि पेशिा पर बधाइयों की िषा सकरने में दूसरे राज्यों के अधधपयत भी पीछे न ििं र े। उस समय का पत्र-व्यि ार इस बात की पुक्ष्ट करता ै कक इस िोकप्रायिंत का समथनस ब ुमत से करनिेािी जनता को इस समाचार से ककतना सतिंोष लमिा और राष्ट्रीय आशा-आकाक्षिंाओ िंमें ककस तर उफान आ गया। अपनी छािनी से साबाजी भोंसिे ने लिखा, "िाता ससुनते ी य ाँसबको अत्यतिं आनदिं ुआ। परमात्मा ने मारी सुन िी। सेना में उत्सि का िातािरण ै। नगाडे बज र े ।ै तोपों की सिामी दी जा र ी ै और य ी कामना की जा र ी ै कक भगिान् मारे िाडिे पेशिा को दीघायुस करें। ज ा–ँज ा ाँबार भाइयों की सेना थी, ि ाँ– ाँआनदिंोत्सि मनाया गया। ररपतिंाहद बुजुगों ने सपिूंण ससेना को उत्सि मनाने का आदेश हदया और सरबत्ती तथा नौबतखाना शुरू कर लमिाइया ाँबाटीं

मझ्ी सरुघरत्मो में अपकेिीदृप्का से ज्िलित ककया। मारे िशिं की िृद्धध करके उसनेमानो म पर अमृत िषा सकी ै। ह दिंूधूम सको रक्षा और अलभिृद्धध के लिए भगिान् मारे पेशिा को दीघायुस प्रदान करें। उसने मारा पािनकतासपैदा करके म पर बडी कृपा की ै!"

निजात लशशुका नाम 'माधिराि' रखा गया, िेककन तत्कािीन पररक्स्थयत के कारण बाि पेशिा िोगों की श्रद्धा के ऐसेकेंद्र बन गए कक उन् ें जल्दी ी आदा के साथ 'सिाई माधिराि' के नाम से सबंोधधत ककया जाने िगा। इस नए पेशिा का आगमन पुणे के उस 'बारभाई' नामक खुकुफया प्रायिंतमिंडि के लिए शक्क्तधकस ाथ अखखि ह दिंुस्थान की राजनीयत के भविष्य में आमूि बदिाि िानेिािा लसद्ध ुआजार प्रायिंतमिंडि की गयतविधधया ाँतेज ो गईं। उन् ोंनेबेह चक राघोबा के बागी ोनेका एिान ककया। उसका पीछा करके उसे धगरफ्तार करने का आदेश मरािा-मिंडि के सभी सरदारों को हदया गया। जो अपनी पत्नी को भी िश में न िींरख सका, ऐसे राघोबा के ाथ में अगर मरािी साम्राज्य की बागडोर चिी जाती, तो मरािा-मिंडि द्िारा आरिंभ ककया गया काय सअधूरा र जाता। िेककन इस पुत्र जन्म से नाना सा ब पेशिा, सदालशिराि भाऊ आहद नेताओंके यनदेशन में ह दिं–ूपदपादशा ी के स्प्न की परिंपरा में पिे-बढे और ह दिंुस्थान की सिाभसौम ह दिं ूसत्ता के रूप में म ाराष्ट्र का प्राप्त ककया उच्च स्थान बनाए रखने की सामथ्य सऔर दूरदृक्ष्ट िािे देशभक्तों तथा राजनेताओ िंकी राजसत्ता के सूत्र अपने ाथ में रखने तथा राष्ट्र को उसके ध्येय दीघकसाि तक क्स्थर रखने की शक्क्त लमिी। यद्यवप राघोबा देख र े थे कक इस पुत्र-प्राक्प्त का स्ागित पूरे म ाराष्ट्र के प्रजाजनों ने एक उत्सि के रूप में ककया तथा उनके ोते े ुए भी उस लशशुको बडेप्रेम और आदर भाि से मरािी साम्राज्य के पेशिा के रूप में स्ीकृत ककया। कफर भी ि अपनी गरदन पर सिार राक्षसी म त्िाकाक्षिं के वपशाच से मुक्त न ी िंपा सके! ककसी उन्मत्त साडाँ की तर उनका उत्पात जारी र ा, उसी के साथ-साथ दुभाग्सय और बार भाई की सेनाे भी उनके पीछे ाथ

धोकर पड गई। अपनेस्र्यिं के राष्ट्र के िोगों के ाथों लमिी पराजय और अपनिोगों द्र्िारा नाता तोड लिये जाने के बाद राष्ट्र के शत्रु का स ारा िेने= में भी उन् ोंनेआगा-पीछा न िंककया।

उस किाखडिं में यद्यवप ब ुत सी सत्ताए ाँह दिंसुथान की प्रभुसत्ता को अपने िश * में करनेका सपना सजोए बिैी थी।िं कफर भी म ाराष्ट्र के अच्छे हदनों में उसका सािभसौमत्ि निकारने का सा स एक में भी न ी िंथा। क्जन सत्ताओिंने य दुसुा स करने की कोलशश की, िे या तो पराक्जत ो गईं या मराों की शरण में आकर उन् ें ाथ मिते ुए चुपचाप बिैे र ना पडा। मुगि, तुकस, पिान, ईरानी, दुरानी, मुसिमान आहद चा े इस देश के ों या लसधिंु ुसररता िाघाँकर आए ों, सबको ऐसा सबक लमिा था कक ह दिंू ूसाम्राज्य के खखिाफ लसर उिाने की ह म्मत ककसी में न िंर ी। ह दिंसुथान के राजनीयतक रिंगमचिं सेउनका यनष्ट्कासन सदा के लिए ककया गया। एक समय आधे एलशया खडिं पर अपनी धाक जमािनिेािे जो पुतगसािी थे, उनके साथ कोंकण प्रािंत को स्ितिंत्र करने के लिए ककए गए युद्धों में मराों ने उन् ें ऐसा मजा चखाया कक िे दोबारा न िंउभर सकें। मराों से खिुेआम टक्कर िेने की जोखखम फ्ािंसीलसयों ने न ी िंउिाई थी। इसलिए िे ैदराबाद और अकासट की आड में पुणे पर यनयिंत्रण रखने का प्रयास करते ेथे। अथ ्ात्ुउन् ें सफिता कभी न िंलमिी।

यूरोप में चि र े झगडों के कारण भी मराों को उनकी तरफ से कोई खतरा न िंर ा। उस समय फ्ािंसीलसयों के प्रयतस्पधी अिंग्रेजे थे। अिंग्रेजों की उदिंडता पर काबू पाने के लिए कुछ समय तक फ्ािंसीलसयों का अक्स्तत्ि मराों की दृक्ष्ट्ट से फायदेमिंद र ा। अिंग्रेज भी बखूबी जानते ेथेकक िे लशिाजी के समय से पक्श्चम समुद्रतट पर यनडर ोकर हटके ुए थे, तो लसफस इसलिए कक मराों को उस समय दूसूरे ताकतिर दुश्ुमनों का सामना करना पड र ा था। अिंग्रेज इसलिए न िंबचे ुए थे ेकक उनकी जरूरत ककसी को थी या मरािी राजनेताओ िं की नजरों से उनकी राजनीयतक म त्त्िाकािंक्षाए ाँऔर उद्देश्य ओझि थे। अिंग्रेजे इसेसमझते ेथे। तात्कालिक पररक्स्थयत के अनुसार मराों ने अिंग्रेजों सेबाद में यनपट िेने की सोची थी, क्योंकक दूसूरे शत्रुओ िंकी तिुना में उस समय अिंग्रेजों सेकम खतरा था, िेकेकन अगर िैसी यनणायसक घडी आती तो मरािे बडी स जता से अिंग्रेजों का सफाया कर सकते ेथे।

अिंग्रेजों में भी राजनीयत का सटीक अनुमान िगाने का गुण था। इसलिए िे जानतेथेकक पक्श्चमी तट पर मुिंबई उनके कब्जे में इसलिए न िंबनी ुई ै कक िे मराों का कोई प्रयतशोध करने में समथ स ैं, बक्ल्क इसलिए ै कक मरािे कफि ाि अन्य स्थानों पर व्यस्त ैं और उन् ें अपनी तरफ ध्यान देनेका अिसर न िंलमि र ा ै। इसी कारण दूसूरों पर ाथ डािने के लिए सदैि तत्पर अिंग्रेज मराों से िो ा िेने में मेशा डरते थे। समुद्र पर आिंग्रे ेका आधधपत्य खत्म करने के लिए नाना सा ब ने अिंग्रेजों का इस्तेमाि कर लिया था। िे ऐसेकरार पर ककया था कक यहद सबकुछ अपेक्षानुसार घहटत ोता तो उस कारण मरािी राज्य की सैयैनक या समुद्री सत्ता को थोडी सी भी क्षयत ोना सिथसा असिंभि था, पर पररक्स्थयत ने एकाएक ऐसी पिटी खाई कक नाना सा ब की पीढी के ककसी भी नेता को उसकी कल्पना न िं थी। असिंभि िगनिेािा पररितसन यहद इस तर अचानक न िंोता तो आिंग्रे ेकी मूि सत्ता से अिग ोकर स्ितिंत्र ोने की पनपती प्रिृवत्त पर रोक िग जानेसे विभाक्जत तथा दुबिस ुए नाविक

बि का यनयत्रिंण मिू सत्ता के ाथों में ी र ता। साथ ी राष्ट्र की दृक्ष्ट से मरािों के नाविक बि की सामथ्य समें प्रत्यक्षतः िृदद्धध ुई ोती। इस सौदेबाजी के फिस्िरूप अग्रिंजों को भी कुछ विशेष िाभ न िीं ुआ। लशिाजी के किाखडिं में उनका क्जतना अधधकार-क्षेत्र् था, उसमें कुछ खास िृदद्धध न िीं ुई, पर बगिंभूलम में अपनेपैर फैिानेके लिए उन् ें म ाराष्ट्र से अधधक विस्तृत क्षेत्र लमि गया। िॉड सक्ाइि भी य देखकर अचक्भिे ेमें पड गया कक क्जस युद्ध में िे िगभग यनद्रासुख ी िेर े थे, उसमें जीत ुई। लसफस मरते यहद उसके यशपथ पर रोडा न िींबने ोते े तो िे अपनेअश्ि पर चढकर सीधेहदल्िी तक प ुँच जाता। ऐसा लिखने ेका मारा उद्देश्य य न िीं ै कक बगिंाि में अग्रिंजों को लमिी विजय ने उनका कोई श्रेय ी न िीं ै। य यश चा े उन् ें उनके भाग्य से लमिा ै। अथिा प्रयतपक्ष की असमथतसा के कारण, प्राप्त यश का फायदा उिानेमें ी ऐसिी की योग्यता साबबत ोती ै। मद्रास में अग्रिंजों की ालसि की ुई विजय उनके सा न की ी पररचायक ै।

मरािों को शस्त्र उिाने पर मजबूर ककए बबना ी तथा उनकी प्रभुसत्ता पर प्र ार ककए बबना ी मद्रास और बगिंदेश में एक सशक्त राजसत्ता के रूप में अपना स्थान कायम करने में भाग्य के साथ-साथ उनके सा स का भी योगदान कम न िींथा; िेककन मरािों की तीखी और चािाक दृक्ष्ट से अग्रिंजी राजसत्ता का य चोरी-यछपे ेबगिंाि और मद्रास में ोनेिािा प्रिेश न िींयछप सका। मरािों के पास नाना सा ब और सदालशिराि भाऊ जैसे ेअनुभिी, सचेत और दूरूदशी राजनीयतज्ञ थे। उनके ोते े ुए समथ-ससे-समथ सविरोधी भी मरािी साम्राज्य की ओर यतरछी नजर से न िींदेख सकता था। शा.स.िं १६८२ (ई. स. १७६०-६१) िष सके लिए सदालशिराि भाऊ ने क्जन सैयनक अलभयानों की योजना बनाई थी, उनमें बगिंाि का समािेश विशेष रूप से ककया था। इसका िक्ष्य एक था-गौड बगिंाि के अयिंतम ह दिंू ूराजा िक्ष्मण लस िं के बाद से अह दिंू ूराजसत्ता से त्रस्त उस प्रातिं को मुक्त कराना। बगिंाि में एकाएक बढी ुई अग्रिंजों की सामथ्य सनष्ट करने के लिए दो विशाि सेनाए ाँमरािों ने िे ााँ भेजी थी।िं

शाालिा न शिंत् ्१६८२ में दत्ताजी लसधिंधया के नेतृत्ि में मरािी सेना का उत्तरी ह स्सा बगिंाि के लिए रिाना भी ुआ था; िेककन अ मदशा के आक्रमणों के कारण बगिंाि पर मुह म की योजना अधर में छोडकर उन् ें उस प्रबि शत्रु का सामना करना पडा। उसके बाद पानीपत का सग्रिंाम और नाना सा ब का दे ातिं - ये दो बडे आघात मरािों पर ुए। दुभाग्सय सेमरािों पर आई िगातार दो विपवत्तयों के कारण अग्रिंजों को अपनेपैर फैिाने ियिक अनुकूि पररक्स्थयत लमि गई। इसका िाभ उिाकर बगिंाि और मद्रास में अपना स्थान मजबूत करने के बाद सपिंूण सह दिंसुथान की प्रभुसत्ता के सूत्र मरािों के ाथ से छीननेऔर हदल्िी के बादशा ी कारोबार को यनयत्रिंण में िाने की दृक्ष्ट से अग्रिंजों ने स्यि िंको समथ सकरने की कोलशश की, पर िे ऐसा मौका न िींपा सके। चा े पानीपत ोता या न िीं ुआ ोता, मरािों की प्रभुसत्ता का खिुेआम विरोध करने का सा स उनमें अब भी न िींथा। अभी भी अखखि ह दिंसुथान की प्रभुसत्ता मरािों के ी ाथों में थी। ह दिंसुथान के मानधचत्र में किकत्ता के नीचे जो िाि िकीर थी, िे धीरे- धीरे बढकर आधे बगिंाि पर छा गई। िैसा ी मद्रास में ुआ। आधी मद्रास प्रेजीडसेंी रक्तपात के सकेंतक इस िाि रिंग से भर गई थी। म ाराष्ट्र की क्स्थयत इन दोनों प्रातिंों से लभन्न थी। ह दिंसुथान के मानधचत्र में लशिाजी म ाराज के समय इस प्रातिं के नीचे जो छोटा सा रक्तबबदिं ुथा, िे नाना फडनीस के समय तक उतना

ी छोटा बना र ा। अग्रिंजी सत्ता के सकेंतक इस िाि रिंग से पूरे-के-पूरे प्रातिं राँगे जा र े थे; िेककन म ाराष्ट्र पर य

िाि रिंग फैानेमें अग्रिंेजी सत्ता सफि न िीं ुई। पक्श्चमी तट पर कायम अपनेपूि सके अधधकार क्षेत्र में िे अगुिंाि भर भूलम की भी बढोतरी न ी िकर सके। इसका कारण य था कक िे ाँसह्याहद्र के लशखर पर तीखी नोक िािा भािा िकर खडा मरिी द्ग्ररिक्षक आगे ेकदम बढािनेिी ेककसी भी विदेशी आक्राितां को यमिोक प ुाँचा देनेके लिए सन्नद्ध था। इसलिए जब तक म ाराष्ट्र गृ ृकि ों के जिंजिा से मुक्त और एक सुसगिंहित शक्क्त बनकर खडा था, तब तक यूरोपीय, एलशयायी, मुसिमान अथिा खिस्ती दुश्मन उसका बाि भी बाकााँ न िींकर सका था। ह दिंुस्ुथान की इकिौती प्रभुसत्ता के रूप में म ाराष्ट्र की प चान लमटाने ेतथा उसपर अधधकार जतानेका सा स उनमें से ककसी में भी न िींथा।

राष्ट्र के नाते ेयहद दोनों की तुिना करनी ो, तो क्जन राष्ट्रीय सद् गुणों के कारण िोग राष्ट्रीय ह तों- आकाक्षिंाओंकी रक्षा और पूयत सके लिए अपनेयनजी िाभ िे म त्त्िाकािंक्षाओं को तुच्छ मानकर उनकी बलि दे देते े ैं और अन्न के एक कौर के लिए अपनेराष्ट्र का स्िातित्र्य धगरिी रखने ेया अपनेजातीय िे राजनीयतक ह तों को चोट प ुाँचाकर राष्ट्रद्रो करने की मात्र कल्पना भी क्जन् ें स्िाभाविक रूप से यतरस्कारपूण िगती ै, ऐसेराष्ट्रीय सद् गुणों से अग्रिंेज उस समय भी मरािों से अधधक सपिंन्न थे, इसमें शिंका न ीिं। िेककन य सच था तब भी तिमसान पररक्स्थयत के पररप्रेक्ष्य में अतीत की कल्पना करने की जो भूि की जाती ै, िे न ोनेदेनेकी सािधानी में अिश्य बरतनी चाह ए। कोई घटना घहटत ो जानेके बाद उस समय क्या ककया जाना चाह ए था, इस बारे में और दोनों पक्षों के बारे में जानकारी प्राप्त ोनेया कल्पना करना तकसतः सिंभि ोता ै, िेककन दोनों पक्षों का आकिन करते ेसमय उनके सैयनक, राजनीयतक या शासकीय बि पर यहद दृक्ष्टपात ककया जाए तो इन दोनों प्रयतद्िंद्िी राजसत्ताओंमें से सफिता का से रा अिंत में ककसके लसर बिंधेगा, इसकी यनक्श्चत भविष्ट्यिाणी करने के लिए ककसी अतिंज्ञानसी की ी आिश्यकता पडी ोती। ककसी भी राजनेता के लिए इसका सटीक अनुमान िगाना असिंभि था। शास्त्रीय अथिा सविंधानात्मक विषयों में उस समय अग्रिंेजों की क्जतनी क्षमता थी, उससे मरािों को खुद को कम आकाँने की कोई आिश्यकता न िींथी। उनका कतृत्ि भी कुछ कम न िीं था और ह दिंुस्ुथान की प्रभुसत्ता पाने की जो राजनीयतक ोड चि र ी थी, उससेउन् ें मेशा के लिए पीछे टनेको भी आिश्यकता न ी िीं थी।

अग्रिंेजों के सामने कई कहिनाइया ाँथी।िं अपनी मातृभूलम से और ज ा ाँसे उनकी सारी गयतविधधया ाँ यनयिंत्रत ोती थीं, िे ाँसे जारों मीि की दूरी पर उन् ें सघिंष सकिा पड र ा था। ह दिंुस्ुथान की भौगोलिक क्स्थयत से भी िे अनजान थे। िैसेमरािों औ जापायनयों में काफी समानता थी। जापान एक छोटा सा देश ोकर भी मरािों के बाद करीब एक शताब्दी बीतने पर एक सुदृढ तथा सुसपिंन्न देश के नाते ेपूरी दुयनया में अपने प चान बना सका। यूरोपीय प्रयतद्िंद्वियों के और उसके बीच िैज्ञायनक एिं िसैंधायनक प्रगयत और अनुभि की जा शताब्दी की जरूरत पडी। मरािे भी मे ेनती और धुन के पक्के थे। अन्य सभी बातें अगर अनुकूि र ती,िं तो मरािे भी अल्पािधध में सबकुछ कर सकते ेथे। िैसे भी मरािों ने मु िा, ईरानी, अफगानी, पुतगसािी, फ्ासीसी और अग्रिंेजी दुश्मनों की दुगयसत करके ह दिंुस्ुथान की प्रभुसत्ता का सिश्रेसष्ट् स्थान प्राप्त कर लिया था। क्जस कािखडिं का विचार म कर र े ैं, उस समय तक मरािों को लमिी ुई ख्यायत से उन् ें िधिंचत करने में अग्रिंेजे समथ सन िीं ुए थे।

अग्रिंज भी अपनी असमथतसा सेपररधचत थे। इसलिए उधचत अिसर की प्रतीक्षा कर र े थे। मरािों की गृ ृकि जब तक चरम सीमा तक न िींप ुँची और जब तक िे एकजुट खडे ेथे, तब तक उनका खुिेआम सामना करने का सा स अग्रिंज न िीं जुटा पाए। और मरािा-मडिंकि टुकडे ोनेतथा उनमें आपसी सघिंष सयछड जानेके बाद भी यश प्राक्प्त की अल्पसभिं आशा रख उनसे िडने तथा इस तर स्ियिं िको उनके क्रोध का लशकार बनने देनेका धैय सअग्रिंजों के िािा और ककसी में न िींथा। मद्रास और बगिंाि प्राितिं िूटने के बाद अग्रिंजों को य देखकर कक मरािे यादिी सघिंष सेपूरी तर यघर गए ैं, उन् ें मुबिंई की तरफ से टो का देनेके लिए उद्यत ो गए। राघोबा की मदिंबुद्धध में भी य बात आ गई और अपनेदेशबधिंुओ िंद्िारा दुतुकारे जाने, पररत्यक्त कर देनेतथा पराक्जत कर देनेके बाद उसनेअग्रिंजों की मदद िेनेका यनश्चय ककया। जनता की इच्छा के विरुद्ध म ाराष्ट्र पर राज्याधधकार चिाने की म त्त्िाकाक्षिं ा से पगिा गया य देशघाती ककसी भी सीमा तक जानेके लिए तैयार था। उसनेअपनेदेश के सबसे बुरे शत्रु ुको राष्ट्र की स्ितिंत्रता बेचनेका िचन हदया और अपनेगोत्रघातक ाथों से मरािों के अभेद्य ककिेमें पडे सुराख से उन् ें भीतर प्रिेश हदिा हदया। अग्रिंजों ने भी अपनेबधिंुओ िंसे गद्दारी करनिािे राघोबा का ाथ बडी खुशी से थाम लिया और साष्ट्टी, िसई एिं भडौच का बीस-पच्चीस िाख रुपए िावषकस आयिािा प्रदेश अग्रिंजों को सौंपने के बदिे ेमें राघोबा को मरािी राज्य का पेशिा पद हदिानेका िादा ककया। उसे ेसाथ िेकर अग्रिंजों ने तुरिंत मरािी राज्य पर धािा बोि हदया। अग्रिंजों और मरािों के बीच युद्ध यछडतेी समूचे ह दिंुसुथान के असतिंुष्ट्ट राजाओंको मरािों से विद्रो करने के लिए प्रोत्सा न लमि गया।

इतनी अिधध में ी बार भाइयों के राज्य का सूत्र-सचिंािन नाना फणनिीस करने िगेथे। प्रयतकूि मा िौ में भी िे क्स्थरधचत्त ोकर डटे र े। िैसेभी, पुणे की य राजसत्ता निोहदत ी थी। उसके चिते ेराज्य में र तरफ बबखराि ी था। कफर भी नाना ने ररपतिं फडके की अगुआई में, यथासभिं सेना इकट्िा कर कनिस कोहटगिं की अग्रिंजी सेना को रोकने के लिए उसे ेभेज हदया। ररपतिं तथा उनकी सेना ने भी य क्जम्मेदारी बखूबी यनभाई। नापार और अन्य स्थिों में उन् ोंनेशत्रुपक्ष को काफी ायन प ुँचाई। ायन के बािजूद कनिस कोहटगिं ने ह म्मत न िींारी थी। उसी समय यानी शा.सिं. १६९९ (सन् ्१७७७) में भारत क्स्थत अग्रिंजे सरकार के

सविंधान में एक म त्त्िपूण सपररितनस ुआ। उसके अनुसार, भारत में अग्रिंज प्रशासक के रूप में किकत्ता के गिनरस को अधधकार प्राप्त ुआ और अपनेअधधकार का इस्तेमाि करते े ुए उसनेमुबिंई के गिनरस और मरािों के बीच चि र े युद्ध को समाप्त ककया। उसनेमरािों सेसधिंध के लिए अपना प्रयतयनधध पुणे ेभेजा। इस युद्ध का िाभ उिाकर पूरे ह दिंुसुथान में क्जन् ोंनेमरािों से विद्रो करना शुरू ककया था, उसे ेरोकने के लिए नाना फणनिीस मौका ी तिाश र े थे। उन् ोंनेसधिंध पर स्ताक्षर ककए। इस सधिंध के अनुसार, अग्रिंजों ने राघोबा को मरािों के अधीन करने का और मरािों ने उन् ें साष्ट्टी तथा भडौच देनेका करार ककया।

इस तर अग्रिंजों से यनपटने ेके बाद फणनिीस ने राज्य के अतिंगतस चि र े विद्रो का शमन करने के काम पर म ादजी लसधिंधया को यनयुक्त ककया। उधर ैदर ने भी म ाराष्ट्र में प्रिेश करके जो उपद्रि मचाया था, उसका दमन करने का क्जम्मा पटिधनस और फडके को सौंपा गया।

ेकिकन अग्रिेजों ने मरािों को धोखा हदया। मरािा सेनापयतयों को अपनी-अपनी मुह म पर गया देखकर िे सधििंध के अनुसार राघोबा को मरािों के सुपुदस करने के िादे से मुकर गए। मरािों की सेना पुणे िौटकर नाना की स ायता करती - इससे प िे ी अग्रिेजों ने कफर युद्ध छेड हदया। मरािों पर धाक जमाने के उद्देश्य से कनिस इिंगटसन के नेतृत्ृ में सीधे पुणे पर मिा करने की सा सी योजना उन् ोंनेशा.स.िं १७०१ (सन् १७७९) में बनाई। िैसे भी, पुरिंदर में ुई सधििंध से मरािे खुश न िींथे। आतिंररक शत्रुओिं पर म ादजी ने अपनेपराक्रम से काबू पा लिया था। अतः मरािों का मनोबि बढा ुआ था। इसलिए अग्रिेजों को जो करना ै, कर िें। म डरनेिािे न िीं- ऐसा यनश्चय करके िे अग्रिेजों का सामना करनेके लिए तैयार ो गए। उन् ोंनेअपनी परिंपरागत छापामार युद्ध-शैिी (गायनमी कािा) का अिििंबिंन कर मुिंबई से अग्रिेजों का सिंपकस तोडने के मकसद से उन् ें आगे आने के लिए वििश ककया। मिा करनेिािे अग्रिेजों का खुिेआम सामना न करने की, िेककन उनके इदसधगदस ी मडराँने की रणनीयत बनाकर लभिरान पानसे अपनेसेनापथक के साथ डटे र े।

इस तर अग्रिेजों का मुकाबिा आमने-सामनेन कर मरािों ने ऐसी िात बना दी कक अपनी मजी से उनसे युद्ध करना या टािना अग्रिेज सेनापयत के बस में न ी ि ा। अगर सकाँ री जग में अग्रिेजों को घेरकर मरािे उनसे युद्ध करना चा ते, तो अग्रिेज उसे टाि भी न िींसकते थेअथिा अपनी इच्छा से मरािों को युद्ध करने के लिए वििश भी न िींकर सकतेथे। रसद और युद्ध-सामग्री िूट िेतेया नष्ट कर देते। अिंततः जब अग्रिेज सेनापयत पिंतसीय घाटी चढकर लशखर तक प ुँचा, तब उसनेमुिंबई से अपना सिंपकस पूरी तर से टूटा ुआ पाया। कफर भी उसनेह म्मत न िींारी और िे आगे बढता गया।

मरािों की ह म्मत तो उससे दुगुनी थी। शत्रु को समीप आते देखकर उनका यनश्चय और भी दृढ ोता गया। िडने के जोश से उनकी भुजाए ाँफडकने िगी।िं उन् ोंने य भी सोच रखा था कक बुरा िक्त आनेपर तेजगााँि से िेकर पुणे तक का पूरा प्रािंत यनजनस कर हदया जाए और अपनी वप्रय पुणे नगरी शत्रु के अधीन करने की बजाय खुद ी अक्ग्न के िोकर दी जाए। पूरे राष्ट्र का य दृढसिंकल्प देखकर अग्रिेजों की सेना सकपका गई। खिंडािा में कनिस केि मरािी सेना के ाथों मारा गया और खडकी में अग्रिेजों को अपनेदूसरे म त्त्पूण ससेनाधधकारी से ाथ [illegible] जों की अधधकाधधक ायन

अनुशासनबद्धता की बदौित उन् ोंनेअपना मिा जारी रखते ुए तिेगााँि में प्रिेश ककया। ि ााँप ुँचते ी उन् ें म ादजी लसिंधधया और ररपिंत फडके के नेतृत्ृ में िडनेके लिए तैयार मरािी सेना हदखाई दी। अग्रिेजी सेना तुरिंत उसपर टूट पडी, िेकेकन मरािी सेना अचानक ी थोडी पीछे ट गई, विलभन्न टुकडडयों में उसे बाटाँ हदया गया। इन टुकडडयों ने विलभन्न हदशाओिं में फैिकर सुरक्षक्षत अिंतर से अग्रिेजों पर धािा बोिना शुरू कर हदया। इससे अग्रिेजी सेना बौखिा गई। एक और मुसीबत उन् ें झेिनी पडी, क्योंकक आस-पास के मीिों तक के क्षेत्र में उन् ें अपनेलिए खाद्य सामग्री तथा अश्िों के लिए चारा पाना दूभर ो गया। उन् ें य भी ज्ञात ुआ कक आगे और भी यनजनस प्रदेश से गुजरना पडेगा और क्स्थयत और भी बदतर ोनेिािी ै। कफर भी क्जद्दी अग्रिेज आगे बढते े ी गए।

इसी बीच मरिरी सेना ने उन् ें सब तरफ से घेर लिया था और पररक्स्थयत आई तो शत्रु के अधीन ोने से पिू स ी अपनी राजधानी जिा देनेके अपनेफैसिेकी खबर उन् ोंनेअग्रेंजों तक प ुँचाई। अब तक के अनुभिों से अग्रेंज सेनापयत को इस तथ्य की अनुभूयत ो गई थी कक पुणे पर मिा कर उस पर कब्जा करना प्ासिी पर कब्जा करने की तर आसान न िीं ै। इस विकट क्स्थयत से यनकिनेका एक ी रास्ता था-मुबिंई िापस िौट जाना ! पर खिुेआम िापस िौटना भी असभिं था। अतः अग्रेंज सेनापयत ने मरिरी सेना को अधेंरे में रखकर िौटने ेका विचार ककया और शत्रु को पता न िगने देते े ुए यनकि पडनेका आदेश अपनी सेना को हदया। पर मरिों को चकमा देकर यनकिना आसान न िींथा। जैसे े ी अग्रेंज िापस िौटनेके लिए बा र यनकिे, े मरिों की बबखरी टुकडडयों ने एकजुट ोकर उनपर मिा कर हदया। मेशा की तर अग्रेंज डटकर िडे, िेककन अतिंतः पराक्जत ुए और उनके नौ जार सैयनक मरिों के अधीन ो गए।

नाना फणनिीस, सखाराम बापू और म ादजी लसधिंधया ने अग्रेंजों की सेना की मुक्क्त के लिए राघोबा को अपनेसुपुदस करने की और पुरिंदर की सधिंध से प्राप्त ककया ुआ प्रदेश िापस िौटाने की शत सरखी। इसके अिािा सपिंन्न ुए करार पूरे ोनेतक उन् ोंनेदो अग्रेंज अधधकारययों को अपनी ह रासत में रखा। पूरा एक म ीना विजयी मरिों के बधिंक र ने के बाद अपनी सेना मुबिंई िापस िेजानेके लिए अग्रेंज सेनापयत को मजबूरी में मरिों की शत ेंमाननी पडी।िं इस विजय प्राक्प्त की िात्तासे पूरा म ाराष्ट्र षोल्ासि से झूम उिा। मेशा तने र िनेिी यूयनयन जैक (अग्रेंजों के ध्िज) को मरिों के भगिा ध्िज और जरीपटका के आगे ेनतमस्तक ोना पडा। आपसी कि जारी र ते े ुए और उस कारण देश तथा िोगों में बटाँ जानेके बाद भी राष्ट्र सकिंट का सामना करने को तैयार ो गया और बार भाई की सेना ने इस दुसुसा सी तथा क्जद्दी शत्रु पर विजय प्राप्त कर िी। क्जस शत्रु ने अब तक मरिरी राज्य की श्ेरेष्ट्िता ह दिंुसु्थान में कबिू न िीं की थी और न ी खिुेआम उनसे ेयुद्ध ककया था, ऐसे े अग्रेंजों को भी चुनौती देने का दुसुसा स करते े ी मरिों के सा स और पराक्रम के आगे झुककर उनकी श्ेरेष्ट्िता स्िीकार करनी पडी। उस समय के पत्र-व्यि ारों से य स्पष्ट्ट ोता ै कक ऐसा सबक आज तक अग्रेंजों को ककसी ने न िींलसखाया था। उनका इतना अपमान और ककसी नेन िींककया था। जनमत की इस राज्य-क्रायिंत के केंद्र उस बिा पेशिा पर ि िट्ठू था। अग्रेंजों पर ालसि की गई अतुिनीय विजय का पूरा श्ेरेय मरिरी जनता पेशिा के म ान् ्भाग्य को दे र ी थी। उनकी मान्यता थी कक उनके नन् े पेशिा का सबकुछ जन्म से ी गोकुि के ईश्िरीय अितार की तर चमत्कारी ै। उनके पुण्यफि से ी म शत्रु का दमन कर सके। और उनके रूप में साक्षात् ् परमात्मा इस धमयुसद्ध में मारी स ायता कर र ा ै तथा अपना आशीष दे र ा ै।

अगे्रिंजों को नािया

'प्रतापमहहमा थोरजलामधि परर जलचरबुडववला,

नवी मोहहम दरसाल देऊनी शाह हटपू तुडववला।'

(-मरािों का ऐसा प्रताप था कक उन् ोंनेजिचर को जि में ी डुबो हदया। र िष सनया सैयैनक अलभयान ाथ में िेकर शा टीपू को धिू में लमिा हदया।)

अग्रेिंजों की बडी सेना के शरणागत ोनेकी खबर लमिते ी किकत्ता के अग्रेिंजी शासक आगबबूिा ो उिे और सत्य-असत्य का अतिंर करनेका वििेके ी खो बिैे। मरािों ने ाथ में आई अग्रेिंजी सेना को, सधिंध के अनुसार मुबिंई जानेकी अनुमयत जैसे ी दी, अग्रेिंजों ने अपनेसेनापयत के स्ताक्षर िािी उस सधिंध को मानने से इनकार कर हदया और िे और ज्यादा िीरता से सघिंष सकरने िगे।

इसी समय राघोबा अग्रेिंजी सेना सेआ लमिा। मरािों की उदार नीयत के कारण राघोबा जैसा देशद्रो ी बचता र ा। जब-जब िे मरािों के कब्जे में र ा, िे उसेएक राजकुमार की तर सम्मान देते ेर े। दूसूरे देश में उसके जैसा दगाबाज और देशद्रो ी तुरिंत ी गोिी का यनशाना बनता। मरािों की उदारता का उपकार मानकर अपना आचरण सुधारने की बजाय उसनेअिसर लमिते े ी अपनी नीचता का पररचय देकर अग्रेिंजों से ाथ लमिाया। िडाई कफर यछड गई। अग्रेिंज सेनापयत गॉडड सगुजरात से यनकिकर िसई की ओर चि पडा। उसका मुकाबिा करने के लिए रामचिंद्र गणेश को यनयुक्त ककया गया। ज ा–ाँज ा ाँऔर जब-जब सभिंि ुआ, उन् ोंने शत्रु ुपर जबरदस्त मिे ककए और अग्रेिंजों की बढत दृढता से रोक दी। आखखरी चढाई में तो उन् ोंनेऐसा अतुिनीय शौय सप्रदलशतस ककया कक शत्रु भी उनकी प्रशसिंा ककए बबना न र ि सका। दुभाग्सय से जब युद्ध अपनेचरम पर प ुाँच गया था, तब मरािों का य कुशि और पराक्रमी सेनानी शत्रु पक्ष की तरफ से आनेिािी गोिी का लशकार बन गया और सन् ्१७८० में गॉडड सने िसई को अपनेकब्जे ेमें िे लिया।

इस विजय से अग्रेिंजी सेना का उत्सा इतना बढा कक िे बडगािाँ में मरािों की शरण में जानेसे ुई अपनी अपकीयत सका धब्बा धो डािने की सोचने िगे। और क्जस काय सको साधने ेमें प िे ेउनकी थू-थू ू ुई और उन् ें विफिता लमिी, उन् ोंनेउसी काय सको यानी मरािों की राजधानी को स्तगत करने की िान िी। नाना फणनीस

और उनके साधथयों को शरण में आनेपर मजबूर करने के लिए अग्रिंजी सेना ने पुणे ेपर धािा बोिा हदया। िेककन उन धुरिंधर म ाराष्ट्रीय राजनीयतज्ञों ने अपनी अद्वितीय बुद्धधमानी से इस मौके के लिए अयत सूक्ष्म, मगर प्राणघातक जाि बुन रखा था। इस प्रबधिं के अनुसार ह दिंुस्ुथान की पूरी अग्रिंजी सत्ता को व्यस्त रखने ेकी चाि उन् ोंनेचिी। ैदर को अपने पक्ष में करके मद्रास पर मिा करने का िचन उन् ोंनेउससे िे रखा था।

भोंसिे ेबगिंाि पर धािा बोिनेिािे थेऔर मुबिंई की अग्रिंजी सत्ता को उखाड फेंकनेका क्जम्मा नाना फणनीस ने स्ियिं िंपर िे लिया था। इस व्यू रचना को अिंजाम देनेके लिए ैदर मद्रास की तरफ गया और फ्ािंसीलसयों की मदद से उसने ि ााँअग्रिंजों को पराक्जत ककया। पुणे ेकी रक्षा का क्जम्मा परशुराम भाऊ पर डािा गया। िे अपने साथ बार जार की सेना िेकेर पुणे ेपर आक्रमण करने आ र ी सेना के आस-पास मडाँराने िगे तथा उनके पीछे और दाए–ाँबाए ााँसेमिे कर उन् ोंनेउसे ेत्रस्त करके रख हदया।

नाना, तुकोजी िोकर और ररपतिं फडके िगभग तीस जार सैयनकों के साथ स्ियिं युद्ध के लिए तैयार ो गए। गॉडड सजैसे-ेजैसे ेआगे ेबढता गया, िैसे-ैसेउसने खुद को कनिस इिंगिटसन की तर सकिंट में फाँसा ुआ पाया। िास्ति में अब और एक कदम भी आगे ेबढना इिंगिटसन के समान 'आ बिै मुझे मार' जैसी क्स्थयत पैदा करना था। िेककन िे इस कदर आगे ेबढ चुका था कक अब पीछे मुडना उसके लिए अपमानजनक और अनथकसारी ो सकता था। अत: िे ी िंडटे र ने में ी बुद्धधमानी सोचकर उसनेसेना की मजबूती की तरफ ध्यान देना शुरू ककया। िेककन य काय सभी िे ककतने हदन करता ? मरािों नेगॉडड सको रसद और युद्ध-सामग्री प ुाँचाने िािी कैप्टन मैके और कनिस ब्राउन की टुकडडयों पर सख्त मिे कर उन् ें इतना कमजोर कर हदया कक मुबिंई से कोई भी सबिंधिं रखना ब ुत कहिन और आत्मघाती ो गया। आखखरकार, जनरि गॉडड सको भी ताश ोकर पुणे ेपर मिा करने की योजना अधूरी छोडकर िापस िौटनेकी तैयारी करनेके लिए वििश ोना पडा।

इस तर गरदन झुकाकर चुपुचाप अग्रिंजी सेना के िापस िौटना शुरू करते े ो तुकोजी िोकर और परशुराम भाऊ के नेतृत्ि िािी मरािी सेना ने ाथ में आया लशकार चारों हदशाओ िंसे घेर लिया और िीरता तथा अभेद्य सैयनक अनुशासन के लिए प्रलसद्ध अग्रिंजों को ऐसी मार िगाई कक उसके सेनोपयत को अपनी जान बचाकर भागना पडा। इन म ानुभाि ने विजयी िीर के नाते ेमरािों की राजधानी से ससम्मान प्रिेश करने की उद्धत म त्िकािंक्षा पाि रखी थी। िेककन उसे ेअपनेसैकडों सैयनकों को मृत या घायि अिस्था में छोडकर, उनकी िाशों के सिंकेतों से अपनेपिायन का माग सधचक्ह्नत करते े ुए तथा अपना सब गोिा-बारूद, अस्त्र-शस्त्र, परमडिंप, छाियनया,ाँ तोप के गोिे इत्याहद सभी सामान और मिा ढोनेिािे जारों बिै छोडकर या मरािों के ाथों सुपुदस कर भागना पडा। इस तर पुणे ेपर आक्रमण करने की प्रतीक्षा कर अग्रिंजों ने दो बार आगे ेबढने की धृष्ट्टता की, पर दोनों ी बार मार खाकर तथा लसर झुकाकर अपमान के घूटाँ पीते ुए उन् ें मुबिंई िापस िौटना पडा। बडेघमडिं और आत्मविश्िास के साथ आक्रमण करने के बाद शायद ी ककसी को इस तर िक्ज्जत ोकर उिटे पािाँ िौटना पडा ोगा।

उत्तर हदशा में भी अग्रेंजे बे तर ढिंग से मुक्त न ी िंपा सके। गो द का राणा, जो मरािों के खखिाफ ोकर अग्रेंजों के पक्ष में आया था, की मदद से उन् ें कुछ यछटपुट विजय प्राप्त ुई और लशदिें घरानेका ग्िालियर दुगु स ाथ आया। कनिस कैमॅक के नेतृत्ि िािी अग्रेंजी सेना को इसके लिािा और कोई िाभ न ीिं ुआ। म ादजी लसधिंधया की अनिरत मार से त्रस्त अपने इस लमत्र की स ायता के लिए कनिस मूर भी दौडा, िेककन अपने लमत्र की क्स्थयत अधधक मजबूत करना उसके लिए सभिंि न ीिं ुआ।

इस तर दक्षक्षण में ैदर, मुबिंई की हदशा में तुकोजी ोकर तथा पटिधनस और उत्तर में म ादजी लसधिंधया द्िारा अग्रेंजों की योजनाए ाँधूि में लमिा हदए जाने के बाद अग्रेंजों ने अपनेइदसधगदस नाना फणनीस की बनाई िीर सरदारों की श्रृखिंिा तोडनेकी कोलशशेंशुरू कीिं। अपनेसाथ सधिंध के लिए नाना को राजी करने की विनती उन् ोंनेम ादजी से की; िेककन नाना ने सधिंध की बात छेडनेंी न ीिंदी और ैदर से मशविरा ककए बगैर सधिंध के विषय में बातचीत करनेसे इनकार कर हदया। मरािों की समुद्र सेनिााह नी ने भी अपना कतव्सय बखूबी यनभाया। उनके सुयोग्य सेनापयत आनिंदराि धुिप ने अग्रेंजों पर एक सा सी मिा कर उल्िेखनीय विजय प्राप्त की और पुरस्कार के रूप में उनकी रेंजर नामक विशाि युद्धनौका को अपने कब्जे ेमें कर लिया। उसी समय अग्रेंजों की सधिंध करने की कोलशशों के बीच ी ैदर का यनधन ो गया। शा.स.िं १७०० (सन् ्१७७८) में नाना ने सधिंध की अनुमयत दी। सधिंध के अनुसार, अग्रेंजों को सारे फसाद की जड राघोबा को मरािों को सौंपनेके लिए राजी ोना पडा। युद्ध में उन् ोंनेजीता ुआ सारा प्रदेश, सािे साष्टी के लािा, मरािों को उन् ें िापस करना पडा और एलशया की क्जस ककसी सत्ता के साथ मरािों की दुश्मनी थी या क्जसके साथ उनका युद्ध चि र ा था, उसे ेककसी भी प्रकार की स ायता यािंप्रोत्सा न न देनेका करार करना पडा। इसके बदिे ेमें मरािों ने भी अग्रेंजों के ह तों के विपरीत ककसी भी यूरोपीय सत्ता के साथ राजनीयतक सबिंधिं न ीिंरखने ेका िचन हदया। इस सधिंध की सबसे बडी विशेषता य थी कक अग्रेंजों को हदल्िी की राजनीयत में दखिदिंाजी न ीिंकरने का िचन देना पडा और ि ाँकी प्रभुसत्ता में अपनी मरजी से फेरबदि करने का तथा उसपर यनयत्रिंण रखने ेका मरािों का अधधकार स्िीकार करना पडा।

इस प्रकार अग्रेंज और मरािों के बीच का प िा युद्ध समाप्त ुआ। इस तर क्जस पक्श्चमी राजसत्ता की शुरुआत में मरािों से खुिेआम मुकाबिा करने की ह म्मत न ीिं ो र ी थी और बाद में घमडिं के साथ जो मरािों पर मिे तो करते े र े, िेककन साथ-साथ विफि भी ोते े र े, ऐसी अग्रेंजी सत्ता का गि-स रण कर और उन् ें पराक्जत कर मरािों ने ह दिंुस्थान की सिश्रे्ेसष्ि् राज्यसत्ता ोना रणभूलम पर चररताथ सकर हदखाया। अपनेढीिेिैये से अग्रेंजों ने अकासट तथा बगिंाि के दुबिुस निाबों पर धाक जमाकर ि ा ाँअपना राज्य-विस्तार ककया और अपनी सामथ्य सकाफी बढा िी। ऐसेमें मरािों को भी उन निाबों की तर दुबिुस समझकर िे सह्याहद्र के किंगूरों के लशखरों का अपमान करने के लिए चिे ेआए थे। तब उनके लसर फोडकर मरािों ने अग्रेंजों को नया सबक लसखा हदया।

को देश के ह तों का
सििााई के इस सधिंधपत्र पर उभय पक्षों के स्ताक्षर ोते े ी मरिाों के उस किकििं
नाश कर उन् े अपनी जायत के अधमतम शत्रु ुके ाथों बेच देनेका िज्जास्पद आयुष्यक्रम भी खत्म करना पडा।
क्जस म ान् ्काय सके लिए म ाराष्ट्र की अनेक पीहढयों नेपररश्रम ककए और मृतूयु का िरण ककया, ि काय सपूण स
करने के स्फूयतदसायक उपक्रम से मरिाा-मर्डि की शक्क्त की धारा मोडकर उसे ेगृ ृयुद्ध के विषैजो ड में या
अनुपयोगी प्रिा में लमिा देनेके लिए य व्यक्क्त अपनी नीच म त्त्िाकाक्षिंा के चिते ेकारणीभूत ुआ था।
पानीपत की िडाई क्जतनी बडी राष्ट्रीय आपवत्त थी, उतनी ी बडी राष्ट्रीय आपवत्त उसकी पत्नी आनर्दीबाई थी।
मरिाा जायत के सुर्दै से सििाई की सधिंध के बाद राघोबा के पापी जीिन का अिंत ुआ; िेककन अभी मरिाा जायत
के दुहुदसन खत्म न िीं ुए थे, क्योंकक अपनेयनधन से पूि सराघोबा ने मरिाों की अपने ककए से भी ज्यादा उनकी
दुदुसशा करनेिाा अपना िििंज उनकी झोिी में डिा हदया। दुभुाग्सय से जगप्रलसद्ध प ेिबाजीरि के नाम पर ी
उसका नामकरण ुआ। उसके वपता को अपयश िेकर जो राक्षसी काय सअधूरा छोड देना पडा, उसे ेपूरा करना और
म ाराष्ट्र का स्िातिंत्र्य मुट्िी भर अनाज के लिए बेचकर तथा उस श्रेष्ट् अिंयतम ह दिंू ूसाम्राज्य को त स-न स कर,
अपनेमा–ँबाप को जो करना सिंभि न िीं ुआ, उसे ेसिंभि करने का कुकृत्य उसी के भाग्य में लिखा था।

िेककन कफि ाि कम-से-कम नाना और म ादजी की जोडी के जीवित र ते ेतक तो ऐसा ोना सिंभि ी िीं
था।

जनता का िािडा-पेशिा सिाई माधिरि

दैन्य हदवसआजजसरले।

'

सवाई मािवराव प्रतापी कशलयुधग अवतरले।
सुदिंर रूप रामाचे कुणावर नाहह िरागेभरणे।
कलधगतुरा शशरपेच पाचुची पडत होतत ककरणे
महोत्सव घरोघर लागले लोक करायाला।
परशराम प्रत्यि आलेजणु छत्र िरायाला ॥'

(- इस कलियुग में शूर माधिरि अितररत ुए, तो मारी दीनता के हदन समाप्त ो गए। उनका रूप रामजी के समान सुदिंर था और ि ककसी पर भी क्रोध न िींकरतेथे। उन् ोंनेपन्ना जडडत जो साफा प न रखा था, उसकी ककरणों की ज्योयत से उनका मुखमडिं िआिोककत ो र ा था। प्रत्येक घर में उत्सि मनाया जा र ा था, मानो छत्र धारण करने स्िय िंपरशुराम आए थे।)

नाना ना एि िंम ादजी ने अपने राजनीयत-ज्ञान और िीिार के पराक्रम से अपनेविशाि किंधों पर ह दिंू साम्राज्य का भार ढोने का यनश्चय कर लिया था। इस साम्राज्य को जीतने के ेतु से इंग्िैंड, फ्ांसि, ॉिैंड और पुतगसाि ने क्जन राजनीयतज्ञ और रणनीयतकुशि सेनापयतयों को ह दिंुस्थान भेजा था, उनमें से ेक्स्टंग्ज, िेिेज़िी और कानिसालिस में से एक को भी इस जोडी का विरोध करनेया उसे मात देनेमें विशेष सफिता न ी िंलमिी। नाना और म ादजी ने ह दिंू साम्राज्य की उन्नयत का स्िखडिं देखा था। ये दोनों ी प्रतापी नाना सा ब और सदालशिरि भाऊ की अपने साम्राज्य के बारे में बनी धारणा तथा उनकी परिंपरा में पिे-बढे और उस म ान् काय स के उद्देश्य तथा उसकी परिंपरा का प्रलशक्षण प्राप्त कर यनष्णात ुए थे। पानीपत का सग्रिाम ि दोनों अपनी आखोँ से देख चुके थेऔर उसमें दोनों बच गए थे। उन् ोंनेउस रक्तरिंक्जत रणभूलम पर मृत ोकर पडीरों की पीढी का अधूरा काय सपिंन्न करने, उन् ें अतिंकसि से विभाक्जत, विनाश के कगार पर खडा मरािी राज्य लमिा था, क्जसके लस िंासन पर एक नामधारी गुड्डा विराजमान था, क्जसकी पेशिाई का क्जम्मा एक गभस्सथ लशशु पर डािा गया था और क्जसके नाश के लिए शत्रु के रूप में एक िािान् यूरोपीय राष्ट्र तैयार खडा था। िेककन उन् ोंनेअद्वितीय धैयै स और दूरूदृक्ष्ट से इस विषम पररक्स्थयत का सामना ककया; राज्य में चि र े झगडेतथा विद्रो समाप्त ककए और

अपनेसमथ सबा ुबि एिं अचूक दृक्ष्ट से, एलशया के र े ों या यूरोप के, अपने सभी शत्रुओं को पराक्जत कर उन् ें अपमान के घुरों पीने के लिए वििश कर हदया।

जनता की क्रायिंत की अयनक्श्चत और मौजी प्रिृवत्त जाग्रत् ्करने तथा अपने काबू में रखने ेका अत्यतिं कहिन भार उन् ोंनेअपनेऊपर लिया था। अब अपनेसभी शत्रुओंको परास्त कर क्रायिंत सफि ुई थी और राष्ट्रीय अलभमत की सुदृढ िनिंं पर खडी की गई नई राजसत्ता ने िडाई के मैदान में अपना अजेय ोना लसद्ध कर हदखाया था। अतः इन म ान् ्उपिक्ब्धयों को दरशाने और सबकी आखों चौंधयानििाा उत्सि मनाना स्िाभाविक और राजनीयतक दृक्ष्ट सेआिश्यक भी था। उसी समय सिाई माधिरिा के िििा की योजना के ब ानेय उत्सि मनाने का सुअिसर प्राप्त ुआ। पेशिा के रूप में सिाई माधिरिा का चयन सारी जनता ने ककया था। राष्ट्र ने उनके लिए िडाइया ाँिडी थी।िं ऐसेलोकवप्रय नेता की त्या के लिए विषप्रयोग, त्यारे भेजेना आहद जघन्य कृत्य शत्रुपक्ष कर चुका था। सौभाग्य से सभी विपदाओंसे िसुरक्षक्षत यनकि आए थे। प्रजाजन अनोखी घटनाओंसे भरपूर उनके जीिन की तुिना भगिान् ्श्रीकृष्ण के जीिन से करते ेथे। ककशोरािस्था में अपनेद्िारे पेशिा का प्रिेश देखने ेके लिए सारी जनता उत्सुक थी। िििा के इस आनदिोत्सि में सक्म्मलित ोनेके लिए पास की, दूरू की सारी मराी जनता पुणे में एकत्र ुई। राजपुत्र, मनसबदार, प्रयतभाशािी कवि, प्रलसद्ध िेखेक, हदग्गज सेनानी, उद् गीर तथा अटक की रणभूलम देख चुके और ि ाँजूझे यनष्णात योद्धा, राजनीयतज्ञ और कूटनययक- सभी य समारो मनाने तथा अपनेवप्रय और प्रतापी पेशिा के दशनस के लिए पुणे में जमा ुए। अपनेविशािी ह दिंू ूसाम्राज्य के सगिंहित घटकों की एकता सारी दुयनया के हदिोहदमाग पर अकिंकत करने और क्जन शत्रुओ िंतथा विदेलशयों के मन में िडू फूट र े थेकक मराा-मडिं टुकडे-टुकडे ोकर अब बबखरने े ी िाा ै, इस अतिंकसि से बच पाना अब उसके लिए सभिंि न ीं ै, उन सभी का भ्रम तोडनेके लिए नाना ने अपने पेशिा के िििा के मगिं- प्रसगिं में म ाराष्ट्र के छत्रपयत को आमबिंत्रत ककया। उनके पुणे ेप ुाँचते ी बिंदूक-बार और सम्मान के साथ उनका स्िागत ककया गया।

उस विशाि राजसभा का केंद्रस्थान छत्रपयत सुशोलभत कर र े थे। उनके आस- पास अपने-अपनेदरजेके अनुसार अपनेस्थानों पर अष्टप्रधान, सेनापयत, प्रायतिंधधपयत राजनयज्ञ, राजकुमार और क्जनके अधधकार क्षेत्र में दूसूरे खडिं के देशों सेभी बडे-बडेप्रायतं थे, ऐसेशासक विद्यमान थे। ि ाँपटिधनस थे, रास्ते और फडके भी थे। ि ा ाँ ोल्कर, लशदिें, पिार, गायकिाड और भोंसिे ेउपक्स्थत थे। ररद्िार से िेकर रामेश्िरम् ्तक के सभी विद्िान् ्ि ा ाँ पधारे। जयपुर, जोधपुर तथा उदयपुर के राजाओंको बडे आग्र से न्योता हदया गया था। उन सभी ने अपने-अपने प्रयतयनधध भेजे ेथे। यनजाम, मुगि और यूरोपीय राष्ट्रों नेअपने-अपनेराजपुत्रों तथा राजदूतों के ाथों बधाई सदिेंश और बडे-बडेउप ार भेजेथे। राजधानी सेकई मीि की दूरू ी तक रक्षा की दृक्ष्ट से अश्िों, तोपों और पैदि लसपाह यों की छाियनयााँबनाई गई थी।िं इसमें मराों की सैन्यशक्क्त का प्रदशनस करना भी एक उद्देश्य था। समुद्री सेना की ओर सेआग्रें ेऔर धुिप आए ुए थे। पेशिा की ओर से मे मानों की आिभगत करने की क्जम्मेदारी आग्रें ेको सौंपी गई थी। अपनी विस्तीण सछाया ति ेइस अनोखे जनसमुदाय को आश्रय देती मराा की

दोनों ध्िजाएँ- भगिा ध्िजि और जरीपटका, समस्त राष्ट्र को उसके अगिीकार ककए स्िधिमरसाज्य-ह दिंू-ू पदपादशा ी के म ान् ्काय सकी समृद्धिध कराती ि रा र ी थी।ि

सकिेंत ोते े ी पैदिै, अश्िारो ी और तोपखाने ेकी टुकडडयों के सैयनकों के मुख से षध्िियन मुखररत ुई और सब अपनेपेशिा का जयघोष करने िगे। राज्यसभा में पेशिा का आगमन एक हदव्य दृश्य था। उसी क्षण सबकी आखोँ चौंधधयाते ेअपने पररिार, दास-दालसयों एि िंप्रशसिंक गायकों के साथ धीमी चाि चिते े ुए सौंदयमूसयत स पेशिा ने राजसभा में प्रिेश ककया। उनके आगमन के साथ उपक्स्थत जन समू उन् ें मानिदिंना देने ेतु नम्रता से लसर झुकाकर खडा ुआ। िेकेकन समूचे ेभारत की सत्ता का सूत्र-सचिंािन क्जसके ाथों में था– ककशोर पेशिा उस उज्ज्िि सभागृ ृ के केंद्र में लस िंासनारूढ सातारा के प्रभु-मरािों के छत्रपयत के पास गया और पुष्ट्पमािाए ाँिपेटे ुए अपने ाथ जोडकर उन् ें अलभिादन ककया। ब ुत ी पुिककत करनिेािा दृश्य था ि ! ि दृश्य देखनिेािों की अनुभूयत का बखान शब्दातीत ै। म ाराष्ट्र के छत्रपयत के सामनोथ जोडकर अपना सिेक-भाि प्रकट करना राज्यसभा की परिंपरा के अनुरूप ी था। ि दृश्य देख जनता भािविह्िि ो गई, अनेक कहिन िडाइया ाँिड चुके रणबाकुरों की आखोँ सेभी अश्रुधाराए ाँब यनकिी।ि ऊपर से गभिीर हदखनिेािे ेपेशिा भी अपनेअतिंःकरण की उमगिं न ी िंरोक सके और उनकी आखोँ से भी आनदिंाश्रु ब ने िगे।

मरािा-मडिं मिें भिे ी कभी-कभार कि की ििृ्त्तयों ने लसर उिाया ो, िेकेकन उसके घटकों को अब भी यनयलमत, जाग्रत् ्और उत्तेक्जत करने िािी एकजुटता, अविभक्तता और उद्देश्यों की एकरूपता का दशनस इस भव्य प्रदशनस और उत्सि के जररए ुआ तथा नाना फणनिीस और म ाराष्ट्र के अन्य नेताओिंकी अपेक्षा के अनुरूप ी दूसूरे ह दिंी तथा यूरोपीय राजाओ िंके मन पर इसका िायिंछत राजनीयतक प्रभाि भी पडा। इसी तर मरािों के घटकों को भी म सब एक सगिंिन के समतुल्य अगिं ैं और सगिंहित ोनेके कारण ी ममें से प्रत्येक को अधधक सामथ्य,स अधधक म त्त्िऔर अधधक ऐश्िय सप्राप्त ो र ा ै, अिग-अिग र कर इसकी प्राक्प्त सभिं न ीिं ै - य प्रतीयत कराने और मरािा-मडिं किो जोडनिेािेसूत्रों को और अधधक दृढ करनेमें इस समारो का कोई कम उपयोग न ीिं ुआ।

अतिंकसि ों के कारण उत्पन्न ुई त्रुहटया ाँधीरे-धीरे कम ोनिेगी।ि उसके कारण म ाराष्ट्र कफर से प ि े जैसा समृद्धिध और सुख-शायिंत के लशखर पर प ुाँच गया। ह दिंसुथान के अन्य राज्यों की तुिना में म ाराष्ट्र और उसके शासनातिंगतस आनिेािा विस्तृत प्रदेश शासन की दृक्ष्ट्ट से सिश्रेेसष्ट्िमाना गया। राष्ट्र की आधथकस क्स्थयत, शासन-तत्रिं और न्याय-व्यिस्था को मजबूत नीिंि पर खडा करने का काम नाना फणनिीस और उनके स योधगयों ने ककया। समाज के र तबके को समान न्याय हदिानिेािी जागरूक न्याय- व्यिस्था, भूलम-कर का यनधारसण और उसकी उपिक्ब्ध, सक्षम प्रशासन-तत्रिं और सबसे म त्त्िपूण सय कक जो म ान् ्काय सकरते े ुए अपनेपूिजस श ीद ुए तथा क्जसेसतिं- म ात्माओ िंका आशीष प्राप्त ुआ था, ि काय ससपिंन्न करने के लिए ी मारा जीिन ै, जनता के हृदय में उत्पन्न ुई य भािना और साथ ी उनमें जगा य सदलभमान कक क्जस जायत ने ह दिंधूम स और ह दिंू ूस्िततत्र्यि की श्रीिृद्धिध के लिए साम्राज्य का भार अपनेबलिष्ट्ि किंधों पर धारण ककया ै, म भी उसी

जायत-मरािों में सेएक ैं-इन् ों सब कारणों से उस समय के िोगों को िगने िगा कक म ऐसेम ान् ्कृत्यों के न
िकेि प्रत्यक्षदशी ैं, अवपतु मनेउन कृत्यों को साकार करने में भी भाग लिया ै और इसलिए मारा जीिन
धन्य ै। राष्ट्र का सपिंूण सिातािरण गौरिपूण सभािनाओंसे भर गया। रोज िोगों को शुभ समाचार प्राप्त ोनेिगे।
सामान्य व्यक्क्त के भी मन में आत्मविश्िास की भािना बििती ोती गई और इस भाग्यशािी काििखडं का
सबिंधं पेशिा सिाई माधिराि के अनुकूि ग्र ों से जोडा जाने िगा। र कोई मानने िगा कक अपनेपेशिा के शुभ
घडी पर जन्म िेनेके कारण य सुक्स्थयत म देख र े ैं।

उनके जन्म से पिू स ी िोगों ने सपिंूण सराष्ट्र के राज्यकता सके रूप में उन् ें स्िीकार कर लिया था। िोगों में
इस तर की धारणा बन गई थी कक मुसिमानी राज्य का नात करने और ह दिंूायत को सतानेिािेविदेशी शत्रुओ ं
का प्रयतशोध िेनेकी अधूरी इच्छा पूरी करने के लिए प्रथम माधिराि पेशिा ने ी सिाई माधिराि के रूप में कफर
से उम लिया ै। पिूी समुद्र से िेकर पक्श्चमी समुद्र तक समथ सऔर सपिंन्न ह दिं–ूसाम्राज्जा में यनमाणस की प्रथम
माधिराि की अतृपूत इच्छा पूरी करने का काम य द्वितीय माधिाय करेगा-य विश्िास उनके मन में जाग
उिा। िे समझनेिगेकक पेशिा के जन्म ै अपनेध्िज पर भी मेशा भाग्य की कृपादृक्ष्ट्ट ोती ै और उसे ेईश्िर
का आशिीाद लमिता ै। ऐसी विधचत्र िौककक धारणाएँकभी-कभी राष्ट्र के अतिंरतम में दबी आकाक्षिंाओंकी ी
सूचक ोती ैं और उनसे ेस्पष्ट्ट ोता ै कक अयंितम छोर तक की समस्त जनता राष्ट्रीय पराक्रम और अगंीकृत
ककए गए काय सकी ओर ककस दृक्ष्ट्ट से देखती ै।

िसाई की सधिंध के तुरंित बाद नाना ने परशुराम भाऊ पटिधनस को टीपू का नाश करने का आदेश हदया।
ैदर के यनधन के बाद गद्दी पर उसका बेटा टीपू सिुतान बैिा और िे मरािों का कट्टर शत्रु बन गया। नरगुदं के
ह दिं ूराजाओ ंको उसनेपरेशान कर रखा था। अतः उन् ोंने मरािों से स ायता की याचना की। शा.स.ं १७०६ (ई. सन् ्
१८८४) में पटिधनस और िोकर के नेततृ्ि में मरािों और यनजाम की साझा सेना ने टीपू पर मिा करके उसे ेसधिंध
करने के लिए मजबूर ककया। टीपू अतंतः नरगुदं के राजाओ ंको कफर से परेशान न करने और मरािों को चौथ की
बकाया रालश देनेको राजी ो गया। िेककन उसनेमरािों से विश्िासघात ककया। मरािों के िौटते े ी उसनेसधिंध
की शतों को धता बता हदया। उसनेनरगुदं का दगु सअपनेकब्जेमें कर लिया, नरगुदं के राजा को सपररिार बदंी
बना लिया और मो म्मद धमानुसयाययों की सिजसयनक परंपरा के अनुसार उस राजा की बेटी को अपनेअतंःपुर
में डािकर बाकी िोगों को कू्ररता से मार डािा।

इतना करके भी िे सतंुष्ट्ट न ीं ुआ। खुद को पुण्यिाभ करिाने और मुसिमान फकीर-मौिवियों तथा
इयत ासकारों के आशीष और प्रशक्स्त-पत्र पाने के लिए उसने तुगंभद्रा और कृष्ट्णा नहदयों के क्षेत्र में र नेिािी ह दिं ू
जनता पर मुसलिम धम-सप्रसार के अलभयान में भयकंर अत्याचार ककया और बिपूिकस उनका धमातंारण कराके
उनसे ेप्रयतशोध िेनेिगा। मुल्िा-मौििी, तिारीखकार आहद उसे ेतुरंित ी धमरसक्षक, गाजी, औरंगजेब या तैमूर
आहद उपाधधयों से निाजने िगे। मरािों का ह दिंूधम सके सरंक्षक ोने का गि सचकनाचूर करने के लिए उसने
बिपूिकस स स्रों िोगों की सुन्नत करा दी और उनपर अनधगनत अत्याचार ककए। समथ सरामदास स्िामी ने

मरािों को और उसके साथ- साथ ह दिंंजूायत को अत्याचाररयों का मुकाबिा करते े ुए तथा अत्याचार का जिाच अत्याचार से देते े ुए बलिदान ोनेका उपदेश हदया था। इन अत्याचार पीडडतों ने सगिंहित ोकर मुकाबिा तो न िींककया, िेककन मानभगिं या किकिं की बजाय मृतूयु को गिे िगाना पसदिं ककया। टीपू के क्रोध का विशेष िक्ष्य बने दो जार ब्राह्मणों ने धमातांररत ोकर जीनेकी बजाय अपनेजीिन का अिंत कर लिया। अपनेधम सके लिए उन् ोंनेस्िेच्छिा से आत्मा ुयत दे दी। मरािी सत्ता स्थावपत ोनेके पिू सइस तर का आत्म-बलिदान सामान्य चिन बन गया था। धम-सत्याग की बजाय य ी एक श्रेेष्ि् काय सामान्य ह दिंं ूके बस में र गया था।

तभी समथ सरामदास स्िामी का उद्भि ुआ। सह्याहद्र के लशखर से उन् ोंनेगजनसा की, "य उधचत न ी ि ै। धम सत्यागनेसे श्रेेष्ि् ै प्राण त्यागना। परिंतु उससेश्रेेष्ि् य ै कक धम सऔर प्राण दोनों में से ककसी का भी त्याग करने की बजाय अत्याचारी शक्क्त का नाश ककया जाए। धम सकी खायतर मृतूयु को गिे िगाना अयनिाय स ो जाए तो अत्याचारी शक्क्त का मुकाबिा करते े ुए, दुश्ुमन को मारते-ेमारते ेमरना श्रेेयस्कर ै।" 'धमासािी मरािे। मरोयन अिंध्यासिं मारािे ॥ मारता मारता घ्यािे े! राज्य आपिुिे ॥'- य युद्धमिंत्र अपने सैकैडों लशष्ट्यों के माध्यम से सभी गुप्त सगिंिनों, मिों और घर-घर में प ुँचाकर उन् ोंनेसामान्य से सामान्य ह दिंं ूको काटोंों का मुकुट ी न ीिं, अवपतु उसके ी साथ विजय के मोयतयों की किगी भी प्राप्त करने की लशक्षा दी।

पुणेकी राजगद्दी पर लशिाजी के िशिंजों का शासन था। कफर भी टीपू ह दिंुओिं पर अत्याचार कर उनका धमातांरण करिाने की और औरिंगजेब जैसा जुलुमी व्यि ार करने की जुरसत ने की थी। इस धमातांरण के जुल्म के लशकार बने स स्रों ब्राह्मणों और कनाटसक, आिंध्र तथा तलमिनाडु के ह दिंओुिं की करुण पुकार पुणे ेतक जा प ुँची। ह दिंिी सत्ता इसे ेभिा कैसे स न करती! अपनेधमबसधिंुओिं पर बरपाए गए क र का िृतूाितिं सुनने के पश्चात् ् चुपचाप बैि र ना म ाराष्ट्र के ह दिंं ूसाम्राज्य के लिए असिंभि था। य तो उनके लिए एक चुनौती थी और उन् ोंने तुरिंत उसे ेस्िीकार भी कर लिया। िािाँकक उस िक्त मरािों की सेना उत्तर हदशा के बडे युद्धों में व्यस्त थी, कफर भी नाना ने अपनेकनाटसक क्स्थत धमबसधिंुओिं की स ायता करने ेतु तुरिंत यनकिने का यनश्चय ककया। उन् ोंने इस युद्ध में जीते ेगए प्रदेश का तीसरा ह स्सा देनेका िािच हदखाकर यनजाम को अपने पक्ष में कर लिया और मरािी सेना को उस मुसलिम धमाधां पर जोरदार चढाई करनेका आदेश हदया। पटिधनस, बे रे तथा अन्य मरािा सेनापयत अपनी योजना की रूपरेखा बनाने ेतु एकत्र ुए और बाद में अपने-अपनेपथकों के साथ पृथक् ो गए। उन् ोंनेदुश्ुमन के बदामी और अन्य स्थानों को अपनेकब्जेमें कर लिया और कई शक्क्तशािी मिे कर उसे े इतना परेशान कर हदया कक ि जान बचाने के लिए राज्य के पितसीय क्षेत्र में जा यछपा; िेककन ि ााँभी य इसिामी िीर ह दिंं ूसेना के सामनेहटक न ीिंपाया। उसकी िीरता लसफस ह दिंओुिं की औरतों, बच्चों तथा पुजाररयों का छि करने और कुाँआरी ह दिंं िूडककयों का शीि भगिं करने में ी थी। ह दिंं ूसेना के अपने बा ुबि का पररचय देते े ी उसनेक्षमा-याचना करके सिु की प्राथनसा उन् ी िंह दिंओुिं से की क्जन् ें तगिं करने में उसे े िैानी खुशी ोती थी। इससे प िे ेस स्रों ह दिंुओिं तथा उनको कुाँआरी कन्याओिं ने कोई प्रयतकार न करते े ुए खामोशी से आत्मा ुयत दे दी थी: िेककन उससेइस धमाधस तेज ोगी। कतव्सय के प्रयत सचेत शक्क्त ने कर हदखाया तथा अधधक पीडा देनेकी

अत्याचार की के। बस प्रयतकार रह त बलिदान से जो सभिंनि िीं ुआ, उसे ेप्रयतरोध सथयो सामथ्य स ी नष्ट कर दी।

टीपूको पुरानी चौथ के बकाया के रूप में तीस िाख रुपए ि िींह दिंं ूसत्ता को सुपुदस करने पडेतथा एक िष स के भीतर और पद्रिं िाख रुपए देनेके लिए िचनबद्ध ोना पडा। यतस पर नरगुदिं का राज्य, ककत्तूरू, बदामी-ये सभी स्थान मरािों को देने पडे। अब यहद मुसिमानों की तर नीचता का िैसा ी बदिा चुकाने की बात मरािों के मन में आई ोती तो िे टीपू की मुसिमानी प्रजा को; कुछ ी अरसा प िे ेटीपू सुितान की आज्ञा के अनुसार ह दिंंओु िंका छि करने में चरम पाशविकता क्जन् ोंने हदखाई थी, उन मौवियों-मौिानाओ िंको; मुसिमानी सुन्नत की तुिना में क ी िंकम कष्टकारी, लशखा धारण करने की विधध करने के लिए बिपूिकस वििश कर उन् ें ह दिंं ूबना सकते थे। िेककन मरािों ने बदिा िेनेके लिए भी मसक्जदें न िींधगराई, मुसिमान औरतों को जबरदस्ती अपने अतिंपुर: में न िींडिाा और तििार की नोंक पर इच्छाविरुद्ध ह दिंधूम सस्िीकार करने के लिए वििश कर ककसी भी व्यक्क्त के धम सका अपमान न िींककया। ऐसा पुरुषाथ स(!) उनके लिए सिथसा अस्िाभाविक था। कारण य कक तैमूर, टीपू, अिाउद्दीन और औरिंगजेब ने क्जस कुरान का पिन ककया, उस पर उनकी यनष्िा न िींथी। अत्याचार और िूटमार के ऐसेकृत्य करनेका अधधकार ककेि धमरसक्षकों को ी ै, काकफरों को न ी।िं

दक्षक्षण में टीपू के कूरूर कमों सेह दिंओंुको मुक्त करने के बाद मरािों के लिए उत्तर हदशा में उनके शत्रुओ िं का बनाया बडा सघिं तोडने के लिए सभी तर के प्रयत्न करना आिश्यक ो गया। इतने हदनों तक म ादजी लशदिं ने अकेिे ी उत्तर के इन एकजुट ुए शत्रुओ िंको दबाकर रखा था। सािाई की सधिंध के बाद म ादजी उत्तर हदशा की तरफ यनकि पडे। यूरोपीय सेनानायकों की काय-सशिी से और उनकी अनुशालसत सेना के कतृत्ि से िे अत्यतिं प्रभावित ुए थे। म ादजी लशदिं प िे ेऐसेबडेह दिंदी सेनापयत थे, क्जन् ोंनेन ककेि यूरोपीय तरीके से सैयनक प्रलशक्षण प्राप्त ककया और िैतयनक सेना का म त्ि पि चाना, अवपतु उसका प्रयोग भी ककया। उन् ोंनेफ्ासीसी सेनापयत डीबॉइन के मागप्रसदशनस में ककसी भी पाश्चात्य सेना का मुकाबिा करने में सक्षम सेनािाह नी का

यनमाणकाया।इस सेनािाह नी के भरोसे ेउत्तर में चिनिेिी ेककसी भी षड्यत्रिं से यनपटने ेतथा अपनी बात मनिाने की शक्क्त उनमें उत्पन्न ुई। हदल्िी की प्रभुसत्ता में ककसी भी तर का स्तक्षेप न करने का िचन अग्रिंजों ने मरािों को सधिंध के अनुसार हदया था। कफर भी मरािों के माग समें रोडे अटकाने से िे बाज न िींआ र े थे। बादशा शा ज ा ाँको मरािों की तरफ न जाने देकर उसे ेअपने ी कब्जेमें रखने ेकी कोलशशेंकरते े ुए अग्रिंजों ने मरािों के विरुद्ध असतिोष फैिानेतथा म ादजी की रा में यथासभिं बाधाए ाँखडी करने का क्रम चिाए रखा; िेककन उनके सभी प्रयत्न विफि कर म ादजी ने हदल्िी की सािसौम राजसत्ता के सूत्र अपने ाथों में मजबूती से थाम लिये। िे बादशा को हदल्िी िे आए और िजीर के स्थान के लिए ाथ-पैर मार र े मुसिमान धूती-षड्यत्रिंकाररयों के मसिूंबों पार पानी फेर हदया। तब वििश ोकर बादशा को िजीर के पद पर म ादजी को यनयुक्त करना पडा।

बादशा ी सेना का सूत्र-सचिंानि म ादजी ने अपने अधीन कर लिया। हदल्ीि और आगरा-दोनों प्रातिों के राजकाज का दाययत्व सौंपने के लिए भी बादशा को ववश ककया। इस तर मुसिमान और यूरोपीय दोनों

[illegible]नता छोड मरािों ने हदल्ीि की राजनीयत के सूत्र अपने का अयिंतम ससं्किार कर डािा। मुगि सम्राट् ने मरािों के पेशिा को न लसफस 'िजीर-ए- मुगि' खखताब ब ा ककया, बक्ल्क खुद नामधारी राजा के रूप में सतिोष मानकर अपनेव्यय के लिए पसैंि जार रुपए ितन यनधारसरत करके पेशिा को म ाराजाधधराज के सारे अधधकार सुपुदस कर हदए।

इस नए पररितनस सेबनी ुई क्स्थयत का जो िणनस एक मरािी िखक ने ककया ै, ि इस तर ै-" अब बादशा ी मारी ै और ििृद्ध बादशा लसफस मारा ितनभोगी सिैक बन गया ै। ि अपनी मरजी से मारा सिैक बना ै और नाममात्र के लिए बादशा क िाना चा ता ै। कुछ समय के लिए में य हदखािा करना आिश्यक ै।" आगे िचिकर अग्रेंजों को भी ऐसी पररक्स्थयत लमिी, तो ि इस तर का हदखािा सन् १८५७ तक भी चिाए न ी िरख सके।

म ादजी ने समस्त ह दिंू जनता की धालमकस ििृत्त को झकझोरने िािा कृत्य कर इस म त्िपूण सप्रसगिं को अविस्मरणीय बना देनेका यनश्चय ककया। पूरी सत्ता पर ह दिंओुका अधधकार जताने के लिए उन् ोंने'अखखि भारतिष समें गो त्या पर पाबदिं ै' ऐसी राजाज्ञा जारी कर दी। म ादजी ने हदखा हदया कक य राजनीयतक अधधकार क्रायिंत म ज शाक्ब्दक न ीं ै। नामधारी राजा बनेर ना मरािों के लिए सभिंि न ींथा। तुरिंत ी ि अपने सभी विरोधधयों को रास्तेपर िाकर एक विशाि् और श्रेष्ि ह दिंू साम्राज्य खडा करने में जुट गए। म ादजी ने सिप्रसथम अग्रेंजों से बकाया चौथ और सरदेशमुखी िसिूी। अिग-अिग प्रातिों के प्रातिांधधकारी तथा सत्ताधीश मिू सत्ता को धता बताकर स्ितित्रं सत्ताधीशों जैसा बरतिा कर र े थे। उनसे िकर िसिूी का आदेश देकर उसे िकाबू में रखने िका काम म ादजी ने ककया।

ऐसी सख्त काररिाई का पररणाम य ुआ कक ह दिंसु्थान भर में सभी सरदारों और खान, बक्ल्क उन प्रातिों के राजा भी. क्जसकी एकमात्र सत्ता ने ह दिंस्तान में ह दिंू- अमीरों और खानों ने मरािों के खखिाफ विद्रो खडा कर हदया। न लसफस अमी, स ी साम्राज्य का यनमाणस करना चा ा, उसी के खखिाफ िडने के लिए अ से जा लमिे। यद्यवप ऐसा व्यि ार व्यक्क्तगत स्िाथ सकी दृक्ष्ट से स्िाभाविक था अग्रेंजों और मुसिमान राष्ट्रीय ह त की दृक्ष्ट से दुभाग्सयजनक था। मरािों के खखिाफ जयपुर और जोधपुर के गायों ने इतनी विशाि सेना खडी की, क्जतनी उन् ोंनेअग्रेंजों और मुसिमानों जैसे िविदेशी शत्रु ुके खखिाफ कभी खडी न ी िकी थी। उन् ोंने मुसलिम सेना से ाथ लमिाकर लशदिं की सेना से िािसोड में घमासान युद्ध ककया। म ादजी की सेनो में बादशा ी सेना के मुसिमान सैयनक भी शालमि थे। युद्ध क्जस समय विकराि स्िरूप धारण कर चुका था, िीक उसी समय यनक्श्चत सकिंत लमिते ी लशदिं की ओर से िडनेिािे मुसिमान सैयनक उनका साथ छोडकर राजपूतों से जा लमिे।

इस तर अचानक विश्िासिघात ोनेसे मरािों की ार ुई; िेककन इस अप्रत्यालशत ार ने शूर मरािा सेनापयत का तेजे और यनखार हदया। उसके पराक्रम की असिी परीक्षा तभी ुई। उसने बगैर विचलित ुए कफर से मरािी सेना को एकत्र ककया। आगरा के दुगु सको मुसिमानों ने जब चारों ओर से घेर लिया तो ि ााँके दुगु-सप्रमुख खिोबा दादा ने िीरतापूिकस उनका प्रयतरोध ककया और लशदिें के दुश्ुमनों को रोके रखा। उसी समय क्जस नजीब खान को उसकी कििी करतूतों के लिए मरािों ने सबक लसखाया था, उसका पोता गुिाम कादर अपनेरु ि ेऔर पिान सैयनकों को साथ िेकर रणभूलम में आ गया। ि हदल्िी को मरािों के आधधपत्य से मुक्त कराना चा ता था।

इधर आगरा के पास मुसिमान और राजपूतों के साथ युद्ध में म ादजी जब व्यस्त थे, तब मूख सबादशा मसूधवेत्ता कर हदया। गुिाम कादर ने हदल्िी में प्रिेश ककया। म ादजी ने नाना को प ि उत्तर की क्स्थयत कैसे ेउिट गई ै। इसी के साथ उन् ोंने नाना की नजर में य भी िा हदया था कक ऐसी क्स्थयत बनने के कारण अपनी म त्त्िाकाक्षिां विफि ोने से अग्रेंज ी यनराश ुए ैं। मरािों का खुिेआम मुकाबिा करने की ह म्मत उनमें न ी िथी। उन् ोंनेजैसे–ेतैसे एक बार ह म्मत जुटाई थी, िेकेकन उस समय उन् ें पराजय का सामना करना पडा था। कफर भी ि इतना जरूर जानते ेथे ेकक मरािों को इसी तर कुछ हदन और बादशा के नाम और उसके अधधकारों का प्रयोग उन्मुक्त रूप से करने हदया गया, तो क्जस परदे के पीछे से इस स्िागँ का प्रदशनस चि र ा ै, उस पतिे परदे को भी यनश्चय ी ि फाड देंगे ेऔर स्िय िंचक्रिती पद के धचह्न धारण कर िेंगे–े पुर्तगोबासी अभी भी उन् ोंने ऐसा ी ककया ै। अतः मरािों को सिसिा सबनने से रोकने के लिए िुजिं बादशा ी सत्ता के सूत्र अपने ाथ में िेनेके लिए अग्रेंज व्यग्र ो उिे मरािों के श्रेष्ि्ि सेनापयत म ादजी ने नाना को जो पत्र भेजा, उसमें म ाराष्ट्र की जनता का आह्िान इस तर ककया गया ै-"एक म ान् ्साम्राज्य की ह त-साधना के लिए म जी र े ैं, प्रयास कर र े ैं और उसकी रक्षा के लिए ी मर-लमटनिेंगे। मरािा-मडिं के अधधपयत ी मारे एकमात्र स्िामी ैं- य बात में न िीं भूिनी चाह ए। में व्यक्क्तगत स्िाथि,स द्िेष आहद क्षुद्र भािनाओ िंको अपनेमन से यनकाि देना चाह ए। मेरे िक्ष्य के बारे में अगर ककसी के मन में कोई सदिें ो, तो मेरा यनिेदन ै कक ि उसे ेदूरू कर िे। मेरे विषय में जो िोग द्िेष फैिा र े ैं, ि ी अपने असिी शत्रु ु ैं, ि ममें फूट डािकर अपनेघर भर र े ैं। मनैंआज तक मरािी राज्य की जो सेिा की ै, ि उनके मु ाँ बदिं करने के लिए काफी ै। इसलिए म सब इस प्रसगिं के लिए तैयार ोकर भगिा ध्िज के नीचे इकट्ि ें। मारे राष्ट्र ने क्जस काय सको अपनेलसर पर लिया ै, ि काय सतथा मारे पूिजसों द्िारा में सौंपा गया श्रेष्ि् धमकृसत्य ह दिंुस्तान में सिमसान्य ोना चाह ए। में इस म ान् ्साम्राज्य को विभक्त और ध्िस्त न िींोनेदेना चाह ए।" राष्ट्रीय ह तों पर इस तर सकिंट की घडी में नाना इस प्रेरक पत्र को कैसे ेनजरअदिांज कर सकते थे। उन् ें जब य पत्र लमिा, तब ि टीपू के साथ युद्ध में व्यस्त थे। उन् ोंनेटीपू पर िगाम कसकर िोकर और अिीजा ब ादुरु को तुरिंत म ादजी की स ायता के लिए भेज हदया। नाना का मन इस बात से व्यधथत ो उिा था कक जब अपने पूिजसों का सपना पूरा ो र ा था और सपूिंण सह दिंुस्थान ह दिं–ूपदपादशा ी के छत्र तिेआनिेिा था, तभी दुदिै से मरािों और राजपूतों के बीच प्रारिंभ ुए सघिंष सने विदेशी शत्रुओ िंको ह दिंुत्ि के इस सगिंनि के विरुद्ध अपना लसर उिानेका मौका हदया।

ऐसेमें नाना ने पेशिा की तरफ सेराजपूत राजाओंके साथ, खासकर जयपुर के राजपूतों के साथ

बातचीत शुरू की। े ह दिंू ूराज्य के शत्रुओ ंके साथ गिजोड न करें तथा मरािों ने क्जस ह दिंू ूसाम्राज्य को करीब-करीब स्थावपत कर हदया ै, उसके साथ ककसी तर विभिा करने की रा ढूाँढ ें-इस दृक्ष्ट से उनका मन बदिने का प्रयि ककया गया। शीघ्र ी म ादजी ने पुणे ेसे आई सेना की मदद लमिते ी शत्रुओं पर काबू पा लिया। नजीब खान के पोते गुिाम कादर का सफाया करने के लिए म ादजी ने राणा खान, अप्पा खडेंराि और दूसूरे सेनापयतयों को डीबॉयन के प्रलशक्षण में यनपुण दो सेना टुकडडयों के साथ भेजा। मुसिमान भी िडने के लिए उतर आए। दो जबरदस्त िडाइयण ं ुईं और उनमें मुसिमानों की इतनी भयकंर क्षयत ुई, क्जतनी आज तक कभी न ीं ुई थी। िचारों हदशाओंमें पिायन करनेिगे। इसमाइि बेगे और गुिाम कादर ने हदल्िी का माग सपकडा। उन् ें विश्राम करने का अिसर हदए बगैर मरािे उनका पीछा करते े ुए हदल्िी प ुाँच गए। बादशा डर के मारे कापाँनेिगा। गुिाम कादर ने उससेरुपए मारर बादशा उसकी मागाँ पूरी न कर सका, तो गुस्से से आगबबूिा ुए उस कूरूर-जगंिी रो ि ेने अत्याचार और बिात्कार का लसिलसिा शुरू लस ंासन से नीचे खीचंा, कफर जमीन पर धगराकर उसकी छाती पर घुटने रखकर अकबा के कर हदया। उसने डािा। इस जघन्य कत्य से भी उसकी तृकूप्त न ीं ई तो उसनेबादशा की रायनयों और बादशा को राजकन्याओं को अतं:पुर से यनकािकर अपनेसामनेसैयनकों से उनका शीि भगं कराया। उसके इस अमानुवषक कृत्य के पीछे कारण य था कक उसे इसी बादशा के आदेश से भरी जिानी में ी नपुसंक बना हदया गया था। राजधानी में िूटपाट ोने िगी। मुसिमानों को मो म्मद धम सके नाम पर दूसूरों पर अत्याचार करने की जो आदत िगी थी, े सब अत्याचार उन् ोंनेमुसिमानों पर ी ककए। बा र अपनी धाक जमानेिािा खुद अपनेघर में भी धाक जमाए बगैर न ीं र ता। अब क्स्थयत ऐसी बन गई कक इस्िाम धम सका पािन करनेिािों द्िारा ककए जा र े अत्याचारों से मुसलिम बादशा , हदल्िी की जनता और मुसिमान अबिाओ ंकी रक्षा कौन करता ? अथात्स ्क्जन् ें काकफर क ा जाता था, उन ह दिंओु ंके लसिा उनका तारण ार कौन बन सकता था? कैसी विधचत्र क्स्थयत बन गई थी। इन् ीं मुगि राजाओंऔर इनके पूिजसों ने 'गाजी' तथा 'धमसरंक्षक' का खखताब पाने के लिए और परिोक में महदरा तथा अप्सराओ ंका साथ पाने की िाि क में ह दिंू ू देिताओंके महंदर ध्िस्त ककए, मूयतयसा ाँतोड डािी,ं उनकी कुाँआरी कन्याओ ंका शीि एि ंजिानों का धम सभ्रष्ट ककया, मा–ाँबेटे को और भाई-भाइयों को अिग ककया तथा ह दिंओुंके खून से अपनोथ राँगकर खून की ोिी खेिी-आज उनके सरंक्षण के लिए ि ी ह दिंू ूआगे ेआए। ह दिंू ूहदल्िी में आ र े थे, िेककन िे मसक्जदें धगराने, उनपर िगा ुआ आधा चादाँ तोडने, मकबरों को खडंडत करने, कन्याओं से जबरदस्ती करने, माताँको बेटे से अिग करने, बिपूिकस धमातंरण करने, अपने लिए विनाश के नशे ेमें झूमूने, रक्तपात से उन्मत्त ोने और मार हदए गए अपने दुशमन के धडों से काटे गए लसरों के अबंार से या खाक कर दी शत्रु ुकी राजधानी से यनकिती ज्िािाओ ंसे अपनी विजय नापने न ीं आ र े थे। उनके लिए भी य सब सभंि था और उनके ऐसा करने पर मुसिमान ऐतराज भी न ीं कर सकते ेथे; िेककन ह दिंू ूउनकी उसी राजधानी की, उसी लस ंासन पर बैिे मुसिमानों की, मुसिमानों के ी

ाथों ो र े बीभत्स, पाशविक अत्याचारों एि ंछि-प्रपचं से मुक्त करने दौडे ेचिेआ र े थे।

मरािों के आगमन के लिए राजधानी में प्राथनसाए ाँ ो र ी थी ंऔर ह दिंू ूसाम्राज्य की स्थापना करनेिािी सेना के प्रविष्ट ोते े ी सभी नागररकों, क्जनमें ह दिंओु के साथ- साथ मुसिमान भी थे–ने त ेहदि से उसका

ह दिंू पदपादशा ी 114 स्िगित ककया। आलिजा ब ादुरु, अप्पा खडिेंरि, राणा खान और डीबॉयन ने राजधानी पर
कब्जा कर लिया;
लेकिन मरिों की िशिं परिंपरा का शत्रुिए िंअपराधधयों का नेता गुिाम कादर राजधानी से गायब ोनेमें सफि ो
गया था। उसके अनधगनत अपराधों की सजा उसे ेलमिनी ी चाह ए थी। कुछ हदन प ि ेहदल्िी के बादशा ने
इसी गुिाम कादर सेगिबधिंन करके मरिों के खखिाफ उसी तर षड्यत्रिं रचा था, उसके दादा नजीब खान ने
पानीपत के सग्रिंाम में रचा था। कफर भी मरिों ने मानिता के नाते ेउस बादशा को उसी के जात-भाइयों के जुल्मों
से मुक्त करने के लिए यथासभिं प्रयत्न ककए।

ी मरिों कोदल्ली िेपिायन करके गुिाम कादर ने मेरि के दुगु समें पना ि ी थी। जैसे
उन् ोंनेउसका पीछा करने के लिए सेना की एक बडी टुकडी भेज दी। उसनेइस सेना का यथाशक्क्त मुकाबिा
ककया; िेककन मरिों के आगे ि े न िंहटक पाया। ि अश्िारूढ ोकर भागने िगा। मरिों से पीछा छुडानेके
प्रयास में ि घोडेसेधगरकर बे ोश ो गया। ि ााँआने-जानेिािे ककसानों ने उसे ेप चानकर मरिों की छािनी में
प ुाँचा हदया। इस बात का क्जक्र अत्यािश्यक ै कक इस नराधम को कडी-से-कडी सजा दी जाए-ऐसी मागाँ
करनेिािों में सबसे आगे मुसिमान ी थे। गुिाम के परिरिार के तीन पुश्तों का क्जससेबैर था, उस म ादजी
लसधिंधया के सामनेउस नराधम को पेश ककया गया। उसने दूसरों को जो यातनाए ाँदी थीं, उनका उसे ेए सास कराने
के लिए उसके शरीर के अियि क्षत-विक्षत कर हदए गए। कफर भी ि गालिया ाँबक र ा था। अतः उसकी जीभ
काट िी गई और नेत्र भी यनकािेगए। इस तर भयानक रूप से विद्रूप ुए उस अधमरे गुिाम कादर को बादशा
के पास भेजा गया। क्जसने अपने साथ अमानुवषक व्यि ार ककया, उसे ेककस प्रकार कडी-से-कडी सजा लमिी ै,
य देखने ेके लिए बादशा उत्सिा ो गया था। पानीपत के समर में मरिों का नामोयनशान लमटाने ेकी कसम
क्जसके दादा ने खाई थी, उसका खात्मा इस तर मरिों के ाथों ो गया। मरिों ने नजीब खान के िशिं का और
उसके राज्य का नामोयनशान तक लमटा डािा।

शालििा न सिंित् ्१६११ (ई.स. १७८९) तक म ादजी मरिी सेनापयतयों की मदद से सभी प्रयतस्पधधयसों
को रास्तेपर िे आए। मुसलिम व्यू ध्िस्त कर हदया, उन् ें मदद करनेिािे राजपूतों को अपनी तििार का मजा
चखाया और अपनेअदम्य सा स तथा शौय सका पररचय देकर अग्रिंेजों को नतमस्तक ोकर चुपचाप बिै र ने के
लिए मजबूर ककया। िृद्ध मुगि बादशा कफर से स्ितत्रिं ो गया और उसनेम ादजी को 'िकीि-ए- मुतालिक' का
सिोच्च बादशा ी खखताब और म ाराजाधधराज की पदिी पुनः सौंपने की इच्छा जताई; िेकेकन म ादजी ने अपने
स्िामी बािपेशिा का सम्मान रखने ेके उद्देश्य से स्ियिंके लिए उसे ेस्िीकार न कर पेशिा के नाम से उसे ेग्र ण
ककया !

उधर उत्तर में इस तर मरिों को व्यस्त देखकर एक बार कफर ाथ अजमाने का विचार ककया। शा.सिं.
१७०९ (ई. स. १७८७) में उसने कफर से आक्रामक रुख अपनाया, िेककन इस बार उसने मरिों के प्रदेश पर सीधा
मिा न ी िंककया। उसनेअपने राज्य-विस्तार की योजना बनाई। मरिों के कारण कृष्णा नदी की तरफ विस्तार
करने की उसकी ह म्मत न ी ि ुई। अतः दूसरे पडोसी राज्य त्रािणकोर के कमजोर ह दिंू राजा को उसने अपना

यनशाना बनाया। ऐसे में नाना ने यनजाम और अग्रिेंजों से दोस्ती का ाथ बढाया और टीपू के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। पटिधनस के नेतृतूत्ि में मरिाों ने उसपर मिा ककया। मरिो जैसे-ेजैसे ेआगे ेबढते ेगए, िैसे-िैसे रा में पडने िाि ेक्षेते्र के िोग मैसूर के इस धमाधस प्रजापीडक के खखिाफ उनके साथ जुटुने िगे।

टीपूके अधधकाररयों को अपने दि में से भगानेमें और बकाया कर-सूिी करने में ि ााँके नागररकों ने मरिाों की मदद की। मरिाों की विजयी दौड जारी र ी। ुबिी, धोरिाड, लमसरीकोट-सभी स्थान मरिाों ने जीत लिये। कुछ ी हदन प ि ेटोपू के कब्जा ककए धारिाड को मरिाों ने घेर लिया। ि ााँ के मुसिमान दुगुरसक्षक ने जबरदस्त प्रयतकार ककया। मरिाों के सेनापयत द्िारा मना करने के बािजूद अग्रिेंजों ने बडी अकड से ककिेपर मिा कर उसे ेछीननेका प्रयत्न ककया। उसमें उनकी खासी फजी त ुई। मरिाों की अगुआई िािी सेना और ककिेमें बिी मुसलिम सेना-दोनों ने दृढता से िडाई जारी रखी। अतिंतः मरिाों ने िीरता की पराकाष्ठा कर मिे पर मिे ककए और ककिे पर कब्जा कर लिया। पानसे,े रास्तेतथा दूसूरे मरिाी सेनानायकों ने तुगिंभद्रा नदी िाधाँकर सातिी, बदनूर, माइकोंडा, पेनूर, मेनधगरी आहद शत्रु की चौककयों पर धािा बोिकर उन् ें अपनेअधीन कर लिया। मरिाों की नौसेना भी चुपचाप न िींबिी थी। कारिार और िंसर प्रदेशों के अिग-अिग स्थानों से मुसिमान अधधकाररयों को यनकािने का काम मरिाों की नौसेना ने समुद्र ककनारे से ी मिा करके ककया। चद्रिंरिा, ोनािर, धगररसप्पा, धरेश्िर, उदधगनी आहद स्थानों पर कब्जा करके नरलस िंरिा दिेजी, गणपतरिा मे ेंदिेआहद सेनानायकों ने सीधेश्रीरिंगपट्टण पर धािा बोि हदया। दूसूरी हदशा से कानिसालिस के नेतृत्ि में अग्रिेंजी सेना भी ि िींआ र ी थी; िेककन टीपू के दािाँ-पेचों के कारण उस सेना की ब ुत दुदुसशा ुई। उनपर भुखमरी का सिंकट इतनेगभिीर रूप से आ पडा कक र रोज एक जून की रोटी के लिए भी ि तरस गए। चारा- पानी न ी िं लमिने के कारण उनके अधधकतर अश्िों नै दम तोड हदया और इस प्रकार अश्िारो ी सेना पैदि सेना में तबदीि ो गई।

ऐसी अस ाय और क्षुधधत अिस्था से परेशान अग्रिेंजी सेना ने जब न लसफस जीिनािश्यक िस्तुओ िंके भिंडार से भरपूर, बल्ल्क ऐशो-आराम की चीजें भी साथ िा र ी मरिाी सेना को देखा, तब उनकी खुशी का हिकाना न िींर ा। ररपतिं फडकेजी ने भी लमत्रधम सयनभाते े ुए उनकी परेशायनया ााँदूरू कीिं। दोनों सेनाए ााँदस हदनों तक एक साथ र ी।िं िास्ति में उस समय अगर मरिो िान िेतेतो टीपू के शासन का नामोयनशान लमटा सकते थे;े िेककन नाना ब ुत दूरूदशी थे। मद्रास प्रातिं के म त्त्िाकािंक्षी अग्रिेंजों को काबू में रखने ेके लिए अभी कुछ समय टीपू का बने र ना फायदेमदिं था। आखखरकार, कुछ और छोटी-मोटी िडाइया ााँ ोनेतथा मरिाों-अग्रिेंजों से जबरदस्त मार खाने े के बाद टीपूजब अस ाय ोकर शरण में आया, तब ररपतिं फडके और परशुराम भाऊ ने मध्यस्थ बनकर अग्रिेंजों से उसकी सिधिंध करिाई। टीपू को सिधिंध की शतों के अनुसार अपना आधा राज्य मरिाों को सौंपना पडा। साथ ी तीन करोड रुपए देनेपडेऔर इसके बाद त्रािणकोर के ह दिंू ूराज्य को तगिं न करने का करार भी करना पडा। अग्रिेंजों तथा मरिाों ने टीपू के दोनों बेटों को अमानत के रूप में अपनेपास रख लिया। इस विजय से जो भी प्राप्त ुआ, उसे ेअग्रिेंजे, यनजाम और मरिाों ने समान रूप से बाटाँ लिया। उसमें मरिाों को सािाना नब्बीेिाख रुपए आय

का विस्तृत प्रदेश लमिा। इस तर शा.सिं. १७१४ में टीपूके साथ तीसरी िडाई खत्म ुई और मरिी सेना युद्ध-यनपुणता की ख्यायत तथा सम्मान प्राप्त कर उसी िष समें राजधानी िौट आई।

ऐसा ी सम्मान प्राप्त कर तथा दूसूरे भी गौरिपूण ससमर-विजय ालसि कर मरिी साम्राज्य के उत्तर हदशा के सेनापयत भी उसी समय म ाराष्ट्र की राजधानी की ओर जा र े थे। दोनों हदशाओंसे अपनी विजय-पताका फ राते ुए मरिों की सेनाए ाँएक साथ ी पुणे में प्रिेश कर र ी थी।िं दोनों विजयी सेनाओंके लमिन का िदृश्य अभूतपूि सथा। क्जन् ोंने टीपू के अत्याचारों से दक्षक्षण की जनता की मुक्क्त की, िे फडके और रास्ते े दक्षक्षण हदशा से आिानेिाी सेना की अगुआई कर र े थेतथा क्जन् ोंने उत्तर को पदाक्रातिं ककया, हदल्िी के बादशा को ह दिंू ूसाम्राज्य का ितनभोगी सेिक बनाया और अग्रिेंजों, फ्ासिीलसयों, पिानों, रु िों के सामनेमात्र एक नाम (बादशा का) रखकर चक्रिती पद धारण ककया, िे म ादजी लशदिें उत्तर हदशा से आ र े थे।

इन दो प्रचडिं सेनाओ िंके पुणे ेमें लमिन का उदय देखकर ह दिंसुथानी और विदेशी सभी सत्ताए ाँचकरा गईं और आगे ेअपना क्या ोगा, इस धचतिंा से व्याकुि ो उिे।िं ये दोनों विशाि सेनाए ाँककस उद्देश्य से इकट्िा ो र ी ैं? शक्क्तशािी म ाराष्ट्र-मडिं अिब कौन सा काम ाथ में िेनेजा र ा ै, अब उसकी िक्रदृक्ष्ट ककस पर ोने जा र ी ै और कौन उसका भक्ष्य बनेगा ? ह दिंसुथान भर की आखेँ पुणे पर केंहद्रत ो गिीं, क्योंकक हदल्िी की अब कोई धगनती न िींर गई थी। हदल्िी िस्तुतः पुणे की उपनगरी बनकर र गई थी। इधर मरिों का मन दूसूरी ी धचतिंा से ग्रस्त था। नाना और म ादजी- दोनों म ापुरुष आमने-सामनेखडे ेथे। इन दो देशभक्तों की दलमत प्रयतस्पधासत्िृवृत्त का रूपातिंरण धीरे-धीरे, िेककन िोस रूप में एक-दूसूरे के प्रयत भय में ो र ा ै, य बात सभी को पता िग गई थी। पीढी-दर-पीढी क्जस म ान् ्काय सको लसद्ध करनेके लिए मरिे िड र े थे, उस काय सको सफि बनाने में, ह दिंू-साम्राज्य की रक्षा करने में, उसे ेबि तथा िैभि प्रदान करने में इन दोनों म ापुरुषों की समान भागीदारी थी। उन दोनों क्जतने पररश्रम और ककसी ने न ी िंककए थे। ह दिंू-पदपादशा ी के प्रयत दोनों के मन में यनग्रह त प्रयतस्पधासत्िृवृत्त क ी िंएकाएक फूटकर उसकी पररणयत खुिेआम िैरभाि में तो समान आदर और प्रेमे था। अतः मरिों को य आशकिंा ोनेिगी थी कक दोनों की न िींोगी ? ऐसा अगर ुआ तो ह दिंू-साम्राज्य की दुदुसशा ोने में देर न ी िंिगेगी। सपिूंण सम ाराष्ट्र इस कल्पना से आतकिंकत ो उिा था। इस म ान् ्राजनीयतज्ञों और योद्धाओंकी और सभी टकटकी िगाए बिे थे।

क्जसेमरिों ने बादशा का खखताब रखने ेकी छूट दे रखी थी, उस िृद्ध मुगि राजा ने सिशे्रेसष्ट् िकीि-ए-मुतालिक और म ाराजाधधराज जैसी उपाधधयों से म ादजी को सम्मायनत करना चा ा और उसे ेनम्रतापूिकस अस्िीकार करके उन् ोंनेअपने स्िामी के लिए ककस तर प्राप्त ककया, इसका उल्िेख प िे े ी आ चुका ै। बादशा का य उपाधधयाँ प्रदान करना केिि हदखािा मात्र न िींथा। क्जन चमपसत्रों पर ये उपाधधया ाँलिखी गई थीं, उतना भी मूल्य परिश और अयोग्य व्यक्क्तयों के लिए इन उपाधधयों का न िींथा, िेककन ये उपाधधया ाँमरिों के लिए नाममात्र की बने र ना सभिं न िींथा। इन उपाधधयों को धारण करने िािों को बादशा के नाम पर प्रत्यक्ष साम्राज्य चिाने का सपिूंण सअधधकार प्राप्त ो गया था। िस्तुतः उपाधधयों के रूप में खुद बादशा ने अपना इस्तीफा दे हदया था। मरिे, अग्रिेंज और अन्य ह दिंू ूराजाओं के बीच उन हदनों शा ी राजमुकुट पाने के लिए जो ोड

गिी ुई थी, उसके चिते ि सिाभसौम राजमुकुट और उससे ेजुडी विरुदिदी नाम के लिए ी स ी, बुजुग समुगि के पास रखना आिश्यक था। उससेये उपाधधया ाँि िने के लिए ऐसा सोचना ी पयाप्सत था। अगर मरािों ने इन उपाधधयों-पदवियों पर कब्जा कर लिया, तो उनसे ि सारे खखताब और राजमुकुट छीनना टेढी खीर ोगी, य बात मुसिमान और अग्रेिंज अच्छी तर जानते ेथे। इसलिए जीण-स शीण समुगि शासन के स्िागौँ को ढोते ेर ने की कोलशश ेंि बडी तल्िीनिता से कर र े थेऔर मात्र मरािों से ईष्या सके कारण उसे ेबादशा मानने का नाटक चिाया जा र ा था।

अग्रेिंजों में य प्रिृवत्त ककतनी प्रबि थी, इसे ेजानने के लिए एक ी उदा रण पयाप्सत ोगा। अग्रेिंजों ने अपनेबूते क्जस क्षेत्र को कब का धथया लिया था, उस 'नॉदसन' प्रातिं की सरकार का अधधकार स्िय िंके पास रखने की खायतर उन् ोंनेबादशा शा आिम से अनुमयत-पत्र पाने के लिए खासी उिपटक की थी। मरािा मिू सत्ता पूरी तर स्तगत कर िेनेके बािजूद उस बुजुग समुगि के नाम से जुडी बादशा ी िैभि की छाया से यथासभिंि फायदा उिा िेने में अपनेप्रयतस्पधधयसों से थोडे ेभी पीछे न िींथे। इसलिए म ादजी ने बादशा की ओर से िकीि-ए-मुतालिक तथा म ाराजाधधराज की पदवियााँअपनेपेशिा को हदििाई थी।िं

उत्तर हदशा में ब ुत हदन बबतानेके बाद और ि ााँकई उपिक्ब्धयााँालसि करने के बाद म ादजी को अपनी पुणेनगरी में जाकर बािपेशिा का यिुािस्था रूप देखनेकी अलभिाषा उत्पन्न ुई थी। पुणे ेमें आते े ी अपनेपेशिा को सभी खखताब और बादशा ी अधधकार सौंपने के लिए उन् ोंनेएक बडे उत्सि का आयोजन करने का विचार ककया।

िेककन इधर म ादजी अपनेपेशिा को 'म ाराजाधधराज-राजाओिंका राजा' की उपाधध से विभूवषत करने के लिए उत्किंहित थे। उधर पेशिा के ब्राह्मण मत्रिंी नाना फणनिीस उन विरोधधयों की अगुआई करने िगे, क्जनका मानना था कक ऐसा करना (पेशिा को उपाधध देना) सातारा के छत्रपयत की अिमानना ोगी। िााकाँक ऐसे कई उदा रण हदए जा सकते ैं कक ककसी स्ितित्रिं राज्य के मात्र नागररकों ने ी न िीं, अवपतु अधधकाररयों ने भी दूसूरी राजसत्ताओ िंकी ओर से सम्मान के स्थान, य ा ाँतक कक नौकररया ाँभी प्राप्त की िंऔर इसके बाद भी उन् ोंने अपनेराज्य से विश्िासघात न िींककया, न ी कभी अराजयनष्ट्ि िीं ुए। इतना ी न ी,िं अनेक बार तो अपने राज्य के िाभाथ सऐसा ककया गया। कफर भी राष्ट्रीय भािनाओिं को कोई िेस न प ुाँचने की सतकसता बरतते ुए म ादजी ने सातारा के मरािा नरेश की इस समारो के लिए अनुमयत मागीं। उन् ोंनेभी तुरिंत अनुमयत दे दी।

इस तर सभी बाधाएाँदूरू ुईं और ि म ोत्सि बडी शानो-शौकत के साथ मनाया गया। पेशिा को 'िकीि-ए-मुतालिक' अथिा 'म ाराजाधधराज' उपाधध से सम्मायनत ककया गया और य उपाधध ििंश-परिंपरागत चिते ेर ने की व्यिस्था भी की गई। अब पेशिा को बादशा के सभी अधधकार प्राप्त ो गए और उनके सेनापयत म ादजी को भी बादशा के अनेक पुत्रों में से ककसी एक को राजलस िंासन पर बैिाने का अधधकार लमि गया। उपाधध प्रदान करने के पश्चात् ्इस समारो में ह दिंसुथान में क ी िंभी गो त्या अथिा बैि त्या पर पाबदिंी िगानेिािा फरमान पढा गया। लशदेंि, नाना फणनिीस एि िंअन्य अधधकाररयों ने पेशिा को बधाईस्िरूप तो फे

प्रदान ककए। ह दिंसुथान की र्सिंधायनक सत्ता का एकमात्र कदार मुगि बादशा ै-ऐसा हदखाा करने का स्ागिाँ यूरोप के क्जन प्रयतस्पधधयसों ने रचा था, उसके पीछे उनका उद्देश्य र्कि मरिों को नीचा हदखाना था। इन प्रयतस्पधधयसों की ईष्या सकिंजे ेमें भोंकने के लिए मरिों नि कारगर धथयार मेशा के लिए अपनेपास ी रखने े का बदिंबस्त कर लिया। मरिो आज तक ऐसा कर ी र े थे, िेककन अब साम्राज्य के सविंधान के अनुसार उन् ें

हमदिंसु थानकेचक्रदश ऐसर्ाय धकार भी र्ि,िेवपतु प्रत्यक्ष बादशा

जतानिेगेऔर इसी रूप में व्यि ार करने का यनश्चय भी उन् ोंनेककया। िे शा ी सेनाओिं के प्रधान सेनापयत थे, शासन का उत्तराधधकारी यनयुक्त करने का क उन् ें लमिा ुआ था और सबसे अ म बात य कक 'म ाराजाधधराज' और 'र्किी- ए-मुतालिक'- ये दोनों उपाधधयााँ िर्शिं-परिंपरागत रूप में ालसि ुई थी।िं

इस तर म ादजी की इच्छानुरूप समारो धूमधाम से सपिंन्न ुआ। समारो के बाद शयनिारबाडेकी ओर िौटिनेिी जनयात्रा को देखने ेके लिए विस्तीण सजन- समुदाय इकट्िा ो गया। िोगों की जय-गजनसाओिं, तोपों की गडगडा ट, बदिंकूों के यननाद का िैसा ी र प्रभाि ुआ, इस राजकीय समारो के आयोजक चा ते थे। शयनिारिाडा, जो मरिों का राजम ि था-के पास य यात्रा प ुाँचने पर पेशिा ने म ादजी-जो ह दिं ू-साम्राज्य के प्रमुख सेनापयत थे, का सम्मान ककया िेककन म ादजी ने सभी राजधचह्न एिं िंसम्मान में लमिे िस्त्र और आभूषण नम्रतापिूकस उतार हदए। िे आगे ेबढे और सिाभिा से पेशिा की चरण पादुकाए ाँ(जूते) अपनोथों में उिा लिये और शिीनता सेक ने िगे, " े ह दिं ू-साम्राज्य अधधपयत, राजाधधराज ! सभी मुगि, तुकस, रु िे, े कफरिंगी आपके ह दिं ूसाम्राज्य के दास बना हदए गए ैं। आपके इस सिेक ने इसी काय सके लिए स्ामिी के जन्म के बाद ज्यादातर समय दूरू देशों में व्यतीत ककया ै। चा े ब ुत कुछ िाभ और सम्मान तथा सभी प्रकार का िैभि मुझे े प्राप्त ुआ, िेककन उससे मेरे स्ामिी के समीप र कर उनकी चरण पादुकाओ िंकी सिा करनेकी प्यास न िंबुझी। स्ामिी के साक्न्नध्य में र ने का सुख उस िैभि और सम्मान से बढकर ै। सब िोग मुझे 'मुगि साम्राज्य का प्रमुख िजीर' की अपेक्षा प िे ेकी तर 'पाटीबिा' सबिंोधधत करेंगे,े तो मुझे ेज्यादा अपनापन िगेगा। इतने समय तक आपसे दूरू र कर मनैंजो कायकसिाप ककए, उससेम ैंथक गया ूाँ। मुझे ेअपने चरणों में स्थान दीक्जए। मेरे पिूजसों ने क्जस तर आपकी सिा की, िैसी ी मुझे ेभी करने की अनुमयत दीक्जए।"

स्तुतः सरस सभिंाषण में म ादजी लसद्ध स्त थे। उदारमना पेशिा सिाई माधिरिा भी सहृदय तथा खिु मन के तरुण थे। राजनीयत की जोड-तोड का उनका ज्ञान लशक्षा की स ायता से काफी अधधक था। इसमें कोई शकिंा न ी िंकक उनपर म ादजी का प्रेम तथा उनमें पूण सयनष्िा थी और इसी कारण जल्दी ी उन् ोंनेअपने स्ामिी का ध्यान स्यि िंकी ओर आकृष्ट कर लिया। अपनेऊपर पेशिा की मरजी देखते ुए नाना के सभी अधधकार प्राप्त करने की आकाक्षिं उनके मन में उत्पन्न ुई। कुछ मामिों में नाना के यनणयसों के खखिाफ उन् ोंनेखिुआम दखिदिंाजी की। पेशिा की म ादजी को साथ िेकेर भ्रमण करनेकी आदत बन गई थी। एक बार भ्रमण के समय म ादजी ने नाना के खखिाफ कुछ बात क ी, िेककन पेशिा का गभिंीरता से हदया जिाब सुनकर िे दिंग र गए। पेशिा ने क ा, "देखखए पाटी बुआ, नाना और आप मेरे राज्य की दो भुजाए ाँ ैं। नाना दाईं भुजा ैं और आप बाईं।

आप दोनों ी अपने-अपनेकतव्सय करने में सक्षम ैं। दोनों भुजाए ाँक्जस तर आिश्यक ोती ैं, िैसेआप दोनों का साथ मरिी साम्राज्य को चाह ए। जब तक म ैंक्जदिंा ूाँ, इन दो भुजाओ िंमें से एक को भी काटना सभिंि न िीं ै।"

पेशिा और म ादजी के बीच ुआ य िातािसाप गोपनीय र े, म ादजी ने इसकी सतकसता पूरी तर से बरती थी। उसके बािजूद नाना के सजग जासूसों से य िातािसाप यछप न िींसका। य भेद अिगत ोते े ी नाना, ररपतिं फडके और मबिंत्रमडिंयि पक्ष के सभी िोग धचतिंाग्रस्त ो गए। इन सभी ने मरिाा-मडिंकी धिजा के ति पूरा ह दिंुस्थान िानेका और मरिाा-मडिंकिा एक-एक िग सजब आपसी िैमनस्य के कारण पृथक् ोने की रा पर जा र ा था, तब उसे ेअविक्च्छन्न बनाने का भरसक प्रयास ककया था और अब उसे ेविफि ोते े ुए चुपचाप देखते े र ना उनके बस में न िींथा। िे जानते ेथेकक इस समस्या का समाधान मारे त्यागपत्र देनेसे ो सकता ै। यद्यवप ऐसा करना राष्ट्र के लिए अह तकारी था। कफर भी आपसी युद्ध टािना जरूरी भी था। इसलिए शीघ्रायतशीघ्र मौका साधकर नाना ने पेशिा के पास इस बात का स्पष्टीकरण ककया। उन् ोंनेपेशिा को राज्य की और स्ियिं पेशिा की, उनके जन्म सेिेकर आज तक जो यनष्ठापूिकस सेिा की, उससे अिगत कराया और म ादजी की म त्त्िाकाक्षिं से पररपूण सकारनामों से यहद पेशिा ने स्ियिं को पथ-विचलित ो जानेहदया तो उसके कैसे ेदुष्ुट्पररणाम ोंगे,े इसका भयप्रद धचत्र उनके सामने खीचिं। म ादजी की कोलशशेंयहद सफि ुई तो पररणाम हदल्िी के बादशा की तर पेशिा के भी म ादजी के ाथों का खखिौना बन जानेके रूप में ककस तर ोगा, य भी उन् ोंनेपेशिा को स्पष्ट बता हदया। मरिाा- मडिंके सविंधान में यहद इतना बडा पररितनस अचानक ी कर हदया गया, तो सभी ने लमिकर आज तक जो म ान् ्साम्राज्य खडा ककया ै, िे क्जसमें डूब जाएगा, ऐसा भयानक याद्िी सघिंष सयछड जाएगा और ह दिंूसत्ता का नाश करने के लिए ैदराबाद में प्रचडिं तैयारी कर र े मुसिमानों तथा म ाराष्ट्र का ह दिंू ूसाम्राज्य ध्िस्त कर देनेको सामथ्य सक्जनमें, मरिों के सभी प्रयतस्पधधयसों की तुिना में अधधक ै, उन अग्रिंजों को अनायास ी इसका मौका लमि जाएगा; िेकेकन अगर नाना पेशिा की नजर में धगर गए ैं और पेशिा उनके अधधकार िापस ी िेना चा ते ैं, तो उनकी तैयारी पदत्याग करने की भी ै। गद्गद स्िर में नाना ने पेशिा से क ा, "य मेरा त्यागपत्र िीक्जए। यहद इस कारण राष्ट्र की रक्षा ोती ो, अतिंयुद्सध टिता ो और आप प्रसन्न ोते े ों, तो आप इसे ेस्िीकार कर िें और इस सेिक को काशी-यात्रा पर जानेके लिए विदा दें। म ैंसबकुछ त्यागकर बचा ुआ समय िे ी िंबबताऊाँगा।" नाना का य मालमकस भाषण सुनकर पेशिा द्रवित ो उिे क्जसने मरिी साम्राज्य की स्थापना करनेके लिए जान की बाजी िगा दी, अपने उस मत्री की ममस्सपशी विनती सुनकर उन् ोंने क ा, "आपनेऐसा सोचा भी कैसे? वपता से ज्यादा स्ने करके आपनेमुझे ेपािा-पोसा। मेरे गुरु, सखा, मागप्रसदशकस आप ी ैं। पूरे राज्य का दाययत्ि आप पर ै। अगर आप चिे गए तो य राज्य खडिंडत ुए बबना न िींर ेगा।" नाना का िा किंवपत ो उिा, "म ाराज! आपके जन्म से न िीं, बक्ल्क आपके गभस्सथ ोनेके समा से ी अपना कतव्सय ध्यान में रखकर आपके राज्य की यनरिंतर सेिा करने तथा अपने प्रयत यनष्ठा रखने ेके कारण ककतने ी शत्रुओ िंका िैमैनस्य मेरे ह स्से ेमें आया ै, जो अब मेरी सेिा, मेरी यनष्ठा कौडी के मोि ो गई ै और मेरे शत्रु ुयथात ी ैं।"

उनके िचन सुनकर उदारमना पेशिा को ब ुत दुुःख ुआ। नाना की मरिी राज्य की सिेा का स्मरण करके नाना के प्रयत उनका आदर-स्ने और भी बढा। पेशिा नाना के गिे में ाथ डािकर भरे गिे से बोिे, "आप मुझे छोडकर मत जाइए। आप मेरे लिके मलत्री न िोंिरन् ्वपतातुल्य ैं। अगर मुझसे कुछ गिती ुई ो तो क्षमा कर दीक्जए। म ैंन आपको अपना अधधकार त्यागनेदूँगा, न ी आपको सबकुछ छोडकर काशी-यात्रा पर जाने दूंगा। म ैंआपको छोडगें ी न ी।ि"

इस तर पेशिा की तरफ सेभिापूण सआश्ासिन लमिने के बाद नाना के पक्ष के इतर नेताओ िंऔर ररपतिं फडके ने म ादजी से यों ी भेंट की। म ादजी चा े क्जतनेम त्त्िकाक्षिं ी ों, म ाराष्ट्र के स्थावपत ककए उज्ज्िि ह दिंू–साम्राज्य के प्रयत, दूसूरे स - कायकसताओस िंक्जतनी ी उनकी दृढयनष्ठा थी और उसका अपमान या उसका नाश करने के उद्देश्य से ककया जानेिािा ककसी भी अह दिंू ूका प्रयास विफि करने के लिए स्िय िंकी बलि देनेमें ि सबसे आगे ेर े ोते। म ादजी राघोबा दादा न ींथे। मरिी साम्राज्य का सूत्र-सचिंािन अपनोथ में रखने,े िकककन यादिी सघिंष सका प्रत्यक्षदशी बनने के लिए ि तैयार न ींथे। ि पेशिा की इच्छानुसार चिने के लिए एकदम तैयार ो गए। मारी आपसी स्पधास सेमारे शत्रुओ िंकी शक्क्त बढेगी और क्जस ह दिंू–साम्राज्य के प्रयत म सभी का इतना प्रेम ै, उसे ेब ुत ायन प ुँचेगी - य यनक्श्चत हदखनेके बाद भी आपनेराज्य के सभी कामकाज अपनोथ में िेनेकी कोलशशेंचािा रखी ैं। उधर य देखकर नाना ने, अपनेवप्रय राष्ट्र को आपवत्तयों को ढकेिने की बजाय नए राज्यों को जन्म देने या बने ुए राज्यों को धिू में लमिानेिािी अपनी िेखेनी नीचे रख देनेतथा स्िय िं अधधकारवि ीन ोनेका यनश्चय ककया ै। दोनों के वि ार का विरोधाभास ररपतिं फडके ि अन्य नेताओंने बातचीत के दरम्यान स जता सेम ादजी के सामनेस्पष्ट कर हदया।

म ादजी के मन पर तत्िाि ी इसका असर ुआ। उन् ोंने नाना और मवंित्रमडंििके उनके समथकसों का विरोध न करने का िचन हदया। अन्य अनेक अिसरों पर सामनेआए उदा रणों की तर इस बार भी मरिों के राष्ट्रीय नेता, ये दो समथ सपुरुष परस्पर लमत्रों की तर प्रेम से लमिे। पेशिा के चरणों में ाक्जर ोकर म ादजी और नानाजी ने ह दिंूधम सतथा ह दिंू–पदपादशा ी का प्रचार और रक्षा करनेिािी मरिा-मडंिकी तथा अपने स्िामी की अपने-अपनेकायक्षेसत्ेर में अखडिं सेिा जारी रखने ेकी प्रयतज्ञा िी।

उन दो म ापुरुषों का मनमुटाि दूरू ोनेऔर प्यारपिूकस एक-दूसूरे से लमिने की िाता से ेसमूचा म ाराष्ट्र आनहंदत ो उिा। म ाराष्ट्र के मेधािी और देशभक्त राजनीयतज्ञ गोविदिंराि कािे ेका लिखा पत्र इस बात का प्रमाण ै कक ह दिंू–काय सके ह तैषी इस िाता ससे ककतने खुश ुए। गोविदिंराि मरिा साम्राज्य की ओर से यनजाम राज्य में राजनीयतक प्रयतयनधध के रूप में यनयुक्त थे। उन् ोंनेनाना फणनीस को य पत्र लिखा था। उन् ोंने लिखा था, "(आपका) पत्र पढकर रोमाचिं ो आया। अयत सतिंोष ुआ। लिखनेके लिए पूरा ग्रथिं बन जाएगा-इतने विचार मन में आए, परिंतु पत्र में ककतना विस्तार से लिखा जाएगा ? अटक से िेकर म ासागर तक य ह दिंुस्थान ै, तुककस्तान न ी।ि पाडंिों से िेकर राजा विक्रमाहदत्य तक ने इसकी सीमा की रक्षा कर इसका उपयोग ककया, िेककन उनके उत्तराधधकाररयों की अकमण्सयता के कारण यिन प्रबि ो गए। बाबर के िंशजों ने क्स्तनापुर का

राज्य ि लिया। अतिंतः िओमगीर (औरिंगजेब) के राज में यज्ञोपीत धारण करने पर साढे तीन रुपए जक्जया (कर) देने तथा अभक्ष्य भक्षण की भी नौबत आ गई।

"उस कि में कैिासिासी लशिाजी म ाराज धमरसक्षक बनकर आए। उन् ोंने थोडे ेसे क्षेत्र् में धमरसक्षण ककया। उनके बाद कैिासिासी नाना सा ब ि भाऊ सा ब ऐसेप्रतापी सूय स ुए कक प िकभी न ुए थे। सप्रिंयत श्रीमतिं पेशिा के पुण्यप्रताप सेतथा राजश्री पाटीबिा (म ादजी) की बुद्धध और ितिार के पराक्रम से खोया ुआ सारा िैभि पुनः प्राप्त ो गया। पर य कैसे े ुआ? य सब स जता से प्राप्त कर लिया गया, इसका सतिोष ोता ै। यहद कोई मुसिमान (शासक) ोता तो बडे-बडे तिारीखनामे ेलिखे जाते। यिनों की जायत में इतनी सी सफिता का भी हढढोरा पीटा जाता ै। और म ह दिंुओिंमें आकाश क्जतनी बडी सफिता का भी उल्िेख न करने की परिंपरा ै। अब मारे पक्ष में इतनी बातें घहटत ो गई ैं कक यिन क निेंगे ैं कक 'काकफरशा ी' (कायम) ो गई ै।

"िेककन ह दिंुसुथान में क्जस ककसी ने भी लसर उिाया, पाटीबिा ने उनके लसर किम कर हदए। अिभ्य का िाभ ुआ। उनका बिंदोबस्त शककता सकी तर ोकर अब प्राप्त ुए का उपभोग करना ै। इससे प ि ेपता ी न ििंगता था कक मारी पुण्याई में क्या कमी पड गई ै और क ा ाँनजर िग गई ै। अब जो ुआ, उसमें लसफस भूलम, राज्य-प्राक्प्त ी न िीं ुई, िेदशास्त्रों की रक्षा, गो-ब्राह्मण प्रयतपािन ुआ, सािभौमत्ि लमिा, कीयत-सयश के नगाडे बज उिे, ये सब बातें ुई ैं। इसे ेसभाँािने का अधधकार आपका और पाटीबिा का ै। उसमें कोई व्यिधान आया तो दुश्मन मजबूत ोगा। अब सिंदे दूर ुआ, य ब ुत अच्छा ुआ। दुश्मन मारे पीछे ी ै। इसलिए चैन न िींथा। अब मन शातिं ुआ।"

उस समय के एक कुशि तथा ध्येययनष्ि कायकसतासका य पत्र ' मारे इयत ास की आत्मा का स्िरूप क्जतनी स्पष्टता और तथ्यपूण सिंग सेबताता ै कक उसके बाद लिखे गए और सैकडों उबाऊ ग्रिंथ भी न बता सकें।'

िेककन इस तर िोगों के मन में आशा-आशिंकाओं का तुमुि युद्ध जब चि र ा था, म ादजी बीमार पड गए और पुणे ेके पास िानिडी के अपनेलशविर में शा.स.िं १७१५ माघ शुक्ि१३ (१२ फरिरी, १७९३) को उनका दे ाितिं ो गया। पूरा म ाराष्ट्र शोकसागर में डूब गया। मरािों के सबसे शक्क्तशािी सेनापयत और नेता की मृत्यु ोते े ी उनके राज्य के विरुद्ध उनके शत्रुओ िंकी गयतविधधयाँपुनः आरिंभ ो गई। इस भयानक दुघुटसना से मरािों की कमर ी टूट गई ै, ऐसी खुशुफ मी उन् ोंनेपाि िी और मरािों के सभाँािने से प िी उनपर आक्रमण करने के लिए ि उिािे े ो गए। ह दिंूसत्ता ने ैदराबाद के अपने क्जस दुश्मन (यनजाम) पर अरसेसे अपना यनयत्रिंण रखा और उसे ेमात्र अपना मनसबदार बनाकर रख हदया था, उसने भी मरािों से प्रयतशोध िेने की बडी तैयारी शुरू कर दी। प ि ेज ा ाँउसके पास दो प्रलशक्षक्षत सेनापथक थे, ि ा ाँअब फ्ािंसीसी योद्धाओ िंके नेतृत्ि में प्रलशक्षक्षत तेईस सेनापथक ो गए। यनजाम का प्रधान मशीर-उि-मुल्क बडा म त्िाकािंक्षी था। म ादजी के नेतृत्ि में मरािों द्िारा प्राप्त की ुई प्रभुसत्ता उसे फूटी आखाँों न िींभा र ी थी। ैदराबाद की मुसिमान प्रजा यनजाम की प्रयतशोध की तैयारी से जोश में आ गई और सािजसयनक स्थानों पर चचास ोने िगी कक काकफरशा ी का जल्दी ी अित ोनेिािा

ै और जल्दी ी पुणे पर मुसिमानों की पताका फ राएगी। उनपर युद्ध का भूत सिर ो गया। यनजाम का प्रधान मशीर उद्दिंडता की द पार कर चुका था। मरािों के ि ााँके प्रयतयनधध ने उससेचौथ चुकाने की मागाँ की, तो उसनेशत सरखी कक य मागाँ खुद नाना को ैदराबाद आकर करनी चाह ए। इतना ी न िीं, 'जो अगर खुद नाना न िींआया तो म ैंजल्दी ी उसे ेपकडकर य ााँिाऊाँगा।' ऐसी शेखी बघारने से भी ि बाज न िींआया। मामिा डिाई तक प ुाँचने के लिए ऐसे उदिंड उपािभिं भी कम पडगें, मानो य ी सोचकर यनजाम ने राजसभा में एक प्र सन आयोक्जत ककया और उसमें जान-बूझकर दूसूरे राज्यों के प्रयतयनधधयों को भी आमबिंत्रत ककया। समारो में अपने सिैकों दस्तकों के जररए उसने नाना तथा सिाई माधिरिा के स्ािगाँ पेशे ककए और उनका मजाक उडाया गया।

ये स्ािगाँ देखकर मुगि राजसभा में ाँसी के फव्िारि छूटने िगे। अपनेआदरणीय नेताओंिका य उप ास मरािों के प्रयतयनधध गोविदिंरािा वपर्गिेतिथा गोविदिंरािा किो ेको स न न िीं ुआ। उन् ोंने इस उद्दाम प्रदशनस का तीव्र यनषेध ककया। आखखर गोविदिंरािा किो ेउिि और उन् ोंने मशीर को धमकाया। ि बोि,े "मशीर-उि-मुल्क, याद रख, कई बार मारे नेता नाना को राजसभा में खीचिंकर िानेकी डीर्गें तुमने ाकीं ैं और आज राजसभा में उनका स्ािगाँ पेश करनेकी जुरुसत भी की ै! अब मेरी प्रयतज्ञा भी ध्यान से सुन िे। अगर मनेतुझे क्जदिंा पकडकर ह दिंं–ूसाम्राज्य की राजधानी पुणे ेमें घुमाकर

तेरी दुदुसशा न िींकी, तो मेरा नाम गोविदिंरािा किो ेन ी।ि" ऐसेभविष्योद् गारों से प्रयतज्ञा कर मरािा प्रयतयनधधयों ने उस समारो का बह ष्कार ककया। पुणे िौटकर उन् ोंने पेशिा से यनजाम के साथ युद्ध करने की विनती की। अग्रेंज मध्यस्थता से दोनों पक्षों को शातिं करने की बातें कर इसमें अपनी नाक घुसडेने िगे,े िेककन उन् ें ऐसी मु ाँ की खानी पडी कक मरािों के मामिे ेमें ाथ डािनेकी कल्पना तक उन् ें छोड देनी पडी। यनजाम ने उनकी ब ुत लमन्नतें की,ि िेकेकन मरािों के खखिाफ अगुाँिी उिनेका सा स अग्रेंजों को न िीं ुआ। तब यनजाम युद्ध की जबरदस्त तैयारी में जुटु गया। मुसलिम प्रजा की धमभसिानाएाँभडकाकर उन् ें युद्ध के लिए उकसाया गया। दूरू-दूरू के मुसिमानों की भी स ानुभूयत प्राप्त की गई। प्रत्येक मुसिमान युद्ध की क्ज ाद की बातें करने िगा। पुणे े नगर को अक्ग्न-लशखाओ िंसे दग्ध करके राख के ढेर में तब्दीि कर देनेका सकिंल्प ककया गया। आम जनता के ये

इनासूबे उनके प्रधान मशीर- उि-मुल्क की शेखेखयों के सामनेफीके थे। ि गुमान भरे स्िर में बोिा, "मनैं दुषुट्ट मरािों के लशकिंजे से मुगिों की मेशा के लिए मुक्क्त करने की प्रयतज्ञा की ै। जब तक उनके जिन ब्राह्मण पेशिा को िाँगोटी प नाकर, ाथ में कटोरा िेकेर काशी की गलियों में भीख मागाँने के लिए मजबूर न करूाँ, तब तक मुझे ेचैन न िींलमिेगा।"

इस तर ैदराबाद का प्रधान शेखखयााँबघार र ा था और ि िींह दिंं ूसाम्राज्य का मत्रिंी शातिंधचत्त ोकर अपनी सेना की रचना िििं युद्ध की तैयारी करने में जुटा ुआ था। मरािों के सबसे ताकतिर सेनापयत म ादजी परिोक लसधार गए थे। तब भी मरािों ने ह म्मत न िींारी और आनेिािी सकिंट का मुकाबिा करने के लिए िे तैयार ो गए। इस मौके पर नाना की अद्वितीय बुद्धधमत्ता अपिू सउज्ज्िता से प्रदलशतस ुई। अपनेिोगों पर उनका अधधकार भी अपिू सप्रखरता से दृक्ष्टगत ुआ। चारों ओर फैिे ुए विस्तृत मरािी साम्राज्य की राजधायनयों

से सेनापथक उनके एक िबिु से एकत्र ोनिेगे। नाना की चतुराई के कारण मरािा-मडिं के घटक आपसी अनबन भिुाकर इकट्ठे ो गए। मरािों का जग-प्रलसद्ध जरीपटका और भगिा ध्िज पुणे में खडा ककया गया और ह दिं–ूपदपादशा ी के सम्मान के प्रतीक केसररया ध्िज की मूयतमसान आशा के इदसधगदस देश के सुदरू अचंिों से मरािी राज्य की सेनाए ँइकट्िा ोनिेगी।ं आगरा के रक्षक जीिबादादा बक्षी तथा उत्तर में पिानों, रु िों और तुकों को सबक लसखानिेािेम ादजी के उत्तराधधकारी दौितराि लशदंे को भी ि ाँससैन्य आमबंित्रत ककया गया। तुकोजी ोिकर अपनेसरदारों के साथ प ि े ी प ुाँच चुके थे। अपने सशक्त अश्िदि के साथ रघुजी भोंसिे ेभी नागपुर से यनकि पडे। इस राष्ट्रीय सघिंष समें अपना योगदान देनेके लिए बडौदा से अपनेपथकों के साथ गायकिाड भी ाक्जर ुए। नाना के िबिु पर पटिधनस और रास्ते,े राजब ादरु और विचिंूरकर, घाडगे ेऔर चौ ान, डफिे ेऔर पिार, थोरात और पाटणकर - मरािों के समथ सअधधकारीगण तथा सेनानायक ि ाँतुरंत ाँउपक्स्थत ो गए।

इस विशाि सेना-समू के अगुआ बनकर खुद पेशिा यनकि पडे। यिुा पेशिा का इस तर नेततृ्ि करने का य प िा ी अिसर था। इस बार अपना वप्रय पेशिा अपने साथ ै-य जानकर मरािी सैयनकों में विक्षण उत्सा सचंाररत ो गया। य उस सेना में सबकी उत्सुकता और अलभमान का केंद्र ो गया। यनजाम प िी बार रणक्षेत्रे में उतरा। यनजाम की सेना भी विशाि थी। आधुयनक तकनीकों से सुसक्ज्जत तोपखाना उसके पास था। अश्िदि और पैदि लसपा ी को लमिाकर उसकी सेना की सख्ं या एक िाख दस जार के ऊपर थी। उसका सैन्य-सामथ्य सऔर उसके साथ मुसिमानों का धम सकी खायतर मर लमटने ेका जोश दोनों का ऐसा प्रभाि मुसलिम सेना पर पडा कक िे अपनी जीत यनक्श्चत मानने िगे। यद्यवप सीमा-प्रांतों की सुरक्षा ेतु मरािी सेना की कई टुकडडया ाँ रख छोडनी पडती थीं, कफर भी मरािों की ि सेना एक िाख तीस जार के आस-पास जा प ुाँची थी। म ाराष्ट्र की सीमा पर परादंा नामक स्थान पर ये दोनों सेनाए ाँआमने-सामनेआईं। नाना खुद कुशि रणनीयतज्ञ थे । कफर भी अपनेअनुभिी सेनापयतयों सेउन् ोंनेसेना की रचना के विषय में उनकी लिखखत राय मागँी और उसमें से जो उन् ें श्रेष्ट्ठतम िगी, िैसी रचना उन् ोंनेकी। परशुराम पटिधनस को सयंुक्त सेना का उसी के अनुसार सेनापयत यनयुक्त ककया। दोनों सेनाओंके दस्ते एक-दसूरे की बदंकूों की मार की सीमा में आते े ी युद्ध आरंभ ो गया।

शुरुआत के एक-दो िमों में पिानों ने मरािी सेना की इक्का-दकुका टुकडडयों को पीछे टा हदया। इन पीछे टुकडडयों में से एक में परशुराम भाऊ थे, जो उस समय सेना का यनरीक्षण करने यनकिेथे। इस मामिूी बात को मुसलिम सेना में प्रचडं विजय का म त्त्ि हदया गया, िेकिन प्रमुख मरािी सेना का सामना ोते े ी यनजाम को अपनेसमाज की भिू का ए सास ुआ। चुयनदंा पचास जार सैयनकों के साथ मो म्मद अिी खान ने जबरदस्त आिेश में मरािों पर मिा ककया। भोंसिे ेके नेततृ्ि की सेना ने गोलियों की भारी बौछार से उनका स्िागत ककया। इतनेमें लशदंे की तोपें बाजू सेउनपर आग बरसानिेगी।ं दोनों पक्ष बडी दृढता से िडे, िेकिन मरािों के दोतरफा मिे में मुसिमान सेना इस कदर जकडी गई कक 'अल्िा ो अकबर' के जयघोष से सेना को प्रोत्सा ह त करने की कोलशशों के बािजूद अपनी जग हटके र ना मुक्श्कि ो गया। उनका अश्िदि तो पूरी तर से नष्ट ो गया।

मरािों ने जैसे े ी आगे ेबढकर उन् ें घेरा, िैसे ी मुसिमानी सेना में भगदड मच गई। यनजाम तो द शत के मारे रण छोडकर भागने िगा। तभी उसकी ककस्मत से रात यघर आई और उसके अधेँरे में ि यछप सका।

सधिंष सपूरी रात चिता र ा। पररणामतः मुसलिम सेना में इस कदर ाय-तौबा मच गई कक बडे-बडे मौिवियों द्वारा-य धमयुसद्ध ै-ऐसा आश्वासिन हदए जाने के बावजूद इन धमयसनष्ठों की सेना अपनी ी छावनया ँिूटकर जल्दी-से-जल्दी ि ाँसे भागने की कोलशश में िग गई। परिंतु मरािों से पीछा छुडाना आसान न िीं था। मरािों ने जल्दी ी िूट का उनका बोझ िका कर हदया। सुब का उजािा फैिते ी नजर आया कक यनजाम ने खरडा गािँ के ककिे की दीवारों के पीछे आश्रय िे रखा ै और बची ुई करीब दस जार सैयनकों की सेना उसे ेघेरकर युद्ध के लिए तैयार खडी ै। अब मरािों ने अपने तोपखाने का इस्तेमाि करने का यनणयस लिया और आस-पास की प ाडडयों से तोपगोिों की बौछार शुरू कर दी। मुसिमानों ने जैसे–तैसे दो हदन मुकाबिा ककया। तोपगोिों से यनजाम की न लसफस दाढी, बक्ल्क उसका मनोधैय सभी झुिसने िगा। आखखरकार तीसरे हदन तृषा पीडडत, अक्ग्नगोिों के धुएँ से दम घुटे और आग से झुिस गए मुसिमान सैयनकों ने मरािों से युद्ध समाप्त करने की विनती की।

मरािे उन् ें ऐसे ी छोडनेवािे न िीं थे। उनकी विनती के एिज में मरािों ने शत सरखी, "प िे ेमशीर-उि-मुल्क को उनके िािे ककया जाए। बाद में ी कुछ बातचीत ो सकेगी। उसनेबडी उद्दिंडता से मरािों के प्रयतयनधध का ी न िीं, अवपतु प्रत्यक्ष म ाराष्ट्र साम्राज्य के अधधपयत का जो उप ास उडाया और अपमान ककया ै, उसकी उसे ेभरपाई नाक रगडकर करनी ोगी।" तब मजबूर ोकर यनजाम ने अपने विश्वासिपात्र मंत्री मशीर-उि-मुल्क को मरािों को सौंप हदया और मरािों के करारनामे ेपर स्ताक्षर करने की स मयत दे दी। उसे ेपरािंडा से िेकर उत्तर में तापी नदी तक का सारा प्रांत मरािों के अधीन करना पडा और भोंसिे ेको अिग से उनतीस िाख रुपए देनेके अिावा युद्धक्षयत के मुआवजे ेऔर चौथ के रूप में तीन करोड रुपए अपनी गािँ से ढीिेकरने पडे। पुणे को िूटकर जिाने तथा पेशवा को काशी भेजकर घर-घर भीख मागँने के लिए मजबूर कर देनेको यनकिे उस 'वीर' को मरािों ने संधि के इस करार पर स्ताक्षर करिा िेने के बाद ी उसकी राजधानी में िौटनेहदया !

मशीर-उि-मुल्क को विजयी 'काकफरों' की पक्क्तियों के बीच से सेनायनिास की ओर िे जाया गया। बंदी अिस्था में जब उसे ेसेनायनिास िे जाया जा र ा था, तो मरािों की ' र- र म ादेि' की विजय-घोषणा से आसमान गूँज उिा। अपने मंत्री नाना को कैद करने की डीगें ाकँनेवािे को उन् ोंने बंदी बना लिया था। अपने प्रयतयनधधयों की प्रयतज्ञा उन् ोंने पूरी की थी, िेककन उदारमना पेशवा और उनके मंत्रियों ने जीते े ुए शत्रु ुके साथ सम्मानजनक व्यि ार ककया। अगर उन् ोंनेिान लिया तो िे पुणे ेमें उसे ेदर-दर घुमाकर उसका जुिूस यनकाि सकते ैं - य लसद्ध कर देनेके बाद उन् ोंने उसका और अधधक अपमान न िीं ककया। नाना ने उसे ेक्षमा कर हदया। अपराधधयों को दंड देनेकी सामथ्य सअपनी भुजाओंमें ै-इसका ए सास करा देने के बाद मरािे ब ुधा ऐसा ी व्यि ार करते े ैं।

इसके पश्चात् ्अपने अधधकाररयों के साथ पेशिा के राजधानी प्रिेश को समारो का स्रूप प्राप्त ुआ। अपनिेाडि ेपेशिा एिं ियोद्धाओं का स्ागित करने के लिए सुदूरू प्राितों से िोगों के जत्थे-के-जत्थे पुणे ेकी तरफ आनिेगे। पुणे नगर की सजिाट देखते बनती थी। पेशिा का ससैन्य प्रिेश ोते े ी पुणे नगरी ने अपनेविजयी पुत्र का भव्य स्ागित ाहदसकता से ककया। ह दिंसु्थान की इस सिाधसधक धनी राजधानी के राजम िों की छतों और झरोखों से नाररयों ने पेशिा, सेनानायक तथा शूरीरों पर मगिंपुष्पों की िषा सकी। मगिंआरयतयों के सजे ेथिा िकिर युियतयों ने अपने पेशिा की आरती बडी श्रद्धा से उतारी। इस तर प्रजा के द्ारा ककए गए भव्य स्ागित और उनकी बधाइयों को स्ीकिार करते े ुए पेशिा शयनिाररडे की तरफ बढे। ह दिंू–साम्राज्य की इस राजधानी के चारों ओर अत्यतिं पराक्रमी सेनोनायकों एिं िगण्यमान्य देशी नरेशों में से प्रमुख िोगों को अपनी विजयी सैन्ैय टुकडडयों के लिए विस्तीण सस्थान हदया गया था। उनकी छिायनयों का दृश्य अतीत के ह दिंू–साम्राज्य के उन भाग्यशािी हदनों की याद हदिाता था, जब प्रतापी नाना सा ब पेशिा शासन करते ेथे ेऔर िीर पुरुष भाऊसा ब अपनी विशिा सेना की व्यिस्था करते ेथे।

कुछ समय के लिए म उन् ें य िींविश्राम करनेदेते े ैं और पेशिा को भी अपनी स्ामीयनष्ट्प्रजा की आिभगत का उपभोग करने ेतु य िींछोड देते े ैं। म ान्,् शक्क्तसपिंन्न, यशस्ीी मत्रिी नाना फणनिीस को भी शत्रु ु से जीते े ुए विशिा भूखडिं तथा सपिंवत्त का बटाँारा मराा-मर्डिं के विलभन्न घटकों में करने, ककसी की ब स सुनने, ककसी की व्यिस्था करने, ककसी की मागाँ का फैसिा करने, राजनीयतक समस्याओं को सुिझाने एिं प्रातिंधधकाररयों, प्रयतयनधधयों तथा सेनानायकों के साथ िैभिशािी ह दिंू– साम्राज्य की िृद्धध, रक्षा के सदिंभ समें भािी काय-सयोजनाओंपर विचार-विमश सकरने य िींछोड देते े ैं। म ाराष्ट्रिलसयों को भी बडेधैय से अक्जतस की ुई विजय का आनदिं मनाने में व्यस्त र ने देते े ैं। भाटों और राजकवियों को उनके पूिजसों एिं उनकी सतिंयतयों के बेजोड शौय सकी गाथा सुनाने ेतु य िींर ने देते े ैं। उनके रधचत पिाडे (िीर-गान) तथा पराक्रम गीत इतने ममस्सपशी ोते े ैं कक उन् ें सुनकर आज भी मरािी व्यक्क्त पुिककत ो उिते े ैं, उनकी आखोंं नम ो जाती ैं और उनकी नसों में िीर-भािना का सचिांर ोनिेगता ै। खरडा की विजय का िणनस कररनेिाा कोई भाट नया रचा पिाडा यहद ककसी चौरा े पर श्रिणोत्सुक जनसमुदाय के सामनेगानिेगता और उसमें िखणतस ि प्रसगिं देखा ुआ कोई िृद्ध मरािा अपना नामोल्िेखि या अपनी टुकडी की पराक्रम-गाथा गाए जाते े ी उस आश्चयचसककत जनसमू में फुरती से खडा ोता और अपनी पूछाँों पर ति देनिेगता। म ाराष्ट्र का ककसान भी नाना के शासन पर भरोसा रखकर यनक्श्चतिं ो गया ै। जब तक नाना ैं, तब तक मेरे पररश्रम का फि मुझे े ी लमिेगा, उसे ेकोई न िींछीनेगा अथिा कोई भी सकिंट न िींआएगा- य उसका दृढ विश्ासि ै। ऐसेसतिुंष्ट ककसान को भी म यनक्श्चतिंता से अपना ि चिाते ेय िींछोडते े ैं। उन दिेमहिंदरों को भी यनभयसता से अपने लशखर और उन्नत करने के लिए य िींछोडते े ैं। ज ा ाँपूजा-सामग्री िेकेर िाखों भक्तों के मिे िगे ुए ैं। सतिंों, तीथयसाबत्रयों और सन्यिालसयों को ररद्ारि से िेकर रामेश्रिम् ्तक सिश्ेरेसष्ट्हि दिंधूम सके नीयत तत्त्ीि का प्रचार करते े ुए, भजन करते े ुए यात्रा करने दें अथिा समाधधस्थ ोनेदें। क्जन दानशूरों ने पुराने शास्त्रों को तथा विद्याभ्यास को प्रोत्सा न देनेके लिए धनरालश प्रदान की ै और उसके कारण क्जनके योगक्षेम की व्यिस्था ुई ै, ऐसेप्रकाडिं पडिंडतों तथा छात्रों को उन मिों में अथिा म ाविद्याियों में अध्ययनरत र ने दें। प्रत्येक नौसैयनक या भूसैयनक

को अपनी यिुा पत्नी अथिा िृद्ध माता को जि में या थि पर ककए अपनेपराक्रम की क ायनया ाँसुनाकर और उसके पुरस्कारस्िरूप शत्रु की रणनौका से या सेना की छािनी से जीतकर िाई गई सपंवत्त में से अपना ह स्सा सोनेया मोती का ार उन् ें हदखाकर गि ससे अपनी छाती फुिाते र ने दें। राजधानी, नगर, ग्राम-समूचे ेराष्ट्र को उनके पूिजसों की पीढी-दर-पीढी के पररश्रम से तथा अपनी पात्रता लसद्ध कर प्राप्त ककए गए राष्ट्रीय ऐश्ियि सऔर स्ितिंत्र्यि का सुखोपभोग करने दें। यद्यवप य ज्ञात ै कक य पररक्स्थयत थोडे े ी हदन तक र ने िािी ै-और िाकाँक इस भव्य ह दिंू-साम्राज्य के भाग्य में जल्दी ी आनेिािीआकक्स्मक पतन का दृश्य देखने ेकी भी उसकी तैयारी ै-तब भी िैभि के सिोच्च लशखर पर जा प ुाँची जनता की कल्पना को उस स्थान पर ी हटके र ने की इच्छा ोती ै। इसलिए जब तक ि समय गुजर न ीं जाता, तब तक उसे ि ीं आनदं का उपभोग करते ेर ने दें।

इसी बीच म ाराष्ट्र के आधुयनक इयत ास का जो सक्षंक्षप्त मूल्यांकन मने ककया, उसका अखखि ह दिंसु्थान के विस्तृत गौरिशािी इयत ास से क्या सबंधं ै, इसका लस ंिािोकन म करेंगे। य इयत ास िास्ति में भारतीय इयत ास का ी एक अविभाज्य तथा अनुपेक्षणीय अध्याय ै।

ध्येय

'स्वामी हहन्दुराज्यकायिुमरन्रिः राज्याशभवृद्धिकतःत तुम्हा लोकाचिं अग्रिंजणीनेपावले े। सम्पूण महहन्दुसु्थान तनरुपद्रव राहे ते सम्पूण मदेशदगु महस्तवश्य करुन वाराणशीस जाऊन श्रीववश्वेश्वर स्थापना करीतात ।'

- रामचद्रंपतं अमात्य

(- े ह दिंू ूराज्य के कुशि शासन-सचंािक तथा राज्य का सिंधनस करनेिािे स्िामी ! आपके आशीिादस से मने सबकुछ पा लिया ै। समूचे ह दिंसु्थान में सुव्यिस्था स्थावपत ोकर पूरा राष्ट्र उत्पात मुक्त ुआ ै। सभी दुगों पर मनेअपना परचम फ राया ै और िाराणसी में भगिान् ्विश्िेश्िर की स्थापना का काय सभी ुआ ै।)

मरािों का इयत ास अपनी एक अिग प चान बना चुका ै। ि अपनेआप में चा े ककतना भी सपंन्न ै; िेककन समूचे ेह दिंसु्थान के इयत ास का ि अ म अिग भर ी ै। मरािा इयत ास का लस ंिािोकन करने के पीछे मारा य ी उद्देश्य र ा ै कक अब तक जो भी गयतविधयााँ ह दिंसु्थान के इयत ास में घहटत ुईं, उनमें से कुछ प्रमुख घटनाओंपर प्रकाश डािकर म ाराष्ट्र का िंािाचसीन इयत ास और अखखि ह दिंू ूजातीय ह त-सबंधंों का विशद िणनस करना तथा उन् ें ह दिंसु्थान के इयत ास में उधचत दजासहदिाना। इस उद्देश्य-पूयत सके लिए मरािा आदंोिन का प्रेरणास्रोत और क्जस प्रेरकशक्क्त ने उन् ें शक्क्तशािी ह दिंू-साम्राज्य की स्थापना करने के लिए शत्रु ु

से िो ा िकेर आत्मा ुयत देने के लिए प्रेरेरत ककया, उसका इयतिृतूत सक्षिंक्षप्त रूप से िणनस करना आिश्यक था। मरािों के इयत ास के दो भाग ैं। एक बािाजी विश्िनाथ के अितररत ोने तक का और दूसूरा मरािा-मडिंकी स्थापना के पश्चात् ्का। इस इयत ास के पूिभसाग में घटी ुई घटनाआिोंकी जानकारी म ाराष्ट्र के बा र के िोगों को ज्यादा थी और उत्तरभाग के इयत ास सेपूिभसाग में घटी ुई घटनाआिोंका उनके मन पर ज्यादा असर ुआ था। अतः िे पूिभसाग की ज्यादा प्रशसिंा करते ेथे। श्री रानडेआहद विद्िान् ्िेखेकों ने लशिाजी म ाराज तथा राजाराम म ाराज के कम-सकौशि का िेखा-जोखा िोगों के सामने रखा। मनेभी उस काििखडिं की प्रमुख घटनाओ िंकी एक झिक मात्र हदखाई ै। इसका कारण ै जग का अभाि। िााकाँक इस सक्षिंक्षप्त कथानक में मनेउत्तरभाग का इयत ास विस्तृत रूप में िणनस करने का प्रयास ककया ै, कफर भी ि सक्षिंक्षप्त ी र ा। उत्तराद्धस से इस इयत ास का स्िरूप विस्तृत ो जाता ै। मरािों के इयत ास का मतिब म ाराष्ट्र का इयत ास - ऐसा उसका सकिंुधचत रूप बदिकर अखखि ह दिंसुथान के इयत ास का स्िरूप उसे ेप्राप्त ोता ै।

मनेइस इयत ास का लस िंि ोकन करते ेसमय, पीढी-दर-पीढी क्जन लसद्धाितों के कारण ि प्रज्िलित र ा, उनके बारे में और क्जन विचारखडिंों एि िंकायकसताओिसं ने इस आिदंिनि का नेतृत्ि ककया था, उनके ेतुओ िंके बारे में आिश्यक जानकारी उन् िंकी भाषा में देने का प्रयास ककया ै। ये पराक्रमी पुरुष पुश्त-दर-पुश्त कुछ िोस कायकमकरनेमेंउन् ोंनेअपना जीिनाइसकेकर राष्ट्र भवितव्य-यनमाणस समवपतस ककया था कक अपने काय सका बखान करने के लिए शब्दों का स ारा िेनेकी बजाय िे अपनेकाय सद्िारा ी उसे ेव्यक्त करना पसदिं करते ेथे। लमतभाषी ोते े ुए भी उनके उद् गार जिीट एि िंप्रभािशािी ैं। अब म उस म ान् ्उद्देश्य के बारे में बताने जा र े ैं, जो खुद-बखुदु उनके कृत्यों द्िारा लसद्ध ो चुका ै, ि था- ह दिंजूायत की अह दिंओु िंि परकीय दासता से तथा धालमकस उत्पीडन से मुक्त करके सुदृढ ह दिं ूसाम्राज्य की स्थापना करना। इस म ान् ्िक्ष्य की पूयत स ेतु न किेि लशिाजी म ाराज और समथ सस्िामी रामदास, बक्ल्क उनकी उत्तराधधकारी पीहढया ाँअपना जीिन अवपतस कर चुकी थी।िे अपनेसामथ्य से ह दिं ूसस्िंकृयत और ह दिंधूम सकी रक्षा करने में िे सतत प्रयासरत र े। श ाजी म ाराज ने स्िधिमरसाज स्थापना का जो स्िप्न देखा, तब से ी इस म ान् ्उद्देश्य-पूयत सके लिए आिदंिनि प्रारिंभ ो चुका था। लशिाजी म ाराज भी बचपन से ी इस ध्येय के प्रयत यनष्ठाािान् ्थे-य उनके द्िारा साधथयों के साथ िी गई ह दिं ूसाम्राज्य स्थापना की कसम से स्पष्ट ोता ै। इस आिदंिनि का प्रिा बाजीराि का ह दिं–ूपदपादशा ी की स्थापना का सकिंल्प और उसके बाद पेशिा के मेधािी प्रयतयनधध गोविदंिराजी कािो ेने शा.स.िं १७१७ (ई.स. १७९५) में क्जस राष्ट्र का 'य ह दिंसुथान ै, तुकसस्तान न ीं' ऐसा िणनस ककया, तब तक अविरत ब ता ुआ म देख सकते ैं। इस तर पीढी-दर- पीढी ह दिं ूसाम्राज्य की स्थापना की धुन सिार ो चुकी थी। स्िततिंत्रता का भौयतक लसद्धाितं रूपी गरुड स्िधिम सऔर स्िराज्य रूपी दो पखिं फैिाकर एक शताब्दी तक इस देश में मडाँराता र ा और उसके इच्छानुरूप एक सामथ्यशसािी राष्ट्र की स्थापना ुई। इस आिदंिनि ने राष्ट्रीय म ाकाव्य का स्िरूप धारण ककया। य एक-दो व्यक्क्त या एक-दो राज्यों एक सीलमत न ीं र ा। य तथ्य अन्य भाषाभाषी पािकों तक प ुँचाना ी इस लस िंि ोकन का मुख्य उद्देश्य ै। स्िततिंत्रता का य युद्ध लशिाजी म ाराज और समथ सरामदास स्िामीजी की पीढी तक सीलमत न ीं था। उनके पश्चात् ्की पीहढयों ने य म ान् ् काय सजारी रखा। उन् ोंनेउसे और मजबूत ककया। सहदयों तक िगातार विस्तृत ोनेिािी रिंगभूलम पर ह दिं ूराज्य

की गैररक ध्जिा ति इस म ान् ्नाट्याविष्ट्कार में शालमि ोनिीनर-नारी, पराक्रमी पुरुष, कुशि मत्रिी, किमिीर और खड्गिीर, राज्यकते ेएकत्र ोते े ैं और जैसे-जैसे ेइस नाट्य का कथानक रिंग िाता ै, िैसे-िैसे य राष्ट्रीय म ाकाव्य िीरत्ि से अधधकाधधक सराबोर ोनिेगता ै!

'मरिाा-मडिंि' नामक राष्ट्रीय सगिंनि, जो मरिाों की अित:स्फूयत से बना ुआ था, पर नजर डिाते ुए में यनस्सदिें यकीन ोता ै कक य आदिंोिनि मरिाों तक ी सीलमत न िीं था, बक्ल्क जल्द ी ि अखखि राष्ट्रीय स्रूिप प्राप्त कर चुका था। इतना ी न िीं, उस आदिंोिनि के कारण ह दिंसुथ्ान की राजनैयतक सोच तथा व्यि ार-दृक्ष्ट्ट और भी सुदृढ ो गई थी। ह दिंसुथ्ान के आधुयनक इयत ास में विलभन्न घटकों से बना ुआ ऐसा एक राष्ट्र-मडिंि िसेिस्िाइनिा राष्ट्रीय मडिंि था क्जसमें विलभन्न घटकों के कायकसता सराजकीय
ह तसबिंधिों की रक्षा आपसी मिे से तथा अपना उत्तरदाययत्ि समझते े ुए करते ेथे। य राष्ट्र-मडिंि जिनतत्रिात्मक शासन पद्धयत का आदश सनमूना था। इसके कायकसताओसिं में एकता की भिाना कूट-कूटकर भरी ुई थी। य एकता अबाधधत रखने ेके लिए आचार सहिं ता बनाई गई थी। सभी घटकों के कुछ कतव्सय थे, े क्जम्मेदाररया ाँथी, िं उन् ें कुछ अधधकार भी थे। य तो यनविििसाद तथ्य ै कक जो जनता विलभन्न घटकों से बने ुए सगिंनि के त त लशक्षक्षत ोती ै, ि व्यक्क्तगत राजसत्ता के त त प्रलशक्षक्षत जनता की अपेक्षा अधधक कुशिता और स जता से जनतत्रिात्मक शासन प्रणिािी में अपने आपको ढिा सकती ै। अिाचसीन इयत ास में ऐसी राजसत्ता का अत्युत्कृष्ट्ट उदा रण ै लसखों का! मरिी राजसत्ता और लसखों की राजसत्ता-दोनों पर तिुनात्मक नजर डिानेके बाद य पता चिेगा कक म ाराष्ट्र-मडिंि क्जतना लसख मडिंि प्रणिािीबद्ध न िीं था। अतः ि दीघकसाि तक अपना अक्स्तत्ि न िीं हटका पाया। कफर भी य ााँउसका उल्िेख आिश्यक ै, क्योंकक ि भी म ाराष्ट्र-मडिंि क्जतना ी देशभक्क्त की उदात्त भिानाओिंसेप्रेररत था।

मरिाा-मडिंि का राष्ट्रीय तथा अखखि ह दिंू ूस्रूिप इस सक्षिंक्षप्त कथानक में प्रमुखता से िणनस करते े ुए में म ाराष्ट्र में चि र े अतिंकसि ों का पूरी तर से अ सास ै। इस आदिंोिनि ने व्यापक स्रूिप धारण कर लिया था। कफर भी इसके सभी कायकसतास र िक्त सिाजसयनक ह त अथिा अखखि ह दिंजूायत के कल्याण को ी म त्ि देते ेथे- ऐसा न िीं था। कभी-कभी इस आदिंोिनि पर आपसी कि ों का असर पडता था। असलियत य थी कक मरिी ह दिंू ूप ि े थे, मरिाा बाद में। अतः विलभन्न जाययतयों में पाए जानिेािेगुण-दोष, सामथ्य सअथिा दुबििसताए ाँ कुछ मात्रा में उनमें भी मौजूद थी।िं उनकी विलभन्नता को अलभन्न बनाने िाि ेकारण थेउनकी मातृभूलम पर मुसिमानों का प्रिेश, अन्य परकीय धम सका उनके धम सपर ोनिेाा अयतक्रमण और अपनेधम सकी रक्षा- ेतु प्रबि ुई एकता की भिाना तथा पराक्रम करने का अदम्य उत्सा -ये गुण ह दिंजूायत में ब ुत ी कम मात्रा में उपिब्ध थे। य ााँम ाराजा पृथ्िीराज और मु म्मद गोरी के समय में दोनों पक्षों के गुणों अथिा अिगुणों की तथा सबिता और दुबििसता की तिुना करना उधचत न ी।िं कफर भी ह दिंू ूऔर मुसलिम - दोनों प्रयतद्िंद्वियों की, राजनैयतक और धालमकस विस्तार के सदिंभ समें, कैसी विचारधारा थी, इसका क्जक्र करना आिश्यक ै। मुसिमान धम सप्रसार करने के लिए ह दिंसुथ्ान आए थेऔर य समाज इस कदर धमाडसबिंरी था कक छि-कपट से अपनेधम स के प्रयत विश्िासि जाग्रत् ्करना उसका मिूभूत लसद्धातिं था तथा दूसूरे धमों को ीन समझकर उन् ें नरक-प्रिेश

का द्रि बताने में ि जरा भी न िींह चककचाता था। पूरी दुयुनया पर अकिे ेअपने अल्ाि का एकच्छत्र राज ै- ऐसी उसकी धारणा थी। ह दिंू ूसमाज की धालमकस मान्यताए ाँइसके एकदम विपरीत थी।िं ह दिंूधूम सके अनुसार, अपना धममसत दूसूरों पर िादनेकी कल्पना भी यनदिंनीय थी। धम-सप्रसाराथ सदूसूरों पर बि प्रयोग करना तो दूरू, क्जनका जबरदस्ती धमातांरण ककया गया, उन् ें अपने धम समें कफर से शालमि करना क्जन् ें गाँारा न िीं, सिाजसयनक उपासना-पद्धयत की बजाय व्यक्क्तगत रूप से अपनेघर में ी इष्ट्ट दिता की उपासना करना क्जन् ें पसदिं ै, क्जस समाज में अपने धम सको असाधारण मानकर अपनी धममसतों का आदर ि सरिंक्षण करनिाि

ेसमिंकितिपनेसाणहदिंू ूिसमाज एक सुदृढ साम्राज्य स्थावपत करने में अक्षम था। सगिंनि के अभिा में सामाक्जक दृक्ष्ट्ट सेभी ि दुबिुस था। मुसिमानों जैसे ेधालमकस दुराग्र , सामाक्जक सगिंनि तथा िरितापूण सउत्सा ह दिंुओ ुिंमें इन गुणओ िंकी कमी थी। दो परस्पर विरोधी समाज आमने- सामनेखडे ेथे। इस तर दोनों समाजों की कलमयों पर नजर डािते ुए य स्पष्ट्ट ोता ै कक धालमकस और राजकीय प्रसार के मद्देनजर प िा यानी मुसलिम समाज अपनेप्रयतस्पधी ह दिंू ूसमाज से िो ा िकर उसे ेपराभूत करनेके लिए और उसपर शासन चिाने के लिए अधधक पात्र िगता ै। अपनेअल्ाि का ी एकच्छत्र राज पूरी दूयूनया पर चिता ै-इस दिंभ के साथ मुसिमानों ने ह दिंुसुथान की धरती पर कदम रखा था। उनकी य दृढ भिाना थी कक सारी दुयुनया अपनेअल्ाि कै यनयत्रिंण में ै और इसलिए सबको अपने अल्ाि का आज्ञाकिंकत प्रजाजन बनाना मारा परम कतव्सय ै।

ह दिंओुिंकी क्स्थयत इसके एकदम विपरीत थी। उनमें व्यक्क्त-स्ातित्र्यि की भिाना अधधक िबिती थी। उनकी रगों में यनरी तत्त्ज्ञिान रचा-बसा था। जो चाह ए, उसे ेबिपूिकस छीनना उनके स्िभिा में ी न िींथा; िकिन इससे ह दिंू ूसमाज में दुबिुसता और फूट की िृदृ्धध ुई। दूसूरों पर आक्रमण करना अधम समानने के कारण मेशा उन् ें आत्मरक्षा की धचतिंा सताती थी। ह दिंुओ ुिंकी सस्ंथाओिंमें देशभक्क्त की अपेक्ेषा व्यक्क्तपूजा को मुख्य माना जाता था। इसलिए ह दिंसुथान छोटे-छोटे राज्यों में बटाँ गया था। इन अिग-अिग राज्यों को बाधाँकर रखनिाि एक ी सूत्र था और ि था समान सस्ंकृयत ! िकेकन समान सस्ंकृयत के बािजूद एक राष्ट्रीयता की द्योतक जो कल्पनाए ाँथिीं उनकी अपेक्षा अिग-अिग धमों तथा पथिीं के कारण विलभन्नता की भिाना उनके मन में प्रबि ुई थी। इसलिए जब-जब ह दिंू ूध्जि की छाया में सभी राज्यों को एकत्र करने के प्रयास ककए गए, तब-तब धिलमतसा और पराक्रम के िाच ने उन प्रयासों को यनष्ट्फि बनाया। तिुनात्मक दृक्ष्ट्ट से ह दिंू ूमुसिमानों जैसा ी शूर और धमयसनष्ट्ि था, िकेकन अखखि ह दिंूजायत अथिा ह दिंू ूसमाज और मुसिमान समाज-दोनों की तिुना में दूसूरा समाज धमभसक्क्त की भिाना सेइस कदर जाग्रत् ्था कक एकमेि अल्ाि के नेतृत्ि में विश्ासि रखकर भूखे े भेडडए के झुडिं के समान सघिंहटत था।' मरो या मारो' की म त्ाकिाक्षिं के कारण िे अपना अभीष्ट्ट प्राप्त कर िेते थे। अपना साम्राज्य विस्तृत करने के लिए विधलमयसों के साथ छेडी गई जिंग को मेशा क्ज ाद का स्रूि प्राप्त ोता था। सिों बाद ककंिब ुना सहदयों बाद ह दिंू ूभी उनका अनुकरण करने िगे। म सभी एक ी भारत माता के पुत्र ैं और अपनेह दिंूधूम सकी रक्षा करना मारा आद्य कतव्सय ै और उसे ेयनभानेके लिए आपसी भेद भुिाकर एकत्र ोना चाह ए। य बुद्धध उन् ें कई विपदाओिंको झिेने के बाद आई। आपसी कि ों में उिझने की बजाय

म प िे ेह दिंू ू ें और मारे धम सपर ोंनिेी आक्रमण का एकजुट ोकर सामना करना परमिाश्यक ै- य अ सास उन् ें ोनिेगा।

इस तर एक विशिा ह दिंू ूसाम्राज्य की निींि डिी गई। इस म ान् ्काय सके लिए म ाराष्ट्र में अनुकूि पररक्स्थयतया ाँथी।िं इस काय सके प्रितकस समथ सरामदास स्िामी ने अखखि ह दिंसु्थान में भ्रमण करने के बाद और उस समय की राजकीय सामाक्जक क्स्थयत का अध्ययन करनेके बाद य ी यनष्ट्कष सयनकािा कक "मुसिमानों के बधिंन से इस भारतभूलम को मुक्त कराने की आकुिता और सामथ्य सककसी भी ह दिंू ूमें नजर न िींआती। िकेि म ाराष्ट्र से ी थोडी-ब ुत आशा रख सकते ैं।" इस तर इस काय सको अिंजाम देनेके लिए स्िामीजी तथा उनके लशष्ट्यों ने विलभन्न प्रदेशों में बबखरी ुई ह दिंू ूशक्क्त को एकत्र करने का बीडा उिाया। इस तर मरािी साम्राज्य के यनमाणस से अखखि ह दिंू ूसाम्राज्य यनमाणस का श्रीगणेश ुआ। उनकी योजना थी-ह दिंओुिं के तीथस्सथान और ह दिंओु िं का लस िंासन परकीय दासता सेमुक्त कराने ेतु अटक पार मरािी सेना िे जाई जाए। ह दिंू ूसमाज से पतनशीि प्रिृवत्तयों का सफाया करना मुक्श्कि काम था। ऐसी प्रिृवत्तयों के कारण जनमानस में लसफस आत्मसम्मान और व्यक्क्तगत स्िाथ सकी िृदधृ्ध ो र ी थी और ह दिंू ूजातीय ह तसबिंधिों की उपेक्षा ो र ी थी। िकेि म ाराष्ट्रिासी ह दिंओु िंके मन में पैदा ोंनिेािी ऐसी प्रिृवत्तया ाँकमजोर करके उनके मन में देशभक्क्त की ज्िािा प्रज्िलित रखने े में समथ सरामदास स्िामीजी और उनके लशष्ट्य समुदाय को कामयाबी लमिी। पररणामतः मरािों के इयत ास में यदा-कदा अतिंकसि नजर आती ै। कफर भी राष्ट्रह त को सिोपरर मानकर सकिंट की घडी में ि ाँकी जनता द्िारा डटकर ककया गया मुकाबिा नजरअिंदाज न िींककया जा सकता। पतनशीि प्रिृवत्तयों का उच्चाटन ि ा ाँभी पूरी तर से न िीं ुआ था; िेककन ि ाँकी जनता ने उनपर आलिंशक यनयिंत्रण पा लिया था। तुिनात्मक दृक्ष्ट्ट से य ा ाँ की जनता दासता के बधिंन तोड देने के विषय में म ाराष्ट्रेतर जनता से ज्यादा छटपटा र ी थी। िे अखखि ह दिंूजायत के कल्याणाथ िसिायययत थी। दूसूरे प्रािंतों में क्स्थत ह दिंओु िंसे य ाँके ह दिंू ूइस काय सके लिए योग्य िे रे- इसके पीछे व्यक्क्तगत स्िाथों को यतिािंजलि देनेकी उनकी तैयारी और उत्स्फूत सदेशभक्क्त की भािना ी थी। इसमें कोई सिंशय न िींकक उन् ोंनेमुसिमानों से अपना श्रेष्ट्ित्ि साबबत कर हदखाया। उपररयनहदसष्ट्ट सभी कारणों से ह दिंओु िंका साम्राज्य मरािी साम्राज्य बनना अिश्यिंभािीिी था।

ह दिंू–ूपदपादशा ी के यनमाणस काय समें सभी ह दिंओु िंकी एकता अत्यािश्यक थी। पूरी दुयुनया में एक सामथ्यशसािी राजसत्ता का दजा सप्राप्त करने के लिए और परकीय आक्रमणों से अपनी रक्षा करने के लिए ह दिंू ूमात्र को सुसगिंहित ोकर ह दिंू–ूपदपादशा ी की स्थापना करना परमािश्यक था। परकीय दासता की श्रृिंखिाओ िंमें जकडी समग्र ह दिंूजायत को मुक्त हदिाने का दैिी काय समरािों के लसिा और कोई न िींकर सकता था। मुसिमानों से कई गुना ज्यादा देशभक्क्त की तमन्ना उनमें थी और अन्य धमबसािंधिों की अपेक्षा िे अधधक सिंघहटत एिंिंस्ितिंत्रता-युद्ध करने में समथ सथे। कफर भी अिंग्रेजों की तुिना में िे कमजोर साबबत ुए और उनके गुिाम बन गए।

इन सभी तथ्यों के बिाजूद शेषे प्रातिों की अपेक्षिा इस म ान् ्काय सका सूत्र- सचंािि करने का दाययत्ि मरािों ने अपने ऊपर िेना और ह दिंू–पूदपादशा ी के राजधचह्न एिं िंसत्ता पर अपना क जताना आिश्यक समझा था। आदिंािन की िीनिं रखनेका सा स उन् ोंनी हदखाया था। स्िथि सको दरककनार करके उन् ोंनेजो यश प्राप्त ककया, उसके और तत्कािीन सामाक्जक एिं िंराजकीय पररक्स्थयत के मद्देनजर केसररया ध्िज के तिेअखखि भरतखडिं को सुसगंिहित रखनेका उनका प्रयास स्तुत्य था। ह दिंिुओंका बबखरा ुआ सामथ्य सजुटाकर उसपर समथ स राजदिंड का अकुंश रखना उधचत था। शत्रुपक्ष को परास्त कर देनेकी अपनी क्षमता का पररचय िे दे चुकेु थे। मरािों की बजाय दूसूरे प्रातिों के ह दिंू ूअगर इस आदिंािन की अगुिाई करते ेऔर अपनी कामयाबी की शेखी बघारते ुए मरािों को अपनेसाथ लमिा िेते,े तब उनका ऐसा करना अखखि ह दिंूजायत के ह त में ी ोता और िे भी प्रशसिं के पात्र बन जाते े। ह दिंू ूसाम्राज्य राजपूतों, लसखों, - तलमिों अथिा बगंािियों आहद ककन जायत विशेषों का ै य बात मुख्य ै। य पादशा ी स्थावपत करने का काम कोई भी जायत अथिा समाज करता और उसे ेअपने यनयत्रिंण में रखता तो उसमें आक्षेप िािी कोई बात न िोंर ती और िे समाज मरािों क्जतना ी आदर तथा सम्मान प्राप्त करता।

तत्सामययक क्स्थयत में सिशेर्ेसष्ट् काय सनीयत

'उ्पिािी चे काम ऐसे काही सिो काही नासे।

- रामदास स्िामी

(- कहिन कायों में कुछ तो सपिंन्न ो जाते े ैं और कुछ न िोंो पाते।)

'काही हदवस भयरहहत सदोहदत स्वराज्य चालववले।

दररद्र अटकेपार जनाचिें ेज्यानिी घालववले॥

जलचर, हैदर, नबाब, इिंग्रेज रण करता थकले े

। ज्यातिंन पुण्याकडे ववजोककले ते सपिंविला मुकले ॥'

- प्रभाकर

(-कुछ हदनों तक यनभयसता सह त यनयलमत रूप से स्िराज्य का काय-ससचंािन ककया गया। प्रजा की यनधनसता को अटक की सीमा िाघाँकर भगा हदया गया। जिचर के समान ैदर, निाब तथा बडे-बडेकफरिंधगयों को भी नाकों चने े चबिाए गए। क्जन् ोंने भी पूना की तरफ िक्रदृक्ष्ट से देखा, िे सपिंवत्त वि ीन ो गए।)

क्जस राष्ट्रमडिं में अपनेम ान् ्उद्देश्य की पूयत सके लिए मरी, बगिंीी, पजिंाबी, ब्राह्मण एिं िम ार

ह दिंूजायत के रूप में सगिंहित ुए। ि ााँयहद मरी उन् ें उनको इच्छा के खखिाफ इस काय समें स भागी ोनेके लिए वििश करने की बजाय उनका मन पररितनस कराके, जायत विशेषे भ्िाकर सगिंहित ोनेके लिए प्रेरेरत करते े और इस तर ह दिं ूसाम्राज्य की स्थापना का श्ेरेयस्कर माग सचुनते, तो मरािों का य काय सअधधक प्रेरक और देशभक्क्तपरक क िाता। अगर ि ऐसा कर पाते तो उनकी देशभक्क्त अधधक गौरिशािी बन जाती। राजकीय एकता की दृक्ष्ट सेह दिंओुं को सगिंहित करने का काम आनन-फानन में ोनिाा न िीं था। ऐसा ोता तो लसधिं ु नदी को पार करके ह दिंसु्थान में प्रिेश करना मुसिमानों के लिए असभिं ोता। तत्किीन िस्तुक्स्थयत के

अनुसार तत्किीन काय स ुए - य में ध्यान में रखना चाह ए। उस कि के िायुमडिं तथा पररक्स्थयतयों के आधार पर ी में उनके कायों को उधचत या अनुधचत ि राना चाह ए। ककसी भी राष्ट्र का अक्स्तत् एक व्यक्क्त के अक्स्तत् के समान उस समय के िातिारण से प्रभावित ोता ै। पररक्स्थयत की उपेक्षा करके उससेऊपर उिकर कुछ कर हदखाना दोनों के लिए नामुमककन ै। मरी आखखर मनुष्ट्य ी थे। उनमें कोई दैिी शक्क्त न िींथी क्जससे ेउनका काय सत्रुहट रह त र ता। उनके नेतृत्ि में आरिंभ ककया गया ह दिं ूआदिंोिन सिथसा दोषमुक्त और पररपूण सथा-ऐसा अगर कोई क ेगा तो उससेसत्य का गिा घुट जाएगा। इसलिए मने स्िीकार ककया ै कक सभी ह दिंओु िंमें जो दोष विद्यमान थे, ि मरािों में भी थेऔर अपनेउद्देश्य की पूयत सके लिए उन् ें अधधक देशभक्क्त का रास्ता न िींसूझा। मरीतर दूसूरे ककसी ह दिं ूसमुदाय को मरािों से भी अधधक अच्छे ढिंग से य काय सकरने में सफिता न िींलमिी। अिग-अिग समुदायों के बीच अच्छे काम के लिए सबका मन-पररितनस कराना एक अके े

समुदायकोमबहुतकहिनिीं ै। इसमें मन-पररितनस करानेिािेव्यक्क्त के चातुय सकी तथा क्जसका मन-पररितनस कराना ै, उस व्यक्क्त के नैयतक मूल्यों और ईमानदारी की कसौटी ोती ै। ो सकता ै कक मरी अन्य ह दिंओु िंका मन-पररितनस कराने का सकिंल्प कर िेते; िेककन क्या अन्य ह दिं,ू क्जसकी िनिीं समान अधधकार और समान कतव्सय ै, ऐसी ह दिं–ू पदपादशा ी की खायतर अपनी अिग-अिग प चान का त्याग करके अपने अक्स्तत् को खो देना पसदिं कर सकते थे े? आपसी अतिंकसि के कारण क्जनकी राजगद्दी अपनों िोगों के खून से सनी थी, अपने गृ ृयुद्ध शातिं करने के लिए बेह चक मुसिमानों और अग्रिंेजों को जो न्योता देते े थे, अपने बाधिंिों के साथ लमि-जुिकर र ने की बजाय जो अपनेदेिताओंका अपमान करिानेऔर अपनी सास्िंकृयतक धरो र को पैरों तिेरौंदिानेिािेमुसिमानों के आगे ेझुकने के लिए तैयार ो जाते–ऐसेह दिंओुंके अतिं:करण में देशभक्क्त की धचनगारी क ा ााँसेसुिगती ? राष्ट्रीय ईमानदारी और राजकीय उत्कष सको कौडी मोि समझनेिािों से उच्च आचार-विचार, उच्चकोहट की भािनाए–ाँइन सबकी अपेक्ेषा करना बेकार ै। ह दिं–ू पदपादशा ी की स्थापना ो सकती ै, य मरािों के अिािा और ककसी समुदाय ने सपने में भी न िींसोचा था और एक समुदाय अगर य सपना पूरा करने में जुट गया था तो ह दिं ू ोनेके नाते ेस ायता करनेकी क्जम्मेदारी शेष ह दिंओु िंपर अपने-आप आ जाती थी। अतः य काय सकरनेिािी एक ी जायत को उस काय समें ोनेिािी त्रुहटयों के लिए दोष देना अन्यायपूण स ोगा। सभी ह दिं ूसमान रूप से दोषी ि राए जानेचाह ए। बक्ल्क य क ना न्यायसगिंत ोगा कक इस म ान् ्काय सको अजिंाम देनेमें और परकीय दासता की जजिंीरें तोडनेमें क्जन् ोंनेमरािों क्जतना भी स योग न िींहदया, ि त्रुहटयों के सबसे अधधक क्जम्मेदार ैं।

इस तर प्रयतकूि पररक्स्थयत में भी ह दिंू सत्ता के यनमाणस काय समें स योग देने के लिए अन्य ह दिंओुंका मन-पररितनस ककया गया। इस सक्षिंक्षप्त कथानक में मने उदा रण सह त राजपूत, जाट, बुदेिे आहद ह दिंसुथायनयों का एि िदक्षक्षण ह दिंसुथायनयों का उल्िखे कई स्थानों पर ककया ै। इनमें से कुछ िोगों ने तत्परता से अपनी सम्मयत जताई। में यकीन ै कक राजकीय विचार तथा लशक्षा के सदिंभ समें ह दिंू प्रजा अगर सजग ोती अथिा इस हदशा में उन्नयत करने का उसे ेस ी मौका लमिता तो मरािा-मडिंि अखखि ह दिंू जातीय सत्ता अथिा ह दिंू राष्ट्रमडिंि के रूप में अपनी प चान बना िेता। कम-से- कम ऐसी सभिंानिा की आशा कर सकते े ।ैं परक्स्थयत के अनुरूप मरािा-मडिंि में ििीापन आ गया था, इसलिए मरीतर ह दिंू ररयासतों को उसने अपने में शालमि कर लिया था। राष्ट्रमडिंि में उनका स्थान यनक्श्चत करके उन् ें समान अधधकार तथा समान दाययत्ि सौंप हदए थे। शा.सिं. १७२२ (सन् १८००) में जब नाना फणनीस का दे ाति ुआ, उससे ेप ि े ी ह दिंओुंने अधधकतर ह दिंसुथान अपने अधीन कर लिया था। ह दिंू राजाओं ने नेपाि से िेकर त्रािणकोर तक का विशाि प्रदेश अपनेअधीन कर लिया था और उन सबपर मरािा-मडिंि का अकुंश था; िेककन ह दिंसुथान के दभुाग्सय से देशभक्त, राष्ट्रीय पररपक्िता और िािाकी में मरािों से अधधक चतुर अग्रेंज जायत का ह दिंसुथान में प्रिेश ुआ, अन्यथा दसूरों को म ान् काय सके लिए प्रेररत करके उन् ें अपने में शालमि करने के गुण से मरािा-मडिंि अखखि ह दिंू जातीय सत्ता के रूप में उभर आता। ििैे मरािों और लसखों ने मुसिमानों द्िारा दी गई पराजय से सबक िेकर उन् ें पराभूत करने की ह म्मत हदखाई और अपने िोगों का उन्नयन तथा राष्ट्र का यनयमाणस करने में सफिता अक्जतस की। िे अपनी त्रहुटयों से अनलभज्ञ न ि ीं थे। अगर उन् ें मौका तथा समय लमिता तो अपने यूरोपीय प्रयतस्पधी से जरूर कुछ सीखकर जापान जैसे प्रगत राष्ट्र का यनमाणस करते े। अनुशासन और आधुयनक युद्धकिा यूरोवपयनों का स ायक पक्ष था और इसलिए मरािों ने म ादजी लसधिंधया इत्याहद नेताओंको प्रलशक्षक्षत

करने एलशआई की क्षमता कसे प्राबोत, ककया। मरािोंने क्जस तर मुसिमानों की दगुयसत की, उसी तर यूरोवपयनों की भी कर सकते थे। जमनसी में छोटी-छोटी ररयासतों की एकजुटुता सेजैसे सयिुंक्त जमनस साम्राज्य बना, िसैा ह दिंसुथान में भी ो सकता था।

जो ुआ न ि ीं, उसके लिए अगर-मगर ऐसेअनुमान िगाते र ना व्यथ स ै। जो बीत गया, उसका मूल्यािंकन इयत ास को साक्षी मानकर करना और जो दृक्ष्टगोचर ै, उसका मूल्यािंकन तत्सामययक पररक्स्थयत के अनुरूप करना उधचत ोगा। इस तर का मापदिंड िाग ूकरनेपर य तथ्य सामनेआता ै कक उस काखडिं के ह दिंओु िंकी ककसी भी उपजायत को, विशेषकर मरािों को आनन-फानन में ह दिंू प्रजासत्तात्मक राज्य को स्थापना करने में विफि र ने पर दोषी ि राना अनुधचत ै। मरािों को दोषी ि राना- मतिब जैसै ेलशिाजी म ाराज का दोष था कक िे मोटरकार पर सिारी न ि ींकरते ेथेऔर राजा जयलस िं को इसलिए दोष देना कक उन् ोंने ह दिंू आदिंोिन के प्रचाराथ सदेश भर में मुद्रणािय न ि ींखोिे। इस तर के तकस-कुतकों के आधार पर दोष देना ी ै तो सभी ह दिंओु िंको देना चाह ए। उस समय के ह दिंओु िंमें ह दिंू जातीय भािना इतनी कूट- कूटकर भरी ुई न ी िंथी कक उसकी खायतर िे अपनेव्यक्क्तगत, साप्रिंदाययक अथिा प्राियंतक अक्स्तत्ि को अखखि ह दिंू जातीय अक्स्तत्ि में

र्विीन कर देते। अिग-अिग प्रार्तों के ह दिंओु िंके गुण-दोषों को सापेक्षता के दृक्ष्टकोण से देखते े ुए म ऐसा यनष्ट्कष सयनकिा सकते ैं।

तिुनात्मक दृक्ष्ट से मरािा जायत अधधक सुसगंहित, सिाजसयनक और राष्ट्रीय ह तों से आप्िावित थी, साथ ी राष्ट्रीय परतत्रिंता के दुषुट्चक्र सेह दिंसुथान को मुक्त करने के लिए यनष्ट्ठापिूकस समवपतस थी। कफर भी अपनी मक्ंजि से काफी दूरू थी, ककिे उस मक्ंजि की ओर दृढ यनश्चय से धीरे-धीरे बढ र ी थी, य ी उसके लिए सुखद ै। सभी प ि ुओ िंपर सिागीण विचार करने के पश्चात् ्नजर आता ै कक ह दिंओु िंको पुनजीवित करने की ताकत क्जसमें ै और उसके लिए बबखरी ुई ह दिं ूशक्क्त ज ााँइकट्ी ो सकती ै-ऐसा केंद्रबबदुं ुकेि म ाराष्ट्र ी ो सकता था। अखखि ह दिं ूजातीय दृक्ष्टकोण से भी श्री समथ सरामदास और लशिाजी म ाराजकिीन मरािों की नीयतयों तथा कोलशशों का समथनस करना आिश्यक ो जाता ै। मरािों की नीयत य थी कक इस व्यापक काय स का श्रीगणेशे म ाराष्ट्र में करके उसे ेअटक पार तक फैिाया जाए। य म ान् ्काय सक्रमशः ी ोनेिािा था। ह दिंधूम सकी ध्िजा तिेप्रथम म ाराष्ट्र के ह दिं ूएकत्र करना, क्जसकी मजबूत र्नीं पर ह दिं–ूपदपादशा ी का पिान महिंदर बडी शान सेखडा ो सके, ऐसेस्ियिशिंासत, सुदृढ मरािी राज्य की स्थापना करना, उसे ेअखखि ह दिंजूायत के उद्धार का प्रतीक बनाना और धीरे-धीरे उत्तर हदशा में नमदसा से अटक पार तक तथा दक्षक्षण हदशा में तुगिंभद्रा से सागर तक अपना कायक्षेसते्र विस्तृत करना मरािों के इस आदिंोिन का उद्देश्य था। उस समय के मरािों की य धारणा थी कक इस तर बबखरी ुई ह दिं ूशक्क्त को म ाराष्ट्र में केंहद्रत करके मरािी साम्राज्य को ी ह दिंि साम्राज्य में तब्दीि ककया जाए। य ी ह दिंजूायत को मुक्त हदिानेिािा सबसे असरदार और अभीष्ट तरीका ै। इसलिए उस हदशा में उन् ोंने प्रयत्न ककए।

तत्किीन पररक्स्थयत में यश-प्राक्प्त के लिए य ी एक नीयत कारगर साबबत ो सकती थी। बाद की अिधि में जो घटनाक्रम ुए और उनसे ेजो उपिब्ध ुआ उससेउस नीयत की युक्तता का समथनस ोता ै। इस नीयत से कायारिंभ करने के बाद कुछ देशी नरेशों का उसका विरोध करना अपररिजनसीय था। कुछ नरेश यनिज्सजता की चरम सीमा तक प ुाँचे ुए थेऔर बडेगि ससे दासता की बेडेडयों को गिे िगाकर बिै ुए थे ! गिुामी में ी उन् ें सुख की अनुभूयत ो र ी थी। मुसिमान, निाब अथिा यनजाम या हदल्िी के बादशा का गिुाम क िाने में उन् ें जरा सी भी िज्जा न िींआ र ी थी; िेककन उनके अ िं या स्िाभिमान को जाग्रत् ्करने के लिए मरािे अगर उनसे ेइस काय सके प्रयत यनष्ट्ठािा अथिा चौथ–सिर्ी की अपेक्षा रखतेथेतो उन् ें य न ी िं सु ाता था। इस अस योग के लिए मरािा घुडसिारों से उन् ें जो दिंड लमिता था, उसके लिए िे ी दोषी थे। उनके ऐसेव्यि ार के कारण मरािा उन् ें मुसिमानों के पक्षधर माननेिगेथे। इसलिए जब तक िे मरािों के साम्राज्य को स्िीकृयत न िींदेते ेअथिा िे क्जसेअपना सिसािसमानतेथे, िे मुसिमान राजा जब तक मरािों के सामने नतमस्तक न िीं ोता तब तक मरािे उसका पीछा न ी िंछोडते ेथे। मरािों के अधधकािंश विरोधी गिुामी मानलसकता के आगे ेविि श थे। कफर भी उनमें कुछ ऐसे थेक्जनके अतिंःकरण में अभी भी अखखि ह दिं ूजातीय भिािना के प्रयत आस्था शेष थी और इतना ी न िीं, परकीय शत्रु का अपनी भूलम से उच्चाटन करने की मरािों क्जतनी ी छटपटा ट उनके मन में थी। कफर भी इस स्िततत्रिंता युद्ध की बागडोर अिके ेमरािा जायत द्िारा अपने

ाथ में थामेरखना और शेष सभी ह दिंओु िंने मरिरी साम्राज्य के आगे ेनतमस्तक र ना चाह ए-ऐसा आग्र रखना उन् ें पसदिं न िींथा। परकीय सत्ता के आगे ेझुकना उन् ें पसदिं था। ह दिंू ूकाय ससपिंन्न करने की छटपटा र के साथ-साथ कुछ ह दिंओु िंके मन में ईष्र्याभसिा था। िे सोचते ेथे कक मारे पूिजसों ने इस म ान् ्काय समें अपना योगदान हदया था और अब मुगि साम्राज्य को विपन्निास्था प्राप्त ो र ी ै। ऐसी क्स्थयत में प्रत्येक प्राितं को शक्क्त-अनुरूप ह दिंू ूराज्य की स्थापना करने का सुअिसर प्राप्त ुआ ै। कफर मरिरों के पदधचह्नों पर चिते े ुए म भी अपनेसाम्राज्य की स्थापना करने का प्रयत्न क्यों न करें ? मरिरी और मरिरीतर ह दिंू– दोनों पक्षों का ऐसा मानना स ी था। सबका मिू उद्देश्य तो ह दिंओु िंके साम्राज्य का स्थापन करके मुसिमानों का खात्मा करना था। अगर अखखि ह दिंओु िंको एक अखडिं साम्राज्य-स्थापन करने में बाधा आ र ी ो तो क्जतने भी छोटे-बडेह दिंू ूसाम्राज्य स्थावपत ो सके, उतने करने का उनका न िकेि अधधकार, बक्ल्क कतव्सय भी था। सभी घटक राज्यों का एक अखडिं साम्राज्य-यनमाणस करने में हदक्कत य आ र ी थी कक उस समय की राजकीय पररक्स्थयत सदिें ों से भरी ुई थी। य म ान् ्काय ससपिंन्न करने के सामथ्य सके बारे में और ेतुओ िंके बारे में सब एक-दूसूरे को सदिें ास्पद नजररए से आकाँते ेथे। ईष्र्या सभिाना िे सदिें ास्पद नजररए से परस्पर विरोधी मा िौ बन गया था। मुसिमान, पुतगसिी, अग्रिेंज, फ्ासिीसी आहद दुश्ुमनों से िो ा िंकर मरिरों ने जो उज्ज्िि यिश अक्जतस ककया था, उसके कारण साम्राज्य का नेतृत्ि करने की क्षमता अपनेपास ै ऐसा मरिरों का सोचना गित भी न ी था, िंककन मरिरों ने दूसूरे ह दिंू ूराजाओिंसे चौथ कर िसिूी करना और उनकी यनजी स्ितिंत्रता पर मिा करना अन्य िििेकी ह दिंू ू राजाओ िंके गिे न िींउतर र ा था। अपने• शत्रुओ िंको परास्त करने के बाद ह दिंूजायत के ह त में और भी कुछ कर हदखाने ेकी उत्किंिा मरिरों के मन में पैदा ोना भी सा लसक था। सत्ता सघिंहटत करने के लिए उसमें समाविष्ट सभी घटकों पर यनयत्रिंण रखना और उन् ें इच्छा अथिा अयनच्छा से स्िाथ सत्याग करने के लिए मजबूर करना आिश्यक था। ह दिंू ूसत्ता मरिरी साम्राज्य में समाह त र ना अखखि ह दिंूजायत के ह त में ै-ऐसा मरिरी सोचते ेथे, क्योंकक अपनी कायकुसशिता िे नेतृत्ि पर उन् ें पूरा भरोसा था। अपनेअतुिनीय पराक्रम और बलिदान से नेतृत्ि और स्िालमत्ि- दोनों के अधधकार उन् ोंने अपने पास रखे थे। मरिरों ने जो करने की िानी, उसे ेउन् ोंने कर हदखाया। अपनेपौरुष और रणकुशिता का पररचय उन् ोंने कई बार हदया था। य भी स्पष्ट ो चुका था कक अन्य ह दिंओु िंकी तुिना में मरिरी सिाधसधक बिशािी, चतुर एिं व्यि ारकुशि थे। मरिरों की अपेक्षा अन्य ह दिंू ूराजा शक्क्त ीन ोनेपर भी खुदु ह दिंू ूसाम्राज्य का अधधपयत बनने के लिए िािाययत थे, य बात उनके स्िाथ सकी ी पररचायक ै। राष्ट्रीय एकता का िक्ष्य सामनेरखिनेिेसभी आदिंनिों में ककतना भी बडा िैयक्क्तक स्िाथत्सयाग करना पडेतो कम ी ै। सभी को राष्ट्रह त सिोपरर मानना चाह ए।

सिप्रसथम म इस सदिंभ समें म ाराष्ट्र की पररक्स्थयत का ी ििौकन करेंगे। य ााँके कयतपय ह दिंू ू सरदार, राजकुमार तथा भूलमधर मुसिमानों के स ायक र कर अपनी व्यक्क्तगत स्ितिंत्रता अक्षुण्ण रखने ेमें ी समाधान मानते ेथे,े तो कुछ भोंसिे ेराजाओ िंकी तर दासता की जजिंीरें उखाड फेंकने के लिए बेचैन थे। िे भी स्ितिंत्र ह दिंू ूराजा के रूप में अपनी प चान बनाने की म त्त्िाकािंक्षा रखतेथे। कुछ ककिंकतव्सयविमूढ राजा दासता में उपिब्ध ऐशो-आराम में ी सितोष मानते ेथेऔर उनका स्िालभमान तथा देशालभमान सुप्तािस्था में था। ऐसेक्षुद्र ििग और जो दासता के बधिंन से यनजात पाने का काम लसफस अपनेतक ी सीलमत रखते ेथे-ऐसेिोग लशिाजी

म ाराज एि िंउनके अनुयाययों के खखिाफ ो गए। म ाराष्ट्र को सयिुंक्त और समथ ससाम्राज्य बनाने के काय सका और मरिों का आपसी एका करनेके प्रयत्नों का ऐसे िोगों ने विरोध ककया। ह दिंओुंको सगिंहित करने की दृक्ष्ट से समथ सरामदास स्िामीजी और लशिाजी म ाराज मरिी जनता को बार- बार एकजुट ोने के लिए सचेत करते ेथे। इन द्िेषी िोगों का तकस था कक स्ितिंत्रता के नाम पर अपना म त्ि बढाने के लिए य सब ढोंग रचाया जा र ा ै।

लशिाजी म ाराज के कतव्सय पर उन् ें यकीन न िींथा। उनके काय सको िे भोंसिे ेघरानेकी म त्िाकािंक्षा कुछ िोग तो व्यग्ंयात्मक हटप्पणी करते ेथे ेकक " में भोंसिे ेघरानेके सम्मुख नतमस्तक ोना चाह ए- ऐसी अपेक्षा िे क्यों रखतें? लशिाजी म ाराज अगर त ेहदि से ह दिं ूसाम्राज्य की स्थापना चा ते े ैं तब म भी उनसे े कुछ कम न िीं, म उनसे ेज्यादा प्रयतक्ष्ित ैं। कफर िे में नेतृत्ि सौंपकर मारा राज्यालभषेक क्यों न िींकरते े?"

कुछ नीच िोग लशिाजी म ाराज को 'मुफ्तखोर' की सिंज्ञा देते ेथेऔर एकजुट ोनेके उनके आग्र का उत्तर देनेके लिए मुसिमानों से लमिीभगत करने से भी बाज न िींआए। कुछ िोग ऐसेभी थेजो इसी उधेडबुन में गिे ुए थेकक इस म ान् ्आदिंोिन का नेतृत्ि लशिाजी म ाराज को सौंप दें या खुद नेतृत्ि की बागडोर अपनोथों में थाम िें। अपनी और लशिाजी म ाराज-दोनों की नेतृत्ि-क्षमता के बारे में िे शिंककत थे। अच्छा िैकि इतना ी था कक मुसिमानों से सािँगािँ करने की नीच मानलसकता उनकी न िींथी। अतः उन् ोंने मरिी साम्राज्य की स्थापना का विरोध अपने स्तर तक ी ककया। विशि ोकर लशिाजी म ाराज को ऐसे ह दिंओुंके खखिाफ तििार उिानी पडी। इसलिए उन् ें दोष भी हदया जाता ै, िेककन उनके बारे में ह दिं ूमानि िशिं का सिश्रेसष्ि ह मायती, ह दिं ू धम सका सरिंक्षक, मरिी साम्राज्य का सस्ंथापक ोनेकी जो गिा ी इयत ासकार देते ैं, उससेय ाछिंन िुि जाता ै। राष्ट्रीय ह त साधने के लिए छोटे-बडेदेसी नरेशों को अपनेसाथ लमिाकर उनकी एक सघिंहटत सत्ता का यनमाणस तत्कािीन सामययक क्स्थयत में अत्यािश्यक था। अन्य ह दिं ूराजा इस काय सके लिए अगर दृढ र ते ेया लशिाजी म ाराज क्जतना सा स उनमें र ता तो िे भी साम्राज्य-यनमाणस कर सकते थे। लशिाजी म ाराज का विरोध करने का भी सा स उनमें न िींथा। राष्ट्र- सस्ंथापक बनने के उनके माग समें ककसी ने बाधा न िींडािी थी। इयत ासकार तो लशिाजी म ाराज और उनके साधथयों जैसा उनका भी समथनस करते। उन् ें भी श्रेय हदया जाता; िेककन क्जस तर दूसूरा कोई भी देसी नरेश लशिाजी म ाराज क्जतना समथ सन िींथा और इस काय सकी पूयत सका सारा दाययत्ि उन् ोंनेलशिाजी म ाराज को सौंप हदया था, उस तर नेतृत्ि का एि िंराज्यालभषेक करिाने का
अधधकार भी सौंपना चाह ए था।

अभी मनेदेखा कक क्जस कारण से प्रसगिंानुरूप अपनी मरिा बाधिंिों के खखिाफ लशिाजी म ाराज को तििार उिानेको मजबूर ोना पडा और बाकी गुणों के कारण उन् ें इयत ासकारों ने दोषमुक्त करार हदया अथिा अिग-अिग लसख सप्रिंदायों को बिपूिकस अपनेिश में करनेके लिए रणजीत लस िं का िणनस समथनसीय माना गया, उस िज से मरिा-मडिंिकी भी बगिात करनेिािे ह दिं ूराजाओ िंको सबक लसखाकर अपने साम्राज्य में समाह त करने के सदिंभ समें दोषमुक्त करना उधचत ोगा। म पुनः स्पष्ट रूप से इस तथ्य की पुक्ष्ट करते े ैं कक मरिी साम्राज्य का विरोध करनेके बारे में सभी ह दिं ूराजाओं को दोषी न िींि रा सकते। ककसी को दोषी िे राते क्त इन सभी प िुओ िंपर ध्यान देना जरूरी ै कक तब ह दिं ूजातीय भािनाए ाँककतनी प्रखर थी,िे राष्ट्रीय पररिेश

ककतना अनुकूि था और स्तितत्रिं राज्य स्थावपत करने की म त्त्िाकािंक्षा ककतनी थी ? सभी ह दिंू ूराजाओ िंका व्यक्क्तगत स्तितत्रिंता के बारे में चौकन्नेर ना अनुधचत न ी िंथा। उस समय ह दिंूजूायत, ह दिंू ूसभ्यता, सस्िंकृयत एििं धम सदिाँ पर िगे ुए थे। अतः ह दिंू ूसाम्राज्य की स्थापना अयनिाय सथी। कफर य म त्त्िपूण सन िींथा कक इस साम्राज्य में एकतत्रिं प्रणािी िागू ोती या ह दिंओुिंकी बगिंिी, राजपूत, तलमि, तेिुगु आहद जायतया ाँइस साम्राज्य का सूत्र-सचिंिन करती।िं जरूरी िीकै य था कक य साम्राज्य ह दिंू ूजातीय, सघिंहटत और समथ स ोना चाह ए। सभी यनकषों पर मरािी खरे उतरते ेथे। इसलिए कभी-कभी प्रसगिंिश उन् ें स्िबािंधिंिों केखखिाफ शस्त्र उिाना पडे तो ऐसेमामिे ेमें अनदेखी करनी चाह ए। दोष देना ी ो तो जैसा मनेप ि े ेक ा, सभी ह दिंओुिंको देना चाह ए। ह दिंू ूसाम्राज्य-स्थापन करने की उनकी पात्रता को देखते ुए सभी ह दिंओु िंको व्यक्क्तगत स्िाथि सको भिुाकर उनकी प्रभुसत्ता माननी चाह ए और अगर िे न ी िंमान र े थेतो उन् ें माननेके लिए बाध्य करने का अधधकार मरािों ने अपनेकतृत्ि से प्राप्त ककया था।

प्राचीन और अिाचसीन इयत ास को प्रमाण मानकर एक विशे्षिण

'ज्या प्रकारे वानराकिंरवी लकिंा िेववावली त्याप्रकारे हे गोष्ट झाली। सव मकृत्ये ईश्वरावतारासारखी आहेत। जे सेवक हे पराक्रम पहात आहेत त्याचिें जन्म िन्य आहेत। जे ेकामास आले ेत्यानी तो हा लोक आणण परलोक साधिला ! हे ततुदम, हे मदुमकी, या समयात हे हहम्मत ! ही गोष्ट मनीही कल्पवत नाही!'

- ब्रह्मेद्र स्िामी का पत्र-व्यि ार

(-क्जस प्रकार िानर सेना की स ायता से िकिं ा पर अधधकार ककया, उसी प्रकार य काय ससपिंन्न ो गया। सभी काय सईश्िराितार सदृश ैं। जो सैिक इस म ान् ्पराक्रम को देख र े ैं, उनका जन्म भी धन्य ै। इस काय सकी खायतर क्जन् ोंने अपनी प्राणा ुयत दी, उनके इ िोक और परिोक-दोनों ी सुधर गए ैं। आधुयनक िाि में प्राचीन िाि के म ान् ्योद्धाओिंकी िीरता और रण-कुशिता की कल्पना भी म न ींकर सकते।)

मारे पूििजों ने इसी कारण चक्रियतत्ि धारण करने की पद्धयत को, अन्य सभी मारे अपनी कारण

कवित् धारणा करने की तथा समथ स ाथों से सत्ता का सूत्र-सचिंािन करने के अधधकार को न्यायसगिंत माना। चक्रियतत्ि प्रणािी त्रुहटयों से भरी ोनेके कारण उसका आपदाओ िंसे यघरे र ना स्िाभाविक था। इसके बािजूद उस समय के मा िौ में राजकीय और सािजसयनक जीिन को एकसूत्र में बाधँाकर रखने ेके लिए तथा अखखि ह दिंूायत की एक मजबूत राष्ट्रीय सस्ंथा यनमाणस करनेके लिए अपनेपूििजों द्िारा प्रयोग में िाई गई य चक्रियतत्ि प्रणािी कारगर साबबत ुई। इस प्रणािी द्िारा पूििजों ने ह दिं ूराष्ट्र की बागडोर थामने के लिए समथ स ऐसेराष्ट्रपुरुष को, सगिंहित सत्ता को मेशा श्रेष्ट् दिजा सहदया। साधारण क्षमता ििो िोगों को, राष्ट्रीय ह तों को नुकसान प ुँचािनेिी सामाक्जक तत्त्िों को और अपनी क्षमता से ज्यादा ऊँची उडान भािनेिी उनकी म त्त्िाकाक्षंाओ िंको सीलमत रखने ेके लिए उन् ोंने बाध्य ककया। इस प्रणािी ने, राष्ट्र में जो िोग राष्ट्र का सूत्र-सचिंािन करने के लिए ििे अपनी उच्च कुिोत्पन्नता और ईष्ट्या सके कारण म ी य अधधकार पाने के पात्र ैं- ऐसी शेखी बधारते ेथेऔर िास्तविकता में मरिों जैसे ेइस काय सके लिए योग्य न ींथे, उन् ें राष्ट्रीय कतव्सय के आगे ेनतमस्तक करिाने का मौलिक काय सइस प्रणािी नेककया। इसनेसबसे काबबि व्यक्क्त को राष्ट्र की नैयतक शक्क्त का समथनस हदििाने का भी काम ककया। पररणामतः ह दिंओुंके राजकीय सामथ्य सका केंद्रबबदंि ुइस प्रातिं से उस प्रातिं में बदिता र ा। क्स्तनापुर से पाटलिपुत्र, पाटलिपुत्र से उज्जययनी, उज्जययनी से प्रयतष्ट्ठान, प्रयतष्ट्ठान से कन्नौज, ि ाँसेकफर और क ीं;िं ऐसेज ा–ँज ा ाँह दिं ूसाम्राज्य की रक्षा करनेिािी सगिंहित-शक्क्त और पात्रता ोती थी, ि ाँ– ाँय सामथ्य-सशक्क्त केंहद्रत ोती थी। राष्ट्र में ऐसी समथ सप्रभुसत्ता स्थावपत ोना जब आिश्यक ो जाता था, तब पारस्पररक िैमनस्य को भुिाकर सकिंट की ऐसी क्स्थयत का सामना करने के लिए सभी ह दिं ू

राजा चक्रियतत्सि का भार सभाँाँि ुए सम्राट् के ध्जि तिे एकत्र ो जाते ेथे। उस सम्राट् को अपनी ताकत को

िम्रािसेपधिधयसोंमसेिडना पडता था। अपनेप्रयतस्पधधयसों का पराभि करने के लिए उसे ेदोषी
न िींि राया जाता था, बक्ल्क उस पररक्स्थयत में मारी मातृभूलम की रक्षा करिनेी और पूरे समाज तथा अपने
पररिार की रक्षा करने का दाययत्ि क्जस पर सौंपकर म यनक्श्चत ो सकें ऐसेव्यक्क्त को परखने ेकी य ी एकमात्र
कसौटी थी।

प्रयतस्पधधयसों के साथ ऐसे व्यक्क्त के व्यि ार का और उसके बदिे ेउसके प्रयतस्पधी से रणभूलम पर उसे े
दी गई चुनौती का-दोनों का समथनस ककया जाता था। इस विधान की पुक्ष्ट के लिए म उत्तर में ष सका और दक्षक्षण
में पुिकेशी का उदा रण प्रस्तुत कर र े ैं। इन दोनों के प्रयतस्पधी ह दिंू ू ी थे। इतना ी न िीं, इनकी बबरादरी के
अथिा कभी-कभी ररश्तेदार ी विरोधी र ते ेथे। कफर भी इन दोनों ने उन् ें अपनेअधीन रखने ेके लिए जो युद्ध
ककए, उन् ें आपवत्तजनक न िीं समझा गया। उनका व्यि ार मानिी स्िभाि के अनुरूप ी था। इसके साथ ी क्जन
प्रयतद्िंद्वि शासकों ने स्िेच्छा से पराधीनता का िरण न िींककया, िे भी प्रशंसा के कम पात्र न िीं ैं, क्योंकक
स्ितंत्रता की आकांक्षा रखना भी मानिीय प्रकृयत ै।

य ाँ म इस बात का क्जक्र करना उधचत समझतेैं कक ष सऔर पुिकेशी- दोनों ने दो समथ सह दिंू ू
साम्राज्यों की स्थापना की और ह दिंू ूजनता को राजकीय विचारों तथा जीिन के मूल्यों को समझाकर ब ुमूल्य
राष्ट्रसेिा की। में उनका कृतज्ञ र ना चाह ए। ऐसेह दिंू ूसाम्राज्य की स्थापना करने के बाद पारस्पररक शक्क्त-
परीक्षण ेतु जब दोनों आमने-सामनेखडे े ो गए तब में दोनों के रणकौशि का मूल्य-मापन उसी यनष्ट्पक्ष ढंग से
करना ोगा, जैसे ेकोई वपता अपनेदोनों पुत्रों को लशक्षक्षत करके अथिा कोई अखाडेका गुरु अपने लशष्ट्यों को
अखाडेमें तािीम देनेके पश्चात् ुउनकी परीक्षा िेता ै कक इनमें से कौन अपनेप्रयतस्पधी को मात दे सकता ै ?
दोनों लशष्ट्यों को आपस में लभडाने का उसका ेतु य देखना ोता ै िे अपनी तािीम में ककतने दक्ष ो गए ैं, इस
तर उनका आपस में लभडना समथनसीय ो जाता ै। चक्रियतत्सि प्रणािी ने जो विस्तीण ससाम्राज्यों का यनमाणस
एिं पोषण ककया, उसकी बदौित ी ह दिंूायत में आपसी िैमनस्य को तुच्छ समझकर संकट की घडी में एकता
की भािना हदखानेकी और अपनी समाज-संस्था, अपने आचार-विचार, अपना तत्त्िज्ञान अलभन्न ै - ऐसी
अखिि राष्ट्रीय भािना का उदय ुआ।

मनेप िे इन विस्तीण ससाम्राज्यों का केंद्रबबदिं ुएक प्रांत से दूसरे प्रांत में स्थानांतररत ोता गया- य
देखा ै। प्रांतीय जीिन के लभन्न-लभन्न प्रि ों का एक प्रबि राष्ट्रीय प्रि बन गया। अिग-अिग
विचारधाराओ िंको एकत्र करके एक अखडिं राष्ट्रीय भािना जाग्रत् ्करने के काय ससे इयत ास में इन साम्राज्यों को
म त्त्िप्राप्त ो गया। इन साम्राज्यों के यनमाणस से ह दिंसु्थान की सभ्यता में भी एकरूपता आ गई। क्जन् ोंने
अपनेप्रचडिं शौय सका प्रदशनस करके जीत ालसि की और जो स्ितंत्रता की रक्षा करते–करते ेअपनी िीरता का
पररचय देकर ी पराभूत ुए, दोनों के लिए मारे मन में एक जैसा आदरभाि ै। ष सऔर पुिकेशी- दोनों इस
आदर के पात्र बने। मगध, आंध्र, आंध्रभृत्य, राष्ट्रकूट, भोज और पाड्ंय-इन राज्यों की स्थापना इन् ें कुछ ह दिंू ू

राज्यों को अपने साथ लिये बगैर न िीं ो सकी। कफर भी ि मारे आदर के पात्र ैं। इनमें से प्रत्येक को अपना

[illegible] प्रातिों को जीतकर
उनके भरोसे ेअपना साम्राज्य िैभिशिी बनाया। कफर भी म-उन् ोंनेराजकीय एकता का अपना उद्देश्य सफि
बनाने ेतु इससे और अधधक देशभक्त िािा प्रशस्त माग सक्यों न िींअपनाया ? -इस तर की हटप्पणी करके
उनके काय सको वििादास्पद बनाना न िींचा ते। मरािों नेइन प्राचीन साम्राज्यों में सबसे अधधक बलिष्ट् साम्राज्य
का यनमाणस ककया। अतः सभी ह दिंओु िंको जायत-पथिं का भेदेभाि भुिाकर उस साम्राज्य का सम्मान करनी चाह ए,
उसकी सरा ना करनी चाह ए।

मरािों के इस म ान् ्काय सकी क्जतनी भी सरा ना की जाए, कम ै। अगर म ष सऔर पुिकेशी द्िारा
प्राप्त विजय का सम्मान करते े ैं, उनका समथनस करते े ैं, तब क्जस आपात क्स्थयत में मरािों ने जो मरािी
साम्राज्य-स्थापना का प्रयास ककया, उसका तो और भी उदात्त भािना से समथनस करना चाह ए। लसफस दूसूरे
राजाओ िंको जीतने की िस अथिा लसफस युद्ध करने के उत्सा के कारण मरािों ने शस्त्र न ी िंउिाया। चक्रिती
पद के ऐश्िय सका उपयोग लसफस अकेिे े ी करने के लिए उन् ोंने दूसूरों को जीतकर अपने अधीन न िंककया था।

तत्सामययक क्स्थयत में य सबसे अ म बात थी कक अखखि ह दिंूायत को एकराष्ट्र, एकधम सके नाते े
ककस तर हटके र ना चाह ए। भूषण कवि ने-'काशीजी की किा जाती, मथुरा मशीद ोती, लशिाजी न ोते ेतो
सुन्नत ोती सबकी।'- इन शब्दों में लशिाजी म ाराज और मरािों की प्रशसिां की ै। कोई घटना अगर प्राचीन किा
में घटी तो उसके पुरातन ोने के कारण उसे ेअधधक पवित्र मानना मनुष्ष्य का स्िभाि ै और िा ी में घटी घटना
[illegible] अगर न िीं
में ह दिंू िीरों ने की ुई राष्ट्र की सेिा को ध्यान में रखकर िोग उनका आदर करतेंऔर अिाचसीन किा में मरािा-
मडिंनेि ह दिंू ूह तों के लिए प्राण न्योछािर करके जो सेिा की, ि ज्यादा म त्त्िपूण स ोते े ुए भी िोग उसकी
उतनी इज्जत न ी िंकरते। िास्ति में चद्रिंगुप्त के राज्यकिा में ह दिंू िीरों ने जो राष्ट्रसेिा की, तब पररक्स्थयत
उनके अनुकूि थी। ि किाखडिं िैभिशिी और समृद्ध र ा। इयत ास में िखणतस ै कक पाडिंिों के राज्यकिा के
पश्चात् ्सबसे समृद्ध राज्यकिा राजा चद्रिंगुप्त का था। ि किा मरािों के किा क्जतना आपदाओिंसे यघरा ुआ
न िींथा। सकिंटों का यनराकरण करने िािे साधन ज्यादा कायक्षसम थे। पाश्चात्य इयत ासकार लसकिंदर द्िारा
प्राप्त विजय का िणनस बढा-चढाकर करते े ैं, िेकेकन िे य भूि जाते े ैं कक उसकी विजय भारत के लसफस एक कोने
पर यानी पजिंाब पर ुई थी! ह दिंू ूसत्ता का जो केंद्रबबदिं ुपाटलिपुत्र में था, उसे ेस्पश सतक करनेकी उसकी ह म्मत
न िीं ुई। उस समय म्िेच्छों को ह दिंसु्थान से भगाने का सा स साम्राज्याधधपयत नदिं न िींकर सका। आचाय स
चाणक्य ने अपनी बुद्धधमत्ता और राजनीयतपटुता के बिबूते एिंसम्राट् चद्रिंगुप्त ने अपने बा ुबि से नदिं राजाओ िं
से साम्राज्य छीन लिया और सभी अधधकार अपनोथ में िेकर अपनेपराक्रम से ग्रीकों को य भूलम छोडने के
लिए मजबूर ककया। सम्राट् चद्रिंगुप्त पराक्रमी जरूर था, िेककन पररक्स्थयत भी अनुकूि थी। अगर म मरािों के
काय सकी तुिना इससे करें तो पता चिता ै कक उनपर आई आपवत्त ज्यादा गभीर थी और इसके साथ-साथ उसका
मुकाबिा करने के लिए उनके पास मामिूी साधन ी थे। ह दिंसु्थान सहदयों से मुसिमान, पुतगसािी आहद शत्रुओ िं

के आक्रमणों से त्रस्त था। उनका पौरुष, उनकी आशाएँयनस्तेज, कमजोर ोती जा र ी थी।ि यनरिंतर लमिनिी े अपयश से उनके मन में ीनता की ग्रधिंथ बढती जा र ी थी। राष्ट्रोन्नयत करने का उत्सा नष्ट ोकर गिामी मारे भाग्य में लिखी ै और उसी में समाधान मानना चाह ए-ऐसी धारणा बनती जा र ी थी। ह दिंुओ िकी तिार की धार भोथरी ो गई थी। इस तर की प्रयतकिू पररक्स्थयतयों में मरिों ने आदिंनि करने का, शत्रु ुको िकारकर नाकों चने ेचबिाने का सा स ककया ! य बात स ी ै कक ूण और शक राजाओिंकी ह दिंुस्ुथान में क्जतनी ज्यादा भीतरी घुसपैि ुई थी, उतनी ग्रीकों की न ीं ुई और ह दिंुस्ुथानी उन् ें अपना उतना प्रबि शत्रु न ी ि मानते ेथे। इसका कारण य था कक समूचा ह दिंुस्ुथान उन् ोंनेपदाक्रातिं न ििंककया था। मरिों के िाखडिं में क्जतना प्रचडिं आक्रमण मुसिमानों और पुतगसालियों नेअपनी कफरकापरस्ती से ककया था उतना तोरमाण और रुद्रदमन के िाखडिं में न ीं ुआ था। मरिों के समय भारतीय जिीन एि ििंसस्ृकियत दिदि में फाँस गए थे। परकीय आक्रमण के चगिुंि से उसे ेमुक्त कराना जरूरी था। जहटि पररक्स्थयत में अपने शौय ससे ूण तथा शकों के आक्रमण से क्जन िीरों ने ह दिंू ूजिीन-पद्धयत, ह दिंू ूसभ्यता, ह दिंधूम सकी रक्षा की, िे भी आदर के पात्र ैं। क्जन योद्धाओिंने, कुशि राजनीयतज्ञों ने अपनी मातृभूलम को दुश्ुमन के चगिुंि से छुडाया और साथ-साथ मगध, मिाि आहद समृद्ध साम्राज्यों का यनमाणस ककया; चद्रिंगुप्त, विक्रमाहदत्य, शािििा न आहद सम्राटों ने सभी ह दिंुओ िको एकत्र करके राष्ट्रीय सामथ्य सको िृद्धधगिंत ककया, उनको म कृतज्ञता ज्ञावपत करते े ैं। यद्यवप इन सम्राटों ने मारे प्रातिों को अपने अधीन करिाकर साम्राज्य यनमाणस ककया और मारे पिूजसों को भी आत्मा ुयत देनी पडी। कफर भी र ह दिंू ूको उनका ऋणी र ना चाह ए। उनके म ान् ्कायों का स्मरण करते े ुए उनके लिए श्रद्धाभिा रखना चाह ए। इस काय सके लिए प्रत्येक ह दिंू ूको जो खोना पडा, उसे ेअपरर ाय सआपवत्त समझना चाह ए। कुछ पाने के लिए कुछ खोना भी पडता ै। चद्रिंगुप्त, पुष्ट्यलमत्र, समुद्रगुप्त, गौतमी के म ान् ्पौत्र अथिा यशोिमनस ने ी इस भूलम को ूण, शक आहद आक्रमणकाररयों से मुक्त ककया था। कफर भी समुधचत साधनों के अभिा में छत्रपयत लशिाजी म ाराज, बाजीराि, भाऊ, समथ सरामदास स्िामी, जनकोजी, नाना आहद मरिों जैसे े योगदान का उदा रण भारतीय इयत ास में विरिा ी ोगा। मरिों के समय सकिंट की तीव्रता और विशािता अधधक थी। ह दिंुस्ुथान का अक्स्तत्् खतरे में था। दुयनया के नक्शेसे उसका नामोयनशान लमटने ेकी आशकिंा थी। अतः ऐसी क्स्थयत में देश की डूबती नैया पार िगानेके उनके काय सके आगे ेप्रत्येक ह दिंू ूको अपना शीश न ी ि निाना चाह ए क्या? बडेगि ससे, प्रेमभिा सेऔर शुद्ध अतिंःकरण से उस साम्राज्य को याद न ििंरखना चाह ए क्या ?

िाष्ट्प और विद्युत् ्के इस युग में मैक्जनी और गैरीबॉल्डी जैसै ेनेताओिंको िकै नैयतक प्रचार के बि पर सपिूंण सइटिी को सगिंहित करनेमें कामयाबी न ििंलमिी। उनकी म त्िाकािक्षिं सभी प्रायिंतक भेदभिा नष्ट करके अपनिोगों को सगिंहित करके इटिी को एक अखडिं राज्य बनाने की थी और उसकी पूयत सके लिए उन् ें भी अिैध तरीके अपनाने पडे। नेपल्स तथा रोम की प्रजा को सयिुंक्त इटिी राज्य यनमाणस का प्रयास ज्यादा म त्िपूण सन ी ि गिता था और उसके लिए अपनी व्यक्क्तगत स्ितिंत्रता को यतािजिंलि देनेकी बात उनके पिे्ि ेन ििंपड र ी थी। व्यक्क्तगत स्ितिंत्रता को अ म माननिेिी और क्जनकी सकिंल्प-विकल्प बुद्धध िकै अपने प्रातिं तक ी सीलमत ै, ऐसेिोगों को पीडमॉट का राजा और उसी प्रातिं के गैरीबॉल्डी, क्रोस्पो, कॅव् ूर आहद आदिंिनकताओसिं के काय सके

बारे में, और उनके आश्ासिनों के बारे में सदिें उत्पन्न ोना सा लसक था। ऑक्स्रया और फ्ांसि की गिुामी करने में उन् ें बुरा न िींिग र ा था। य उनके स्िभाि में घिु- लमि गई थी। गिुामी मानलसकता के अनुरूप अपनी जैसी ी क्स्थयत में र निेिा ककसी को अपना स्िामी बनाकर उसकी आज्ञा का पािन करना तथा उसे ेअपनेसे श्ेरेष्ठ्ठ समझना उनके गिे न िींउतर र ा था। इटिी के आदिंिनिकताओसिंके काय सकी तिुना म मरािा आदिंिनिकताओसिंके काय से ेकरेंगे ेतो पता चिेगा कक उन् ें भी न लसफस परकीयों से िडना पडा, बक्ल्क अपनेबाधंिि से भी दुश्ुमनी मोि िेनी पडी; िेककन इयत ास उन् ें बधंि-विरोध के िाछिंन से मुक्त करता ै। इन आदिंिनिकताओस िं ने क्जन यनओपॉलिटन और रोमन िोगों को युद्ध में पराक्जत ककया, उनके िशंज भी आज इनका आदर करते े ैं और उनके काय सके आगे ेनतमस्तक ोते े ैं।

इटिी में जैसे ेपीडमॉट के राजा को ी बाद में अखखि इटिी राज्य का शासक माना गया, िैसे ी ी अनुकूि पररक्स्थयत प्राप्त ोते े ी, उस मरािा राजा का ह दिंुसु्थान के सम्राट् के नाते ेराज्यालभषेक ककया जाना चाह ए था। मरािों के लमत्र तथा शत्रु-दोनों य तथ्य स्िीकार करते े ैं कक सदालशिराि भाऊ ने अखखि ह दिंुसु्थान के सम्राट् के नाते ेविश्ासिराि के नाम का ऐिान भी ककया था। मरािों के कायसकाि में ह दिंसु्थान में जो राजकीय गयतविधधयाँ घटिीं उनकी आधुयनक जमनस की स्ितिंत्रता और सगंिन विषयक गयतविधधयों से काफी समानता ै- य इयत ास से ज्ञात ोता ै। जमनस साम्राज्य जैसे े ी क्जसका अलभवषक्त सम्राट् मरािों का छत्रपयत ै, ऐसा ह दिंओुंका साम्राज्य िगभग स्थावपत ो चुका था। क्जस प्रकार पोडमॉट के इटिी के राज्य में और पलसयसा के जमनस साम्राज्य में राष्ट्रीयता की भािना कूट-कूटकर भरी थी, उसी प्रकार म ाराष्ट्र का ह दिंू ूराज्य अखखि ह दिंूह त और देशभक्क्त की भािना से ओतप्रोत था। अतः इस साम्राज्य के यनमाणस में क्जन् ोंनेआत्मा ुयत दी, उनकी स्मृयत को धचरंजीिी रखना मारा परम कतव्सय ै।

मरािों की युद्धशिैी

'आपणास राखून गनीम घयावा l स्थलासिं गतनमाचा वेटा पडला तो रोज झुजिंून स्थल जतन करावे। तनदान येऊन पडले ेतरी पररजच्छन्नवार होऊन लोकी मरावे। पण सल्ला देऊन जीव वाचववला असे ेसवथमा न घडावे।'

- राजाज्ञा

(- अगर शत्रु ुने म पर धिाा बिो हदया तो उसका मुकाबिा करते िेक्त अपनी सुरक्षा की खबरदारी िेनी चाह ए। सकिंट अगर यनताति नजदीक आया ो तो उसी स्थान पर अडडग र कर अपना शरीर शतशः खडिंडत ोनेकी परि ककए बगैर मृतूयु का िरण करना चाह ए। मातृभूलम का बलिदान देकर अपनी जान बचाई - ऐसी दुयुनया में अपकीयत सन िींोनी चाह ए।)

'ऐसेअपघेची उठता। परदलाची काय ती धचतिां l

हहरणेपलतत उठतत धचिा। चहुिंकडे॥'

- समथ सगुरु रामदास

(- इसी तर अगर सपूिंण सविश्िभी मारे खखिाफ ो जाए, तब भी कोई धचतिा न ी।िं कफर लसफस एकपरकीय आक्रमणकारी सेक्या डरना ! शत्रुसेना को यत्र-तत्र भागिनेी ेह रनों के समू जैसा समझो ।)

सिंक्षक्षप्त िृतूतातिं के प्रारिंभ में ी मनेइस बात का क्जक्र ककया ै कक ह दिंूायत के आिचसीन इयत ास से और लशिाजी म ाराज के जन्म सेक्जस िैभिशािी युग का उदय ुआ, उसका श्रेय क्जतना लशिाजी म ाराज और उनके गुरु समथ सरामदास स्िामीजी द्िारा प्रस्तुत म ान् ्राष्ट्रीय तथा आध्याक्त्मक ध्येय को जाता ै, उतना ी मराठों ने युद्धभूलम पर जो छापामार युद्धपद्धयत अपनाई, उसे ेभी देना चाह ए। इस युद्धपद्धयत को कृियुद्धपद्धयत क ना उधचत ोगा, क्योंकक इसमें धूततसा की अ लमयत ोती ै। य िदिांपेंचों से भरपूर ोती ै। ैं कक ह दिंूायत के यनस्तेज ोते ेजा र े जीिन में चैतन्य जगािनेी शक्क्त जैसे े म यनक्श्चत रूप सेक सकते म ाराष्ट्र का धम सथी, उसी प्रकार मराठों की य युद्धशैली उस समय ह दिंूायत में प्रचलित युद्धशास्त्र को स ी

मारेदसशनस देिनेी थी। मने इस सक्षिंक्षप्त िृतूतातिं में क्जन ऐयत ालसक िाक्यों का उल्िेख ककया, उससे उपररयनहदसष्ट विधान की पुक्ष्ट ोती ै। लशिाजी म ाराज के राज्यकिा में ि अत्यतिं उपयुक्त थी, उपयुक्तता के कारण ी ि प्रचलित ुई। इसे ेन लसफस लशिाजी म ाराज ने अपनाया, बक्ल्क उनके अनुयायी भी इसका अिििंबिं करने िगे। लशिाजी म ाराज के समय तो शुरू-शुरू में क्रायिंतकाररयों के विशिा दि न िेथे; िेककन उनकी उत्तराधधकाररयों की पीढी में दि भार बढता गया, तब उन् ें य युद्धशैली काफी सुविधाजनक िगी। कायक्षसमता की दृक्ष्ट से य शिैी अद्वितीय थी। इसलिए दुशुमन का सामना करते ेसमय मराठी िीरों ने इसका बखूबी प्रयोग ककया। मराठी सेनानायकों ने विशिा सेनासमू में इसका इतना असरदार प्रयोग ककया कक मराठी सेना का आमना- सामना ोते े ी दुशुमन जीनेकी आशा छोड देते ेथे- य बात मनेइस िििेचन में कई बार लिखी ै।

बिशिी शत्रु से मुकाबिा करते ेसमय मरिों के घुडसिार चारों ओर पास की ी प ाडडयों में यछप जाते े थेअथिा झाडडयों की ओट में बिै जाते ेथेऔर ि ाँसे शत्रु ुकी गयतविधधयों पर यनगरानी रखते ेथे। दुश्मन इस गितफ मी में बेकेफक्र र तेथेकक मरिों को मारा सामना करने की ह म्मत न िीं ुई, इसलिए ि भाग गए ।ै दुश्मन विजयोन्माद से जैसी आगे ेबढने िगता था, मरिी उसे ेदबोच िेतेथे। कभी-कभी तो मरिी क्जस सकाँरी जग पर दुश्मन के आनेका इंतिजार करते ेर ते ेथे, िीक उसी जग पर दुश्मन के प ुाँचते ी ि क्जस द्रुतुगयत से दुश्मन की आखोँों से ओझि ो गए थे, उसी गयत से दुश्मन को लशकंिजेमें फाँसा िेतेथे। अनायास ाथ िगेलशकार पर ि सगिंहित ोकर टूट पडते ेथे। य सब यकायक क्या ो र ा ै, य सोचने ेका अिसर ी दुश्मन को न ी िं लमिता था। िडाई के िक्त मरिी इतनी प्रचडिंता से िडते ेथेकक दुश्मन मेशा के लिए ह म्मत ार जाते ेथे। बदायू ाँूकी घाटी में ुआ सग्रिंाम और िंबीररिा से ककया ुआ युद्ध इस बात के प्रमाण ैं। मरिों की इस युद्ध विशेषता का पररचय कई रण- प्रसगिंों से लमिता ै। शौय सका प्रदशनस करने का उनका अभ्यास इतना जबरदस्त था कक उनकी िडने की इच्छा क्जस समय न िींर ती थी, उस समय उन् ें िििकारना दुश्मन के लिए 'आ बिै मुझे े मार' जैसा ोता था।

मरिों की युद्धर्शी और आत्मा ुयत का प्रमाण था समथ सरामदास स्िामीजी का य िचन -' शक्क्त ने लमिती राज्ये, युक्क्त ने यत्न ोत से' अथात्स ्राज्य शक्क्त द्िारा जीते ेजाते े ैं और युक्क्त के द्िारा काय ससफि ोते े ैं। ि धमयुसद्ध के ह मायती थेऔर ऐसा पवित्र युद्ध ककए बबना स्ितित्रिंता अथिा साम्राज्य की उपिक्ब्ध असभिंि थी। आत्मा ुयत और असीम शौय-सइन दोनों गुणों के कारण मरिी अखखि ह दिंसुथान के स्िामी बन सके। इन् िींगुणों के कारण िीर तानाजी लस िंगढ पर भगिा ध्िज फ रा सके। मरिा िीर पराक्रम से ज्यादा चातुय सको प्राथलमकता देते ेथे। पराक्रम तो पशु भी करता ै, िेककन चतुरता से, िििेक-बुद्धध से मनुष्य ी पराक्रम कर सकता ै। यश-प्राक्प्त के लिए िििेक-बुद्धध से ककया गया आत्मबलिदान ी जरूरी ोता ै। बलिदान यनरथकस

मिी, जैसेमा ेकर्ेुईस्थानिमेंकीिुद्ध...नीयत में क्जस बलिदान से िक्ष्यपूयत सन िीं 'कातय सिके नीयत, शौय सश्िपिदचेक्ष्टतम्' ् इस श्िकोध समें यनह त मालमकस उपदेश समथ सरामदास स्िामीजी ने 'शक्क्त युक्क्त जये िायी तेथे श्रीमतिं नादिंती !' इस पद्य में ककया ै। इसका मतिब ै, ज ा ाँताकत के साथ-साथ जुगत भी ोती ै ि ा ाँिक्ष्मी का िास ोता ै। मरिी प्रसगिंािधानी थे। प्रसगिं की गभीरता का अनुमान िेकर ि अपनी कम-से-कम और शत्रु की ज्यादा-से-ज्यादा ायन करिनेीतरीके अपनाते ेथे तथा फूिंक-फूिंककर कदम रखते ेथे। इतनी सािधानी बरतनेके बािजूद अगर सकिंट अटि ो जाए तो अपनेसा स का पररचय देते ेथे। जब तक सभिंि ो, ि युद्ध को टािनेके पक्ष में र ते ेथे; िेककन अगर युद्ध करना ी पडेतो उसे ेयनणायसक क्स्थयत में िे जाते ेथे।

मरिी शत्रुके मोरचे के सैयनक अपनेदि से अिग-थिग पडते े ी उनका कत्िकरने के ेतु से अथिा शत्रु पक्ष के छोटे-छोटे दिों पर मिा करने के ेतु से झाडडयों में यछपकर टो िेते र ते ेथे। शत्रु अगर उनका पीछा करता तो ि ककस हदशा में गायब ो गए, शत्रु को इसका पता ी न िींचिता था और आखखर तगिं आकर शत्रु जब

पीछा करना छोड देते ेथे, तब अचानक क ी िंसे आकर मरिो शत्रु को दबोच िेते थे।े मरिों की विशिा सेनिााह यनयों ने भी इन् ी िंदिााँपेंचों का प्रयोग ककया। शुरू-शुरू में शत्रु पक्ष के इक्के-दुक्के सैयनक को ी पकडकर उसका काम तमाम कर देते थे, िेककन बाद में उनकी पूरी सेनिााह नी को अपनी धगरफ्त में िेकर कर्त्ोआम करते ेथे। म इयत ास में देख सकते ैं कक िोकरजी और पटिधनसजी ने अग्रेंजों के साथ ुए प िे ेयुद्ध में छत्रपयत लशिाजी म ाराज द्िारा अपनाई गई युद्धनीयत का ी प्रयोग ककया और उसी का अनुसरण नाना फणनिीस एि िंम ादजी लसधिंधया के समय तक मरिों द्िारा ककया गया। लशिाजी म ाराज के उत्तराधधकाररयों ने न लसफस अनुसरण ककया, बक्ल्क उस नीयत में पररक्स्थयत के अनुरूप सुधार भी ककया।

'उनकी इस युद्धनीयत की दूसूरी प्रमुख विशेषता य थी कक शत्रु पर उसकी असािधानता की क्स्थयत में मिा करके उसे ेबचािात्मक पतैंरा अपनानेपर मजबूर ोना पडता था। िे खुद जाकर शत्रु के प्रातिं पर आक्रमण करते ेथे ेऔर अपनी गैर- ाक्जरी में अपना प्रातिं सुरक्षक्षत रखते ेथे। युद्ध शत्रु के प्रातिं में vec 617 के कारण उसकी ी ायन ोती थी। िगातार मिे करना, शत्रु पक्ष की रसद नष्ट करना, मेशा आपक्त्िीन क्स्थयत बनाए रखना - इस तर ि ाँकी प्रजा को भी िे परेशान करते ेर ते ेथे। कभी भी सुकून न लमिने के कारण शत्रु ुसेना का मनोधैय स और ौसिा - दोनों पर असर पडता था। युद्ध की क्स्थयत बनी र ने के कारण चीजों की दुिभसता, कफर उससे म ाँगाई, अकिा और भ्रष्टाचार - ये सभी समस्याए ाँउत्पन्न ोती थी।िं इधर खाई उधर कुआाँ- शत्रु ुपक्ष की ऐसी ाति करने के बाद और युद्ध-व्यय पूरा करने के लिए उसपर चौथ कर िागू कर देते थे। मतिब, शत्रुपक्ष को अपनी सेना के साथ-साथ मरिों की सेना को भी पोसना पडता था। शत्रु ुके लिए इस क्स्थयत को न उगिते ेबनता था, न यनगिते । मरिों के शत्रु यनराशा सेक ते ेथेकक मरिों के साथ िडाई करने का मतिब िा के साथ िडना ै, पानी को दो भागों में विभक्त करना ै। इस युद्धनीयत को अपनाने से िीर राघोजी भोंसिे ेको बगिंाि में ब ुत सफिता लमिी। िगातार आक्रमण करके िे ाँके निाब को इतना त्रस्त ककया कक अतिंतः उसे ेउडीसा मरिों को सौंप देने के लिए वििश ोना पडा। उसे ेएक ह दिंू ूराजा को कर देकर उसकी शरण ोना पडा। इसका िििेचन म प िे े ी कर चुके ैं।

मरिों की इस युद्धशिैी का विरोध करने ििाे कुछ िोगों का क ना ै कक शत्रु के प्रातिं में युद्ध करके िााँअकिा की क्स्थयत यनलमतस करना, िे ाँचौथ िसूि करके आम जनता को परेशान करना आहद लशिाजी म ाराज के जमाने में तो उधचत था, िेककन बाद में उस उत्पन्न क्स्थयत से मरिों को विशिा सेना रखने ेकी ेलसयत प्राप्त ो गई। तब, अथात् स ्पेशिा के जमाने में िैसा करना विशुद्ध िूटपाट थी। मारे अनुसार विरोधधयों का य क ना उधचत न ीं, क्योंकक उस अिधध में न ििके मरिो बक्ल्क सभी राष्ट्र इस नीयत का ििअिबिंन करते े थे। ि रणनीयत का अ म ह स्सा था। ह दिंू,ू मुसिमान ऐसा भेद न करके दोनों इसका प्रयोग करते ेथे। यूरोपीय और एलशयाई राष्ट्र भी इसके लिए अपिाद न ीिंथे। पुतगसािी, अग्रेंज सभी शत्रु के प्रातिंों पर कब्जा करने के बाद उनपर युद्ध-कर िगाना आिश्यक मानते ेथे। लशिाजी म ाराज के उत्तराधधकाररयों द्िारा इस नीयत को अपनाने का दूसूरा कारण य था कक उस समय मरिों का कायक्षेसत्र सुदूरू तक फैिा ुआ था। उन् ें अिग-अिग स्थानों पर अिग-अिग दुश्मुनों का सामना करना पडता था। उनके सभी दुश्मुन प्रजा पर जुल्मु ढािेनेी, दूसूरों का राज्य

धथयाग्निनी ोते ेथे। ऐसे दुश्ुमनों का सामना करने के लिए मरािों को विशिा सेना रखनी पडती थी। उनकी राजधानी, जो उनके कायक्षेसते्र का प्रमुख बबदिंु ुथी, उस पूना नगरी से कभी पजिांब, तो कभी अकासट तक उन् ें युद्ध

करनेसिएक्रासलपडतमरािोंमहलिए दूरू तक र जग अपनेखचे ेसे सेना को ििबिं

मुक्श्कि ो जाता था। अगर सेनो को अपने खचे से पोसना उन् ें शक्य भी ो जाता, तब भी उनका इस युद्धनीयत का प्रयोग करना गित न िीं था, क्योंकक शत्रु ुसामथ्य सको क्षयत प ुाँचाकर शत्रु को अविविबं अपनी शरण में िाने के लिए य नीयत बडी कारगर साबबत ो र ी थी।

मरािों के दुश्ुमन उनकी इस युद्धिशैी को िूटपाट या डाकाजनी क ते े ैं। बोअरों और जमनसों के युद्ध में िंडि सडि ौजी के अन्य राज्यों को अग्रेिंजी राज्य में िविीन करतेसमय सन् ्१८५७ के निी के युद्ध में इस नीयत का स ारा लिया गया था; िेकेकन तब ककसी ने भी इसे ेअक्षम्य समझकर उन् ें दोषी करार न िींहदया था। िास्ति में निी में िडा गया युद्ध सामररक नीयत के खखिाफ था, क्योंकक उसका उद्देश्य िैमनस्य भिा से दूसूरे राज्यों को अपने राज्यों में िविीन कर िेना था। इसके विपरीत ह दिंुओंुका स्तितिंता के लिए िडना न्यायसगिंत था। िैसे तो युद्ध में कुछ भी जायज ोता ै। मरािों का सामना औरिंगजेब, टीपू, गुिाम कादर आहद शत्रुओंसे ुआ था। अपनेदेश की रक्षा के लिए इस तर की नीयत अपनाना न्यायसगिंत समझना चाह ए। अपने शत्रुओंको इस सबिंधिं में छत्रपयत लशिाजी म ाराज ने करारा जिाब हदया ै, उसका उल्िेखे म य ााँकरते े ैं। जो इस तर ै-" आपके बादशा ने मेरे देश की रक्षा के लिए मुझे ेय सेनादि खडा करनेके लिए बाध्य ककया ै। अत: उसके खचे का बोझ उसकी प्रजा द्िारा उिाना तकसगिंत ै!" छत्रपयत लशिाजी म ाराज जब सिारी पर यनकिते ेथे, तब य इकरारनामा करते ेथे ेकक मारी रा पर जो िोग मारा अधधकार मानेंगे ेऔर मारी अिज्ञा न ी िंकरेंगे,े उन् ें मुझसे तथा मेरे सैयैनकों से कोई भी परेशानी न िींोगी। तत्किीन अग्रेिंज िेखकों ने भी य बात स्िीकार की ै। अपना िचन यनभानेमें लशिाजी म ाराज दृढ र ते ेथे। उनके अनुयायी भी िचन पािन करने में दृढ थे। इस तथ्य की पुक्ष्ट के लिए म सन् ्१७५७ में खडा समें ुई िडाई का प्रमाण देते े ैं। इसमें मरािों को उज्ज्िि यश प्राप्त ुआ और युद्ध-समाक्प्त तक उन् ोंने अपनेिचनों का पािन ककया।

अब इसमें कोई सदिं न िींकक िगातार ोती र ी िडाइयों के कारण दुश्ुमन को प्रजा को बििाज परेशानी झेिनी पडती थी; ककिंतु युद्ध में सबकुछ जायज ोता ै- इस यनयम से ककस पक्ष का िाभ ो र ा ै और ककस पक्ष की ायन-ऐसा सूक्ष्म विश्िेषण करना में अनािश्यक िगता ै, क्योंकक क्जस भायााँत मरािों को मुसिमान तथा उनके अन्य शत्रुओ िंद्िारा क्षयतपूयत सचुकुानी पडी, उसी भायााँत ह दिंू ूभी उसका लशकार बने। इस म ान् ्काय समें िस्तुतः र प्रातिं के ह दिंुओ ुिंको मरािों का साथ देना चाह ए था, िेकेकन िे ििके तटस्थ ी न िींर े बक्ल्क उन् ोंनेमरािों से शत्रुता मोि िी। राष्ट्रीय ह त के लिए स्िथि-सत्याग करने की क्जनकी जरा भी तैयारी न ी िं र ती थी और जो मौकापरस्त र ते ेथे,े ऐसे ह दिंुओ ुिंको युद्ध में ोनेिािी खच सका भार उिाने पर विशा करना पडता था। ह दिंुओ ुिंकी िशिं-परिंपरा, सस्िंकृयत और उनके पूजास्थि- इन सबकी रक्षा ह दिंू ूसेनो के शौय सके कारण ी ोती थी। अतः ऐसी सेना को पोसने के लिए य एक प्रकार का अप्रत्यक्ष युद्ध-कर ी सभी ह दिंुओंुपर िागू ककया गया था। य युद्ध-कर िसूिते समय ो सकता ै, मरािी सैयनकों द्िारा कभी-कभार

ज्यादती ुई ोगी। म उनकी बरजोरी का समथनस न िींकरते, िककन इस बात का भी ध्यान रखना चाह ए कक मरािों को मुसिमान, पुतगसािी आहद शत्रुओ िंका मुकाबिा करते िक्त जैसे ेबबरस जुल्मों को स ना पडा, उससेउनके द्िारा ककए ुए जुल्म तो कुछ भी न िींथे। क्जन मौिवियों ने धमप्रसचार करने की धुन में कई ह दिंओु िं का जबदसस्ती धमातसरण ककया, उन् ें भी मरािों ने उनकी ताकत बढने के बािजूद ह दिंधूम सस्िीकािरने पर वििश न िींककया। अपनेईश्िर का िचस्िि साबबत करने के लिए उन् ोंनेएक भी मसक्जद न िीं धगराई अथिा धगरजों को ध्िस्त न िींककया। िे अगर चा ते ेतो ऐसेकृत्य कर सकतेथे। उन् ोंनेककया न िीं- इसका मतिब य न िींकक उनमें सामथ्य सन िींथी। अपने अल्िा िा अथिा आसमान में र निेिािे प्रभु का िचस्िि साबबत करने के लिए परधलमयसों को इस तर की ओछी रकतों का स ारा िेना पडता था, नैयतक अत्याचार अथिा गुडिंगदी जैसे ेनीच कृत्यों के सदिंभ समें मरािों के कट्टर दुश्मन भी उन् ें बदनाम न िींकर सके। मरािों का आचरण इतना यनष्किकिं था कक अपनेधम सकी खायतर कभी उन् ोंनेजघन्य त्याकािडिं ककए ैं अथिा स्त्रीजायत का चररत्र नन ककया ै अथिा दूसूरे धमों के पवित्र ग्रथिं जिाए ैं- इस तर के जघन्य कृत्य करने का एक भी उदा रण न िींलमिेगा। उनके खखिाफ उनके शत्रु िेिि य ी आरोप िगा सकते े ैं कक क्जसे िूट ऐसी सज्ञिं दी जाती ै, मतिब युद्ध-कर िसूिना और शत्रु ुकी रसद खडिंडत करके उसके प्राितिं को ध्िस्त करना मरािों का काम था। मरािे दूसूरे प्राितिं पर मिे करते ेर ते ेथे;े िेकेकन जब कभी शत्रु ुउनके प्राितिं पर मिा करता था, तब भी मरािे अपनेप्राितिं में य ी तरीका अपनाते ेथे। इससे इस बात को समथनस लमिता ै कक तत्सामययक क्स्थयत में इसी युद्धशैिी का स ारा िेना अत्यािश्यक ो जाता था। मरािों के इयत ास में दो ऐसे भी उदा रण ैं। जैसे ेराजाराम म ाराज के नेतृत्ि में जब औरिंगजेब ने पूना आक्रमण ककया और अग्रिंजों नेभी मिा ककया, तब मरािों ने अपनेप्राितिं को ध्िस्त

करनेमें तयनक भी हिचककचा ट न िीं हदखाई और शत्रु को मात दी। अग्रिंजों की सिारी के समय तो उनके ाथों पिन नगरी पूना बरबाद ोते े ुए देखने ेकी बजाय खुद ु ी उसे ेजिाकर उजाडने का सकिंल्प मरािों ने ककया था। मतिब उन् ोंनेअपनेप्राितिं में शत्रुओिंका उत्पात मचनेन िींहदया। दूसूरे प्राितिं में युद्ध-कर िसूिना, अव्यिस्था का मा ौि पैदा करना आहद तरीके मरािे लसफस युद्ध-समाक्प्त तक ी अपनाते े थे। अपने बाधिंिों को जो इस म ान् ्काय समें साथ न िींदे र े थे, उन् ें सताना उनका प्रमुख उद्देश्य न िींर ता था। जैसे े ी कोई प्रदेश विधधित् ्ह दिं ूसाम्राज्य का अिंग बन जाता था, तो मरािे ि ाँउत्पात मचाना बदिं कर देते ेथे। अगर अपने ी बाधिंिों के लिए उनके मन में अनास्था र ती तो परकीय आक्रमणों से खुदु को बचानेके लिए दूसूरे प्राितिं के ह दिं ूबडी आशा से मरािों को अपनी स ायता के लिए पुकारने पर ि ा ाँमरािे दौडकर न िींजाते। इस म ान् ्काय सकी सपिंन्नता के लिए अपनेबाधिंिों पर नैयतक दबाि बनाए रखना ी मरािों का उद्देश्य था। परकीय आक्रमणों से अपनेबाधिंिों की रक्षा करते िक्त मरािे उनके प्रयत सौ ादस भािना रखते ेथे।

यदा-कदा मरािों द्िारा अपनेबाधिंिों पर जो जुलुम ककए गए, िे उपेक्षणीय ैं, िककन में य भूिना न ी िं चाह ए कक जब रोम से गैरीबॉडी िापस िौटा, तब भी ऐसे जुल्म ुए थे। राज्य क्रायिंत के िक्त थोडे–ब ुत जुलुम ोना साधारण बात ै। फ्ािंस से िेकर जमनसी तक सभी राज्य क्रायिंतयों में य ी ुआ। क्जस तर ऐसी घटनाओिंसे यूरोप की राज्य क्रायिंत किकिंकत न िीं ुई, उसी तर अत्याचार की यछटपुट घटनाओिंसे मरािों की उज्ज्िि क्रायिंत

की प्रयतष्ठा पिर आचाँ न ी िंआती। विदेलशयों ने ह दिंुओंुपर जो अत्याचार ककए थेउनकी तुिना में मरािों द्िारा ककए गए अत्याचार ऊाँट के मु ाँ में जीरा जैसे ेक्षुद्र ैं। क्जस म ान् ्आदिंोिन के कारण सहदयों से दासता के बधिंन में जकडे र ने से धिू-धूसररत ुआ ह दिंू ूध्िज कफर से सम्मान के साथ उ खडा ुआ; क्जस आदिंोिन के फिस्िरूप मरािों ने राजाओं, म ाराजाओ,ं निाबों और सम्राटों का प्रयतशोध करके इस ध्िज को अटक तक फ राया और शत्रु ु को अपने सामने शीश झुकाने पर मजबूर ककया-ऐसे म ान् ्आदिंोिन के प्रयत प्रत्येक ह दिंू ूके हृदय में गौरि तथा श्रद्धाभाि का ोना आिश्यक ै।

साम्राज्य द्िारा ह दिंू ूजीिन का सिाांगीण पुनजाागरण

'शस्त्रेण रक्षिते ेराष्ट्रे शास्त्रधचन्ता प्रवततेम े!'

(- शस्त्रों द्िारा ी राष्ट्र की रक्षा सभिं ै और उसके उपरातिं ी शास्त्रों की धचतिंा की जा सकती ै।)

मरािी साम्राज्य की स्थापना से ह दिंू ूराष्ट्र का मानो कायाकल्प ो गया। ह दिंुओ ुंके मरािी पुनजाागसरण के काय सका श्रीगणेश तो ो गया, िेककन अखखि ह दिंूुायत के विशाि साम्राज्य की स्थापना का उद्देश्य अभी शेष था। ह दिंू ूराष्ट्र का सिाांगीण उद्धार मरािी साम्राज्य की छत्रच्छाया में ी ोता र ा। इस साम्राज्य द्िारा ह दिंूुायत में विद्यमान त्रुहटयों का उन्मूिन करने के लिए उसमें अपेक्षक्षत सुधार भी ककए गए। अनेकआदिंोिनों को बढािा हदया। शत्रुओंके गुणों को भी बडी उदारता से ग्र ण ककया। परकीय आक्रमणों के भय से ह दिंू ूजीिन को मुक्त करने के लिए प्रयास ककए। उस समय फारसी और अरबी भाषाओंने भी ह दिंुस्थानी भाषाओं को अपनी धगरफ्त में िेकर अपना िचस्ि कायम ककया था। राज्य शासन का कारोबार ज्यादातर फारसी भाषा में ी ोता था, िेककन

ह दिंू ूराज्य का सूत्र-सचंािन अपने ाथों में िेते मरािों ने फारसी भाषा के व्यि ार पर पाबदंी िगा दी। उन् ोंने

सिप्रसथम भाषा शुद्धध के काय सको िरीयता दी। उनका ऐसा करना अत्याश्यक था, िरना उनकी भाषा का अक्स्तत्ि खतरे में पड सकता था; पजिंाब तथा लसधिं प्रातिों की तर ि ाँभी अरबी और उदूस भाषा का ी िचस्सि ो जाता। भाषा शुद्धीकरण के काय ससेमरिी भाषा का दजास अव्िर ा। 'राज्य व्यि ार कोश' की रचना के काय स पर एक विद्िन् ्की यनयुक्त की गई। इस कोश में राष्ट्र भाषा पर, राजनैयतक विचारों पर और रचनाओिंपर क्जन मुसलिम शब्दों का प्रभि पडा था उनके पयायसिाची शब्दों को क्रमिार लिखा गया। परकीय भाषा के प्रयोग पर पाबिंदी िगाई गई। अपनी राष्ट्रभाषा का प्रयोग करने के लिए िोगों को प्रेररत ककया गया। परकीय शब्दों के इस तर के यनषेध का मरिी भाषा पर आश्चयजसनक असर ुआ। राजकीय पत्रि–खेन और राजनययकों के िखेन की भाषा में काफी सुधार ुआ और उसमें परकीय शब्दों का प्रयोग िक्जतस ककया गया। मरिी कविराज मोरोपतिं द्िारा रधचत 'म ाभारत' ग्रथिं इस बात का सिोत्कृष्ट प्रमाण ै। ऐयत ालसक एिं राजनैयतक िाङ्मय, पद्य अथिा गद्य िाङ्मय सस्ंकाररत ोता गया। 'बखर' मतिब ऐयत ालसक घटनाओिंपर प्रकाश डािनिेग्रथिं भी अपने-आप में श्रेष्ि ैं। इस तर के िाङ्मय प्रकारों की भाषा इतनी सजिी और जोश भरी ै कक पढनििे की चेतना जाग्रत् ्ो उिी तत्सामययक गयतविधयों ने इयत ास को भी तरोताजा रखने ेका काम ककया था। उस समय के िोगों का जीिन शौयपूसण सकृत्यों सेइतना व्यस्त र ता था कक यनरथकस बातें करने की उन् ें फुरसत ी न ििंलमिती थी। अतः स ज ी उनकी िाणी सयिंलमत और ओजस्िी ोती थी। इसका उत्तम उदा रण ै 'पाँिाडा' नामक काव्य प्रकार। आधुयनक काि में भाषा में ऐसी ओजक्स्िता ढूँढने से भी न ििंलमिती, क्योंकक इस युग में िीरतापूण सकायों के अनुभि के बगैर ी किमशूर इयत ास लिख डािते ैं। मरिों के समय क्जन् ोंने युद्ध-प्रसगिों का खुद अनुभि ककया, िे अपनी जोशपूण सिाणी में उनका बयान करते ेथे। उस कािखडिं में िकेि मरिी भाषा के प्रचार अथिा प्रयोग को बढािा लमिा, ऐसी बात न िीं ै। पवित्र भाषा सस्ंकृत को भी प्रोत्सा न लमिा। पुराण, िेद, उपयनषद्, ज्योयतषशास्त्र, काव्य, आयिुेद तथा ह दिं ूसाह त्य के सभी अगिों का पुनजागसरण ुआ। सिागीण विकास की दृक्ष्ट से िोगों को सभी प्रकार की लशक्षा प्रदान करनिेािे केंद्र स्थावपत ककए गए। भारत के विलभन्न स्थानों में क्स्थत ह दिं ूराजधायनया ाँलशक्षा का आदान-प्रदान करनिेािे केंद्र बन गईं। नैयतक लशक्षा को िरीयता दी गई। धालमकस लशक्षा के लिए मििों की स्थापना की गई। रामेश्िरम् ्से िेकर रद्िर तक और द्िारका से िेकर जगन्नाथपुरी तक ह दिं ूतत्त्िज्ञान, नीयतशास्त्र और सस्ंकृयत का प्रचार करनिेािेिोगों को मरिों ने सुरक्षा उपिब्ध कराई। इन धम-सप्रचारकों सेविचार विमश सकरने के लिए, उनकी स ायता करने के लिए, उनकी र सुख-सुविधा का खयाि रखने ेके लिए प्राितंाधधकारी एििंसेनाधधकाररयों की आपस में ोड िगने िगी। ऐसेिोगों के लिए मििों की स्थापना की शुरुआत श्री समथ सरामदास स्िामीजी ने ी की। धीरे-धीरे ह दिंसु्थान भर में इनकी सख्ंया में िृद्धध ोती गई और धम-सप्रचार के साथ-साथ ि ाँराजकीय प्रचार भी ोने िगा। खुद पेशिा की अध्यक्षता में पूना में र साि सािन के म ीने में भारत भर के पडिंडतों का सम्मिेन आयोक्जत ोता था। सभी शास्त्रों की यनयलमत परीक्षाए ँिी जाती थी िंऔर पुरस्कार वितररत ककए जाते ेथे। उपाधध और पुरस्कारों पर िाखों रुपए खच सककए जाते ेथे। विकीण स ह दिं ूविचारधारा को ऐसेसम्मिेनों द्िारा एक यनक्श्चत हदशा लमिती थी। दुश्मन का मुकाबिा करने के लिए अिग-अिग जायत एििंपथिों के ह दिंओु िंको एकत्र करने का काय ससपिंन्न ोता था। बडेअलभमान के साथ िरािनिेे ह दिं ूध्िज के तिे सक्म्मलित ुए ह दिंओुिंके मन में ' म सब एक ैं' की भािना उहदत ोती थी।

पेशिा और उनके मन्त्रीगण सिाजसयनक कायों का भी विशेष ध्यान रखते ेथे। इन कायों के लिए जरूरी धन-स्रोत सभी हदशाओ िंसे ब ता ुआ मरिों की राजधानी पूना में सकिंलित ोता था। करि–सिूी के रूप में इकट्ठें ुए इस धन का वियनमय स ी तरीके से ोता था। न तो कृपणता से उसका सचिंय ोता था और न ी ऐशो-आराम में उसका अपव्यय ककया जाता था। ह दिंसुथान में ऐसी एक भी पवित्र नदी न ी िंक्जसके ककनारे घाट न बना ो, ऐसा एक भी घाट न िीं, क्जस पर कोई धमशसिाा या महिंदर न िीं, ऐसा एक भी महिंदर न िीं, क्जसकी देखरेख के लिए कोई व्यिस्था न िींकी गई। सकिंलित धन का वियनमय इन् िींकायों के लिए ककया जाता था। य ाँके प्रलसद्ध महिंदर म ाराष्ट्र क्स्थत ह दिंू ूसाम्राज्य की उदारता के प्रत्यक्ष उदा रण ैं। मरिों के किाखडिं में युद्ध-विषयक गयतविधधया ाँसतत चिती र ती थी।िं इसके बािजूद क्जजिी और तिजिंािूर से िेकर ग्िालियर और द्िारिका तक के विस्तृत प्रदेश में र िनेिािे िोगों को ह दिंसुथान के दूसूरे प्राििंतों की प्रजा से ब ुत ी मामिूी कर का भुगतान करना पडता था। शासन-व्यिस्था इतनी सुचारु थी कक जनता शायिंत और सुख-चैन की क्जिंदगी जी र ी थी। उस किाखडिं में इतर राज्यों की तुिना में मरिी साम्राज्य में रास्ते,े डाक वितरण व्यिस्था, अस्पतिा, कारागार और सिाजसयनक विभाग ज्यादा सुचारु ढिंग से चिाए जाते ेथे। इस बात की पुक्ष्ट के लिए उस समय के पत्र-व्यि ार, कविताएँ, पाँिाडे, बखर िगैरा तत्कािीन िाङ्मय साक्षी ैं।

उस समय विचारों को स ी हदशा हदखािेिािे और दूरूगामी पररणाम देनेिािे आिंदोिनों का अभाि न िीं था। सामाक्जक उन्नयत के बाधक ऐसेरीयत-ररिाज एिंिं अधिंविश्िासों का जड से यनमूिसन ुआ। धीरे-धीरे ह दिंू ू समाज सुधार के माग सपर चिने िगा। उनके कट्टरपथिंी विचारों में लशधथिता आनेिगा। समाज सुधार के नाम पर अटक पार अथिा सात समुदिंर पार गए ुए िोगों को कफर से अपनी बबरादरी में शालमि करिाना, लभन्न-लभन्न उपशाखाओ िंकी जायतयों में वििा -सबिंधिं स्थावपत करना, पुरानी विधध त्यागकर नूतन विधधयों से पूजा-अचनसा करना, खिस्तों ने अथिा मुसिमानों ने क्जन् ें धमातांरण करनेपर मजबूर ककया, उन् ें कफर से ह दिंधूम समें शालमि कर िेना, समुद्र यात्रा को प्रोत्सा न देना आहद काय सककए गए। ह दिंू ूपडिंडत बिपूिसक धमातांरण करिाए गए व्यक्क्तयों से चुपचाप स्नानाहद प्रायक्श्चत्त करिाकर उन् ें कफर से ह दिंधूम समें शालमि कर िेते थे। पुतगसािी िेखे इस बात के प्रमाण ैं। पुतगसािी िोग ऐसेशुद्धीकरण समारो ों में बाधा डािते थे। ऐसे ी एक प्रसगिं में इकट्िी ुई भीड पर पुतगसालियों ने चुपुके से मिा ककया और यन त्थे िोगों पर शस्त्र चिाए। उस समय एक फकीर बडे धैय ससे खडा र ा और बोिा-"मेरे शरीर के टुकडे-टुकडे ुए बगैर म ैंय ाँसे न ीं टिूंगा।" उसकी हढिाई देखकर दुश्मन भी ैरान र गया। बीजापुर के बादशा ने यनबिंािकरजी को बिपूिसक मुसिमान बनाकर उससेखुद अपनी बेटी का वििा करिाया; कफर भी यनबिंािकरजी सब कुछ छोड-छाडकर भाग आया और मरिी सेना में शालमि ो गया। उसका शुद्धीकरण करिाने का क्जम्मा खुदु माता जीजाबाई ने उिाया। इसके पश्चात् ्कमकसाडिं पर यनष्िा रखनेिािों के मन में शकिंा की कोई गुजिंाइश न र े, इसलिए लशिाजी म ाराज ने उसके बडेबेटे के साथ अपनी बेटी का ब्या रचाकर उसे ेअपना समधी बना लिया।

इस तर का और एक उदा रण ै नेताजी पािकर का। य मरिों के घुडसिारों का सेनापयत था। शूरता के मामिे ेमें य िगभग लशिाजी म ाराज जैसा ी िीर था, िेककन दुभाग्सयिश ि मुगिों के ाथ िग गया और

उसे ेउत्तरी सीमाप्रातिं भेजे हदया गया। उसका भी बिपूिकस धमातांरण करिाया गया और ि ााँके कूरूर, जगिंिी िोगों के बीच उसकी यनयुक्क्त की गई। िेककन मौका पाकर ि ि ााँसे भाग यनकिा और म ाराष्ट्र में आ प ुाँचा। उसने अपनेको कफर से ह दिंूधम समें प्रिेश देनेका शास्त्री-पडिंडतों से अनुनय ककया। लशिाजी म ाराज की अनुमयत से उसे े ह दिंूधम समें शालमि ककया गया। अपनिेोगों को कफर से अपने धम समें प्रिेश देनेका य उपक्रम बाद में भी पेशिा से िेकर नाना फणनिीस तक चिता र ा। पेशिा के आज्ञापत्र इस बात के साक्षी ैं कक मुसिमान अथिा ईसाइयों द्िारा धमातांररत ककए गए िोगों को कफर से अपने धम समें अपनाया जाए एिं िेखानपान- व्यि ाहद कृत्य उनके साथ पूिसित् ककए जाए। ााँ इस तर के उदा रणों की कोई कमी न ीं ै। सूरत प्रातिं में जो मरािी सेना यनयुक्त की गई थी उसमें पुताजी नाम के सैयनक को मुसिमानों के ाथ िगने के बाद जबरदस्ती मुसिमान बनाया गया; िेककन बािाजी बाजीराि जब हदल्िी से िौट र े थे, े तब पुताजी मुसिमानों के चगिंुि से बच यनकिा और पेशिा की सेना में शालमि ो गया। उसे ेभी पेशिा की सम्मयत से ह दिंूधम समें पुनप्रिेसश हदिाया गया। िुाजीभट जोशी का उदा रण थोडा अिग ै, क्योंकक िे दुश्ुमन की जबरदस्ती का लशकार न ीं बने, बक्ल्क िािच की खायतर स्िेच्छा से मुसिमान बन गए; िेककन बाद में उन् ें भी पछतािा ुआ और पिुण आकर ि ााँके शास्त्री-पडिंडतों के सम्मुख कफर से ह दिंूधम समें शालमि करने के लिए क्षमा-याचना के साथ विनती करने िगे। पिुण का ब्राह्मण-समाज कट्टरपथिी माना जाता था। कफर भी उसके पछतािो ेको पयाप्सत कारण मानकर उन् ोंनेउसे ेमाफ करके उसका शुद्धीकरण ककया। सबनेउसके साथ भोजन ककया। उसके बाद राजदरबार के अधधकारी की ओर से आज्ञापत्र यनकािकर अपनी जायत के सभी अधधकार उसे ेमु ैया कराए गए। छत्रपयत सिंभाजी म ाराज की उथि-पुथि भरे कायकसाि में भी य उपक्रम अविरत चिता र ा। उनके समय के आज्ञापत्र में जबरन मुसिमान बनाए गए गिंगाधर कुिकणी नामक व्यक्क्त का उल्िेख ै। उसमें न लसफस उसके शुद्धीकरण विधध का बयान ै, बक्ल्क अिंत में 'मनुस्मृयत' के िचन का िािा देकर ऐसा स्पष्ट्ट यनदेश हदया ै कक जो व्यक्क्त उसके साथ सामाक्जक व्यि ार न ीं रखेगा, ि पाप का भागीदार बनेगा। इसमें जोधपुर की राजकन्या इिंद्रकुमारी का उदा रण हदया ै। मुगि बादशा के साथ उसकी शादी बिपूिकस कराई गई थी। उसके कई सािों के उपरातिं जब ि हदल्िी से िापस िौटी, तब राजपूतों ने उसे ेदुबारा अपनी जायत में स्िीकार कर लिया।

इसमें कोई अस्िाभाविक बात न ीं कक परकीय घािों से चोहटि अपनी मातृभूलम की रक्षा क्जन् ोंने जान थिी पर िेकर की, िे ी उसके धालमकस और सामाक्जक घािों पर मर म िगाने आगे ेआएगेँ। धालमकस और सामाक्जक घाि राजकीय घािों से अधधक घातक ोते। ैं ह दिंुस्ुथान की स्िततिंत्रता और ह दिं ूसस्िंकृयत का पुनजागसरण- इस उद्देश्य सेक्जन स्ियिंस्फूित सआदिंोिनों ने राजकीय तथा सामाक्जक क्षेत्र में उथि-पुथि मचाई थी और शताक्ब्दयों तक दुश्ुमनों को परास्त ककया था ऐसे आदिंोिन अपनी ससंस्कृयत, नीयत एिं िधम सका अक्स्तत्ि खतरे में पडा ुआ देखकर तटस्थ न ीं र सकते थे। एक शताब्दी से भी कम अिधध में मुसिमानी साम्राज्य ने दक्षक्षण ह दिंुस्ुथान में अपने धम सका धुआधाँार प्रचार ककया था और जबरदस्ती मुसिमान बनाने में ि कामयाब ुआ था। अपनी तििार पर उन् ें गि स ोनिेगा था। कफर क्जस सत्ता ने मुसिमानी तख्त और राजमुकुट अपने पैरों तिे रौंदकर त स-न स कर डािा था, उसके शासनकाि में उसे ेएकाध सैकडा मुसिमानों को जबरदस्ती ह दिं ू बनाना अशक्य ुआ, य अफसोसजनक ै। उनके लिए मुसिमानों को बिपूिकस ह दिं ूबनाना ताकत की दृक्ष्ट्ट से

कोई मुक्श्कि काम न िींथा। ि अगर िान ितेतो ऐसा कर सकते थे, िककन उनकी नीयतमत्ता आडेआती थी। इसकी एक िज और भी ै कक राजकीय दासता के बधिंन तोडना आसान ै, िकेकन सास्कृ्ियतक और अधिंश्रद्धा के बधिंन तोडना ज्यादा मुक्श्कि ोता ै। अखखि भारतीय ह दिं ूसाम्राज्य की स्तितत्रिंता अबाधधत रखने के काय समें ी म ाराष्ट्रीयन िोगों की कतव्सयशक्क्त का व्यय ुआ। ह दिंओुं का राजकीय िचस्सि समाप्त करने का बीडा क्जन् ोंने उिया था, ऐसेदुशुमनों का मुकाबिा करके उन् ें य साम्राज्य स्थावपत करना पडा था। इस सारी िस्तुक्स्थयत का आकिन करने पर य बात स्पष्ट ोती ै कक सामाक्जक सुधार जैसे खुदु को िाभ प ुँचाने िो आदिंोिनों को मरािों ने ज्यादा प्रोत्सा न क्यों न िींहदया। ह दिंओु िंकी शुद्धध के लिए उन् ोंनेकोई विशेष कायिंत न िींकी। कफर भी अपनेधमबसाह्य बधिंओु िंको, उनके पश्चात्ताप करने पर, कफर से अपनेधम सतथा समाज में प्रयतष्ट्ापिूकस अपनाया; उन् ें अपनी जायत एिं पथिं के अधधकार हदिंए और पुरानी अधिंश्रद्धाओंका उन्मिून ककया। य सबसे बडी उपिक्ब्ध मानी जानी चाह ए।

स्ने और कृतज्ञता का ऋण

'सौख्य स्मरुतन राज्याचे मीनापरर अखण्ड तलमलती।'

- प्रभाकर

(- राज्य िैभि पर दृक्ष्टपात कर शत्रु दि मछिी जैसा छटपटाता था।)

अब अपनेिशिं के प्राचीन और अयिंतम इयत ास को ध्यान में रखते ुए म देख र े ह दिं ूसाम्राज्यों में श्रेष्ट्तिम ऐसेसाम्राज्य का सूयास्सत ोनेजा र ा ै। सबसेखेदजनक बात य ै कक ि इतना शीघ्र और अचानक ो र ा ै!

मारे िैभि का क्षय तो उसी हदन ो गया था, क्जस हदन लसधिंु सररता के तट पर मारे म ान् पराक्रमी पूिजस लसधिंुपयत दाह र पराक्जत ुए थे। काबिु के ह दिं ूअधधपयत बत्रोिचनपाि, पिंजाब के राजा जयपाि तथा अनगिंपाि, हदल्िीपयत सम्राट् पृथ्िीराज और कन्नौज नरेश जयचदिं, धचत्तौड के शासक म ाराणा सागिंा, बगिंाि के म ाराज िक्ष्मण सेन, रामदिे राय एिं िदेिधगरर के राजा रपाि, विजयनगर के सभी म ाराज तथा म ारायनया ाँ- इन सबके राजलस िं ासन एिं राजमुकुट लसधिंु नदी से िकर दक्षक्षण समुदिं तक धीरे-धीरे धिू-धूसररत ोते गए। ह दिं ूजमात की कापाँती ुई छाती पर सा सी, धूत सएिं पराक्रमी शत्रुदि अपनेघुटने रखकर खडे ो गए। न लसफस धचत्तौड बक्ल्क ह दिंसु्थान भर की सारी राजधायनयााँजिकर राख ो गईं। यदा-कदा इन् ीं राख की ढेररयों से कुछ धचनगाररयााँप्रज्िलित भी ुई, ककिंतु पि भर चमककर कफर यतरोह त ो गईं। ह दिंजूायत की सभी आशा-ककरणों

को यनस्तेज कर सम्राट् औरिंगजेब अपने तख्ते ेताउस पर यनक्श्चत बैा था। उसकी क्रोधपूण सनजर के एक इशारे पर मृत्यु का ताडिं किरने को तत्पर र नेिाी िाखों तिारें उसके मयूरासन की रक्षा करती थी।िं

'या सकि भूमडिंिाधिंच ये िायिीं, ह दिं ूऐसा उरिा नाह ' (जबकक एक भी ऐसा ह दिं ूअिलशष्ट न था जो पददलित न ुआ ो) इस तर के सक्रिंायिंत किा में ह दिं ूयुिकों का एक मडिं िगुप्त गोष्ठी कै लिए एकत्र ुआ और उसनेअपनी यनस्तेज ुई आशा-ककरणों को प्रज्ज्िलित करनेकी एिंअपनेराष्ट्र तथा धम सपर ुए अन्यायों का पररमाजनस करने की, नष्ट ुई अपनी प्रयतष्ठा को कफर सेप्राप्त करने की कसमें खाईं। जब ह दिं ूनियुिकों की य ध्येय प्रेररत टोिी रणक्षेत्र की ओर चि पडी तो उसके मस्तक पर था किंुकुम यतिक और ाथों में थी जिंग िगी तिारें ! सभी ने उनका उप ास ककया। उनके इस कदम को 'मूखतसापूण सकदम' क ा। बुद्धधमानों ने इसे े 'आत्मघात का पथ' क ा और औरिंगजेब ने 'तुम ो ी क्या!' ऐसेतुच्छतापूण सउद् गार यनकिो। इस तर के उप ास के पीछे उन िोगों का अनुभि था। लशिाजी म ाराज से प ि े भी कई युिकों ने विद्रो का रास्ता चुना था और विफिता भरी इस डगर पर अपने प्राण गाँिाए थे; ककिंतु अब की बार इन दीिानों ने शीश थेिी पर रखकर प्रयतशोध िेनेकी ठानी थी। मातृभूलम के उत्थान की ि ि ाती फसि का सपना देखते ुए उसके बीज बोना ि अपना परम कतव्सय समझतेथे। उन् ें दृढ विश्िास था कक म अपनेरक्त से इस बीज को लसधिंचत करेंगे ेतो मारी भािी पीहढया ाँउस फसि को प्राप्त करेंगी।

और बीस साि बाद इन् ीिंनियुिकों का सपना साकार ोनेगा। उनका उप ास करनेिािे ेऔरिंगजेब के चे रे का रिंग उड गया। उसकी दपोक्क्त भरी िाणी मद्धधम ो गई। एक बार तो ि जोर से चीखा-"म ैंकाकफरों की इस टोिी को प ाडडयों में ी नेस्तनाबूद कर दूँगा।" मराठों की राजसत्ता को ि कमजोर समझता था। ि तुरिंत स स्रों तिारों की सुरक्षा में लशिाजी के राज्य पर टूट पडा। विद्रोह यों को जन्म देनेिािी उस भूलम पर उसने क्रोधािेग से ऐसा जबरदस्त आघात ककया कक उसके अपने पैरों तिेकी जमीन खखसक गई और उसका लस िंासन ी डगमगानेगा। न तो ि अपने-आप को क्स्थर कर सका और न ी विद्रो के विस्फोट से पडी ुई धरती की दरार में धसाँने से खुद को बचा सका। ि जैसे-जैसे ेमराठों के बारे में अगिंार उगिता गया और तैश में आकर उि-पटक करता गया, िैसे-िैसे ि अधधकाधधक गत समें धसाँता चिा गया। उसकी रक्षा करनेिािी तिारों की धार भी किंुहित ो गई। मराठों ने औरिंगजेब के शा ी मजार के समीप ी विशाि ह दिं ूसाम्राज्य का द्िार खडा कर हदया।

शीघ्र ी मराठों ने ह दिं ूस्िातिंत्र्य का युद्ध पूरे ह दिंुस्थान में फैिानेकी दृक्ष्ट से ह दिंुत्ि का द्योतक केसररया ाथ में िेकर गुजरात प्रािंत में प्रिेश ककया। उसके बाद माििा प्रािंत, गोदािरी, चिंबि, कृष्णा, तुिंगभद्रा आहद नहदया ाँपार करते े ुए तिंजािूर में अपना डेरा जमाया। परकीय दासता के बिंधन तोडते े ुए शक्क्तशािी ह दिं ू साम्राज्य का यनमाणस करने के लिए उन् ोंनेयमुना से िेकर तुिंगभद्रा तक और द्िारका से िेकेर जगन्नाथपुरी तक सारा प्रदेश मुसिमानी आधधपत्य सेमुक्त ककया। प ि ेक्जिंजी, कफर नागपुर, उसके बाद ओरररसा प्रािंत इस तर एक डगर को पदाक्रािंत करते े ुए उन् ोंनेसुयनयोक्जत ढिंग से ह दिं ूसाम्राज्य की इमारत की रचना की। तदुपरािंत उन् ोंनेयमुना, गिंगा और गिंडकी को पार करते े ुए गुप्तों की राजधानी पटना पर अपनी विजय-पताका फ रा दी।

किकत्ता में उन् ोंनेकािी-पूजन और बनारस में विश्िेश्िर-पूजन ककया। क्जनके पूिजसों ने जिंग खाई ुई तििारें ाथ में थामकर इस म ान् ्काय सको सपिंन्न करने का सकिंल्प चोरी- यछपेलिया था और क्जनकी सख्ं या नाममात्र की चोट पर अपनी ध्वजा ि राते ुए पूरे ह दिंसु्थान भर में की थी, उनके ी ये ि शिंज स न्नों की सख्ख्या में इकिे भ्रमण कर र े थे। िे यनडरता से मुसिमानों साम्राज्य की राजधानी पर दस्तक देनेिगे। ि ााँमिमी और मिौाना पुराणों के अनुयाययों पर कुराणों के अनुयायी ककस तर िी र े, इस विषय में काल्पयनक कथाए ाँसुनाने में और कुराणों की म त्ता साबबत करनेमें व्यस्त थे। उसी समय अनेक जायत और अनेक पथिं िो, मूयतपूसजक और दाढीवि ीन ऐसेयिुा ह दिंओुं ने हदल्िी द्िार पर सा सपूिकस दस्तक दे दी और बेधडक अदिंर प्रिेश पाकर ि ा ााँ अपनी ध्वजा फ रा दी। इस तर का अप्रत्यालशत प्रसगिं देखकर मुसिमानों की आखोँं फटी-की-फटी र गईं। उनकी मान्यता थी कक इसिाम पर अगर कोई सकिंट आता ै तो क्जब्राइि दौडकर सकिंट का यनिारण करने आता ै; िेककन इस बार पुराणपथिंथयों से कुराणपथिंथयों को छुडानेकोई क्जब्राइि न िींआया। उस समय य विचारधारा प्रभिी थी कक आधा चादाँ क्जसके अजेयत्ि की गिा ी दे र ा ै, ि इसिाम धम स ी सत्य ै और क्जसके दिैीय जीण-सशीण स ो गए ैं एिं िंमूयतयसााँ भग्न ो गई ैं, ि ह दिंधूम सलमथ्या ै; िेककन मरािों ने जो सा सी कदम उिाए, उससेय विचारधारा िकै भ्रम फैिानेिािी ै, य साबबत ो गया। भ्रम भरी य विचारधारा ह दिंओुंके धैय सको भ्रष्ट करनेिािी एिं िंजातीय विपत्ति को भडकानेिािी थी। मुसिमानों ने ह दिंओु िंका बिपूिकस धमातिंरण तो ककया ी, िेककन धमातिंरण कराने में य विचारधारा काफी द तक कारगर र ी। हदल्िी की दे री पर दस्तक देनेसे ि लमथ्या साबबत ुई। अब क्स्थयत पिट गई। मसक्जदों की मीनारों से महिंदरों के लशखर ऊाँचे प्रतीत ोनेिगे। मुसलिमों का आधा चादाँ यनस्तेज ो गया और अतिंतम सासोँं धगनने िगा। ह दिंओुंके महिंदरों के लशखर सूरज की ककरणों से अधधकाधधक यनखरने िगे। ह दिंओु िंके सूय सनेमुसिमानों के चादाँ को तेजे ीन कर डािा। विश्िासिराि भाऊ ने जो भविष्यिाणी की थी, ि सच यनकिी। पृथ्िीराज चौ ान के िशिंजों ने कफर से एक बार हदल्िी पर विजय प्राप्त करके उसपर राज ककया। मरािों के लिए 'चू े' शब्द का प्रयोग करके औरिंगजेब ने उनकी खखल्िी उडाई थी, िेककन इन चू ों ने उस लस िं की गुफा में बेधडक घुसकर उसकी अयाि खीचिंकर उसके नखदिंत एक-एक करके उखाड डािे। लसखों के गुरु गोविदिंलस िं के क े गए भविष्य कथन के अनुसार धचडडयों ने बाज को मार डािा।

योद्धाओंकी परिपाटी का अनुसरण करते े ुए मरािी सेना ने कुरुक्षेत्रे में ि ू स्नान ककया और आगे े िा ौर तक अपना विजय अलभयान जारी रखा। इस अलभयान में बाधा डािनेिािे अफगानों को अटक पार खदेड हदया और तब मरािों ने सीमा पर तयनक विश्राम ककया। उसी दरलमयान उनके सेनानायक और नेतागण लसधिंु नदी पार करके ह दिंकूुश और काबिु तक अपनी सेना को िे जानेकी योजना बनाने में व्यस्त ो गए। फारस, इिंग्िडैं, पुतगसिा, फ्ािंस, िािडैं तथा ऑक्स्रया के राजदूत मरािों की राजधानी पूना प ुाँचे ेऔर उन् ें ि ा ााँर ने देने का अनुनय करने िगे। बगिंाि का निाब, िखनऊ का निाब, ैदराबाद का यनजाम, मैसूर का सुितान और इनके बाद अकाटस से िेकर रु ेिखडिं तक सभी छोटे-बडेमुसिमान अधधकारी इतनेबेबस ो गए कक मरािे उन् ें • लसफस जीिनदान दें- इस इच्छा से 'चौथ', 'सरदेशमुखी' एिं िंअन्य कर देना उन् ोंनेशुरू कर लिया। अब यनजाम नाममात्र का ी यनजाम र गया। उसे ेअपनेअधीनस्थ प्रातिं में कर–िसूिी से प्राप्त ुआ धन ककसी भी तर मरािों के

राजकोष में ी जमा करना पडता था। इस तर यनजाम मरािों का िकि कर िसिूी करनिााा नौकर बन गया !
मरािों के मुसिमानों के अिािा और भी कई शत्रु थे।

मरािों का उत्कष सईरान का शा , काबुि का अमीर, तुकस और मुगि, रु िेऔर पिान, पुतगसािी और फ्ािसीसी, अग्रेंज और अबीसीयनयन-इन सबको फूटी आखाँों न िभाता था। उन् ोंनेमरािों को ििकारा; िेकेकन भूस्थीय तथा सागरीय युद्धों में मरािों सेउन् ें मु ाँ की खानी पडी। ह दिंू ूसेना ने ह दिंू–ूस्तितत्रिंता तथा ह दिंू–ह त सबिंधिों को बाधक बने सभी शत्रुओ िंको नाकों चने ेचबिाए। रिंगणा, विशािगढ और चाकण, राजापुर, िेनगुरिा तथा सातारा, सिीडोरी, पुरिंधर, लस िंगढ, सिा ेर, अबिंरनी, सबनूर, सगिंमनेर, फोंदा, िाई, फिटन, क्जजिं पािकेड, पेतािड, धचपूिण, विजयगढ, श्रीगिााँ, िाणा, तारापुर, िासी, सारिंगपुर, विरि, जैतपुर, हदल्िी, दुरुाई, सराय, भोपाि, अकाटस, बत्रधचनापल्िी, कादरगजिं, फरुसखाबाद, उद् गीर, किंजपुरा, पानीपत, रक्षा भुिन, अनाबाडी, मोती तािाब, धारिाड, शुक्रताि, नसीबगढ, बडगिााँ, बोरघाट, िादाई, आगरा, खारदा आहद मरािों द्िारा प्राप्त की गई भूस्थीय एिंिसागरीय विजयों के उदा रण ैं। इस विजयमालिका में प्रत्येक विजय अपनेी एिंिइतनी म त्त्िपूण सथी कक अन्य देशों में ऐसेविजयों की स्मृयृत में कीयत-सस्तिभों का यनमाणस ककया जाता। लशिाजी म ाराज से िेकर नाना फणनिीस पयतां विजयश्री िगातार मरािों के कदम चूम र ी थी। उनके साम्राज्य का विस्तार ोता गया और िे इतनी विशाि जागीरों का यनमाणस करते ेगए कक क्जतने क्षेत्र में दूसूरे देशों के कई राज्य अतिंभूतस ो सकते थे। इस विस्तार की कल्पना म इस उदा रण से कर सकते ैं कक अगर आपकी जेब द्रव्य से इतनी अधधक भर जाए कक आप उसमें से फुटकर लसक्कों को धगराते े ुए चिते ैं, उस प्रकार िे अपनी जागीरों का वितरण करते े गए। सातारा, नागपुर, तंजािौर, कोल् ापुर, सागिंिी, लमरज, गुत्ती, बडौदा, धार, इिंदौर, झासाँी, ग्िालियर आहद मरािों की राजधायनया ाँतो यूरोप के कई साम्राज्यों की अपेक्षा अधधक विशाि थी।िे ह दिंूधम सको यनकृष्ट समझनेिािेऔर उसकी अि ेिना करनेिािों के कब्जे ेसेउन् ोंनेररद्िार, कुरुक्षेत्र, मथुरा, डाकोर, आबू, अिंयतका, परशुराम, प्रभास, गोकुि, गोकण सआहद तीथस्स्थानों को मुक्त कराया। काशी, प्रयाग तथा रामेश्िरम् ्के मिंहदरों ने अपनी खोई ुई प्रयतष्िा किफर से प्राप्त की। उनके लशखर कफर सेचमकने िगे।

ह दिंू ूप्रभुसत्ता के अतिंगतस दुश्मन से प्रयतशोध िेने के लिए अभी भी मौखरी, चािुक्य, पल्िि, पाड्य, चोि, केरि, राष्ट्रकूट, आन्ध्र, केसरी, भोज, िािा, ष,स पुिकेलशन आहद प्राचीन राजसत्ताओं को स ी-सिामत रखने ेके लिए ररभक्तों ने परमेश्िर को धन्यिाद हदया। इस साम्राज्य के शासक और प्रशासक तथा सेनापयत, जैसे े म ादजी लसधिंधया इतनेविशाि भूखडिं का प्रशासन चिाते ेथेकक प्राचीनकाि में उतने भूखडिं का प्रयोग राजे े अश्िमेध यज्ञों के लिए करतेथे। पौराखणक इयत ास में भी इस तर के राज्य-विस्तार का उदा रण न ीिंलमि सकेगा। प्रथम और सभिंितः दूसूरे चिंद्रगुप्त के साम्राज्य का अपिाद नजरअदिंाज करते ुए इस साम्राज्य की बराबरी का दूसूरा उदा रण इयत ास में शायद ी लमिेगा। राष्ट्रभक्क्त और आत्मबलिदान की दृक्ष्ट से अगर म विचार करें तो मरािों को अतुिनीय मानना पडेगा। काँटिंी रा पर चिते े ुए उन् ोंने जो उज्ज्िि यश अक्जतस ककया, िैसा अन्य ककसी ने न ी।िे मुक्श्कों का सामना करते े ुए उनका पौरुष अधधकाधधक यनखरता गया।

प्राचीन भारतीय इयत ास में जो अन्य ह दिंू ूनरेशों को पराक्जत करता था, उसे े'चक्रिती' उपाधध प्राप्त ोती थी और जो विदेलशयों सेी ा िकर अपनेदेश तथा धम सकी रक्षा करने में समथ स ो जाता था, उसे े 'विक्रमाहदत्य' उपाधध से सम्मायनत ककया जाता था। विक्रमाहदत्य प्रथम ने सीधथयनों को भारतिष ससे यनष्ट्कालसत ककया, द्वितीय विक्रमाहदत्य ने मारी मातृभूलम को शकों से मुक्त ककया तथा तृतीय विक्रमाहदत्य ने ूणों को पियन करने पर मजबूर ककया। अगर विक्रमाहदत्य और विश्िविजेता उपाधध प्राप्त करने की अ सता उसी राजा की ोती ै क्जसने स्िदेश और स्िधम सकी रक्षा के लिए अपना जीिन न्योछािर ककया, द्रव्यतृष्ट्णा और धमाधिंता से अत्याचार करनेिालेशत्रुको सबक लसखाकर नैयतक दाययत्ि यनभाया और अपने समाज तथा जायत की रक्षा की, तो क्जन् ोंने ह दिंू ूसाम्राज्य यनमाणस करने के लिए अपनी आ ुयतया ाँदीं, ऐसेह दिंुओंुका इयत ास में ससम्मान उल्लेखि ककया जाना चाह ए, जैसा प्राचीन इयत ास में राजाओंका ककया गया था। प्राचीन इयत ास के राजाओ िंके प्रयत जो आदर और कृतज्ञता व्यक्त की जाती ै, िैसी इन ह दिंू ूराजाओंके प्रयत भी व्यक्त की जानी चाह ए। राजपूत राजाओंके ाथों लशधथि ए िंयनस्तेज पडती ुई ह दिंू ूध्िजा को उन् ोंने कफर से गि सके साथ उन्नत करने का म ान् ्काय सककया। ह दिंूह त-सबिंधिों की रक्षा के काय समें जो अडगिें डाि र े थेऔर ह दिंूधम सको जो घृणा करते ेथे, उन सबके खखिाफ मराठों ने धमयुसद्ध का ऐिान ककया। इसके अिािा उन् ोंनेदाह र और अनगिंपाि, जयपाि और पृथ्िीपाि, रपाि, प्रताप लसिं प्रतापाहदत्य आहद की श ादत का प्रयतशोध लिया। माधिाचाय सऔर सायणाचाय सने अपनी बुद्धध से तथा रर र बुक्का ने अपनेबा ुबि से धचत्तौड और विजयनगर जैसी राजधायनयों की पराजय के किंक को धो डािा। उन् ोंने इन राजधायनयों को पािन मिंदिरों का स्िरूप हदया।

गिभग पूरी छ शताक्ब्दयों तक जारी र े म ायुद्ध को उन् ोंनेविजयश्री हदिाई। इस विजयश्री से य साबबत ुआ कक पूरी तर सेसुसघिंहटत न ोते े ुए अगर ह दिंूजायत इतनी विजय प्राप्त कर सकती ै तो पूरी तर से सघिंहटत और प्रबुद्ध ोने पर ए िंसामाक्जक दृक्ष्ट्ट से पररपक्ि ोनेपर ि क्या गिु खखिाएगी।

अिंत में म सभी ह दिंओुिंका य कतव्सय ै कक उन योद्धाओ िंके प्रयत स्ने ए िंश्रद्धासुमन अवपतस करें जो विशाि ह दिंू ूसाम्राज्य के रचययता थे। पराक्रमपूिकस यनमाणस ककए गए इस िैभिशािी ह दिंू ूसाम्राज्य को अब म अपनी आखोंाँ में समाकर अयिंतम दशनस करें, क्योंकक शीघ्र ी इस विशाि ह दिंू ूसाम्राज्य पर परदा धगरनेिािा ै। य साम्राज्य मारी आखोंाँ सेओझि ोनेिािा ै। िेतमसान िोात रूपी जि से भीगी आखोंाँ के समक्ष मारा उज्ज्िि अतीत िुप्त ोनेिािा ै।

यियनका का पतन

'हहम्मत सोडू नए सव मपुनः येईल उदयाला'

-प्रभाकर

(- इस आशा सेकक सुहदनों का कभी-न-कभी उदय ोगा, ह म्मत न िंिारनी चाह ए।)

सन् ्१७६५ में ुए खारदा के युद्ध तक के किाखडिं का मनेलस िंििोकन ककया ै। इसके पूि सके प्रकरणों में जो उल्लेखि मने ककए ैं, िे इसी किाखडिं सेसबिंद्ध ैं। मारा य प्रमुख उद्देश्य कभी न िींर ा कक मरिाा आदिंिनि का विस्तृतृ विवरण प्रस्तुत ो, मनेीकिे ि ी उल्लेखि प्रस्तुत ककए क्जनके द्िारा मरिाों के प्रमुख आदश सऔर लसद्धाितिं, जो इस म ान् ्आदिंिनि के प्रमुख प्रेरणास्रोत थे, जनसाधारण को अिगत कराए गए।
क्योंकक ऐसा करने से ी ह दिंं ूराष्ट्र के इयत ास में मरिाों का योगदान तथा उनका स ी स्थान यनधारसरत ो सकता
था। य काय सअब पूरा ो चुका ै; िेककन उस शा.सिं. १७१७ से िेकर १७३९ तक के दुिदिंी किाखडिं का भी लस िंििोकन करना आिश्यक ै क्जसमें मरिाी साम्राज्य का सूरज अस्तगत ुआ। य किाखडिं इतना व्याकुि करनििाा ै कक इसका िणनस सजि नेत्रों और आ भरे बबना करना मुक्श्क ै।

म देख चुके ैं कक सहदयों से ोते ेर े ह दिंं–ूस्ितिंत्रता के सिंग्राम को सफिता का ताज प नाकर मरिाों ने अपनेपरिंपरागत मुसलिम शत्रुओ िंको पूरी तर से परास्त करके अपनेकतव्सय की इयतश्री कर डिाी। दीघ सकाि तक अविरत चिते ेर े सिंग्रामों से थके-मादेँ मरिाी दुश्मन से पीछा छूटनेके समाधान से विश्राम की तैयारी में जुटे थे। िााकाँक विश्राम के समय भी उन् ोंनेअपनी तििारें लसर ानेरखी थी।िं बबकुि उसी क्षण एक नया शक्क्तशिाी दुश्मन, जो प िेदो बार मु ाँकी खा चुका था, अपनी पूरी ताकत केंहद्रत करके उनपर टूट पडा।

विश्राम की इस तर की असिाधान अिस्था में भी िे जीत सकते थे े अथिा कम-से-कम दुश्ुमन को पियन करने पर मजबूर कर सकते थे; िेककन मरािों का दुदैि आडेआया। नाना फणनिीस का दे ाितं ो गया और उसका स्थान बाजीरि द्वितीय ने िेलिया था। बाजीरि द्वितीय मरािों का सिमसान्य नेता तो था, िेकेकन उससेअधधक िे मरािों के शत्रुओ िंका प्रयतकारशून्य दास था, य मरािों के भाग्य के साथ सबसे बडी विडबिंना थी। मरिाा आदििंनि के समग्र कािखडिं में- राष्ट्र के लिए ायनकारक, आत्मसम्मान और नीच स्िाथिसिोुपता य प िी, और सिाजसयनक जिीन में स्िाथिरसह त ए िेदेश की खायतर आत्मबलिदान करिनेिाी दूसूरी-ऐसी दोनों विरोधी प्रिृत्तया ाँ ििी ो र ी थी।िे बाजीरि द्वितीय तथा नाना-दोनों इन दो प्रिृत्तयों का प्रयतयनधधत् िकर र े थे। स्िाथि ससे भरपूर ऐसी नीच प्रिृत्त का जड से यनमिूसन करना यद्यवप सभिंि न िीं ो सका। कफर भी नाना और उनकी पीढी में उसे ेदबाकर रखा गया और उसी के फिस्िरूप ह दिंू–ूपदपादशा ी की स्थापना ुई। िेककन अब बाजीरि द्वितीय की पीढी में इस नीच प्रिृत्त में उफान आया। अब ह दिंूजूायत को इस क्स्थयत से उबारिनेिाी शक्क्त नाना के यनधन सेनष्ट ो गई थी। अतः मरािी साम्राज्य का क्षय ोना अिश्यिंभाविी था, क्योंकक सकिंट की ऐसी घडी में मरािी साम्राज्य ककसी ह दिंू ूराजसत्ता ने न ीं अवपतु इिंग्िडैं ने आघात ककया था। मरािों का इिंग्िडैं के इस तर के आक्रमण के आगे ेहटक पाना मुक्श्क था। मुकाबिेका पररणाम यनक्श्चत था।

इिंग्िडैं की विजय इसलिए यनक्श्चत थी, क्योंकक मरािों की अपेक्षा अिंग्रेजे सेना अत्याधुयनक शस्त्रास्त्रों से सुसक्ज्जत थी। इिंग्िडैं भी गृ ृयुद्ध, गिुाबों का युद्ध, धालमकस प्रताडना और न्यायियीन कूरूरताओ िंको झिे चुका था; िेकेकन इन सकिंटों से उबरकर भी दीघकसिा बीत जाने से िे अब सभिाँ गया था। सिाजसयनक गयतविधधयों के लिए जो सद्गुण आिश्यक ोते े ैं, जैसे ेकक आदेश ककस तर हदया जाए एिं आदेश-पािन ककस तर ककया जाए, अधधकार चिाना और अधधकार मानना, देश के प्रयत यनष्ठिाभिा, ध्येय तथा म त्त्िाकिाक्षिंाओिं के बारे में आपसी सामजिंस्य, जातीय सक्शिष्ष्टता आहद में अिंग्रेज धचरकिा से ी प्रिीण ो गए थे। मरािों में इन गुणों का बबिकुि ी अभिा था-ऐसा न ीं था। ह दिंसुथ्ान की बाकी राजसत्ताओिं की तिुना में मरािी राजसत्ता योग्यतम थी, िेककन अिंग्रेजों की तिुना में िे इस विषय में बौने साबबत ो र े थे।

मरािे अिंग्रेजों से पिू सआए ुए आक्रमणकाररयों के साथ सिंग्राम करके बुरी तर से थक चुके थे। कफर भी िे अिंग्रेजों से सामना करने के लिए रणक्षेत्रे में कूद पडे। अिंत में जब िे जान गए कक य युद्ध अपनेअक्स्तत् िकी रक्षा के लिए ो र ा ै, तब उन् ोंने अपना रणकौशि प्रदलशतस करनेमें कोई कसर बाकी न ीं छोडी। प्रत्यक्ष मृत्यु को सामनेदेखते ुए भी और जीतने की आशा नष्ट ोनेके बािजूद बापू, गोखिेजैसे ेदेशभक्त दृढ यनश्चय से िडते े र े। सभिंितः उन् ोंनेअिंग्रेजे अधधकारी सेक ा ोगा, ' ो सकता ै कक अब मारी अरथी उिनेिाी ै। कफर भी म अपने ाथ में तििार िेकर िडनेकी मुद्रा में ी जा र े ैं।' इस िडाई का यनणयस अिंग्रेजों के पक्ष में ोनिेाा ै- य यनक्श्चत ो चुका था। मरािों की ार के कई कारण थे। अिंत तक मरािे िडते ेर े, िेकेकन बाजीरि द्वितीय जैसा अयोग्य नेतृत्ि, पिू समें यनरिंतर िडाइया ाँ िडने में अत्यधधक पररश्रम के कारण मरािी सेना का थका ोना; नाना, तुकोजी, राघोजी, फडके आहद योद्धाओ िंका अचानक यनधन-इन कारणों से उनकी ार यनक्श्चत ो चुकी थी। मरािों की इस ार के कारण अिंयतम ह दिंू ूसाम्राज्य का सूय सअस्त ो गया। इस ार के पश्चात् ूलसखों ने पिंजाब

में ह दिंू–स्तिंत्रता की ज्योयत प्रज्ज्लित रखने के ा भरसक प्रयास ककया। कफर भी ह दिंू–स्तिंत्रता का अधिकारमय भविष्य टिनिा न ि थंा।

युद्ध और खिै प्रयतयोधगता में ार-जीत के फैसिे का अनुमान िगाना मुक्श्कि ोता ै; और जो भी फैसिा ो, उसको खिै-भािना से स्िीकार करना आिश्यक ोता ै। इसलिए म अंग्रेजों से ईष्या सन िंकर र े ;ै िेककन य भी न िंछुपा र े ैं कक इस म ान् ्साम्राज्य की समाधध पर य मृत्युिेख लिखते ुए में व्यथा न िंो र ी ै। क्जस तर सिोत्तम खखिाडी उत्कृष्ट प्रदशनस करता ै तो ि सबकी प्रशसंा का पात्र ोता ै, उसी तर सात समुदंर पार करके इंग्िडैं ने जो विजय प्राप्त की तथा मारा साम्राज्य छीनकर उसकी बुयनयाद पर, क्जसकी बराबरी करनेिािा साम्राज्य इयत ास में शायद ी यनमाणस ककया गया ो, ऐसे विशाि जगत् ्साम्राज्य का यनमाणस ककया, उसके लिए उसके सामथ्य सए िंकुशिता की म प्रशसंा करते ैं।

इस तर शालििा न सिंत् ्१७३९ (सन् ्१८१८) में अपना िैभिशािी ह दिंू ूसाम्राज्य समाधधस्थ ो गया। उस साम्राज्य की यादें मन में ताजा रखते ुए और यीशू, मदर मेरी की तर आशा जाग्रत् ्रखते ुए प्राथनसा करनी चाह ए कक 'कोई न िंजानता कक इसके पुनरुत्थान का क्षण कफर से आ सकता ै!'

ीरि सािरकर

लशिाजी िाजी म ाराज ने एक पत्र में लिखा था- "स्यि िंभगिान् ्के ी मन में ै कक ह दिंी-| स्रिाज्य यनलमतस ो ।" उस यिुा िीरपुरुष ने क्रायिंतयुद्ध की प ि की। लशिाजी म ाराज ने शालििा न िसिंत् ्१५६७ (ई.स. १६४५) में अपनेएक साथी के पास भेजे े ुए पत्र में-स्यिंपर िगेइस आरोप का यनषेध ककया कक बीजापुर के शा का प्रयतरोध कर उन् ोंने राजद्रो का पाप ककया ै। उन् ोंने इस बात का स्मरण कराते ुए उच्च आदशों की भािना भी जाग्रत् ्की कक अपना एकयनष्ट् बिधिंन यहद ककसी से ै तो ि भगिान् ्से ै, न कक ककसी शा बादशा से। उन् ोंनेउस पत्र में लिखा ै-"आचाय सदादाजी कोंडदिे और अपनेसाधथयों के साथ सह्याहद्र पितस के श्रृगिं पर ईश्रि को साक्षी मानकर िक्ष्य प्राक्प्त तक िडाई जारी रखने ेऔर ह दिंुसुथान में 'ह दिंी स्रिाज्य' यानी ह दिंू–ूपदपादशा ी स्थावपत करने की क्या आपने शपय न िीिी थी? स्यि िंईश्रि ने में य यश प्रदान ककया ै और ह दिंी स्रिाज्य केयनमाणसेि मारी मनीषा पूरी करनीिोगा ै। स्यि िंभगिान् ्के ी मन में ै कक य राज्य प्रस्थावपत ो।" लशिाजी म ाराज की किम से उतरे 'ह दिंी स्रिाज' - इस शब्द मात्र से एक शताब्दी से भी अधधक समय तक क्जस बेचैनी सेम ाराष्ट्र का जीिन तथा कतव्सय यनदेलशत ुआ और उसका आत्मस्िरूप क्जस तर से प्रकट ुआ, िैसा ककसी अन्य से सभिंनि िीथा। मरिों की िडाई आरिंभ से ी िैयक्क्तक या विलशष्ट् िग सकी सीलमत डिाई न ी िथी। ह दिंूधम सकी रक्षा ेतु, विदेशी मुसलिम सत्ता का नामोयनशान लमटानेके लिए तथा स्तित्रि और समथ सह दिंी स्रिाज्य स्थावपत करने के लिए िडी गई ि सपिूंण सिडाई ह दिंू िूडाई थी।

जन्म: २८ मई, १८८३ को म ाराष्ट्र के नालसक क्जिे ेके ग्राम भगूर में।

शशिा : प्रारिंलभक लशक्षा गािँ से प्राप्त करने के बाद िष स१९०५ में नालसक से बी.ए. ।९ जून, १९०६ को इिंग्िैंड के लिए रिाना। इिंडडया ाउस, ििंदन में र ते े ुए अनेक िेखे ि कविताए ँलिखी।ि १९०७ में' १८५७ का स्िातित्र्यि समर' ग्रथिं लिखना शुरू ककया। प्रथम भारतीय, नागररक क्जन पर ेग के अतिंरराष्ट्रीय न्यायिय में मुकदमा चिाया गया। प्रथम क्रायिंतकारी, क्जन् ें बब्रहटश सरकार वि.दा. सािरकर द्िारा दो बार आजन्म कारािास की सजा सुनाई गई। प्रथम साह त्यकार, क्जन् ोंने िेखनी और कागज से िधिंचत ोनेपर भी अडिंमान जिे की दीिारों पर कीिों, काटोंं और य ा ँतक कक नाखूनों से विपिु साह त्य का सृजन ककया और ऐसी स स्त्रों पक्क्तियों को िषों तक किंस्थि कराकर अपने स बहिंदयों द्िारा देशिालसयों तक प ुँचाया। प्रथम भारतीय िेखेक, क्जनकी पुस्तकें - मुहद्रत ि प्रकालशत ोनेसेपूिही-दो-दो सरकारों ने जब्त की।ि ि क्जतने बडेक्रायिंतकारी उतने अडिंमान एि िरत्नाधगरर की कािकोिरी में र कर 'कमिा', 'गोमातिंक' एि ि'विर ोच्िास' और 'ह दिंुत्ि', 'ह दिंू ूपदपादशा ी', 'उः श्राप', 'उत्तरकक्रया', 'सन्यिस्त खड्ग' आहद ग्रथिं लिखे ।

महाप्रयाण : २६ फरिरी, १९६६ को।

+